INVOLUTION VS EVOLUTION



INDIA

SUBCONTINENT

हिंदी বাংলা मराठी
తెలుగు தமிழ் ગુજરાતી
اردو नेपाली සිංහල
English

BERNARD DE MONTREAL

DIFFUSION BDM INTL

CLICK

1.हिंदी

2.বাংলা

3.मराठी

4.తెలుగు

5.தமிழ்

6.ગુજરાતી

7.اردو

8.नेपाली

9.සිංහල

10.English

हिंदी

Bernard de Montreal द्वारा 2 सम्मेलनों का प्रतिलेखन



अस्थायी प्रारूप

इस पुस्तक का अनुवाद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा किया गया है लेकिन किसी व्यक्ति द्वारा सत्यापित नहीं किया गया है। यदि आप इस पुस्तक की समीक्षा करके योगदान देना चाहते हैं, तो कृपया हमसे संपर्क करें।

हमारी वेबसाइट का मुख्य पृष्ठ: http://diffusion-bdm-intl.com/

हमारा ईमेल: contact@diffusion-bdm-intl.com

अंतर्वस्तु

पूरी Diffusion BdM Intl टीम की ओर से बधाई।

Pierre Riopel 18 अप्रैल, 2023

अध्याय 1

पहचान *CP036*

दूसरों की तुलना में आत्म-पहचान एक सार्वभौमिक मानवीय समस्या है। और यह समस्या तब और बढ़ जाती है जब मनुष्य आधुनिक समाज जैसे जटिल समाज में रहता है। पहचान की समस्या अहंकार के जीवन की पीड़ा है, पीड़ा जो उस उम्र से उसका पीछा करती है जब वह दूसरों की तुलना में खुद को देखता है। लेकिन पहचान की समस्या एक झूठी समस्या है जो इस तथ्य से उत्पन्न होती है कि अहंकार, खुद को खुद के अनुसार महसूस करने के बजाय, यानी अपने स्वयं के उपाय के अनुसार खुद को अन्य अहंकारों के मुकाबले प्रतिस्पर्धात्मक रूप से महसूस करना चाहता है । , उसके जैसी ही समस्या से।

जबकि अहंकार अपने फूलों की प्रशंसा करने के लिए दूसरे के क्षेत्र में अपनी बाड़ से परे देखता है, यह देखने में विफल रहता है कि दूसरा खुद के साथ ऐसा ही कर रहा है। मनुष्य में पहचान, या पहचान का संकट आज इतना तीव्र है कि इससे आत्मविश्वास का नुकसान होता है जो समय के साथ-साथ व्यक्तिगत चेतना के कुल नुकसान में बदल जाता है। खतरनाक स्थिति, खासकर अगर अहंकार पहले से ही चरित्र में कमजोर है और असुरक्षा की ओर प्रवृत्त है।

अस्मिता की समस्या, यानी अहंकार की यह विशेषता कि वह स्वयं को अपने से ऊँचा न देख सके, वास्तव में सृजनात्मकता की समस्या है। लेकिन जब अहंकार रचनात्मक होता है, तो पहचान की समस्या समाप्त नहीं होती है, क्योंकि अहंकार तब तक अपने आप से पूरी तरह से संतुष्ट नहीं होता जब तक कि उसे अपने निचले स्व के भ्रम का एहसास नहीं हो जाता। ताकि निम्न-स्तर का अहंकार उच्च-स्तर के अहंकार के समान पहचान की समस्या का अनुभव करेगा, क्योंकि उसके और दूसरे के बीच तुलना केवल पैमाने में बदल जाएगी, लेकिन हमेशा मौजूद रहेगी, क्योंकि अहंकार हमेशा सुधार शक्ति में होता है। और वह अपने लिए जो सुधार चाहता है उसका कोई अंत नहीं है।

लेकिन आत्म-सुधार एक कंबल है जिसके नीचे अहंकार छुपा रहता है ताकि खुद को खुशी से जीने का कोई कारण मिल सके। लेकिन क्या वह नहीं जानता कि सभी सुधार पहले से ही इच्छा शरीर द्वारा उत्पन्न होते हैं?

पहचान की समस्या मनुष्य में वास्तविक बुद्धि की चेतना के अभाव से आती है। जब तक मनुष्य अपनी बुद्धि से जीवित रहता है, तब तक वह केवल संवेदी अनुभव द्वारा अपनी राय में समर्थित होता है, उसके लिए अनिर्धारित बुद्धि के एक पूर्ण मूल्य द्वारा अहंकारी अनुभव के माध्यम से जो वह सोचता है या समझता है उसे प्रतिस्थापित करना मुश्किल होता है।

जब तक मनुष्य अपनी छाप छोड़ने के लिए स्वयं को जीवन में प्रकट करने की इच्छा रखता है, तब तक वह इस इच्छा से ग्रस्त रहता है। यदि वह अपनी इच्छा को प्राप्त करने में सफल होता है, तो दूसरा उसे पीछे धकेल देगा, इत्यादि। यही कारण है कि मनुष्य में किसी भी प्रकार की हार उसके लिए पहचान का संकट बन जाती है, चाहे उसकी स्थिति कुछ भी हो, क्योंकि पहचान की समस्या सफलता की समस्या नहीं है, बल्कि विवेक की समस्या है, यानी वास्तविक बुद्धि की समस्या है। .

वह व्यक्ति जो अपने जीवन के दौरान यह खोज लेता है कि वास्तविक बुद्धिमत्ता बुद्धि पर हावी हो जाती है, वह पहले से ही पहचान की समस्या से कम पीड़ित होने लगता है, हालाँकि वह अभी भी वास्तविक रचनात्मकता की अनुपस्थिति से पीड़ित हो सकता है, जो उसे लगता है कि वह प्रकट कर सकता है। यह केवल तभी है जब उसकी पहचान जीवन के उस तरीके के अनुरूप हो जो उसे सूट करे कि उसे एहसास होगा कि रचनात्मकता असंख्य रूप ले सकती है, और यह कि प्रत्येक व्यक्ति के पास रचनात्मकता का एक रूप होता है जो उसके लिए मानसिक रूप से फिट होता है। और इस रूप से वह अपने इच्छा शरीर और अपनी रचनात्मक बुद्धि के मामले में पूर्ण सामंजस्य में रह सकता है।

रचनात्मक होने का मतलब दुनिया को बदलना नहीं है, बल्कि खुद के लिए एक आदर्श तरीके से करना है, ताकि आंतरिक दुनिया बाहरी हो जाए। दुनिया इसी तरह बदलती है: हमेशा अंदर से बाहर, विपरीत दिशा में कभी नहीं। अधिमानस को पहचान की समस्या का एहसास होने लगता है। वह देखता है कि वह जो है वह अब भी कुछ हद तक वैसा ही है जैसा वह था। लेकिन वह यह भी देखता है कि जैसे-जैसे उसके शरीर बदलते हैं, उसकी चेतना बढ़ती है और पहचान की समस्या धीरे-धीरे गायब हो जाती है, उस सतह पर जो पहले अचेतन अहंकार था।

अधिमानस में पहचान की समस्या का धीरे-धीरे उन्मूलन अंत में उसे अपना जीवन जीने की अनुमति देता है जैसा कि वह वास्तव में देखता है, और अपने बारे में बेहतर और बेहतर होने की अनुमति देता है। मनुष्य में ऐसा कुछ भी नहीं है जो पहचान से पीड़ित होने जैसा कठिन हो। क्योंकि वह वास्तव में भ्रामक रूपों से ग्रस्त है, अर्थात उन कारणों के लिए जो वह खरोंच से बनाता है, ठीक इस तथ्य के कारण कि वह बुद्धिमान नहीं है, अर्थात, उसमें रचनात्मक बुद्धि के प्रति सचेत है।

पहचान का एक पक्ष कुछ मामलों में शर्मिंदगी, दूसरों में शर्मिंदगी, बहुमत में असुरक्षा है। एक अच्छी नैतिकता का आदमी शर्म से क्यों जियेगा जब वह केवल सामाजिक विचारों के जाल में कैद उसके दिमाग पर सामाजिक प्रतिबिंब है? शर्मिंदगी के बारे में भी यही सच है जो दूसरों के बारे में सोच रहे लोगों से तुरंत छुटकारा पाने में अहंकार की अक्षमता से आता है। अगर शर्मिंदा अहंकार से छुटकारा मिल जाता है जो दूसरे सोच सकते हैं, तो उसकी शर्मिंदगी गायब हो जाएगी और वह अपनी वास्तविक पहचान को और अधिक तेज़ी से प्राप्त कर सकता है, कहने का मतलब यह है कि मन की यह स्थिति जो मनुष्य को हमेशा अपने दिन के प्रकाश में देखती है।

पहचान की समस्या मनुष्य में केन्द्रीकरण के अभाव से आती है। और यह अनुपस्थिति बुद्धि की भेदन शक्ति को कम कर देती है, जो मनुष्य को अपनी बुद्धि का, अपने उस हिस्से का गुलाम बना देती है, जो न तो मन के नियमों को जानता है और न ही मन के तंत्र को। तो वह मनुष्य, अपने अनुभव के लिए छोड़ दिया, उसकी बुद्धि में प्रकाश की कमी है और मनुष्य की प्रकृति के बारे में दूसरों की राय को स्वीकार करने के लिए मजबूर है।

यदि मनुष्य स्वयं के बारे में आश्चर्य करता है, तो यह कैसे संभव है कि कोई दूसरा मनुष्य उसे प्रबुद्ध करे, यदि यह दूसरा मनुष्य उसी स्थिति में है जो उसके समान है? लेकिन मनुष्य को इसका एहसास नहीं होता है, और घटनाओं द्वारा अहंकार पर डाले गए दबाव के कारण उसकी पहचान की समस्या बिगड़ जाती है।

मन में अहंकार निस्संदेह उसके सोचने के तरीके से फंसा हुआ है जो उसकी वास्तविक बुद्धि से समायोजित नहीं है। और सोचने का यह तरीका उसकी बुद्धि की वास्तविकता का खंडन करता है, क्योंकि यदि वह अपनी बुद्धि के वास्तविक को अपने अंतर्ज्ञान के माध्यम से देखता है, उदाहरण के लिए, वह इसकी वास्तविकता को नकारने वाला पहला व्यक्ति होगा, क्योंकि बुद्धि को अंतर्ज्ञान में विश्वास नहीं है, वह इसे अपने आप में एक तर्कहीन हिस्सा के रूप में देखता है। और चूंकि बुद्धि तर्कसंगत या कथित रूप से तर्कसंगत है, इसके विपरीत कुछ भी बुद्धि के रूप में पहचानने योग्य नहीं है। और फिर भी, अंतर्ज्ञान वास्तव में वास्तविक बुद्धि की अभिव्यक्ति है, लेकिन यह अभिव्यक्ति अभी भी अहंकार के लिए इसके महत्व और बुद्धि को समझने में सक्षम होने के लिए बहुत कमजोर है। फिर वह अपने औचित्य में वापस आ जाता है और मन के सूक्ष्म तंत्र की खोज करने का अवसर खो देता है जो उसकी पहचान की समस्या पर प्रकाश डाल सकता है।

लेकिन पहचान की समस्या मनुष्य के साथ तब तक बनी रहनी चाहिए, जब तक कि बुद्धि ने जाने नहीं दिया है और अहंकार ने आंतरिक रूप से खुद को नहीं सुना है। यदि अहंकार को उसके भीतर की वास्तविक बुद्धि की प्रकृति और रूप के प्रति संवेदनशील किया जाता है, तो वह धीरे-धीरे समायोजित होता है और उस बुद्धि में अपना अधिक से अधिक घर बनाता है। समय के साथ, वह अधिक से अधिक नियमित रूप से वहाँ जाता है, और उसकी पहचान की समस्या दूर हो जाती है, क्योंकि उसे पता चलता है कि वह जो कुछ भी अपने बारे में सोचता था, वह उसकी वास्तविक बुद्धि का एक मनोवैज्ञानिक और मानसिक विरूपण था, जो उसके तर्क की ऊँची दीवारों से परे जाने में असमर्थ था।

एक जटिल समाज में, जैसा कि हम इसे जानते हैं, केवल अहंकार की आंतरिक शक्ति, इसकी वास्तविक बुद्धि ही इसे विचारों की छाल से ऊपर उठा सकती है और इसे इसकी वास्तविक पहचान की चट्टान पर स्थापित कर सकती है। और जितना अधिक समाज विघटित होता है, उतना ही उसके पारंपरिक मूल्य उखड़ जाते हैं, उतना ही अहंकार विनाश के रास्ते पर होता है, क्योंकि उसके पास अब खड़े होने के लिए औपचारिक सामाजिक मचान नहीं रह गया है, आधुनिक की तेजी से विस्मयकारी घटना के सामने ज़िंदगी।

लेकिन अहंकार हमेशा उन लोगों को सुनने के लिए तैयार नहीं होता है जो इसे अपने स्वयं के रहस्य को समझने की आवश्यक कुंजी दे सकते हैं। क्योंकि उसकी मनोवैज्ञानिक विकृति पहले से ही उसे हर उस चीज़ पर सवाल उठाने के लिए प्रेरित करती है जो उसके व्यक्तिपरक सोचने के तरीके के अनुरूप नहीं है। इसलिए अहंकार को आगे देखने से इनकार करने के लिए बहुत अधिक दोष नहीं दिया जा सकता है, लेकिन यह महसूस किया जा सकता है कि यद्यपि वह आज आगे नहीं देख सकता है, कल उसकी दृष्टि उसमें ऊर्जा के प्रवेश की डिग्री के अनुसार चौड़ी हो जाएगी।

क्योंकि वास्तव में, यह अहंकार नहीं है जो अपने स्वयं के प्रयासों से अपनी पहचान की दीवार को पार करता है, बल्कि आत्मा जो इसे पीड़ा से लाती है, अर्थात इसके प्रकाश के प्रवेश से, रजिस्टर करने के लिए, बुद्धि से परे, स्पंदन बुद्धि का। और यह कंपन का झटका अंत की शुरुआत बन जाता है।

अहंकार हैं जो वास्तविकता के लिए खुलते हैं, क्योंकि एक प्रकार की विनम्रता पहले से ही उन्हें अपने स्वयं के प्रकाश के लिए पूर्ववत करती है। दूसरी ओर, इस प्रकाश को, इस महीन धागे को पार करने के लिए बहुत अहंकारी हैं। और यह वे अहं हैं जो बड़े मोड़, बड़े झटके के लिए सबसे अधिक प्रवण हैं जो उन्हें खटखटाते हैं और उन्हें अधिक यथार्थवादी बनाते हैं।

पहचान के संकट की पहचान मनुष्य की अपरिपक्वता से की जाती है। सच्ची पहचान सच्ची परिपक्वता के विकास को दर्शाती है।

आत्मा अपने कार्यों में अहंकार से स्वतंत्र है, और बाद वाले के पास अच्छा खेल है, जब तक कि वह खुद को घर पर महसूस नहीं करता। यह वह क्षण है जिसे अहंकार नहीं जानता। और जब वह दिखाई देता है, तो उसे पता चलता है कि उसका अहंकार, उसका अभिमान, अपने आप में उसका मोह, अपने विचारों के साथ, दबाव में अंडे की तरह फूट गया।

आत्मा की पीड़ा के अपने कारण हैं जिन्हें अहंकार पहले नहीं समझ सकता, लेकिन जिसे वह जीने में भी मदद नहीं कर सकता। आत्मा ही काम करती है। यह उसके लिए एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाने का समय है। पहचान की समस्या, जिसे उसने शुरुआत में अनुभव किया था, खुद को पुन: पेश करती है, और उसका गौरव बच्चों के खेल की तरह ढह जाता है। अहंकार कम या ज्यादा गर्वित है, यह सब असुरक्षा के नीचे आता है। अक्सर व्यक्ति तथाकथित " ठोस", "मजबूत" अहं का सामना करता है , जिनके लिए यथार्थ शुद्ध कल्पना है; यह ये अहं हैं जो उनकी पहचान पर सबसे अधिक प्रभाव डालते हैं, जब आत्मा जीवन की घटनाओं के दबाव में मानसिक और भावनात्मक रूप से कंपन करती है, जिसे अहंकार अब नियंत्रित नहीं कर सकता है।

यह इन कठिन अनुभवों के दौरान है कि अहंकार अपनी कमजोरी के सच्चे प्रकाश में खुद को देखना शुरू कर देता है। वहाँ वह देखता है कि उसकी झूठी पहचान की सुरक्षा, जहाँ उसकी बुद्धि का अभिमान प्रबल था, प्रकाश के स्पंदनात्मक दबाव में फट जाता है। तब उसके बारे में कहा जाता है कि वह बदल रहा है, कि वह अब वैसा नहीं है या वह पीड़ित है। और यह केवल शुरुआत है, क्योंकि जब आत्मा झूठी पहचान की दीवारों को फोड़ने लगती है, तो वह अपना काम नहीं छोड़ती। मनुष्य में चेतना के अवतरण का समय आ गया है, बुद्धि का, सच्ची इच्छा और प्रेम का।

अहंकार, जो अपनी झूठी पहचान से मजबूत महसूस करता है, कंपन के झटके महसूस होने पर ईख की तरह कमजोर महसूस करता है। और यह केवल बाद में होता है कि वह अपनी शक्तियों, आत्मा की शक्तियों को पुनः प्राप्त करता है, न कि अपने इच्छा शरीर की झूठी शक्ति को, उस रूप पर जो भावना और निम्न मन का पोषण करता है।

मनुष्य में पहचान का संकट आत्मा के प्रकाश के अहंकार के प्रतिरोध से मेल खाता है। इस पत्राचार में अहंकार के जीवन में इस प्रतिरोध के समानुपातिक पीड़ा शामिल है। और सभी प्रतिरोध पंजीकृत हैं, हालांकि यह अहंकार द्वारा मनोवैज्ञानिक या प्रतीकात्मक या दार्शनिक रूप से माना जाता है। क्योंकि आत्मा के लिए मनुष्य में सब कुछ ऊर्जा है, लेकिन मनुष्य के लिए सब कुछ प्रतीक है। यही कारण है कि मनुष्य को यह देखना इतना कठिन लगता है, क्योंकि इन रूपों से मुक्त होने के बाद वह जो देखेगा, वह कंपन के माध्यम से होगा, न कि रूप के प्रतीक के माध्यम से। यही कारण है कि यह कहा जाता है कि वास्तविक को रूप से नहीं समझा जाता है, बल्कि कंपन द्वारा जाना जाता है जो खुद को अभिव्यक्त करने के लिए रूप उत्पन्न करता है और बनाता है।

पहचान की समस्या हमेशा प्रतीकवाद के अधिशेष का आह्वान करती है, जो कि मनुष्य में व्यक्तिपरक विचार-रूपों का कहना है। यह अधिशेष, किसी भी समय, आत्मा के विचार-रूप प्रतीक के माध्यम से अहंकार से संपर्क करने के प्रयास के साथ मेल खाता है, क्योंकि यह अहंकार को विकसित करने का एकमात्र साधन है। मन के अंदर।

अहंकार गहरे कारणों को समझे बिना महसूस करता है कि वह स्वयं को स्वयं के सामने स्थित करना चाहता है। लेकिन जैसा कि वह अभी भी अपने विचार-रूपों, अपनी भावनाओं का कैदी है, वह अपने आप को अपने आंदोलन में, अपने आंदोलन में विश्वास करता है! कहने का तात्पर्य यह है कि उनका मानना है कि यह शोध-प्रक्रिया उनसे ही उत्पन्न होती है। और यही इसकी दुखती रग है, क्योंकि अहंकार सही और गलत के भ्रम में है, स्वतंत्र इच्छा के भ्रम में है।

जब आत्मा की ऊर्जा प्रवेश करती है और झूठी पहचान की बाधा को तोड़ती है, तब अहंकार को पता चलता है कि अब बात उसके सही होने की नहीं है, बल्कि उसकी वास्तविक बुद्धि तक पहुँचने की है। तब वह समझने लगता है। और वह जो समझता है वह उन लोगों द्वारा नहीं समझा जाता है जो एक ही बुद्धि में नहीं हैं, चाहे उनकी अच्छी इच्छा हो। क्योंकि सब कुछ प्रतीक के बाहर है, सब कुछ **स्पंदनात्मक है** ।

पहचान की समस्या अकल्पनीय है जब अहंकार और आत्मा एक दूसरे के साथ तालमेल बिठाते हैं, क्योंकि अहंकार अब वास्तविकता के "आवरण " *(आवरण)* को अपनी तरफ से नहीं खींचता है, जबकि आत्मा दूसरे पर काम करती है। दोनों के बीच पत्राचार है, और व्यक्तित्व लाभार्थी है। क्योंकि व्यक्तित्व हमेशा आत्मा और अहंकार के बीच की खाई का शिकार होता है।

जब तक मनुष्य में पहचान की समस्या है, तब तक वह सुखी नहीं हो सकता। क्योंकि उसके जीवन में विभाजन है, भले ही सतही तौर पर उसका भौतिक जीवन अच्छा चल रहा हो। यह केवल स्वयं की एकता के अनुपात में ही वास्तव में अच्छा चल सकता है।

आधुनिक मनुष्य में पहचान का संकट केवल उन लोगों को लाभकारी रूप से प्रभावित करता है, जो पहले से ही उनमें संतुलन की बड़ी इच्छा पैदा करने के लिए पर्याप्त असफलताओं का सामना कर चुके हैं। लेकिन संतुलन की यह इच्छा तभी पूरी तरह से महसूस की जा सकती है जब अहंकार ने आत्मा की सूक्ष्म ऊर्जा में हेरफेर करने के लिए यातना के अपने उपकरणों को अलग कर दिया हो। मानव जीवन के क्षेत्र में जहां महान आध्यात्मिकता है, पहचान का संकट उतना ही तीव्र हो सकता है, यदि अधिक नहीं, जहां किसी को इस आंतरिक चीज के प्रति अहंकार की इस महान संवेदनशीलता का सामना नहीं करना पड़ता है, जो उसे एक आध्यात्मिकता की ओर अनिवार्य रूप से धकेलता है जो तेजी से बढ़ रहा है। बड़ा, अधिक से अधिक मांगा जाने वाला और अंततः अधिक से अधिक अपूर्ण।

जो मानवता की इस श्रेणी के हैं उन्हें यह देखना होगा कि सभी रूप, यहाँ तक कि उच्चतम, सबसे सुंदर, आत्मा के असली चेहरे को ढक देते हैं, क्योंकि आत्मा अहंकार के स्तर की नहीं है; यह असीम रूप से देखता है, और जब अहंकार रूप, यहां तक कि आध्यात्मिक रूप से अत्यधिक जुड़ा होता है, तो यह ब्रह्मांडीय ऊर्जा के साथ हस्तक्षेप करता है जो आत्मा के माध्यम से गुजरना चाहिए और आत्मा के सभी निचले सिद्धांतों की स्पंदन दर को बढ़ाता है। जीवन के स्वामी बन सकते हैं। जब अतिमानसिक (उच्चतर मानसिक) मनुष्य जीवन का स्वामी होता है, तो उसे आध्यात्मिक रूप से आत्मा के स्तर पर खींचे जाने की आवश्यकता नहीं रह जाती, क्योंकि यह आत्मा है, उसकी ऊर्जा, जो उसकी ओर उतरती है, और उसे अपनी प्रकाश की शक्ति संचारित करती है .

आत्मा के ऊर्जा रूप के माध्यम से मनुष्य की आध्यात्मिक पहचान उसके भीतर एक उपस्थिति है। लेकिन इस ऊर्जा में रूपांतरण की शक्ति नहीं है, हालांकि इसमें व्यक्तित्व पर परिवर्तन की शक्ति है।

लेकिन केवल व्यक्तित्व का परिवर्तन ही काफी नहीं है, क्योंकि यह मनुष्य का अंतिम पहलू है। और जब तक आत्मा के साथ अहंकार भी एक नहीं हो जाता, तब तक आध्यात्मिक व्यक्तित्व आसानी से मनुष्य को उसकी नैतिकता के तेजी से रूपांतरण में ले जा सकता है, इस हद तक कि मन और आत्मा के भावनात्मक संतुलन में कोई भी कमी उसे आगे बढ़ा सकती है आध्यात्मिकता, धार्मिक कट्टरता का तीव्र संकट।

इस प्रकार घोर आध्यात्मिक मनुष्य भी अपना और समाज का अहित कर सकता है। कट्टरता के लिए एक आध्यात्मिक बीमारी है, और जो लोग इससे पीड़ित हैं, वे आसानी से, आध्यात्मिक रूप के अपने विशेष शोषण के कारण, दूसरों में इतना मजबूत आकर्षण पैदा कर सकते हैं कि उन्हें महान विश्वासी बना सकें, यानी, फॉर्म के नए दास, धर्मांधता द्वारा उस आधार पर उठाया गया जिसे केवल आध्यात्मिक रूप से बीमार ही धारण कर सकता है, यदि उसे उन लोगों के विनम्र विश्वास से सहायता मिलती है जो उसके जैसे अज्ञानी हैं, लेकिन बीमारी के इस रूप के प्रति अधिक असंवेदनशील हैं।

अधिक से अधिक पुरुष, कट्टर रूप से आध्यात्मिक हुए बिना, उनकी आध्यात्मिकता से बहुत प्रभावित हो जाते हैं और इसकी सीमा, यानी रूप के भ्रम को नहीं जानते हैं। जल्दी या बाद में वे अतीत में देखते हैं और महसूस करते हैं कि वे अपनी आध्यात्मिकता के भ्रम के शिकार हो गए हैं। इसलिए वे अपने आप को एक और आध्यात्मिक रूप में फेंक देते हैं, और यह सर्कस कई वर्षों तक जारी रह सकता है, जब तक कि भ्रम से निराश होकर वे इससे हमेशा के लिए बाहर आ जाते हैं, और महसूस करते हैं कि चेतना रूप से परे है। इनके पास रूप की सीमाओं से परे जाने और अंत में उच्च मन के महान नियमों की खोज करने का अवसर है।

इस समय उनके लिए आध्यात्मिक पहचान का संकट संभव नहीं है। क्योंकि वे जानते हैं, अपने स्वयं के अनुभव से, कि सब कुछ अहंकार के विरुद्ध आत्मा के अनुभव की सेवा करता है, उस दिन तक जब तक कि अहंकार अपने में केवल अतिमानसिक चेतना (उच्च मन) को जानने के लिए अनुभव की आवश्यकता को छोड़ देता है।

आध्यात्मिक पहचान का संकट तेजी से आधुनिक समय का संकट बनता जा रहा है। क्योंकि मनुष्य अब केवल तकनीक और विज्ञान पर नहीं जी सकता। उसे अपने करीब कुछ और चाहिए, और विज्ञान उसे यह नहीं दे सकता। लेकिन न तो रूढ़िवादी धर्म का पुराना रूप। इसलिए वह अपने आप को आध्यात्मिक या गूढ़-आध्यात्मिक कारनामों के असंख्य में फेंक देता है, जिसे वह ढूंढ रहा है, या जो वह खोजना चाहता है, उसे खोजने के दृढ़ इरादे के साथ, और वह ठीक से नहीं जानता। तो, उनका अनुभव उन्हें सभी संप्रदायों, सभी दार्शनिक या गूढ़ विद्यालयों की सीमाओं में लाता है, और यहां फिर से पता चलता है, अगर वह औसत से अधिक बुद्धिमान है, तो वह सीमाएं हैं जहां वह उत्तर खोजने के लिए विश्वास करता था।

वह अंत में खुद को अकेला पाता है, और उसकी आध्यात्मिक पहचान का संकट अधिक से अधिक असहनीय हो जाता है। उस दिन तक जब उसे पता चलता है कि उसमें सब कुछ बुद्धि, इच्छा और प्रेम है, लेकिन वह अभी तक उनके कानूनों के बारे में पर्याप्त नहीं जानता है जो उस तंत्र की खोज करता है जो उस आदमी की आंखों में छिपा हुआ है जो खोज रहा है। उसने क्या आश्चर्य देखा! जब उसे पता चलता है कि वह अपने संकट के दौरान जो खोज रहा था, वह उसके भीतर की आत्मा का एक तंत्र था, जिसने उसे खुद को जगाने के लिए आगे बढ़ने का काम किया, यानी उसके लिए।

और जब यह चरण अंत में शुरू हो जाता है, मनुष्य, मनुष्य का अहंकार, निराशा करता है और अपने भीतर की अतिमानसिक बुद्धि (उच्च दिमाग) की प्रकृति को समझना शुरू कर देता है जो जागता है, और उसे उन सभी पुरुषों के भ्रम को पहचानता है जो खुद को बाहर खोजते हैं, साथ में दुनिया में सबसे अच्छे इरादे, और जिन्होंने अभी तक यह महसूस नहीं किया है कि यह पूरी प्रक्रिया आत्मा के अनुभव का हिस्सा है जो अहंकार का उपयोग करके उसे उसके साथ कंपन संपर्क में आने के लिए तैयार करती है।

मनुष्य अब अपने होने की वास्तविकता के संपर्क में नहीं है। और यह संपर्क का टूटना ग्लोब पर इतना व्यापक है, कि यह पृथ्वी पागलों से भरे एक जहाज का प्रतिनिधित्व करती है जो नहीं जानते कि जहाज कहाँ जा रहा है। वे अनदेखी ताकतों के नेतृत्व में हैं, और किसी को भी इन ताकतों की उत्पत्ति का कोई अंदाजा नहीं है, न ही उनके इरादों का। मनुष्य अदृश्य से इतनी सदियों तक अलग रहा कि उसने वास्तविकता की धारणा को पूरी तरह खो दिया। और चेतना का यह नुकसान ही वह कारण है जिसके पीछे उसकी अस्तित्वगत समस्या की दीवार खड़ी हो जाती है: पहचान। और फिर भी समाधान उसके इतने निकट है, और साथ ही साथ बहुत दूर भी है। यदि केवल वह जानता था कि वह कैसे सुनना है जो वह सुनना नहीं चाहता।

शब्दों का युद्ध और विचारों का युद्ध ही उनके पास बचा है। मनुष्य क्या आत्मनिर्भर हो सकता है, यदि वह यह न समझे कि उसका एक भाग महान है, जबकि दूसरा उसकी इंद्रियों द्वारा सीमित है, और यह कि दोनों एक साथ आ सकते हैं? यदि मनुष्य एक दिन यह जान सके कि उसके बाहर कोई उसके लिए नहीं कर सकता, और वह केवल स्वयं अपने लिए कर सकता है... लेकिन वह अपने लिए जीने से डरता है, क्योंकि वह डरता है कि दूसरे उसके बारे में क्या कहेंगे... वह जितना गरीब है!

पुरुष ऐसे प्राणी हैं जो लगातार भ्रम के खिलाफ लड़ाई हार जाते हैं, क्योंकि वे ही हैं जो इसे जीवित और शक्तिशाली रखते हैं। हर कोई उन्हें नष्ट करने से डरता है जो उन्हें नुकसान पहुंचाता है। एक वास्तविक दुःस्वप्न! और सबसे बुरा अभी आना बाकी है! क्योंकि XX वीं शताब्दी का मनुष्य अपनी ओर उन प्राणियों को उतरता हुआ देखेगा जो सितारों के बीच विचरण करते हैं, और जो पहले उसके लिए देवता थे।

ग्रहों के पैमाने पर व्यक्तिगत पहचान की समस्या जारी है। जैसा कि यह समस्या निचले मन और उच्च मन के बीच संबंध की कमी से उत्पन्न होती है, इसका प्रभाव विश्व स्तर पर और व्यक्तिगत स्तर पर महसूस किया जाता है, क्योंकि केवल उच्च मन ही मनुष्य को उसके ग्रह के महान रहस्यों की व्याख्या कर सकता है। इसके प्राचीन देवता। जब तक ये देवता प्राचीन इतिहास का हिस्सा हैं, तब तक मनुष्य इनसे परेशान नहीं है। लेकिन जब वही प्राणी वापस लौटते हैं और आधुनिक प्रकाश में खुद को प्रकट करते हैं, तो वैश्विक स्तर पर झटका लगता है, और वह आदमी जिसने अपनी वास्तविक पहचान की खोज नहीं की है, वह खुद को अपनी झूठी पहचान - और वह क्या सोचता है और विश्वास करता है - और के बीच पकड़ा हुआ पाता है। चक्रीय घटना।

यदि उसका मन अनुभव करने के लिए खुला है और वह अपने भीतर वास्तविक बुद्धिमत्ता प्राप्त करता है, तो किसी ग्रह के लिए सबसे परेशान करने वाली घटनाओं में से एक के बारे में आवश्यक जानकारी जिसे वह नहीं जानता है और नहीं जानता है, मनुष्य को ग्रहों की पहचान के संकट का अनुभव नहीं होता है, क्योंकि उसके पास है पहले से ही अपने भीतर व्यक्तिगत पहचान के संकट को हल कर लिया।

चूंकि मानवता इतिहास और जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ की ओर तेजी से आगे बढ़ रही है, व्यक्तित्व, यानी मनुष्य और ब्रह्मांड के बीच तेजी से पूर्ण संबंध स्थापित किया जाना चाहिए क्योंकि यह वास्तविक व्यक्तित्व से है कि वह कंपन जो मनुष्य में पाता है अपनी असली पहचान प्रकट की है। और जब तक यह वास्तविक पहचान स्थिर नहीं होती है, व्यक्तित्व पूरी तरह से पूरा नहीं होता है, और कोई यह नहीं कह सकता है कि मनुष्य " परिपक्व" है , अर्थात किसी भी व्यक्तिगत या विश्व घटना में परेशान हुए बिना सामना करने में सक्षम है, क्योंकि वह पहले से ही इसके बारे में जानता है यह और वह इसका कारण जानता है।

जब हम आम तौर पर पहचान के संकट के बारे में बात करते हैं, तो हम इसके बारे में मनोवैज्ञानिक तरीके से बात कर रहे होते हैं, इस अर्थ में कि हम मनुष्य और समाज के बीच संबंधों को परिभाषित करने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन पहचान का संकट इससे कहीं अधिक गहरा है। यह अब सामाजिक व्यक्ति नहीं है जो मापने की छड़ी बन जाता है, वह सामान्यता जिसे हमें प्राप्त करना चाहिए। इसके विपरीत, सामान्यता को स्थानान्तरित किया जाना चाहिए, अर्थात स्वयं की तुलना में पुनर्स्थित होना चाहिए।

जब मनुष्य को यह एहसास होने लगता है कि उसकी वास्तविक पहचान कोष्ठकों में सामान्य मनुष्य की सामान्य पहचान से ऊपर है, तो उसे दो बातों का एहसास होता है। सबसे पहले, जो सामान्य मनुष्य को चिंतित करता है वह अब उसकी चिंता नहीं करता है; और यह कि जो कुछ भी असामान्य ग्रह को पैरेन्टेटिक रूप से धक्का देता है, वह सामान्य है। फिर इस दृष्टिकोण से देखी जाने वाली वास्तविक पहचान की घटना अधिक से अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यह निर्धारित करती है कि कौन सा मनुष्य सामान्य या अचेतन मनुष्य की सामान्य कमजोरियों को दूर कर सकता है, और इसके अलावा, यह निर्धारित करता है कि जो मनुष्य नहीं करता वह अधिक सामान्य है - कि कहने का तात्पर्य यह है कि अचेतन और अपेक्षाकृत संतुलित मनुष्य की सीमा तक - एक ग्रह व्यवस्था के दबावों का समर्थन कर सकता है जो एक सामान्य प्राणी को परेशान करने और एक ऐसे व्यक्ति को जन्म देने वाली संस्कृति के पतन का कारण बनता है।

एक आदमी जिसने अपनी वास्तविक पहचान की खोज की है वह निर्विवाद रूप से मनोवैज्ञानिक अनुभवों के सभी रूपों से ऊपर है जो एक ऐसे व्यक्ति को परेशान करने का जोखिम उठाते हैं जो काफी सरलता से अपनी संस्कृति का उत्पाद है, और जो केवल अपनी संस्कृति के मूल्यों से जीता है। क्योंकि वास्तव में, एक संस्कृति एक बहुत ही पतली और बहुत ही नाजुक कैनवास है जब बाहरी घटनाएं इसे परेशान करने के लिए आती हैं, यानी इसे वास्तविकता के संबंध में इसे फिर से परिभाषित करने के लिए, या यह पूरी तरह से अनजान है। मनुष्य में अनसुलझी पहचान की घटना का यही खतरा है।

क्योंकि अगर उसे अपनी वास्तविक पहचान का पता नहीं चलता है, तो वह भावनात्मक और मानसिक रूप से सामाजिक मनोविज्ञान और उसकी स्वाभाविक प्रतिक्रियाओं का गुलाम होगा, जब अंत-चक्र की घटनाएं उसके विकास के सामान्य पाठ्यक्रम को बाधित करती हैं। यह यहाँ है कि मनुष्य को सामाजिक-व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं से मुक्त होना चाहिए, ताकि सार्वभौमिक समझ के एक तरीके के अनुसार अनुभव को जीने में सक्षम हो सके। केवल वास्तविक पहचान ही वास्तविक मनुष्य और वास्तविक बुद्धि से मेल खाती है। केवल वास्तविक पहचान ही बिना किसी कठिनाई के ब्रह्मांडीय घटनाओं की व्याख्या कर सकती है, एक ऐसी बुद्धि के अनुसार जो मनुष्य की सीमित भावनाओं से अलग है।

मनुष्य में पहचान के संकट की समस्या एक साधारण मनोवैज्ञानिक समस्या से कहीं अधिक जीवन की समस्या है। मनुष्य स्वयं की खोज में जिन मनोवैज्ञानिक श्रेणियों को समझने की कोशिश करता है, वे अब उन लोगों के लिए उपयुक्त नहीं हैं जो अपनी वास्तविक पहचान की खोज करते हैं, क्योंकि जीवन में उनकी अब वैसी रुचि नहीं है, जैसी तब थी जब वे स्वयं के साथ संघर्ष कर रहे थे। उसकी वास्तविक पहचान उसके होने के हर कोने को भर देती है, वह खुद को एक ऐसे आत्म के साथ सामना करता है जो उसके दिमाग, आयाम या ऊर्जा के दूसरे आयाम में दर्ज है जो नकल से संबद्ध नहीं है क्योंकि वह मनोवैज्ञानिक श्रेणियों से पूरी तरह से स्वतंत्र है वास्तविक पहचान के बिना अचेतन मनुष्य की भावनात्मक और मानसिक संरचनाएँ।

पहचान के संकट की घटना मनुष्य के लिए एक पीड़ा है, क्योंकि वह कभी भी अपने आप में पूरी तरह से खुश नहीं हो सकता है, जिसे वह लगातार खोजता है। उसके लिए खुश रहना एक ऐसा अनुभव है जिसे वह हमेशा के लिए जीना चाहता है। लेकिन उसे इस बात का एहसास नहीं है कि जिसे वह " खुश" कहता है , उसे होने के लिए आपको अपने बारे में अच्छा महसूस करना होगा, यानी बाहरी दुनिया के इस सद्भाव को बिगाड़ने में सक्षम हुए बिना पूर्ण आंतरिक सद्भाव में महसूस करने में सक्षम होना चाहिए। उसे इस बात का अहसास नहीं होता है कि जीवन अपने आप में तब तक अविभाज्य है जब तक कि उसके पास उस पृष्ठभूमि को भेदने की आंतरिक शक्ति न हो जो उसे उसका रंग देती है।

एक आदमी जिसने अपनी वास्तविक पहचान खोज ली है, अब वह पहले जैसा जीवन नहीं जीता है। रंग बदल गए हैं, जीवन में अब वह आकर्षण नहीं रह गया है, वह हर स्तर पर अलग है। क्योंकि यह अन्य पिछले जीवन से इस तथ्य से अलग है कि यह वास्तविक व्यक्ति है जो इसकी संभावनाओं को निर्धारित करता है, न कि बाद वाले को उस संस्कृति द्वारा स्पष्ट रूप से लगाया जाता है जिसमें वह निहित है।

जिस व्यक्ति ने अपनी पहचान खोज ली है उसका जीवन एक निरंतरता का प्रतिनिधित्व करता है जो समय में खो गया है और जिसकी अब कोई सीमा नहीं है, यानी अंत है। पहले से ही, यह अहसास जीवन के तरीके और जीवन के रचनात्मक तरीके में हस्तक्षेप करता है। जब तक मनुष्य पहचान से ग्रस्त है, जब तक उसका अपने भीतर की वास्तविक बुद्धि से कोई संपर्क नहीं है, तब तक वह केवल अपनी जरूरतों को पूरा कर सकता है। जब वह प्रकाश में होता है, तो उसे अब खुद का समर्थन नहीं करना पड़ता है, क्योंकि वह पहले से ही कंपन से, अपने जीवन की विधा को जानता है, और यह ज्ञान उसे अपनी आवश्यकताओं के लिए आवश्यक रचनात्मक ऊर्जा उत्पन्न करने में सक्षम बनाता है। उत्तरजीविता की मनोवैज्ञानिक श्रेणी केवल एक रचनात्मक ऊर्जा के लिए जगह छोड़ती है जो मनुष्य के सभी संसाधनों को नियोजित करती है और उन्हें उसकी भलाई के निपटान में रखती है।

मनुष्य को अपनी पहचान की समस्या को दूर करने के लिए, मनोवैज्ञानिक तल से शुद्ध बुद्धि के तल तक मूल्यों का विस्थापन उसके भीतर होना चाहिए। जबकि मनोवैज्ञानिक मूल्य उसके संकट में योगदान करते हैं, क्योंकि वे उसकी इंद्रियों तक सीमित हैं, उसकी बुद्धि के लिए जो संवेदी सामग्री की व्याख्या करती है, उसे एक मापने वाली छड़ी की आवश्यकता होती है जो उसकी बुद्धि के अनुमोदन के अधीन नहीं है।

यहीं पर पहली बार उसमें किसी ऐसी चीज के प्रति एक तरह का विरोध पैदा होता है, जो उसके अंदर घुस जाती है और जिसे वह उसकी गति में नहीं रोक सकता। जब आंदोलन शुरू किया जाता है, तो यह इस बुद्धि का प्रकाश होता है जो अपने अहंकार और उसके चिमेरों से स्वतंत्र होता है। यह यहां है कि मूल्यों के विस्थापन को महसूस किया जाना शुरू हो जाता है जिसके परिणामस्वरूप एक आंतरिक पीड़ा होती है, जो कि जागने वाले व्यक्ति द्वारा जीने के अनुसार प्रकाश की बुद्धि को भेदने के लिए पर्याप्त है।

मूल्यों में बदलाव केवल धीरे-धीरे किया जाता है, ताकि अहंकार को एक निश्चित संतुलन बनाए रखने की अनुमति मिल सके। लेकिन समय के साथ, एक नया संतुलन बनता है और सामाजिक रूप से अहंकार सामान्य नहीं रह जाता है; वह होश में है। कहने का तात्पर्य यह है कि वह रूप और मानक के भ्रम के माध्यम से देखता है, और अपने सूक्ष्म शरीरों के कंपन को बढ़ाने के लिए अधिक से अधिक व्यक्तिगत हो जाता है, जिस स्तर पर उसका व्यक्तित्व आधारित होगा और उसकी वास्तविक पहचान होगी।

मूल्यों का विस्थापन वास्तव में मूल्यों का पतन है, लेकिन हम इसे "विस्थापन" कहते हैं, क्योंकि जो परिवर्तन होते हैं वे एक स्पंदनात्मक बल के अनुरूप होते हैं जो देखने के तरीके को बदल देता है, ताकि सोचने का तरीका बुद्धि को समायोजित कर सके मनुष्य में एक उच्च केंद्र का। जब तक अहंकार कंपन द्वारा इस पतन को नहीं देखता है, तब तक वह विचारों की श्रेणियों, प्रतीकों की चर्चा करता रहता है, जो उसकी झूठी पहचान की दीवारों का निर्माण करता है। लेकिन जैसे ही ये दीवारें कमजोर होने लगती हैं, मूल्यों का विस्थापन एक गहन परिवर्तन के अनुरूप होता है, जिसे अहंकार द्वारा युक्तिसंगत नहीं बनाया जा सकता है। और उसके द्वारा तर्कसंगत नहीं होने के कारण, वह अंततः प्रकाश से टकरा जाता है, अर्थात, वह अंततः स्थायी और बढ़ते हुए तरीके से उससे जुड़ जाता है।

उसका जीवन, फिर, चक्र द्वारा बदल जाता है और जल्द ही, वह अब इसे सीमाओं में नहीं बल्कि संभावनाओं में जीता है। उसकी व्यक्तिपरक इच्छाओं के संबंध में परिभाषित होने के बजाय, उसकी पहचान उसके संबंध में तेजी से परिभाषित होती है। और वह महसूस करना शुरू कर देता है कि " वास्तविक और वस्तुगत आत्म" का क्या अर्थ है ।

जब वह वास्तविक और वस्तुनिष्ठ आत्मा को महसूस करता है, तो वह बहुत स्पष्ट रूप से देखता है कि यह आत्मा स्वयं ही है, साथ ही अपने भीतर कुछ और है जिसे वह नहीं देखता है, लेकिन जिसे वह वहां मौजूद महसूस करता है, कुछ उसके अंदर चला जाता है। कुछ बुद्धिमान, स्थायी और लगातार मौजूद। कुछ ऐसा जो अपनी आँखों से देखता है, और दुनिया की व्याख्या करता है, न कि जैसा कि अहंकार ने पहले देखा था।

अब हम यह नहीं कहते हैं कि यह मनुष्य " मानसिक" है, हम कहते हैं कि वह " अतिमानसिक (उच्च मानसिक)" है , अर्थात उसे जानने के लिए अब सोचने की आवश्यकता नहीं है। पहचान से पीड़ित होना उससे, उसके अनुभव से इतना दूर है कि जब वह पीछे मुड़कर अपने अतीत को देखता है और देखता है कि वह अब क्या है और जो वह था, उसकी तुलना करता है तो वह हैरान रह जाता है।

अध्याय दो

डाउनवर्ड इवोल्यूशन एंड अपवर्ड इवोल्यूशन बीडीएम-आरजी *#62* ए *(*संशोधित*)*

ठीक है, इसलिए मैं मनुष्य के विकास को अलग करता हूं, मैं उसे नीचे की ओर वक्र और ऊपर की ओर वक्र ठीक देता हूं। ? नीचे की वक्र को मैं "निवेश" कहता हूं, ऊपरी वक्र को मैं विकास कहता हूं। और आज मनुष्य इन वक्रों के मिलन बिंदु पर है। चलिए एक तारीख डालते हैं: 1969 अगर आप चाहें तो। यदि हम विकासवाद को देखें - डार्विनवादी दृष्टिकोण से नहीं - बल्कि एक मनोगत दृष्टिकोण से, दूसरे शब्दों में मनुष्य के आंतरिक शोधों के अनुसार और यदि हम समय में पीछे जाते हैं, तो हम बारह हजार साल पहले के पतन का पता लगा सकते हैं। एक महान सभ्यता जिसे अटलांटिस का नाम दिया गया था।

तो मनुष्य मानसिक तल पर अभ्यास करने में सक्षम होने के लिए पूरी तरह से स्वतंत्र होगा, सार्वभौमिक चेतना के अंततः अनंत विषयों की अभिव्यक्ति, विस्तार और परिभाषा जो दुनिया में सभी जातियों का हिस्सा हैं, जो हिस्सा हैं ब्रह्मांड में सभी जातियों के, और जो वास्तव में आत्मा की अपरिवर्तनीय एकता का हिस्सा हैं, इसकी पूर्ण परिभाषा में, प्रकाश के मूल स्रोत और ब्रह्मांड में इसकी गति के रूप में।

तो मानवता के विकास में एक बिंदु आएगा जब अंत में अहंकार स्वयं की चेतना पर खोए हुए समय के लिए बना होगा, और जहां स्वयं अपनी मनोवैज्ञानिक परिभाषा की संभावित सीमाओं तक पहुंच जाएगा, अपनी चेतना में प्रवेश करके उसके शुद्ध मन की रचनात्मक क्षमता, अर्थात् उसकी आत्मा की।

और हम पृथ्वी पर, अलग-अलग जातियों में, अलग-अलग देशों में, अलग-अलग समय में ऐसे व्यक्तियों की खोज करेंगे, जो विलय को जानेंगे, यानी, जो ज्ञान के इतने महान स्रोतों की ओर आकर्षित होने के लिए तत्काल सक्षम होंगे, कि प्रौद्योगिकी, तकनीक, चिकित्सा, मनोविज्ञान या इतिहास के मामले में विश्व विज्ञान को पूरी तरह से उखाड़ फेंका जाएगा। किसलिए ? क्योंकि मनुष्य के विकास के बाद से पहली बार, पदार्थ में आत्मा के अवतरण के बाद से पहली बार और भौतिक के साथ आत्मा के गठबंधन के बाद से पहली बार, मनुष्य अंततः अपने पूर्ण ज्ञान को धारण करने की क्षमता प्राप्त कर चुका होगा। .

जिसे मैं पूर्ण ज्ञान कहता हूं वह मानव मन की अपनी स्वयं की रोशनी को सहन करने और अवशोषित करने में सक्षम होने की क्षमता है। पूर्ण ज्ञान एक संकाय नहीं है। पूर्ण ज्ञान पूर्वनियति नहीं है। पूर्ण ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। पूर्ण ज्ञान एक सुधारात्मक विकासवादी अंत है, जो ब्रह्मांड में प्रकाश की गतिविधि के महान क्षेत्र का हिस्सा है और जो सभी क्षेत्रों, सभी बुद्धिमान उदाहरणों को सक्षम बनाता है, अर्थात - ब्रह्मांड में सभी बुद्धिमान प्रजातियों को एक पर मिलने के लिए कहने के लिए उच्च मानसिक तल, यानी ऊर्जा के एक तल पर जो पर्याप्त रूप से विकास के दौरान अनुमति देने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है, ईथरिक शरीर के अपरिहार्य पुनरुत्थान के लिए शरीर की सामग्री का अंतिम रूप से गायब होना।

कहने का मतलब यह है कि गति और समझ में मनुष्य में अंतत: विभिन्न सूर्यों के साथ एक ऊर्जावान घटक में प्रवेश करने की क्षमता है जो सार्वभौमिक जीव बनाते हैं, और जो इसकी आत्मा, इसकी रोशनी और इसकी नींव हैं। परमाणु चेतना को बुलाओ! तो विकास के दौरान एक ऐसा बिंदु आएगा जहां मनुष्य बिना सोचे-समझे सक्षम हो जाएगा, बिना सोचने की आवश्यकता के, मनुष्य अंतत: पृथ्वी पर सार्वभौमिक चेतना के विकासवादी आद्यरूपों और विकासवादियों के मानसिक निर्माण में एक स्पष्ट तरीके से हस्तक्षेप करने में सक्षम होगा। . इसका मतलब यह है कि मनुष्य अंततः यह महसूस करेगा कि वह बिल्कुल बुद्धिमान प्राणी है।

मनुष्य को यह एहसास हो जाएगा कि बुद्धिमत्ता केवल शिक्षा के एक रूप की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह कि बुद्धिमत्ता किसी भी मामले में किसी भी मन की मूलभूत विशेषता है। केवल हम आज एक ऐसे बिंदु पर हैं जहां एक अहंकार या एक मानव स्व के रूप में, हमें उन सीमाओं के भीतर रहने के लिए मजबूर किया जाता है जो हम पर सार्वभौमिक प्रतिबिंब द्वारा, यानी इतिहास द्वारा और मानवता की स्मृति द्वारा लगाए गए हैं।

और मनुष्य को अभी तक नहीं दिया गया है - क्योंकि इस क्षेत्र में पर्याप्त विज्ञान नहीं है - मनुष्य को अभी तक यह जानने और समझने की क्षमता नहीं दी गई है कि उसका मानस कैसे काम करता है, उसका अहंकार कैसे काम करता है, उसका अहंकार कैसे काम करता है, और इंटेलिजेंस शब्द का अपनी सार्वभौमिक परिभाषा में क्या मतलब है, जिससे कि मनुष्य आज अपने सूक्ष्म शरीर, यानी अपनी इंद्रियों से फंस गया है!

वह अपने मौलिक और सार्वभौमिक ज्ञान के स्थान पर इतिहास और विषय द्वारा विकसित एक छोटे से सीमित ज्ञान को संशोधित करने के लिए बाध्य है, जैसा कि विज्ञान के सभी सिद्धांतों को संशोधित करना होगा, इस अर्थ में नहीं कि विज्ञान आज उपयोगी नहीं है। इसके विपरीत यह बहुत उपयोगी है, लेकिन इस अर्थ में कि आज विज्ञान भी अपने स्वयं के उन्मूलन की दिशा में अपनी अपरिहार्य यात्रा करता है। जिस प्रकार सभी सभ्यताएँ अपने स्वयं के विनाश की ओर अपनी अनिवार्य यात्रा तय करती हैं।

लेकिन जिस तरह एक सभ्यता को अपने उन्मूलन की वास्तविकता बहुत कठिन लगती है, उसी तरह विज्ञान को अपने स्वयं के उन्मूलन को प्राप्त करने में कठिनाई होगी। और यह बहुत सामान्य है। कोई उन प्राणियों से नहीं कह सकता है जो सोचते हैं या ऐसे प्राणी हैं जिनके पास दुनिया में अपने स्वयं के पतन या अपने स्वयं के विनाश को बढ़ावा देने के लिए एक निश्चित चेतना है। हम इस बात से अवगत होने के लिए बाध्य हैं कि हम क्या हैं, हमने क्या किया है, हम क्या कर सकते हैं, विकसित करने के लिए, मानवता को विकसित करने की अनुमति देने के लिए।

लेकिन व्यक्तियों के रूप में - मैं व्यक्तियों के रूप में स्पष्ट रूप से कह रहा हूं - हम अंततः अपने ग्रह पर एक सार्वभौमिक और लौकिक व्यवस्था की स्थितियों का सामना करने के लिए बाध्य होंगे, हम उन आयामों का सामना करने के लिए बाध्य होंगे जिन्होंने अतीत में अंधविश्वास के महान आंदोलनों को जन्म दिया है। इस दुनिया में; ऐसे आन्दोलन जो विज्ञान के विकास के साथ समाप्त हो गए, और आन्दोलन जिन्हें तब विज्ञान द्वारा स्पष्ट रूप से अस्वीकार कर दिया गया था।

इसलिए हम समय के साथ कुछ अनुभवों की समीक्षा करने और फिर से अनुभव करने के लिए बाध्य होंगे ताकि यह महसूस किया जा सके कि ब्रह्मांड असीमित है। वह मानवीय चेतना असीमित है और यह कि मनुष्य अपनी आंतरिकता में उतना ही शक्तिशाली है जितना कि उसकी चेतना हो सकती है। यह आज एक ऐसी दुनिया में बहुत महत्वपूर्ण है जहां हम मन की कई धाराओं के चौराहे पर रहने के लिए मजबूर हैं, जो समग्र रूप से ... और जब मैं समग्र रूप से कहता हूं, तो मैं निश्चित रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका की ओर देख रहा हूं जहां यह व्यक्तित्व के साथ अपने टकराव में सामूहिक अनुभव धीरे-धीरे एक सामूहिक मनोविकार पैदा करता है।

दुनिया में मनुष्य पर अनिश्चित काल के लिए विचारों की धाराओं द्वारा बमबारी नहीं की जा सकती है, जो उनकी संख्या में टेलीविजन या समाचार पत्रों द्वारा, या स्वतंत्र प्रेस के विभिन्न रूपों द्वारा बढ़ाई गई हैं। एक समय आएगा जब मनुष्य इस मानसिक और मनोवैज्ञानिक तनाव को सहन नहीं कर पाएगा जो सत्य और झूठ के बीच विभिन्न टकरावों से उत्पन्न होता है। पृथ्वी पर अतिमानसिक (उच्चतर मन) चेतना के विकास में एक ऐसा बिंदु आएगा जब मनुष्य स्वयं के संबंध में वास्तविकता को परिभाषित करने के लिए बाध्य होगा। लेकिन यह "स्वयं एक" होगा जो सार्वभौमिक होगा, यह "स्वयं एक" नहीं होगा जो अपनी स्वयं की आत्मा की चंचलता या अपने स्वयं के अहंकार की व्यर्थता, या अपने स्वयं की असुरक्षा पर आधारित होगा।

तो उस क्षण से, मनुष्य मानवीय घटना, सभ्यता को उसके सभी पहलुओं में समझने में सक्षम होने लगेगा। और जो कुछ हो रहा है या दुनिया में क्या होगा उससे वह अब मनोवैज्ञानिक रूप से " भरवां" (दुर्व्यवहार) नहीं करेगा । मनुष्य मुक्त होने लगेगा। और जिस क्षण से वह मुक्त होना शुरू करता है, वह आखिरकार जीवन को उसकी मूलभूत गुणवत्ता में समझने लगेगा। और जितना अधिक वह विकसित होगा, उतना ही वह जीवन को पूर्ण, अभिन्न और सीखे हुए तरीके से समझेगा, एक ऐसे अर्थ में जो आज पांचवीं जड़-जाति की चेतना का हिस्सा नहीं है।

यह सब शब्दाडंबर क्यों? बस मनुष्य को थोड़ा-थोड़ा करके यह समझाना कि सबसे बड़ी निष्ठा जो वह स्वयं को दे सकता है, स्वयं को निर्मित कर सकता है, स्वयं के प्रति निष्ठा है। हम एक ऐसी सदी में जी रहे हैं जहां व्यक्तिवाद के लिए प्यार, खासकर पश्चिमी दुनिया में, बहुत उन्नत है। हम अधिक से अधिक व्यक्तिवादी बन गए हैं, लेकिन व्यक्तिवाद, यदि यह एक दृष्टिकोण बना रहता है, तो यह मनुष्य की वास्तविकता में मौलिक रूप से एकीकृत नहीं होता है। दूसरे शब्दों में, न्यूयॉर्क के टाइम्स स्क्वायर में, न्यूयॉर्क में लाल पैंटी और पीली चप्पल के साथ सड़क पर चलना और प्यार करना, व्यक्तिवाद का एक रूप है। लेकिन यह सनकीपन है, यह मानव चेतना के सूक्ष्मता का एक रूप है।

मनुष्य को अपनी वैयक्तिकता को बनाए रखने की आवश्यकता नहीं है, शब्द के ठोस अर्थों में अपनी वैयक्तिकता को व्यक्त करने के लिए, जनता की संवेदनाओं की उपेक्षा करने के लिए या अपने लोगों की संवेदनाओं की अवहेलना करने के लिए या अपनी आबादी की संवेदनाओं की अवहेलना करने के लिए। यह एक भ्रम है! और यह बीसवीं शताब्दी के विशिष्ट फैशन का हिस्सा है, अंततः यह साधारण हो जाता है, अंततः यह मूर्ख भी हो जाता है, अंततः इसमें सौंदर्यशास्त्र का बिल्कुल अभाव होता है। तो नया मनुष्य, पृथ्वी पर अतिमानसिक (उच्च मानसिक) चेतना का विकास, वास्तव में, मनुष्य को एक अत्यंत व्यक्तिगत चेतना विकसित करने की अनुमति देगा, लेकिन व्यक्तिवादी चेतना नहीं।

मनुष्य वैयक्तिकृत क्यों होगा? क्योंकि उसकी चेतना की वास्तविकता उसकी आत्मा के संलयन पर आधारित होगी और पुरुषों की आंखों में दुनिया में पेश नहीं की जाएगी, सनकीपन के साथ एक प्रकार की चुलबुली प्रकट करने के लिए। एक आदमी को वास्तविक होने के लिए दुनिया भर में भटकने और सीमांत होने की आवश्यकता नहीं है। इसके विपरीत। मनुष्य जितना सचेतन होगा, वह उतना ही कम सीमांत होगा, उतना ही वास्तविक होगा और अपनी वास्तविकता में उतना ही गुमनाम होगा। क्योंकि मनुष्य की वास्तविकता कुछ ऐसी है जो उसके और स्वयं के बीच जाती है न कि उसके और दूसरों के बीच।

यदि हम अपने ग्रह पर एक जड़-जाति के आवश्यक विकास को देखें, तो यह मानवीय घटना को थोड़ा समझने के लिए है। कि हम निर्देशांक स्थापित करते हैं, यह विशुद्ध रूप से व्यावहारिक है, यह विशुद्ध रूप से अपरिहार्य घटनाओं को कालानुक्रमिक समझ का ढांचा देने के लिए है! लेकिन अगर हम एक जागरूक जाति की बात करते हैं, अगर हम एक जागरूक मानवता की बात करते हैं, तो हम जागरूक पुरुषों और व्यक्तियों की बात करने के लिए बाध्य हैं।

पृथ्वी पर अतिमानसिक चेतना (उच्च मन) का विकास कभी भी सामूहिकता के पैमाने पर नहीं होगा। पृथ्वी पर अतिमानसिक (उच्च मन) चेतना का विकास कभी भी एक सामूहिक शक्ति की अभिव्यक्ति नहीं होगा। दुनिया में हमेशा ऐसे व्यक्ति होंगे जो धीरे-धीरे, अधिक से अधिक, अपनी चेतना में उस बिंदु की ओर आकर्षित होंगे जहां वे अपने स्वयं के स्रोत, अपनी आत्मा, अपने दोहरे, चाहे हम इसे कुछ भी कहें, इस वास्तविकता के साथ एकजुट होंगे। मनुष्य का हिस्सा है।

लेकिन इस दिशा में मौलिक आंदोलन इस पर आधारित होगा: यह विचार की घटना की समझ पर आधारित होगा जो कि विचलन के बाद से कभी नहीं किया गया है। यह कहना पर्याप्त नहीं है: " मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ"। डेसकार्टेस के लिए यह कहना अच्छा था , "मुझे लगता है, इसलिए मैं हूं," क्योंकि यह इस अहसास का हिस्सा था कि विचार अपने आप में एक शक्ति है जिसे व्यक्ति के स्तर पर महसूस किया जाना चाहिए।

लेकिन रचनात्मक चेतना के स्तर पर, वह बिंदु आएगा जब मनुष्य के विचार को पूरी तरह से, समग्र रूप से रूपांतरित किया जाएगा। और मनुष्य अब विकास के दौरान नहीं सोचेगा। उनका विचार उनके उच्च मन की रचनात्मक अभिव्यक्ति के एक तरीके में परिवर्तित हो जाएगा। और वह मन समग्र हो जाएगा telepsychic. दूसरे शब्दों में, मनुष्य सार्वभौमिक विमानों के साथ तात्कालिक संचार का अनुभव करेगा और संचार का यह तरीका अब प्रतिबिंबित नहीं होगा। जिस क्षण विचार मनुष्य के मन में प्रतिबिंबित होना बंद हो जाता है, विचार व्यक्तिपरक होना बंद हो जाता है। अब हम यह नहीं कह सकते कि मनुष्य सोचता है, हम कहते हैं कि मनुष्य अपनी स्वयं की चेतना के सार्वभौमिक स्तरों के साथ संचार करता है।

लेकिन मनुष्य को इसे समग्र रूप से समझने के लिए, उसके लिए यह आवश्यक होगा कि वह उस विचार को महसूस करे, जैसा कि हम आज उसकी कल्पना करते हैं, आज हम उसे कैसे जीते हैं, जैसा कि वह हमारे दिमाग में तय किया गया है, जैसा कि वह उत्पन्न होता है या महसूस किया जाता है। हमें अचेतन अहंकार के रूप में, हमें एक निश्चित अहसास जगाना चाहिए, इस अर्थ में कि मनुष्य को यह महसूस करने में सक्षम होना चाहिए कि उसका विचार स्वयं उसे अपने विरुद्ध विभाजित करता है। केवल उस हद तक, जहां तक कि वह शामिल होने और बेहोशी के कारणों से, उसे अच्छे या बुरे, सच्चे और झूठे की ध्रुवीयता के अधीन करता है।

जिस क्षण से मनुष्य अपने मन का ध्रुवीकरण करता है, चाहे वह नकारात्मक या सकारात्मक निर्देशांक स्थापित करता है, उसने भौतिक तल पर अपने और ब्रह्मांडीय और सार्वभौमिक तल पर खुद के बीच विभाजन पैदा कर दिया है। यह बहुत महत्वपूर्ण है! यह इतना महत्वपूर्ण है कि यह अगले विकास की मूलभूत कुंजी है। एक ध्रुवीयता के संबंध में हमें हमेशा अपने विचार को जीने के लिए क्या प्रेरित करता है, यह हमारे अहंकार की मूलभूत असुरक्षा है। यह हमारी भावनाओं की शक्तिशाली और पैशाचिक क्षमता है। अहंकार के रूप में या एक अशिक्षित या अधिक शिक्षित व्यक्ति के रूप में यह हमारी अक्षमता है कि हम जो जानते हैं उसे सहन करने में सक्षम नहीं हैं।

दुनिया में ऐसा कोई आदमी नहीं है जो कुछ नहीं जानता हो। सभी मनुष्य कुछ न कुछ जानते हैं, लेकिन कोई विश्वव्यापी अधिकार नहीं है, कोई सांस्कृतिक परिभाषा नहीं है, दुनिया में कोई सांस्कृतिक समर्थन नहीं है जो कुछ जानने वाले व्यक्ति का समर्थन कर सके। ऐसी संस्थाएँ हैं जो इस ज्ञान को स्थापित करने के लिए स्वयं को कुछ जानने का अधिकार देती हैं और इसके साथ मनुष्य के मन को संस्कारित करती हैं। इसे हम विभिन्न स्तरों पर विज्ञान कहते हैं, यह सामान्य है।

लेकिन ऐसा कोई विपरीत आंदोलन नहीं है जहां दुनिया की संस्थाएं मनुष्य को उसका अधिकार वापस दे सकें या वापस दे सकें, यानी उसे खुद का वह छोटा आयाम वापस दें जो एक दिन बहुत बड़ा हो सकता है, वह है उसका अपना प्रकाश। और आप आध्यात्मिक क्षेत्र में, धार्मिक क्षेत्र में बहुत ही सरल तरीके से परीक्षा दे सकते हैं। एक दिन, जब मनुष्य के केंद्र पर्याप्त रूप से खुले होंगे, वह विज्ञान के क्षेत्र में भी ऐसा ही कर पाएगा।

एक आदमी जो दुनिया में है और जो, उदाहरण के लिए, एक मौलवी या किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने जाएगा जो धर्म में काम करता है और जो उससे भगवान के बारे में बात करेगा, और जो कहेगा: "ठीक है, भगवान ऐसी चीज है, ऐसी बात , ऐसी बात " , कोई उससे कहेगा:" लेकिन तुम किस अधिकार से ईश्वर की बात करते हो? आप किस अधिकार से ईश्वर की बात करते हैं "...? और यदि मनुष्य कम विकसित है और वास्तव में ईश्वर के रूप को खंडित कर सकता है या अन्य रूपों को सामने ला सकता है जो उसके दिमाग के रचनात्मक आयाम का हिस्सा हैं, तो वह ईश्वर के संस्थागतकरण से और भी अधिक विमुख हो जाएगा। अदृश्य दुनिया की समझ।

इसलिए मैं कहता हूं कि मनुष्य संसार के सहारे, अतिमानसिक चेतना (उच्च मन) में, संसार में प्रवेश नहीं कर पाएगा। मनुष्य के पास अतिमानसिक (उच्च मन) चेतना होगी जब वह खुद को सांसारिक समर्थन की आवश्यकता से पूरी तरह से मुक्त कर लेगा, और अंत में धीरे-धीरे महसूस करना शुरू कर देगा और जो वह जानता है उसे सहन करेगा। और इसके लिए शर्त यह है कि सच और झूठ के ध्रुवीकरण के जाल में न पड़ें।

यदि मनुष्य सत्य और असत्य के ध्रुवीकरण के जाल में फंस जाता है, तो वह अपने विवेक को उत्तेजित कर लेता है, वह अपने अहंकार को सुरक्षित कर लेता है, और वह वास्तविकता के प्रति अत्यधिक दृष्टिकोण विकसित कर लेता है। सच और झूठ जानने की मानसिक अक्षमता के केवल मनोवैज्ञानिक घटकों का प्रतिनिधित्व करते हैं! जब आप एक अच्छा स्टेक खाते हैं, तो आपको आश्चर्य नहीं होता है कि यह असली है या नकली है, इसमें कोई ध्रुवता नहीं है, इसलिए यह अच्छा है। लेकिन अगर आप सोचने लगें कि कहीं उसमें कीड़ा तो नहीं है, ओह, तो आपका पेट जवाब नहीं देगा! और ज्ञान के स्तर पर, ज्ञान के स्तर पर भी यही बात है।

निम्न मन के लिए ज्ञान वही है जो उच्च मन के लिए ज्ञान है। ज्ञान अहंकार की आवश्यकता का हिस्सा है जबकि जानना स्वयं की वास्तविकता का हिस्सा है। इसलिए जानने और जानने के बीच कोई विभाजन या अलगाव नहीं है। ज्ञान चेतना के एक स्तर का हिस्सा है और ज्ञान दूसरे स्तर का हिस्सा है।

ज्ञान के दायरे में हम कुछ चीजों के बारे में बात करते हैं और ज्ञान के दायरे में हम दूसरी चीजों के बारे में बात करते हैं। दोनों एक साथ मिल सकते हैं, भाईचारा बना सकते हैं और एक साथ बहुत अच्छे से रह सकते हैं। चौथी मंजिल हमेशा उसके ऊपर की पांचवीं मंजिल के साथ अच्छी होती है... और मनुष्य एक बहुआयामी प्राणी है, लेकिन मनुष्य एक ऐसा प्राणी भी है जिसके पास एक अनुभवात्मक चेतना है और वह रहता है। हमारे पास पृथ्वी पर एक प्रायोगिक चेतना है। हमारे पास कोई रचनात्मक चेतना नहीं है।

अपने जीवन को देखो! आपका जीवन अनुभव है! जिस क्षण से आप दुनिया में प्रवेश करते हैं, आपका जीवन लगातार अनुभव के बारे में होता है, लेकिन मनुष्य अनुभव पर अनिश्चित काल तक नहीं रह सकता है। एक दिन मनुष्य को सृजनात्मक चेतना के साथ जीना होगा, उस समय जीवन जीने योग्य होता है, जीवन बहुत बड़ा हो जाता है, बहुत विशाल हो जाता है, सृजनात्मकता में शक्तिशाली हो जाता है, और मनुष्य आत्मा के अनुभव को जीना बंद कर देता है। लेकिन मनुष्य अनुभव को क्यों जीता है? क्योंकि यह शक्तिशाली शक्तियों से जुड़ा हुआ है - जिसे मैं स्मृति कहता हूं - जो कि वास्तव में आप "आत्मा" कहते हैं।

मनुष्य अपनी आत्मा के द्वारा नहीं जीता है, वह आत्मा से जुड़ा हुआ है, वह आत्मा के द्वारा जीता है, वह आत्मा के द्वारा निरंतर वैम्पायर होता है। जिन लोगों ने पुनर्जन्म पर शोध किया है या जिन लोगों ने एक निश्चित अतीत में लौटने पर शोध किया है, उन्होंने बहुत अच्छी तरह से निर्धारित किया है कि कुछ लोग आज कुछ चीजों से पीड़ित हैं, क्योंकि पिछले जन्म में वे कारण से पीड़ित थे। आज ऐसे लोग हैं जो एक लिफ्ट (लिफ्ट) में प्रवेश करने में सक्षम नहीं हैं क्योंकि वे उन आघातों का अनुभव कर रहे हैं जो भौतिक जीवन से पहले आए हैं, या जो पिछली स्थितियों में घुट गए हैं, वे सक्षम नहीं हैं ... उनका दम घुट रहा है। तो मनुष्य आत्मा के अनुभव को जीता है।

वह जीता है, वह अपनी स्मृति से उतना ही जुड़ा हुआ है, जितना अपने पिछले विकासवादी आंदोलन की बहुत विशाल अचेतन स्मृति के रूप में वह बहुत विशाल स्मृति है कि वह आज एक प्रायोगिक प्राणी के रूप में रहता है। मनुष्य अनंत काल तक पृथ्वी पर अनुभव से जीवित नहीं रह सकता है! यह उनकी यूनिवर्सल इंटेलिजेंस का अपमान है। यह मनुष्य की प्रकृति के साथ बिल्कुल असंगत है कि मनुष्य यह नहीं कह सकता: " ठीक है, ठीक है, दस साल में मैं ऐसा काम करना चाहता हूँ, पाँच साल में मैं ऐसा काम करना चाहता हूँ", यह प्रकृति के साथ बिल्कुल अपूरणीय है आदमी कि वह अपने भविष्य को नहीं जानता!

यह मनुष्य की प्रकृति के साथ असंगत है कि वह अपने से पहले के मनुष्य की प्रकृति को नहीं जानता। दूसरे शब्दों में, यह मनुष्य की आत्मा के साथ असंगत है कि मनुष्य में यह आत्मा तर्क के आदेशों के अनुसार जीने के लिए मजबूर है, क्योंकि आज भौतिक स्तर पर मनुष्य एक ऐसी पीढ़ी का हिस्सा है जिसकी चेतना अवरोही हो रही है। मनुष्य की चेतना को पदार्थ में अवतरण से ईथरिक की ओर अंतिम निकास की ओर जाना चाहिए, यानी ग्रह की वास्तविकता का वह हिस्सा जो अंततः वह दुनिया है जिसमें मनुष्य को स्वाभाविक रूप से अपनी अमरता को जीना चाहिए।

मनुष्य पदार्थ में आने और मरने के लिए नहीं बना है। जिसे हम मृत्यु कहते हैं, यानी जिसे हम मनुष्य या आत्मा की सूक्ष्म तल पर वापसी कहते हैं, वह मनुष्य की बेहोशी का हिस्सा है। यह इस तथ्य का हिस्सा है कि मनुष्य उन सार्वभौमिक सर्किटों से पूरी तरह से कट गया है जो उसकी पीढ़ी के स्रोत हैं, जो उसकी बुद्धिमत्ता के स्रोत हैं, जो उसकी जीवन शक्ति के स्रोत हैं, जो उसके ग्रहों के स्वयं के स्रोत हैं! इसलिए मनुष्य को स्रोत की ओर अवश्य लौटना चाहिए, लेकिन मनुष्य समावेशन के आध्यात्मिक, ऐतिहासिक भ्रमों के माध्यम से स्रोत पर वापस नहीं लौट सकता।

मनुष्य पुराने विचारों का उपयोग करके अपने स्रोत पर वापस नहीं लौट पाएगा जिसने उसे पदार्थ का कैदी बनने के लिए मजबूर किया। मनुष्य पुराने साधनों का उपयोग करके अपने स्रोत पर वापस नहीं जा रहा है, जिसने उसे एक प्रायोगिक चेतना वाला प्राणी बना दिया है। मनुष्य विश्वास करके अपने स्रोत पर नहीं लौटेगा।

मनुष्य अपने विकास के दौरान धीरे-धीरे विकास करके अपने स्रोत पर वापस आ जाएगा, वह जो जानता है उसका समर्थन करने की क्षमता।

लेकिन आज की दुनिया में, हम अपने स्वयं के मनोवैज्ञानिक व्यवस्थितकरण के लिए एक पौराणिक कथा के लिए अभिशप्त हैं। हम एक मनोवैज्ञानिक मानसिक रवैये की चपेट में आने के लिए अभिशप्त हैं जो सभी मानविकी को प्रभावित करता है: विश्वास। मनुष्य को विश्वास करने की आवश्यकता क्यों है? क्योंकि वह नहीं जानता! मनुष्य को विश्वास करने की आवश्यकता क्यों है? क्योंकि वह एक अनुभवात्मक चेतना है, इसलिए उसके मन में कोई प्रकाश नहीं है। वह अपनी क्षुद्र चेतना की अत्यंत अन्धकारपूर्ण गति में रहता है, इसलिए वह अपने को किसी प्राणिक और निरपेक्ष वस्तु से जोड़ने के लिए विश्वास करने के लिए बाध्य होता है।

लेकिन परम में यह विश्वास जो अहंकार की मनोवैज्ञानिक कंडीशनिंग का हिस्सा है, परम में यह विश्वास, यह किसके द्वारा स्थापित किया गया था? यह मैन ऑफ इनवोल्यूशन द्वारा स्थापित किया गया था। आप अच्छी तरह से जानते हैं कि यदि आप दुनिया में जाते हैं और आप किसी को एक कहानी सुनाते हैं, तो आप जो कहानी सुनाने जा रहे हैं, वह वही नहीं होगी, जो आपने मूल रूप से कही थी। .

कल्पना कीजिए कि कोई दुनिया में जाता है और जो मैं आज कह रहा हूं उसे दोहराने की कोशिश करता है, एक दीक्षा के रूप में, आप कल्पना कर सकते हैं कि यह कल कैसे निकलेगा! तो अतीत में ऐसे पुरुष थे जिन्होंने काम किया, ऐसे पहल थे जो मानवता के विकास में मदद करने के लिए दुनिया में आए। लेकिन इन प्राणियों ने क्या कहा और कथित रूप से उन्होंने जो कहा, उसके बारे में क्या बताया गया, यह दूसरी बात है।

और मैं आपको एक बात ठोस रूप से बता सकता हूं - क्योंकि मैं इस घटना को वर्षों से जानता हूं - किसी व्यक्ति के लिए पूरी तरह से कही गई बात को पूरी तरह से दोहराना बिल्कुल असंभव है। आज रात घर आने पर इसे करने की कोशिश करें! एक इंसान के लिए पूरी तरह से कही गई बात को दोहराना असंभव है। और मैं आपको बताता हूँ क्यों। क्योंकि जो पूरी तरह से कहा गया है - दूसरे शब्दों में जो अहंकार से रंगा नहीं है, जो सूक्ष्म नहीं है, जो मनुष्य की बेहोशी का हिस्सा नहीं है, लेकिन जो मनुष्य की ब्रह्मांडीयता का हिस्सा है - वह अहंकार की ओर निर्देशित नहीं है मनुष्य को या मनुष्य के अहंकार को, या मनुष्य की बुद्धि को। यह उसकी आत्मा के लिए निर्देशित है।

और यदि मनुष्य अपनी आत्मा में नहीं है, तो आप उससे कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि वह दूसरी आत्मा ने पहले ही कह दिया है? यह नामुमकिन है। तो उस क्षण रंग होता है। और पहल के शब्दों के रंग से पैदा हुए थे जिन्हें हम मानवता के विकासवादी लाभ के लिए धर्म कहते हैं। और मैं सहमत हूं और बहुत खुश हूं कि यह हो रहा है और यह किया गया है, क्योंकि यह आवश्यक है। लेकिन विकास के दौरान एक समय आएगा जब मनुष्य को अपने विवेक को अपने ज्ञान की पूर्णता देने के लिए नैतिक समर्थन की आवश्यकता नहीं होगी। वह अतिमानसिक चेतना (उच्च मन) है।

और जब से हम क्यूबेकर्स से बात कर रहे हैं, चूंकि हम ऐसे लोगों से बात कर रहे हैं, जिन्हें बहुत अच्छे कारणों से, आध्यात्मिक दुनिया के साथ एक निश्चित निकटता का अनुभव करने का मौका मिला है, जो धर्म ने उन्हें दिया है, इस अर्थ में हमारे पास पहले से ही एक उन्नति है। कि पहले से ही, हम ऐसे प्राणी हैं जो पहले से ही अदृश्य के प्रति एक निश्चित संवेदनशीलता रखते हैं।

लेकिन वहां से गहन गुह्य खोज में प्रवेश करने के लिए अंतर्वलन के आध्यात्मिक पथों का उपयोग करते हुए चेतना हमें सीधे स्वयं की ध्रुवीयता तक ले जाएगी। यह हमें अच्छे और बुरे, सच्चे और झूठे के बीच के संघर्ष में ले आएगा, और यह हमारे लिए मन में बहुत पीड़ा पैदा करेगा।

यही कारण है कि मैं कहता हूं: चेतन मनुष्य, पृथ्वी पर अतिमानसिक चेतना (उच्च मन) का विकास उस क्षण से शुरू होगा जब मनुष्य अपने विचार को सत्य और नकली के अधीन न करने की आवश्यकता को पहले ही समझ चुका होगा। लेकिन धीरे-धीरे इसे जीना सीखना और इसके आंदोलन का समर्थन करना जब तक कि यह विचार एक दिन परिपूर्ण न हो जाए, यानी पूरी तरह से अपने स्वयं के प्रकाश में, पूरी तरह से विखंडित हो जाए, ताकि अंत में वह अहंकार, मैं ... अहंकार, आत्मा और आत्मा एक हो जाता है और मनुष्य को एक वास्तविक प्राणी बना देता है।

एक वास्तविक प्राणी क्या है? एक वास्तविक प्राणी एक वास्तविक प्राणी है! वह ऐसा प्राणी नहीं है जिसे सत्य की आवश्यकता है, वह ऐसा प्राणी नहीं है जो सत्य को खाता है। सच खाओगे तो कल झूठ भी खाओगे, क्योंकि ऐसे भी लोग होंगे जो तुम्हें यथार्थ की अनंतता की सीमा से भी आगे ले जाएंगे। यदि आप सच खाते हैं, तो एक दिन आपको फिर से यह कदम उठाना पड़ेगा, क्योंकि केवल एक चीज जो मनुष्य को सूट करती है, जो उसके विवेक को सूट करती है, जो उसकी आत्मा को सूट करती है, जो उसकी आत्मा को सूट करती है, जो उसके अहंकार को सूट करती है, जो उसके अस्तित्व को सूट करती है। , शांति है।

लेकिन शांति क्या है? शांति विराम है, खोज का विराम है। आप कहने जा रहे हैं: " हाँ, लेकिन आपको खोजना होगा" , मैं कहता हूँ: हाँ, मनुष्य खोज रहा है, आप स्वयं खोज रहे हैं, सभी पुरुष खोज रहे हैं, लेकिन विकास के दौरान एक बिंदु आएगा जहाँ मनुष्य खोजेगा अब और खोज नहीं होगी, मनुष्य को अब और खोजना नहीं पड़ेगा, और मनुष्य खोज बंद कर देगा जब उसे अंत में पता चलेगा कि वह जानता है।

और वहाँ आप कहने जा रहे हैं: " हाँ, लेकिन कोई कैसे जान सकता है कि कोई जानता है" ... आप इसे तब तक जान पाएंगे जब तक आप इसे सहन करने की अनुमति देते हैं, जहाँ तक आपको यह पता लगाने के लिए किसी को बुलाने की आवश्यकता नहीं होगी अगर तुम सही हो। और फिर आप कहने जा रहे हैं: " ठीक है, हाँ, लेकिन अगर हम सही हैं या अगर हम सोचते हैं कि हम सही हैं, तो यह खतरनाक है"। मैं कहूँगा: हाँ, क्योंकि एक आदमी जो सही होना चाहता है वह एक ऐसा आदमी है जो पहले से ही अपने कारण की तलाश में है!

लेकिन क्या आपके जीवन में, आपके रोजमर्रा के जीवन में, आपके व्यक्तिगत कोने में अनुभव नहीं हैं, क्या आपके जीवन में ऐसे समय नहीं हैं जब आप महसूस कर सकते हैं कि आप जो जानते हैं, क्या वह है? और जब वह है, वह है!

(इसलिए आप जोड़ते हैं और आप जोड़ते हैं, और आप जोड़ते हैं, और जो लोग अपने "यह है" को दूसरे " वह है" को दूसरे " वह है" में जोड़ने की क्षमता रखते हैं, लेकिन एक " यह वह है" जो है वास्तविक, एक " यह वह है" जो मन के गर्व पर निर्मित नहीं होगा, एक " यह वह है" जो आध्यात्मिकता या आपकी आध्यात्मिकता के गौरव पर निर्मित नहीं होगा, एक " यही वह है" जो व्यक्तिगत होगा आपके लिए, एक " दैट दैट" जो उन सभी पुरुषों के साथ सार्वभौमिक होगा जिनसे आप मिलते हैं और जो उनके "दैट इज़ दैट" में होंगे , उस क्षण आपको पता चल जाएगा कि यह है !) (इस पैराग्राफ को हटा दें यदि इसका अनुवाद नहीं किया जा सकता है) .

বাংলা

ট্রান্সক্রিপশন এবং বার্নার্ড ডি মন্ট্রিল দ্বারা 2 সম্মেলনের অনুবাদ।

Bernard de Montreal



অস্থায়ী বিন্যাস

এই বইটি কৃত্রিম বুদ্ধিমত্তা দ্বারা অনুবাদ করা হয়েছে কিন্তু একজন ব্যক্তির দ্বারা যাচাই করা হয়নি। আপনি যদি এই বইটি পর্যালোচনা করে অবদান রাখতে চান তবে অনুগ্রহ করে আমাদের সাথে যোগাযোগ করুন।

আমাদের ওয়েবসাইটের প্রধান পৃষ্ঠা: http://diffusion-bdm-intl.com/

আমাদের ইমেইল: contact@diffusion-bdm-intl.com

বিষয়বস্তু

পুরো ডিফিউশন বিডিএম ইন্টারন্যাশনাল টিমের পক্ষ থেকে শুভেচ্ছা।

Pierre Riopel 18 এপ্রিল, 2023

অধ্যায় 1

পরিচয় *CP036*

অন্যদের সাথে আত্ম-পরিচয় একটি সার্বজনীন মানব সমস্যা। আর এই সমস্যা বাড়ে যখন মানুষ আধুনিক সমাজের মতো জটিল সমাজে বাস করে। পরিচয়ের সমস্যা হ'ল অহমের জীবনের যন্ত্রণা, যন্ত্রণা যা তাকে বয়স থেকে অনুসরণ করে যখন সে নিজেকে অন্যের সাথে তুলনা করে। কিন্তু পরিচয়ের সমস্যাটি একটি মিথ্যা সমস্যা যা এই সত্য থেকে উদ্ভূত হয় যে অহং, নিজেকে নিজের মতো করে উপলব্ধি করার পরিবর্তে, অর্থাৎ তার নিজের পরিমাপ অনুযায়ী, নিজেকে অন্য অহংকারদের বিরুদ্ধে প্রতিযোগিতামূলকভাবে উপলব্ধি করতে চায়। যারা প্রকৃতপক্ষে ভোগে , তার মত একই সমস্যা থেকে.

অহং তার ফুলের প্রশংসা করার জন্য তার বেড়ার বাইরে অন্যের মাঠের দিকে তাকায়, এটি দেখতে ব্যর্থ হয় যে অন্যটি নিজের সাথে একই কাজ করছে। আজ মানুষের মধ্যে পরিচয়, বা পরিচয় সংকট এতটাই তীব্র যে এটি আত্মবিশ্বাসের ক্ষতি করে যা সময়ের সাথে সাথে ব্যক্তিগত চেতনার সম্পূর্ণ ক্ষতিতে পরিণত হয়। বিপজ্জনক পরিস্থিতি, বিশেষ করে যদি অহং ইতিমধ্যে চরিত্রের দুর্বল এবং নিরাপত্তাহীনতার প্রবণ।

পরিচয়ের সমস্যা, অর্থাৎ নিজেকে নিজের মতো উঁচুতে না দেখার অহংবোধের এই বৈশিষ্ট্যটি আসলে সৃজনশীলতার সমস্যা। কিন্তু অহং যখন সৃজনশীল হয়, তখন পরিচয়ের সমস্যা দূর হয় না, কারণ অহং কখনই নিজের সাথে পুরোপুরি সন্তুষ্ট হয় না যতক্ষণ না সে তার নিম্ন আত্মার মায়া উপলব্ধি করে। যাতে একটি নিম্ন-স্থিতি অহং একটি উচ্চ-মর্যাদা অহং হিসাবে একই পরিচয় সমস্যা অনুভব করবে, কারণ তার এবং অন্যের মধ্যে তুলনা শুধুমাত্র স্কেলে পরিবর্তিত হবে, তবে সর্বদা উপস্থিত থাকবে, কারণ অহং সর্বদা উন্নতির শক্তিতে থাকে। এবং তিনি নিজের জন্য যে উন্নতি চান তার কোন শেষ নেই।

কিন্তু আত্ম-উন্নতি হল একটি কম্বল যা অহংকে লুকিয়ে রাখে যাতে নিজেকে সুখীভাবে বেঁচে থাকার কিছু কারণ দেওয়া যায়। কিন্তু তিনি কি জানেন না যে সমস্ত উন্নতি ইতিমধ্যে একটি ইচ্ছা শরীর দ্বারা উত্পন্ন হয়?

মানুষের প্রকৃত বুদ্ধিমত্তার চেতনার অনুপস্থিতি থেকে পরিচয়ের সমস্যাটি আসে। যতক্ষণ মানুষ তার বুদ্ধিমত্তার দ্বারা বেঁচে থাকে, সে তার মতামতকে সমর্থন করে শুধুমাত্র সংবেদনশীল অভিজ্ঞতার দ্বারা, তার পক্ষে অনির্ধারিত বুদ্ধিমত্তার পরম মূল্যের দ্বারা অহংকেন্দ্রিক অভিজ্ঞতার মাধ্যমে যা সে জানে বা বোঝে তা প্রতিস্থাপন করা তার পক্ষে কঠিন।

যতক্ষণ মানুষ জীবনে নিজেকে প্রকাশ করতে চায়, তার চিহ্ন তৈরি করার জন্য, সে এই আকাঙ্ক্ষায় ভোগে। যদি সে তার ইচ্ছা অর্জন করতে পারে, অন্য একজন তাকে পিছনে ঠেলে দেবে, ইত্যাদি। এই কারণেই, মানুষের মধ্যে, যে কোনও ধরণের পরাজয় তার জন্য যে কোনও পরিচয় সংকট তৈরি করে, তার অবস্থা যাই হোক না কেন, কারণ পরিচয়ের সমস্যা সাফল্যের সমস্যা নয়, বিবেকের সমস্যা। , অর্থাৎ প্রকৃত বুদ্ধিমত্তার সমস্যা। .

যে মানুষটি তার জীবনকালে আবিষ্কার করে যে প্রকৃত বুদ্ধিমত্তা বুদ্ধিকে বেশি করে ফেলে, ইতিমধ্যেই পরিচয়ের সমস্যায় কম ভোগা শুরু করে, যদিও সে এখনও বাস্তব সৃজনশীলতার অনুপস্থিতিতে ভুগতে পারে, যা সে অনুভব করতে পারে তার সমান। শুধুমাত্র তার পরিচয় তার সাথে মানানসই জীবনধারার সাথে সঙ্গতিপূর্ণ হলেই সে বুঝতে পারবে যে সৃজনশীলতা অগণিত রূপ নিতে পারে এবং প্রতিটি মানুষের সৃজনশীলতার একটি রূপ রয়েছে যা তার জন্য উপযুক্ত। মানসিকভাবে ফিট। এবং এই ফর্ম থেকে তিনি তার আকাঙ্ক্ষিত শরীর এবং তার সৃজনশীল বুদ্ধিমত্তার পরিপ্রেক্ষিতে নিখুঁত সাদৃশ্যে বসবাস করতে পারেন।

সৃজনশীল হওয়ার অর্থ বিশ্বকে পরিবর্তন করা নয়, বরং নিজের জন্য একটি নিখুঁত উপায়ে করা, যাতে অভ্যন্তরীণ জগতটি বাহ্যিক হয়। এভাবেই পৃথিবী পরিবর্তিত হয়: সর্বদা ভেতর থেকে, কখনোই বিপরীত দিকে নয়। ওভারমাইন্ড পরিচয়ের সমস্যা বুঝতে শুরু করে। তিনি দেখেন যে তিনি যা ছিলেন তা এখনও কিছুটা হলেও তিনি যা ছিলেন। কিন্তু তিনি এটাও দেখেন যে তার দেহের পরিবর্তনের সাথে সাথে তার চেতনা বৃদ্ধি পায় এবং পরিচয়ের সমস্যাটি ধীরে ধীরে অদৃশ্য হয়ে যায়, যা পূর্বে অচেতন অহংকার ছিল।

অত্যধিক মানসিকতার মধ্যে পরিচয়ের সমস্যাটি ধীরে ধীরে নির্মূল করা তাকে অবশেষে তার জীবনযাপন করতে দেয় যেভাবে সে এটি দেখেছে এবং নিজের সম্পর্কে আরও ভাল এবং আরও ভাল হতে পারে। মানুষের মধ্যে এমন কিছু নেই যা পরিচয়ের জন্য কষ্টের মতো কঠিন। কারণ তিনি প্রকৃতপক্ষে অলীক রূপ থেকে ভুগছেন, অর্থাৎ যে কারণে তিনি স্ক্র্যাচ থেকে সৃষ্টি করেছেন, সঠিকভাবে এই কারণে যে তিনি বুদ্ধিমান নন, অর্থাৎ তাঁর মধ্যে সৃজনশীল বুদ্ধিমত্তা সম্পর্কে সচেতন।

পরিচয়ের একটি দিক হল কিছু ক্ষেত্রে লজ্জা, অন্যদের ক্ষেত্রে বিব্রত, বেশিরভাগ ক্ষেত্রে নিরাপত্তাহীনতা। সামাজিক চিন্তার জালে বন্দী তার মনের সামাজিক প্রতিফলন থাকলে কেন একজন ভালো নৈতিকতার মানুষ লজ্জায় বাঁচবে? অন্যরা যা ভাবছে তা অবিলম্বে পরিত্রাণ পেতে অহমের অক্ষমতা থেকে আসা বিব্রততার ক্ষেত্রেও একই কথা সত্য। অন্যরা যা ভাবতে পারে তা থেকে যদি বিব্রত অহংকার পরিত্রাণ পায়, তবে তার বিব্রতবোধ অদৃশ্য হয়ে যাবে এবং তিনি আরও দ্রুত তার আসল পরিচয়ে প্রবেশ করতে পারবেন, অর্থাৎ মনের এই অবস্থা যা একজন মানুষকে সর্বদা তার নিজের দিনের আলোতে দেখতে দেয়।

মানুষের মধ্যে কেন্দ্রিকতার অনুপস্থিতি থেকে পরিচয়ের সমস্যাটি আসে। এবং এই অনুপস্থিতি বুদ্ধির অনুপ্রবেশকারী শক্তিকে হ্রাস করে, যা মানুষকে তার বুদ্ধির দাস করে তোলে, নিজের সেই অংশের যা মনের আইন বা মনের প্রক্রিয়াগুলি জানে না। যাতে মানুষ, তার অভিজ্ঞতার জন্য ছেড়ে যায়, তার বুদ্ধিমত্তায় আলোর অভাব থাকে এবং মানুষের প্রকৃতি সম্পর্কে অন্যের মতামত গ্রহণ করতে বাধ্য হয়।

মানুষ যদি নিজের সম্পর্কে বিস্ময় প্রকাশ করে, তাহলে অন্য একজন মানুষের পক্ষে কীভাবে তাকে আলোকিত করা সম্ভব, যদি এই অন্য মানুষটি তার মতো একই অবস্থায় থাকে? কিন্তু মানুষ এটি উপলব্ধি করে না, এবং ঘটনা দ্বারা অহং-এর বিরুদ্ধে চাপের কারণে তার পরিচয়ের সমস্যা আরও খারাপ হয়।

মনের অহং নিঃসন্দেহে তার চিন্তাধারার দ্বারা আটকা পড়ে যা তার আসল বুদ্ধিমত্তার সাথে খাপ খায় না। এবং এই চিন্তাধারা তার বুদ্ধিমত্তার বাস্তবতার সাথে সাংঘর্ষিক, কারণ সে যদি তার অন্তর্দৃষ্টির মাধ্যমে তার বুদ্ধিমত্তার বাস্তবতা উপলব্ধি করে, উদাহরণস্বরূপ, সে এর বাস্তবতাকে অস্বীকার করবে, কারণ বুদ্ধির অন্তর্দৃষ্টিতে বিশ্বাস নেই, তিনি এটিকে নিজের একটি অযৌক্তিক অংশ হিসাবে দেখেন। আর বুদ্ধি যেহেতু যুক্তিবাদী বা অনুমিতভাবে যুক্তিবাদী, তাই এর বিপরীত কিছুকে বুদ্ধি বলে স্বীকৃতি দেওয়া যায় না। এবং তবুও, অন্তর্দৃষ্টি প্রকৃতপক্ষে প্রকৃত বুদ্ধিমত্তার একটি প্রকাশ, কিন্তু এই প্রকাশটি এখনও অহং এর গুরুত্ব এবং বুদ্ধিমত্তা উপলব্ধি করতে সক্ষম হওয়ার পক্ষে খুব দুর্বল। তারপরে সে তার যুক্তিতে প্রত্যাহার করে এবং মনের সূক্ষ্ম প্রক্রিয়াগুলি আবিষ্কার করার সুযোগ হারায় যা তার পরিচয়ের সমস্যার উপর আলোকপাত করতে পারে।

কিন্তু পরিচয়ের সমস্যা মানুষের সাথেই থাকতে হবে, যতক্ষণ না বুদ্ধি চলে না যায় এবং অহংকার নিজের কথা না শোনে, অভ্যন্তরীণভাবে। অহং যদি প্রকৃত বুদ্ধিমত্তার প্রকৃতি ও রূপের প্রতি সংবেদনশীল হয়, তবে সে ধীরে ধীরে সামঞ্জস্য করে এবং সেই বুদ্ধিমত্তায় তার আরও বেশি করে বাড়ি করে। সময়ের সাথে সাথে, তিনি আরও নিয়মিতভাবে সেখানে যান, এবং তার পরিচয় সমস্যাটি চলে যায়, কারণ তিনি বুঝতে পারেন যে তিনি নিজেকে যা ভেবেছিলেন তা কেবল তার আসল বুদ্ধিমত্তার একটি মনস্তাত্ত্বিক এবং মানসিক বিকৃতি, তার যুক্তির উঁচু দেয়াল অতিক্রম করতে অক্ষম।

একটি জটিল সমাজে, যেমনটি আমরা জানি, শুধুমাত্র অহংকার অভ্যন্তরীণ শক্তি, এর প্রকৃত বুদ্ধিমত্তা, এটিকে মতামতের ছাল থেকে উর্ধ্বে তুলে তার আসল পরিচয়ের পাথরে স্থাপন করতে পারে। এবং সমাজ যতই বিচ্ছিন্ন হবে, তার ঐতিহ্যগত মূল্যবোধ ততই ভেঙে পড়বে, অহং ততই ধ্বংসের পথে চলেছে, কেননা আধুনিকতার ক্রমবর্ধমান বিভ্রান্তিকর ঘটনার মুখে দাঁড়ানোর মতো আনুষ্ঠানিক সামাজিক ভারাটা আর নেই। জীবন

কিন্তু অহং সর্বদা তাদের কথা শোনার জন্য প্রস্তুত নয় যারা এটির নিজস্ব রহস্য বোঝার জন্য প্রয়োজনীয় চাবিকাঠি দিতে পারে। কারণ তার মনস্তাত্ত্বিক বিকৃতি ইতিমধ্যেই তাকে এমন সবকিছু নিয়ে প্রশ্ন তোলে যা তার বিষয়গত চিন্তাধারার সাথে সামঞ্জস্যপূর্ণ নয়। এই কারণেই অহংকে তার আরও দেখতে অস্বীকার করার জন্য খুব বেশি দোষ দেওয়া যায় না, তবে এটি উপলব্ধি করা যেতে পারে যে এটি আজকে আরও দেখতে না পারলেও আগামীকাল তার মধ্যে শক্তির অনুপ্রবেশের মাত্রা অনুসারে তার দৃষ্টি প্রসারিত হবে।

কারণ প্রকৃতপক্ষে, এটি অহং নয় যেটি তার নিজের প্রচেষ্টায় তার পরিচয়ের প্রাচীরকে জয় করে, বরং আত্মা যা তাকে কষ্ট দিয়ে নিয়ে আসে, অর্থাৎ তার আলোর অনুপ্রবেশ দ্বারা, নিবন্ধিত করা, বুদ্ধির বাইরে, কম্পন। বুদ্ধিমত্তা আর এই কম্পনজনিত শক হয়ে ওঠে শেষের শুরু।

অহংকার আছে যারা বাস্তবের কাছে খোলে, কারণ এক ধরনের নম্রতা ইতিমধ্যেই তাদের নিজস্ব আলোর দিকে প্রবণ করে তোলে। অন্যদিকে, এই আলো, এই সূক্ষ্ম সুতোর মধ্য দিয়ে যাওয়ার জন্য খুব গর্বিত অহংকার রয়েছে। এবং এটি সেইসব অহংকার যেগুলি সবচেয়ে বড় বাঁক, বড় বিপত্তি যা তাদের ছিটকে দেয় এবং তাদের আরও বাস্তববাদী করে তোলে।

পরিচয় সংকট মানুষের অপরিপক্কতা দ্বারা চিহ্নিত করা হয়. প্রকৃত পরিচয় প্রকৃত পরিপক্কতার বিকাশ প্রদর্শন করে।

আত্মা তার ক্রিয়াকলাপে অহং থেকে স্বাধীন, এবং পরেরটির ভাল খেলা আছে, যতক্ষণ না এটি বাড়িতে নিজেকে জোর করে অনুভব করে না। এই মুহূর্ত যে অহং জানে না। এবং যখন সে দেখায়, তখন সে বুঝতে পারে যে তার অহংকার, তার অহংকার, তার নিজের সাথে যে মোহ রয়েছে, তার ধারণাগুলি চাপে ডিমের মতো ফেটে গেছে।

আত্মার কষ্টের কারণ আছে যা অহং প্রথমে বুঝতে পারে না, কিন্তু যা বাঁচতেও সাহায্য করতে পারে না। আত্মাই কাজ করে। এটা তার এক পর্যায় থেকে অন্য পর্যায়ে যাওয়ার সময়। পরিচয়ের সমস্যা, যা তিনি শুরুতে অনুভব করেছিলেন, নিজেকে পুনর্নির্মাণ করে এবং তার গর্ব শিশুর খেলার মতো ভেঙে পড়ে। অহংকার বেশি হোক বা কম অহংকার হোক, সবটাই নেমে আসে নিরাপত্তাহীনতায়। প্রায়শই একজন তথাকথিত " কঠিন", "শক্তিশালী" অহংকার সম্মুখীন হন , যার জন্য বাস্তব হল বিশুদ্ধ কল্পনা; এই অহংকারগুলিই তাদের পরিচয়ের উপর সবচেয়ে বেশি প্রভাব ফেলে, যখন আত্মা মানসিক এবং আবেগকে স্পন্দিত করে, জীবনের ঘটনাগুলির চাপে যে অহং আর নিয়ন্ত্রণ করতে পারে না।

এই কঠিন অভিজ্ঞতার সময়, অহং তার দুর্বলতার প্রকৃত আলোতে নিজেকে দেখতে শুরু করে। সেখানেই তিনি দেখেন যে তার মিথ্যা পরিচয়ের নিরাপত্তা, যেখানে তার বুদ্ধির অহংকার প্রবল, সেখানে আলোর স্পন্দিত চাপে ফেটে যাচ্ছে। তখন তার সম্পর্কে বলা হয় যে সে বদলে যাচ্ছে, সে আর আগের মতো নেই বা সে কষ্ট পাচ্ছে। এবং এটি কেবল শুরু, কারণ আত্মা যখন মিথ্যা পরিচয়ের দেয়াল ফেটে যেতে শুরু করে, তখন এটি তার কাজ বন্ধ করে না। কারণ সময় এসেছে মানুষের মধ্যে চেতনা, বুদ্ধিমত্তা এবং সত্যিকারের ইচ্ছা ও ভালবাসার অবতারণের।

অহং, যা তার মিথ্যা পরিচয় থেকে শক্তিশালী বোধ করে, কম্পনজনিত শক অনুভূত হলে খাগড়ার মতো দুর্বল বোধ করে। এবং এটি শুধুমাত্র পরে যে তিনি তার শক্তি, আত্মার শক্তি, এবং তার ইচ্ছা শরীরের মিথ্যা শক্তি না, যে ফর্ম যা আবেগ এবং নিম্ন মনকে পুষ্ট করে, পুনরুদ্ধার করে।

মানুষের পরিচয় সংকট আত্মার আলোর প্রতি অহংকার প্রতিরোধের সাথে মিলে যায়। এই চিঠিপত্র অহমের জীবনে এই প্রতিরোধের সমানুপাতিক কষ্টের সাথে জড়িত। এবং সমস্ত প্রতিরোধ নিবন্ধিত হয়, যদিও এটি অহং দ্বারা মনস্তাত্ত্বিক বা প্রতীকী বা দার্শনিকভাবে অনুভূত হয়। কারণ আত্মার জন্য, মানুষের মধ্যে সবকিছুই শক্তি, কিন্তু মানুষের জন্য, সবকিছুই প্রতীক। এই কারণেই মানুষ দেখতে এত কঠিন মনে করে, কারণ সে যা দেখতে পাবে, একবার এই রূপগুলি থেকে মুক্ত হয়ে, কম্পনের মাধ্যমে হবে, রূপের প্রতীকের মাধ্যমে নয়। এই কারণেই বলা হয় যে বাস্তব রূপ দ্বারা বোঝা যায় না, তবে কম্পনের দ্বারা পরিচিত হয় যা নিজেকে প্রকাশ করার জন্য রূপের জন্ম দেয় এবং সৃষ্টি করে।

পরিচয়ের সমস্যাটি সর্বদা প্রতীকবিদ্যার উদ্বৃত্তকে আহ্বান করে, অর্থাৎ মানুষের মধ্যে বিষয়গত চিন্তা-রূপের কথা বলা হয়। এই উদ্বৃত্ত, যে কোন সময়ে, চিন্তা-রূপ প্রতীকের মাধ্যমে অহংকে যোগাযোগ করার জন্য আত্মার প্রচেষ্টার সাথে মিলে যায়, কারণ এটিই মনের ভিতরে অহংকে বিকশিত করার একমাত্র উপায়।

অহং বুঝতে পারে, গভীর কারণগুলি না বুঝেই, সে নিজেকে নিজের মতো করে দেখতে চায়। কিন্তু সে এখনো তার চিন্তাধারার, তার আবেগের বন্দী হিসেবে, সে নিজেকে বিশ্বাস করে তার আন্দোলনে, তার আন্দোলনে! অর্থাৎ, তিনি বিশ্বাস করেন যে এই গবেষণা প্রক্রিয়াটি কেবল তার থেকেই উদ্ভূত হয়। এবং এটি তার অ্যাকিলিসের হিল, কারণ অহং সঠিক এবং ভুলের মায়ায়, স্বাধীন ইচ্ছার মায়ায়।

যখন আত্মার শক্তি প্রবেশ করে এবং মিথ্যা পরিচয়ের বাধা ভেঙ্গে ফেলে, তখন অহং বুঝতে পারে যে বিন্দুটি তার পক্ষে আর সঠিক নয়, তবে তার আসল বুদ্ধিমত্তার অ্যাক্সেস রয়েছে। তখন সে বুঝতে শুরু করে। আর সে যা বোঝে তারা বোঝে না যারা একই বুদ্ধিমত্তায় নেই, তাদের ভালো ইচ্ছা যাই হোক না কেন। কারণ সবকিছুই প্রতীকের বাইরে, সবকিছুই **স্পন্দিত** ।

অহং এবং আত্মা যখন একে অপরের সাথে সামঞ্জস্য করে তখন পরিচয়ের সমস্যাটি অকল্পনীয়, কারণ অহং আর তার দিক থেকে বাস্তবতার "আচ্ছাদন " *(আচ্ছাদন) টানে না* , যখন আত্মা অন্য দিকে কাজ করে। উভয়ের মধ্যে চিঠিপত্র আছে, এবং ব্যক্তিত্ব হল সুবিধাভোগী। কারণ ব্যক্তিত্ব সর্বদা আত্মা ও অহংকার মধ্যকার ব্যবধানের শিকার।

যতক্ষণ মানুষের মধ্যে পরিচয়ের সমস্যা থাকবে ততক্ষণ সে সুখী হতে পারবে না। কারণ তার জীবনে বিভাজন রয়েছে, এমনকি যদি তার বস্তুগত জীবন সারফেসে ভালো চলছে বলে মনে হয়। এটি শুধুমাত্র নিজের ঐক্যের অনুপাতে সত্যিই ভাল যেতে পারে।

আধুনিক মানুষের পরিচয় সঙ্কট কেবল তাদেরই উপকারীভাবে প্রভাবিত করে যারা ইতিমধ্যে তাদের মধ্যে ভারসাম্যের জন্য একটি মহান আকাঙ্ক্ষা জাগ্রত করার জন্য যথেষ্ট বিপর্যয় ভোগ করেছে। কিন্তু ভারসাম্যের এই আকাঙ্ক্ষা তখনই সম্পূর্ণরূপে উপলব্ধি করা যায় যখন অহং আত্মার সূক্ষ্ম শক্তিকে কাজে লাগানোর জন্য অত্যাচারের যন্ত্রগুলিকে দূরে সরিয়ে রাখে। মানব জীবনের ডোমেইন যেখানে মহান আধ্যাত্মিকতা আছে, পরিচয় সংকট যতটা তীব্র হতে পারে, যদি না হয়, তার চেয়েও বেশি, যেখানে কেউ এই অভ্যন্তরীণ কিছুর প্রতি অহংকার এই মহান সংবেদনশীলতার সম্মুখীন হয় না যা তাকে ক্রমবর্ধমান আধ্যাত্মিকতার দিকে অনির্দিষ্টভাবে ঠেলে দেয়। বৃহত্তর, আরো এবং আরো পরে চাওয়া এবং শেষ পর্যন্ত আরো এবং আরো অপূর্ণ.

যারা মানবতার এই শ্রেণীর তাদের দেখতে হবে যে সমস্ত রূপ, এমনকি সর্বোচ্চ, সবচেয়ে সুন্দর, আত্মার আসল চেহারাটি ঢেকে রাখে, কারণ আত্মা অহংয়ের সমতলে নয়; এটি অসীমভাবে দেখতে পায়, এবং যখন অহং রূপের সাথে অতিমাত্রায় সংযুক্ত হয়ে যায়, এমনকি আধ্যাত্মিক রূপ, তখন এটি মহাজাগতিক শক্তিতে হস্তক্ষেপ করে যা অবশ্যই আত্মার মধ্য দিয়ে যেতে হবে এবং আত্মার সমস্ত নিম্ন নীতির কম্পনশীল হার বাড়াতে হবে। 'মানুষ, যাতে সে জীবনের মাস্টার হতে পারে। যখন সুপ্রামেন্টাল (উচ্চ মানসিক) মানুষ জীবনের কর্তা হয়, তখন তাকে আর আধ্যাত্মিকভাবে আত্মার সমতলে টানার দরকার নেই, কারণ এটি হল আত্মা, তার শক্তি, যা তার দিকে নেমে আসে এবং তার কাছে তার আলোর শক্তি প্রেরণ করে। .

মানুষের আধ্যাত্মিক পরিচয় তার মধ্যে উপস্থিতি, আত্মার শক্তি রূপের মাধ্যমে। কিন্তু এই শক্তির রূপান্তরের ক্ষমতা নেই, যদিও এটি ব্যক্তিত্বের উপর রূপান্তরের ক্ষমতা রাখে।

কিন্তু একা ব্যক্তিত্বের রূপান্তর যথেষ্ট নয়, কারণ এটি মানুষের শেষ দিক। এবং যতক্ষণ না আত্মার সাথে অহংকারও একত্রিত হয় না, ততক্ষণ আধ্যাত্মিক ব্যক্তিত্ব মানুষকে তার নৈতিকতার দ্রুত রূপান্তরের দিকে নিয়ে যেতে পারে, এমন পরিমাণে যে মনের মধ্যে ভারসাম্যের অভাব এবং মানসিক আবেগ তাকে নিয়ে যেতে পারে। আধ্যাত্মিকতার তীব্র সংকট, ধর্মীয় গোঁড়ামি।

এইভাবে, এমনকি উগ্র আধ্যাত্মিক মানুষ নিজের এবং সমাজের ক্ষতি করতে পারে। কারণ ধর্মান্ধতা একটি আধ্যাত্মিক রোগ, এবং যারা এতে ভুগছে তারা সহজেই, তাদের আধ্যাত্মিক রূপের বিশেষ শোষণের কারণে, অন্যদের মধ্যে এমন একটি আকর্ষণ তৈরি করতে পারে যা তাদের মহান বিশ্বাসী করে তুলতে পারে, অর্থাৎ, রূপকে নতুন দাস বলে, ধর্মান্ধতার দ্বারা উত্থাপিত পাদদেশে যা কেবলমাত্র আধ্যাত্মিকভাবে অসুস্থ ব্যক্তিরাই ধারণ করতে পারে, যদি তিনি তার মতো অজ্ঞ, কিন্তু অসুস্থতার এই রূপের প্রতি আরও সংবেদনশীল তাদের অনুগত বিশ্বাস দ্বারা সহায়তা করেন।

আরও বেশি সংখ্যক পুরুষ, ধর্মান্ধভাবে আধ্যাত্মিক না হয়ে, তাদের আধ্যাত্মিকতায় খুব বেশি প্রভাবিত হয় এবং এর সীমা জানে না, অর্থাৎ রূপের বিভ্রম। শীঘ্রই বা পরে তারা অতীতের দিকে তাকায় এবং বুঝতে পারে যে তারা তাদের আধ্যাত্মিকতার মায়ায় পতিত হয়েছে। তাই তারা নিজেদেরকে অন্য আধ্যাত্মিক রূপের মধ্যে নিক্ষেপ করে, এবং এই সার্কাস বহু বছর ধরে চলতে পারে, যতদিন না, মায়ায় বিরক্ত হয়ে, তারা চিরতরে এটি থেকে বেরিয়ে আসে এবং বুঝতে পারে যে চেতনা রূপের বাইরে। এগুলি রূপের সীমা ছাড়িয়ে যাওয়ার এবং অবশেষে উচ্চ মনের মহান আইনগুলি আবিষ্কার করার সুযোগ রয়েছে।

আধ্যাত্মিক পরিচয়ের সংকট এই সময়ে তাদের পক্ষে আর সম্ভব নয়। কারণ তারা জানে, তাদের নিজস্ব অভিজ্ঞতা থেকে, সবকিছুই অহমের বিরুদ্ধে আত্মার অভিজ্ঞতাকে পরিবেশন করে, যেদিন পর্যন্ত অহং অনুভবের প্রয়োজনীয়তা ত্যাগ করে তার মধ্যে কেবলমাত্র অতিরিক্ত চেতনাকে (উচ্চ মন) জানার জন্য।

আধ্যাত্মিক পরিচয়ের সংকট ক্রমশ আধুনিক সময়ের সংকটে পরিণত হচ্ছে। কারণ মানুষ আর একা প্রযুক্তি ও বিজ্ঞানে বাঁচতে পারে না। তার কাছে তার আরও কিছু দরকার, এবং বিজ্ঞান তাকে তা দিতে পারে না। কিন্তু গোঁড়া ধর্মের পুরানো রূপও নেই। তাই তিনি নিজেকে অগণিত আধ্যাত্মিক বা রহস্যময়-আধ্যাত্মিক অ্যাডভেঞ্চারের মধ্যে নিক্ষেপ করেন, তিনি যা খুঁজছেন তা খুঁজে বের করার দৃঢ় অভিপ্রায় নিয়ে, বা তিনি যা খুঁজতে চান তা খুঁজে বের করতে চান, এবং তিনি সঠিকভাবে জানেন না। সুতরাং, তার অভিজ্ঞতা তাকে সমস্ত সম্প্রদায়ের, সমস্ত দার্শনিক বা গুপ্তবিদ্যার সীমাবদ্ধতার মধ্যে নিয়ে আসে এবং এখানে তিনি আবার আবিষ্কার করেন, যদি তিনি গড়ের চেয়ে বেশি বুদ্ধিমান হন, যেখানে তিনি উত্তর খুঁজে পেতে বিশ্বাস করেছিলেন সেখানে সীমাবদ্ধতা রয়েছে।

অবশেষে সে নিজেকে একা পায়, এবং তার আধ্যাত্মিক পরিচয়ের সংকট আরও বেশি অসহনীয় হয়ে ওঠে। যেদিন পর্যন্ত সে আবিষ্কার করে যে তার মধ্যে সবকিছুই বুদ্ধিমত্তা, ইচ্ছাশক্তি এবং ভালবাসা, কিন্তু যে মানুষটি খুঁজছে তার চোখে লুকানো এবং আবৃত মেকানিজম আবিষ্কার করার জন্য সে এখনও তাদের আইন সম্পর্কে যথেষ্ট জানে না। কী আশ্চর্য সে দেখল! যখন সে বুঝতে পারে যে তার সঙ্কটের সময় সে যা খুঁজছিল তা ছিল তার মধ্যে থাকা আত্মার একটি প্রক্রিয়া যা তাকে নিজের কাছে, অর্থাৎ তার কাছে জেগে উঠতে এগিয়ে নিয়ে যায়।

এবং যখন এই পর্যায়টি শেষ পর্যন্ত শুরু হয়, তখন মানুষ, মানুষের অহং, তার মধ্যে থাকা অতিপ্রাকৃত বুদ্ধিমত্তার (উচ্চতর মন) প্রকৃতিকে নিরাশ করে এবং বুঝতে শুরু করে যা জাগ্রত হয় এবং তাকে সমস্ত পুরুষের মায়াকে চিনতে দেয় যারা নিজের বাইরে অনুসন্ধান করে। বিশ্বের সেরা উদ্দেশ্য, এবং যারা এখনও বুঝতে পারেনি যে এই পুরো প্রক্রিয়াটি আত্মার অভিজ্ঞতার অংশ যা অহংকে ব্যবহার করে তাকে তার সাথে স্পন্দিত সংস্পর্শে আসার জন্য প্রস্তুত করে।

মানুষ আর তার সত্তার বাস্তবতার সংস্পর্শে নেই। এবং এই যোগাযোগের ক্ষতি বিশ্বে এতই বিস্তৃত যে, এই পৃথিবী পাগলদের পূর্ণ একটি জাহাজের প্রতিনিধিত্ব করে যারা জানে না জাহাজটি কোথায় যাচ্ছে। তারা অদৃশ্য শক্তি দ্বারা পরিচালিত হয় এবং এই শক্তিগুলির উত্স সম্পর্কে বা তাদের উদ্দেশ্য সম্পর্কে কারও কোনও ধারণা নেই। মানুষ এত শতাব্দী ধরে অদৃশ্য থেকে বিচ্ছিন্ন ছিল যে সে বাস্তবতার ধারণা সম্পূর্ণরূপে হারিয়ে ফেলেছিল। এবং এই চেতনা হারানোর কারণ যার পিছনে তার অস্তিত্বের সমস্যার প্রাচীর উঠে যায়: পরিচয়। এবং এখনও সমাধান তার এত কাছাকাছি, এবং একই সময়ে এত দূরে। যদি তিনি জানতেন যে তিনি যা শুনতে চান না তা কীভাবে শুনতে হয়।

কথার যুদ্ধ আর ভাবনার যুদ্ধই তার বাকি। কি মানুষ স্বয়ংসম্পূর্ণ হতে পারে, যদি সে বুঝতে না পারে যে তার একটি অংশ মহান, যখন অন্যটি তার ইন্দ্রিয় দ্বারা সীমাবদ্ধ, এবং দুটি একসাথে আসতে পারে? মানুষ যদি একদিন বুঝতে পারে যে তার বাইরের কেউ তার জন্য পারে না, এবং শুধুমাত্র নিজের জন্যই পারে... কিন্তু সে নিজের জন্য বাঁচতে ভয় পায়, কারণ সে ভয় পায় অন্যরা তার সম্পর্কে কি বলবে... সে যতই গরীব!

পুরুষরা এমন সত্তা যারা প্রতিনিয়ত বিভ্রমের বিরুদ্ধে লড়াইয়ে হেরে যায়, কারণ তারাই এটিকে বাঁচিয়ে রাখে এবং শক্তিশালী। যা তাদের ক্ষতি করে তা ধ্বংস করতে সবাই ভয় পায়। একটি বাস্তব দুঃস্বপ্ন! এবং সবচেয়ে খারাপ এখনও আসতে হবে! কারণ XXth শতাব্দীর মানুষটি তার দিকে নেমে আসা প্রাণীদের দেখতে পাবে যারা তারার মধ্যে চলাচল করে এবং যারা তার জন্য পূর্বে দেবতা ছিল।

ব্যক্তিগত পরিচয়ের সমস্যা গ্রহের স্কেলে চলতে থাকে। যেহেতু এই সমস্যাটি নিম্ন মন এবং উচ্চ মনের মধ্যে সংযোগের অভাব থেকে উদ্ভূত হয়, তাই এর প্রভাব বিশ্বস্তরে এবং ব্যক্তিগত স্তরে অনুভূত হয়, কারণ শুধুমাত্র উচ্চ মনই মানুষকে তার গ্রহের মহান রহস্য ব্যাখ্যা করতে পারে। তার প্রাচীন দেবতা। যতক্ষণ এই দেবতাগুলি প্রাচীন ইতিহাসের অংশ, মানুষ তাদের দ্বারা বিরক্ত হয় না। কিন্তু যখন এই একই প্রাণীরা ফিরে আসে এবং নিজেদেরকে একটি আধুনিক আলোতে পরিচিত করে তোলে, তখন বিশ্বব্যাপী ধাক্কাটি প্রতিধ্বনিত হয়, এবং যে মানুষটি তার আসল পরিচয় আবিষ্কার করেনি সে নিজেকে তার মিথ্যা পরিচয়ের মধ্যে আটকা পড়ে - এবং সে কী ভাবে এবং বিশ্বাস করে - এবং চক্রীয় ঘটনা।

যদি তার মন অভিজ্ঞতার জন্য উন্মুক্ত থাকে এবং সে তার মধ্যে প্রকৃত বুদ্ধিমত্তা পায়, একটি গ্রহের জন্য সবচেয়ে বিরক্তিকর ঘটনাগুলির একটি সম্পর্কে প্রয়োজনীয় তথ্য যা সে জানে না এবং জানে না, মানুষ গ্রহের পরিচয় সংকট অনুভব করে না, কারণ তার আছে ইতিমধ্যে নিজের মধ্যে ব্যক্তিগত পরিচয় সংকট সমাধান.

যেহেতু মানবতা ইতিহাস এবং জীবনের একটি টার্নিং পয়েন্টের দিকে দ্রুত অগ্রসর হচ্ছে, তাই ব্যক্তিত্ব, অর্থাৎ মানুষ এবং মহাজাগতিকের মধ্যে ক্রমবর্ধমান নিখুঁত সম্পর্ক স্থাপন করা আবশ্যক কারণ এটি প্রকৃত ব্যক্তিত্ব থেকে কম্পন যা একজন মানুষের মধ্যে খুঁজে পায়। তার আসল পরিচয় আবিষ্কার করেছে। এবং যতক্ষণ না এই আসল পরিচয় স্থিতিশীল না হয়, ব্যক্তিত্ব সম্পূর্ণরূপে সম্পন্ন হয় না, এবং কেউ বলতে পারে না যে মানুষ " পরিপক্ক" , অর্থাৎ বিরক্ত না হয়ে ব্যক্তিগত বা বিশ্বের যেকোনো ঘটনার মুখোমুখি হতে সক্ষম, কারণ সে ইতিমধ্যেই জানে এটা এবং তিনি এর কারণ জানেন।

যখন আমরা সাধারণভাবে পরিচয় সংকটের কথা বলি, তখন আমরা এটি সম্পর্কে মনস্তাত্ত্বিক উপায়ে কথা বলি, এই অর্থে যে আমরা মানুষ এবং সমাজের মধ্যে সম্পর্ককে সংজ্ঞায়িত করার চেষ্টা করছি। কিন্তু পরিচয় সংকট তার চেয়ে অনেক গভীরে যায়। এটি আর সামাজিক মানুষ নয় যে পরিমাপের কাঠি হয়ে ওঠে, স্বাভাবিকতা যা আমাদের অর্জন করতে হবে। বিপরীতে, স্বাভাবিকতাকে অবশ্যই স্থানান্তরিত করতে হবে, অর্থাৎ স্বয়ং-অ-ভিস-এর বিপরীতে বলা যেতে পারে।

মানুষ যখন বুঝতে শুরু করে যে তার আসল পরিচয় বন্ধনীতে সাধারণ মানুষের স্বাভাবিক পরিচয়ের উপরে, তখন সে দুটি জিনিস উপলব্ধি করে। প্রথমত, সাধারণ মানুষকে যা উদ্বিগ্ন করে, তাকে আর চিন্তিত করে না; এবং যেটি একটি অসাধারন গ্রহকে ধাক্কা দেয়, প্যারেন্টেটিকভাবে, তা স্বাভাবিক। তারপরে এই দৃষ্টিকোণ থেকে বাস্তব পরিচয়ের ঘটনাটি আরও বেশি গুরুত্বপূর্ণ হয়ে ওঠে, কারণ এটি নির্ধারণ করে যে কোন মানুষটি স্বাভাবিক বা অচেতন মানুষের স্বাভাবিক দুর্বলতাগুলি কাটিয়ে উঠতে পারে এবং উপরন্তু, এটি নির্ধারণ করে যে মানুষটি আরও স্বাভাবিক - যে বলা যায়, অচেতন এবং তুলনামূলকভাবে ভারসাম্যপূর্ণ মানুষের পরিমাণে - একটি গ্রহের আদেশের চাপকে সমর্থন করতে পারে যা একটি স্বাভাবিক সত্তাকে বিপর্যস্ত করে এবং একটি সংস্কৃতির পতন ঘটায় যা এমন একটি মানুষের জন্ম দেয়।

একজন মানুষ যে তার আসল পরিচয় আবিষ্কার করেছে সে সব ধরণের মনস্তাত্ত্বিক অভিজ্ঞতার উর্ধ্বে রয়েছে যা একজন মানুষকে বিরক্ত করার ঝুঁকি রাখে যে তার সংস্কৃতির পণ্য এবং যে কেবল তার সংস্কৃতির মূল্যবোধের দ্বারা জীবনযাপন করে। কারণ প্রকৃতপক্ষে, একটি সংস্কৃতি একটি খুব পাতলা এবং খুব ভঙ্গুর ক্যানভাস যখন বাহ্যিক ঘটনাগুলি এটিকে বিরক্ত করতে আসে, অর্থাৎ এটিকে এমন একটি বাস্তবতার সাথে পুনরায় সংজ্ঞায়িত করা যা এটি জানে না বা এটি সম্পূর্ণরূপে অজানা। এই অমীমাংসিত পরিচয়ের ঘটনা মানুষের বিপদ.

কারণ যদি সে তার আসল পরিচয় আবিষ্কার না করে, তাহলে সে আবেগগতভাবে এবং মানসিকভাবে সামাজিক মনোবিজ্ঞানের দাস হয়ে যাবে এবং তার স্বাভাবিক প্রতিক্রিয়া যখন চক্রের শেষের ঘটনাগুলি তার বিকাশের স্বাভাবিক গতিপথকে ব্যাহত করে। এখানেই মানুষকে সামাজিক-ব্যক্তিগত প্রতিক্রিয়া থেকে মুক্ত হতে হবে, যাতে সার্বজনীন বোঝাপড়ার মোড অনুসারে অভিজ্ঞতার জীবনযাপন করতে সক্ষম হয়। শুধুমাত্র আসল পরিচয়ই প্রকৃত মানুষ এবং প্রকৃত বুদ্ধিমত্তার সাথে মিলে যায়। মানুষের সীমিত আবেগ থেকে বিচ্ছিন্ন একটি বুদ্ধিমত্তা অনুসারে, শুধুমাত্র আসল পরিচয়ই অসুবিধা ছাড়াই মহাজাগতিক ঘটনাকে ব্যাখ্যা করতে পারে।

মানুষের আইডেন্টিটি ক্রাইসিসের সমস্যা একটি সাধারণ মানসিক সমস্যার চেয়ে অনেক বেশি জীবনের সমস্যা। মানুষ যে মনস্তাত্ত্বিক বিভাগগুলিকে নিজের সন্ধানে বুঝতে চায় তা আর তাদের সাথে খাপ খায় না যারা তাদের আসল পরিচয় আবিষ্কার করে, কারণ তাদের জীবনে সেই আগ্রহ নেই যা তারা নিজের সাথে লড়াই করার সময় ছিল। তার আসল পরিচয় তার সত্তার প্রতিটি কোণে পূর্ণ করে, সে নিজেকে এমন একটি স্বভাবের মুখোমুখি দেখতে পায় যা তার মনের অন্য মাত্রা, মাত্রা বা শক্তির সমতলে অবস্থান করে যা অনুকরণের দ্বারা সংযুক্ত নয় কারণ সে গঠিত মনস্তাত্ত্বিক বিভাগগুলির থেকে সম্পূর্ণ স্বাধীন। প্রকৃত পরিচয় ছাড়াই অচেতন মানুষের মানসিক ও মানসিক গঠন।

পরিচয় সংকটের ঘটনাটি মানুষের জন্য একটি যন্ত্রণা, কারণ সে কখনই নিজের মধ্যে পুরোপুরি সুখী হতে পারে না, নিজের সাথে, যা সে ক্রমাগত খোঁজে। তার জন্য, সুখী হওয়া একটি অভিজ্ঞতা সে স্থায়ীভাবে বেঁচে থাকতে চায়। কিন্তু তিনি বুঝতে পারেন না যে তিনি যাকে " সুখী" বলেছেন , আপনাকে নিজের সম্পর্কে ভাল অনুভব করতে হবে, অর্থাৎ বাইরের বিশ্ব এই সম্প্রীতিকে বিরক্ত করতে সক্ষম না হয়ে নিখুঁত অভ্যন্তরীণ সাদৃশ্য অনুভব করতে সক্ষম হবেন। সে বুঝতে পারে না যে জীবনকে তার থেকে আলাদা করা যায় না যতক্ষণ না তার কাছে পটভূমিকে ছিদ্র করার অভ্যন্তরীণ শক্তি থাকে যা এটির রঙ দেয়।

একজন মানুষ যে তার আসল পরিচয় আবিষ্কার করেছে সে আগের মতো জীবনযাপন করে না। রং বদলেছে, জীবনের আর একই আবেদন নেই, প্রতিটি স্তরে একেক রকম। কারণ এটি অন্য পূর্ববর্তী জীবনের থেকে এই সত্যের দ্বারা পৃথক করা হয়েছে যে এটি প্রকৃত ব্যক্তি যিনি এর সম্ভাবনাগুলি নির্ধারণ করেন, তার পরিবর্তে পরবর্তীটি তার উপর সুস্পষ্টভাবে চাপিয়ে দেওয়া হয় যে সংস্কৃতিতে সে নিহিত রয়েছে।

যে মানুষটি তার পরিচয় আবিষ্কার করেছে তার জীবন একটি ধারাবাহিকতার প্রতিনিধিত্ব করে যা সময়ের সাথে হারিয়ে গেছে এবং যার আর সীমা নেই, অর্থাৎ শেষ বলা যায়। ইতিমধ্যে, এই উপলব্ধি জীবনের পথে এবং জীবনের সৃজনশীল পদ্ধতিতে হস্তক্ষেপ করে। যতক্ষণ মানুষ পরিচয়ে ভুগছে, যতক্ষণ তার মধ্যে প্রকৃত বুদ্ধিমত্তার সঙ্গে তার কোনো যোগাযোগ নেই, ততক্ষণ সে কেবল তার প্রয়োজন মেটাতে পারে। যখন তিনি আলোতে থাকেন, তখন তাকে আর নিজেকে সমর্থন করতে হয় না, কারণ তিনি ইতিমধ্যেই জানেন, কম্পনের মাধ্যমে, তার জীবনের মোড়, এবং এই জ্ঞান তাকে তার প্রয়োজনের জন্য প্রয়োজনীয় সৃজনশীল শক্তি তৈরি করতে সক্ষম করে। বেঁচে থাকার মনস্তাত্ত্বিক বিভাগটি কেবলমাত্র একটি সৃজনশীল শক্তির জন্য জায়গা ছেড়ে দেওয়ার জন্য ম্লান হয়ে যায় যা মানুষের সমস্ত সংস্থান নিযুক্ত করে এবং সেগুলিকে তার মঙ্গলের জন্য স্থাপন করে।

মানুষ তার পরিচয়ের সমস্যা কাটিয়ে উঠতে হলে, তার মধ্যে মনস্তাত্ত্বিক তল থেকে বিশুদ্ধ বুদ্ধিমত্তার সমতলে মূল্যবোধের স্থানচ্যুতি ঘটতে হবে। যদিও মনস্তাত্ত্বিক মূল্যবোধগুলি তার সংকটে অবদান রাখে, কারণ সেগুলি তার ইন্দ্রিয়ের মধ্যে সীমাবদ্ধ, তার বুদ্ধিতে যা সংবেদনশীল উপাদানকে ব্যাখ্যা করে, তার একটি পরিমাপের রড দরকার যা তার বুদ্ধির অনুমোদনের সাপেক্ষে নয়।

এখানেই প্রথমবার তার মধ্যে এমন কিছুর প্রতি এক ধরনের বিরোধিতা দেখা দেয় যা তার মধ্যে প্রবেশ করে এবং যাকে সে তার চলাচলে বাধা দিতে পারে না। যখন আন্দোলন শুরু হয়, তখন এটি এই বুদ্ধির আলো যা তার অহং এবং তার কামিরা থেকে স্বাধীন। এখানেই মূল্যবোধের স্থানচ্যুতি অনুভূত হতে শুরু করে যার ফলে একটি অভ্যন্তরীণ যন্ত্রণার সৃষ্টি হয়, যা জাগ্রত ব্যক্তির দ্বারা জীবনযাপন করা উচিত সেই অনুসারে আলোর বুদ্ধিমত্তাকে প্রবেশ করার জন্য যথেষ্ট।

অহংকে একটি নির্দিষ্ট ভারসাম্য বজায় রাখার অনুমতি দেওয়ার জন্য মানগুলির পরিবর্তন কেবল ধীরে ধীরে করা হয়। কিন্তু সময়ের সাথে সাথে, একটি নতুন ভারসাম্য তৈরি হয় এবং অহং আর স্বাভাবিক থাকে না, সামাজিকভাবে বলা যায়; তিনি সচেতন। অর্থাৎ, তিনি রূপ এবং আদর্শের বিভ্রমের মধ্য দিয়ে দেখেন, এবং তার সূক্ষ্ম দেহের কম্পন, তার ব্যক্তিত্ব যে স্তরগুলির উপর ভিত্তি করে থাকবে এবং তার আসল পরিচয় বাড়ানোর জন্য আরও বেশি স্বতন্ত্র হয়ে ওঠেন।

মূল্যবোধের স্থানচ্যুতি আসলে মূল্যবোধের পতন, তবে আমরা এটিকে "স্থানচ্যুতি" বলি, কারণ যে পরিবর্তনগুলি সংঘটিত হয় তা একটি স্পন্দন শক্তির সাথে সামঞ্জস্যপূর্ণ যা দেখার পদ্ধতিকে রূপান্তরিত করে, যাতে চিন্তার পদ্ধতি বুদ্ধিমত্তার সাথে সামঞ্জস্য করতে পারে। মানুষের একটি উচ্চ কেন্দ্রের. যতক্ষণ না অহং কম্পনের দ্বারা এই পতনের সাক্ষী না হয়, ততক্ষণ এটি চিন্তার বিভাগগুলি, প্রতীকগুলির বিষয়ে আলোচনা করতে থাকে, যা তার মিথ্যা পরিচয়ের দেয়াল গঠন করে। কিন্তু যত তাড়াতাড়ি এই দেয়ালগুলি দুর্বল হতে শুরু করে, মূল্যবোধের স্থানচ্যুতি একটি গভীর পরিবর্তনের সাথে মিলে যায়, যা অহং দ্বারা যুক্তিযুক্ত করা যায় না। এবং তার দ্বারা যুক্তিযুক্ত হতে না পেরে, তিনি অবশেষে আলোর দ্বারা আঘাতপ্রাপ্ত হন, অর্থাৎ, তিনি অবশেষে স্থায়ী এবং ক্রমবর্ধমান উপায়ে এর সাথে যুক্ত হন।

তার জীবন, তারপর, চক্র দ্বারা রূপান্তরিত হয় এবং শীঘ্রই, তিনি এটি আর সীমাবদ্ধ নয়, কিন্তু সম্ভাবনার মধ্যে বাস করেন। তার পরিচয় তার বিষয়গত আকাঙ্ক্ষার সাথে সংজ্ঞায়িত হওয়ার পরিবর্তে তার সাথে সম্পর্কযুক্তভাবে সংজ্ঞায়িত করা হচ্ছে। এবং তিনি " বাস্তব এবং উদ্দেশ্যমূলক স্ব" বলতে কী বোঝায় তা বুঝতে শুরু করেন।

যখন সে বাস্তব এবং বস্তুনিষ্ঠ আত্মকে উপলব্ধি করে, তখন সে খুব স্পষ্টভাবে দেখতে পায় যে এই স্বয়ং নিজেই, তার সাথে নিজের ভিতরে অন্য কিছু যা সে দেখতে পায় না, কিন্তু যা সে উপস্থিত অনুভব করে, সেখানে কিছু কিছু তার মধ্যে প্রবেশ করে। বুদ্ধিমান কিছু, স্থায়ী এবং ক্রমাগত উপস্থিত. এমন কিছু যা তার চোখ দিয়ে দেখে, এবং জগতকে যেমনটি ব্যাখ্যা করে, এবং অহংকার আগে যেমন দেখেছিল তেমন নয়।

আমরা আর বলি না যে এই মানুষটি " মানসিক", আমরা বলি যে তিনি " সুপ্রামেন্টাল (উচ্চতর মানসিক)" , অর্থাৎ জানার জন্য তাকে আর ভাবতে হবে না। পরিচয়ে ভুগছেন তার থেকে, তার অভিজ্ঞতা থেকে এতটাই দূরে যে, তিনি অবাক হয়ে যান যখন তিনি তার অতীতের দিকে ফিরে তাকান, এবং দেখেন যে তিনি এখন কী আছেন এবং তিনি যা ছিলেন তার সাথে তুলনা করেন।

অধ্যায় 2

নিম্নগামী বিবর্তন এবং উর্ধ্বমুখী বিবর্তন *BdM-RG #62A (*পরিবর্তিত*)*

ঠিক আছে, তাই আমি মানুষের বিবর্তনকে আলাদা করি, আমি তাকে একটি নিম্নগামী বক্ররেখা এবং একটি উর্ধ্বমুখী বক্ররেখা ঠিক করি। ? নিম্নগামী বক্ররেখাকে আমি বলি "বিবর্তন", উর্ধ্বমুখী বক্ররেখাকে আমি বিবর্তন বলি। এবং আজ মানুষ এই বক্ররেখার মিটিং পয়েন্টে। আসুন একটি তারিখ রাখি: 1969 যদি আপনি চান। আমরা যদি বিবর্তনকে দেখি - ডারউইনিস্ট দৃষ্টিকোণ থেকে নয় - তবে একটি গোপন দৃষ্টিকোণ থেকে, অন্য কথায়, মানুষের অভ্যন্তরীণ গবেষণা অনুসারে এবং যদি আমরা সময়ের দিকে ফিরে যাই তবে আমরা সেখানে বারো হাজার বছর আগে পতনের সন্ধান করতে পারি। একটি মহান সভ্যতার যার নাম দেওয়া হয়েছিল আটলান্টিস।

সুতরাং এটি এমন একটি সময় ছিল যখন মানুষ তীব্রভাবে বিকশিত হয়েছিল যাকে অ্যাস্ট্রাল বডি বলা হয় যা তার চেতনার একটি দিক, যা তার চেতনার একটি সূক্ষ্ম বাহন, যা সরাসরি সাইকো-আবেগিক সমস্ত কিছুর সাথে সম্পর্কিত। এবং তারপরে এই সভ্যতার ধ্বংসের পরে আজ অবধি, মানুষ তার চেতনার আরও একটি অংশ বিকাশ করেছিল, যাকে গোপনীয়ভাবে নিম্ন মানসিক চেতনার বিকাশ বলা যেতে পারে, যা বুদ্ধির খুব উন্নত বিকাশের জন্ম দিয়েছে, যা আজ মানুষ ব্যবহার করছে। বস্তুগত জগত বুঝতে।

এবং এই গ্রহে 1969 সাল থেকে, মানুষের চেতনায় একটি নতুন ঘটনা ঘটেছে যাকে ফিউশনের নাম দেওয়া যেতে পারে বা যাকে পৃথিবীতে অতিরক্ত চেতনা (উচ্চ মন) জাগ্রত করার নাম দেওয়া যেতে পারে। এবং পৃথিবীতে এমন কিছু পুরুষ আছে যারা নিম্ন মনের স্তরে কাজ করা বন্ধ করে দিয়েছে, তাই বুদ্ধির, এবং যারা চেতনার আরও একটি স্তর তৈরি করতে শুরু করেছে যাকে বলা হয় সুপ্রামেন্টাল চেতনা (উচ্চ মন)। এবং এই পুরুষেরা এমন ফ্যাকাল্টি তৈরি করেছে যা বিকাশের প্রক্রিয়াধীন রয়েছে এবং তারাও বিবর্তনের আরেকটি চক্রের সাথে মিলিত হবে, যাকে কেউ ষষ্ঠ মূল-জাতি বলতে পারে।

গুপ্তভাবে বলতে গেলে, আমরা যখন মানুষের বিবর্তন সম্পর্কে কথা বলি, তখন আমরা আটলান্টিসের কথা বলছি যেটি তার উপ-জাতির সাথে চতুর্থ মূল-জাতি ছিল, ইন্দো-ইউরোপীয় জাতি যার আমরা অংশ, যেগুলি পঞ্চম মূল-জাতির অংশ। এবং এর উপ-জাতি। এবং এখন একটি নতুন রুট-জাতির জগতে শুরু হয়েছে যা তার উপ-জাতিও দেবে। এবং শেষ পর্যন্ত একটি সপ্তম মূল-জাতি হবে যা মানুষকে বিবর্তনের এমন একটি স্তরে পৌঁছাতে সক্ষম করবে যা তার বস্তুগত শরীরের জৈব ব্যবহারের আর প্রয়োজন নেই। কিন্তু আমরা এই মুহূর্তে এটির সাথে কাজ করছি না, তাই আমরা ষষ্ঠ মূল-জাতির সাথে মোকাবিলা করছি যা কোনও শারীরিক জাতিকে প্রতিনিধিত্ব করে না, তবে যা ভবিষ্যতের মানবতার নতুন মানসিক চেতনার একটি সম্পূর্ণরূপে মানসিক দিককে প্রতিনিধিত্ব করে।

এটা স্পষ্ট যে, এই সমতলে মানুষের বিবর্তন বোঝার জন্য, বিপরীত ঘূর্ণির বিন্দু থেকে তার চূড়ান্ততার দিকে, যা সম্ভবত দুই হাজার পাঁচশ বছর আমাদের প্রাপ্ত তথ্য অনুসারে, এটা স্পষ্ট যে মানুষ অতিক্রম করতে চলেছে। চেতনার একেবারে অসাধারণ পর্যায়ের মধ্য দিয়ে, অর্থাৎ ম্যান অফ দ্য ইন্দো-ইউরোপীয় রেসের তুলনায় আটলান্টিসের ম্যান যতটা সীমিত ছিল, আজকের ম্যান ততটা সীমিত এবং পরবর্তী মানুষের তুলনায় সীমিত থাকবে। পৃথিবীতে অতিপ্রাকৃত চেতনার (উচ্চ মন) বিবর্তন, যা অরবিন্দ ভবিষ্যদ্বাণী করেছিলেন।

সুপ্রামেন্টাল চেতনার (উচ্চ মন) বিবর্তনে যা আকর্ষণীয় তা হল: এটি হল যে আজকে আমরা যতটা মানুষ, যুক্তিবাদী মানুষ, কার্টেসিয়ান মানুষ, পঞ্চম মূল-জাতির খুব প্রতিফলিত মানুষ, আমাদের যতটা প্রবণতা রয়েছে। বিশ্বাস করা যে আমাদের মন আমাদের অহং দ্বারা নিয়ন্ত্রিত হয়, আগামীকাল মানুষ আবিষ্কার করবে যে মানুষের মন অহং দ্বারা নিয়ন্ত্রিত হয় না, মানুষের মন তার মনস্তাত্ত্বিক সংজ্ঞায়, অহমের প্রতিফলিত অভিব্যক্তি এবং এর উত্স সমান্তরাল বিশ্বে অবস্থিত যাকে এই মুহূর্তে "মানসিক বিশ্ব" বলা যেতে পারে, কিন্তু যাকে পরবর্তীতে "স্থাপত্য জগত" বলা হবে ।

অন্য কথায়, আমি বলতে চাচ্ছি যে মানুষ তার চিন্তার উত্স আবিষ্কার করার জন্য যত বেশি কষ্ট বা ক্ষমতা বা স্বাধীনতা গ্রহণ করবে, তার পক্ষে সমান্তরাল বিশ্বের সাথে টেলিসাইকিক যোগাযোগে প্রবেশ করা তত বেশি সম্ভব হবে। অবশেষে বিবর্তনের ধারায় পৌঁছাতে, বিশ্ব স্তরে, জাতি সর্বজনীন স্তরে, তাত্ক্ষণিকভাবে জীবনের রহস্যগুলিকে ব্যাখ্যা করতে সক্ষম হতে, উভয় বস্তুর জগতে এবং আত্মার জ্যোতির্জ জগতের চেয়ে আত্মার মানসিক রাজ্য। অন্য কথায়, আমি যা বলতে চাচ্ছি তা হল, মানুষ, এমন এক পর্যায়ে এসে পৌঁছেছে যেখানে আজ তার নিজের জন্য যথেষ্ট মানসিক চেতনার অবস্থায় পৌঁছানো সম্ভব।

এবং যখন আমি স্বয়ংসম্পূর্ণ মানসিক সচেতনতা বলি, তখন আমি সত্যের মনস্তাত্ত্বিক মূল্যের উপর ভিত্তি করে মানসিক সচেতনতা বলতে চাই না। সত্য একটি শব্দ, এটি একটি ব্যক্তিগত প্রত্যয় বা একটি সামাজিক প্রত্যয়, বা একটি সমষ্টিগত সমাজতাত্ত্বিক প্রত্যয়, যা বস্তুর জগতে প্রাধান্য নিশ্চিত করার জন্য ব্যক্তি হিসাবে মানুষের বা একটি সমষ্টিগত হিসাবে সমাজের মানসিক চাহিদার অংশ।

কিন্তু মানবতার ভবিষ্যৎ চেতনার বিবর্তনের পরিপ্রেক্ষিতে, সত্যের ঘটনা বা তার মনস্তাত্ত্বিক প্রতিকূল, বা এর মানসিক মূল্য, এই সাধারণ কারণে একেবারেই অকেজো হয়ে যাবে যে মানুষ আর তার বিবেকের আবেগকে ব্যবহার করতে পারবে না। তার জ্ঞানের মনস্তাত্ত্বিক মূল্যায়ন। তাকে আর তার নিজের মানসিক নিরাপত্তার বিকাশের জন্য তার বিবেকের আবেগকে ব্যবহার করতে হবে না।
সুতরাং মানুষ মানসিক সমতলে ব্যায়াম করতে সক্ষম হওয়ার জন্য মন থেকে সম্পূর্ণ মুক্ত হবে, প্রকাশ, বিস্তৃতি এবং সর্বজনীন চেতনার চূড়ান্ত অসীম থিমগুলির সংজ্ঞা যা বিশ্বের সমস্ত জাতিগুলির অংশ, যা অংশ। মহাজাগতিক সমস্ত জাতিগুলির মধ্যে, এবং যা প্রকৃতপক্ষে আত্মার অপরিবর্তনীয় ঐক্যের অংশ, তার পরম সংজ্ঞায়, আলোর মূল উত্স হিসাবে এবং মহাজাগতিতে এর গতিবিধি।

সুতরাং মানবতার বিবর্তনে এমন একটি বিন্দু আসবে যখন অবশেষে অহং আত্মের চেতনার হারিয়ে যাওয়া সময়ের জন্য তৈরি হবে এবং যেখানে আত্ম অবশেষে তার মনস্তাত্ত্বিক সংজ্ঞার সম্ভাব্য সীমাতে পৌঁছে যাবে, তার চেতনায় প্রবর্তন করে। তার বিশুদ্ধ মনের সৃজনশীল সম্ভাবনা, অর্থাৎ তার আত্মার।

এবং আমরা পৃথিবীতে, বিভিন্ন জাতিতে, বিভিন্ন জাতিতে, বিভিন্ন সময়ে, এমন ব্যক্তিদের আবিষ্কার করব যারা ফিউশনকে জানবে, অর্থাৎ, যারা তাত্ক্ষণিকভাবে জ্ঞানের উত্সগুলির দিকে এত বড় মাধ্যাকর্ষণ করতে সক্ষম হবেন, বিশ্ব বিজ্ঞান, প্রযুক্তি, কৌশল, চিকিৎসা, মনোবিজ্ঞান বা ইতিহাসের পরিপ্রেক্ষিতে, সম্পূর্ণরূপে উৎখাত হবে। কি জন্য ? কারণ মানুষের বিবর্তনের পর থেকে প্রথমবারের মতো, বস্তুতে আত্মার অবতারণের পর থেকে প্রথমবারের মতো এবং বস্তুর সাথে আত্মার মিত্রতার পর প্রথমবারের মতো, মানুষ অবশেষে তার পরম জ্ঞান বহন করার ক্ষমতা অর্জন করবে। .

আমি যাকে পরম জ্ঞান বলি তা হল মানুষের মনের ক্ষমতা তার নিজস্ব আলো সহ্য করতে এবং শোষণ করতে সক্ষম। পরম জ্ঞান একটি অনুষদ নয়. পরম জ্ঞান পূর্বনির্ধারণ নয়। পরম জ্ঞানের প্রয়োজন নেই। পরম জ্ঞান হল একটি সংশোধনমূলক বিবর্তনমূলক সমাপ্তি, অর্থাৎ মহাজাগতিক আলোর ক্রিয়াকলাপের মহান ক্ষেত্রের অংশ এবং যা সমস্ত অঞ্চল, সমস্ত বুদ্ধিমান উদাহরণ, অর্থাৎ - মহাবিশ্বের সমস্ত বুদ্ধিমান প্রজাতিকে এক সাথে মিলিত হতে বলে। উচ্চতর মানসিক সমতল, অর্থাৎ শক্তির সমতলে যথেষ্ট শক্তিশালী যা সম্ভবত বিবর্তনের সময় অনুমতি দেয়, ইথারিক দেহের অনিবার্য পুনরুত্থানের জন্য দেহের উপাদানের শেষ অবলুপ্তি।

অর্থাৎ, মানুষের ক্ষমতা শেষ পর্যন্ত বিভিন্ন সূর্যের সাথে একটি শক্তিশালী উপাদানে প্রবেশ করার ক্ষমতা যা সার্বজনীন জীব তৈরি করে এবং যা তার আত্মা, তার আলো এবং তার ভিত্তি, চলাফেরা এবং বোঝার ক্ষেত্রে। পরমাণু চেতনা কল! সুতরাং বিবর্তনের সময় এমন একটি বিন্দু আসবে যেখানে মানুষ চিন্তা না করেই, চিন্তা করার প্রয়োজন ছাড়াই সক্ষম হবে, মানুষ শেষ পর্যন্ত পৃথিবীতে বিবর্তনীয় প্রত্নতাত্ত্বিক এবং বিশ্বজনীন চেতনার বিবর্তনবাদীদের মানসিক নির্মাণে একটি সুনির্দিষ্ট উপায়ে হস্তক্ষেপ করতে সক্ষম হবে। . এর মানে হল যে মানুষ অবশেষে বুঝতে পারবে যে সে একেবারে বুদ্ধিমান সত্তা।

মানুষ বুঝতে পারবে যে বুদ্ধিমত্তা কেবল শিক্ষার একটি রূপের অভিব্যক্তি নয়, তবে বুদ্ধিমত্তা সম্পূর্ণ উপায়ে যে কোনও বিষয়ে যে কোনও মনের মৌলিক বৈশিষ্ট্য। শুধুমাত্র আমরাই আজ এমন এক বিন্দুতে রয়েছি যেখানে একটি অহংকার হিসাবে বা একটি মানবিক হিসাবে, আমরা সর্বজনীন প্রতিফলন দ্বারা, অর্থাৎ ইতিহাস এবং মানবতার স্মৃতি দ্বারা আমাদের উপর আরোপিত সীমার মধ্যে থাকতে বাধ্য।

এবং মানুষকে এখনও দেওয়া হয়নি - কারণ এই ক্ষেত্রে পর্যাপ্ত বিজ্ঞান নেই - মানুষকে এখনও জানার এবং বোঝার ক্ষমতা দেওয়া হয়নি কীভাবে তার মানসিকতা কাজ করে, কীভাবে তার অহং কাজ করে, কীভাবে তার অহং কাজ করে এবং বুদ্ধিমত্তা শব্দটি এর সার্বজনীন সংজ্ঞায় কী বোঝায়, যাতে মানুষ আজ তার সূক্ষ্ম দেহের দ্বারা আটকা পড়ে, অর্থাৎ তার ইন্দ্রিয়ের দ্বারা বলা যায়!

তিনি তার মৌলিক এবং সার্বজনীন জ্ঞানের প্রতিস্থাপন করতে বাধ্য, বিবর্তনের সময় ইতিহাস এবং বিষয় দ্বারা শর্তযুক্ত একটি ছোট সীমিত জ্ঞানকে পরিমার্জিত করতে হবে, কারণ বিজ্ঞানের সমস্ত তত্ত্বকে হতে হবে, এই অর্থে নয় যে বিজ্ঞান আজ কার্যকর নয়, বিপরীতে এটি অত্যন্ত দরকারী, কিন্তু এই অর্থে যে বিজ্ঞান আজ তার নিজের বিলুপ্তির দিকে অনিবার্য যাত্রা করে। ঠিক যেমন সমস্ত সভ্যতা তাদের নিজস্ব বিলুপ্তির দিকে তাদের অনিবার্য যাত্রা করে।

কিন্তু একটি সভ্যতা যেমন তার বিলুপ্তির বাস্তবতাকে খুব কঠিন মনে করে, তেমনি বিজ্ঞানের জন্য তার নিজের বিলোপ সাধন করা কঠিন হবে। এবং এটা খুবই স্বাভাবিক। যারা চিন্তা করে বা যাদের একটি নির্দিষ্ট চেতনা আছে এমন প্রাণীদেরকে কেউ জিজ্ঞাসা করতে পারে না যে তারা পৃথিবীতে তাদের নিজেদের পতন বা তাদের নিজেদের ধ্বংসের প্রচার করবে। মানবতাকে বিকশিত হতে দেওয়ার জন্য আমরা কী, আমরা কী করেছি, আমরা কী করতে পারি, বিকশিত হওয়ার জন্য আমরা কী করতে পারি সে সম্পর্কে সচেতন হতে বাধ্য।

কিন্তু ব্যক্তি হিসাবে - আমি ব্যক্তি হিসাবে স্পষ্টভাবে বলছি - আমরা অবশেষে আমাদের গ্রহে একটি সার্বজনীন এবং মহাজাগতিক আদেশের পরিস্থিতির মুখোমুখি হতে বাধ্য হব, আমরা সেই মাত্রাগুলির মুখোমুখি হতে বাধ্য হব যা অতীতে কুসংস্কারের বড় আন্দোলনগুলি উত্থাপন করেছিল। এ পৃথিবীতে; যে আন্দোলনগুলি বিজ্ঞানের বিবর্তনের সাথে মারা গিয়েছিল, এবং সেই আন্দোলনগুলি যা তখন বিজ্ঞান দ্বারা স্পষ্টভাবে প্রত্যাখ্যান করা হয়েছিল।

সুতরাং আমরা সময়ের সাথে সাথে কিছু অভিজ্ঞতা পর্যালোচনা করতে এবং পুনরুজ্জীবিত করতে বাধ্য হব যাতে উপলব্ধি করা যায় যে মহাজাগতিক সীমাহীন। মানুষের চেতনা সীমাহীন এবং মানুষ তার অভ্যন্তরে তার চেতনা যতটা শক্তিশালী। এটি এমন একটি বিশ্বে আজ অত্যন্ত গুরুত্বপূর্ণ যেখানে আমরা মনের স্রোতের সীমানায় বাস করতে বাধ্য হই যা সামগ্রিকভাবে... এবং যখন আমি সামগ্রিকভাবে বলি, আমি অবশ্যই মার্কিন যুক্তরাষ্ট্রের দিকে তাকিয়ে আছি যেখানে এই ব্যক্তিত্বের সাথে এর মুখোমুখি হওয়ার যৌথ অভিজ্ঞতা ধীরে ধীরে একটি যৌথ মানসিকতা তৈরি করে।

মানুষ অনির্দিষ্টকালের জন্য বিশ্বে ধারণার স্রোত দ্বারা বিস্ফোরিত হতে পারে না যা তাদের সংখ্যায় টেলিভিশন বা সংবাদপত্রের মাধ্যমে বা মুক্ত সংবাদপত্রের বিভিন্ন ফর্ম দ্বারা প্রসারিত হয়। এমন একটা বিন্দু আসবে যেখানে মানুষ আর এই মানসিক ও মনস্তাত্ত্বিক উত্তেজনা সহ্য করতে পারবে না যা সত্য ও মিথ্যার বিভিন্ন সংঘর্ষ থেকে উদ্ভূত হয়। পৃথিবীতে সুপারমেন্টাল (উচ্চ মন) চেতনার বিবর্তনের একটি বিন্দু আসবে যখন মানুষ নিজের সাথে বাস্তবতাকে সংজ্ঞায়িত করতে বাধ্য হবে। কিন্তু এটি "একজন" হবে যা সর্বজনীন হবে, এটি "নিজেই একজন" হবে না যা তার নিজের আত্মার খেলাধুলা বা তার নিজের অহংকার অসারতা বা তার নিজের আমার নিরাপত্তাহীনতার উপর ভিত্তি করে তৈরি হবে।

সুতরাং সেই মুহূর্ত থেকে, মানুষ তার সমস্ত দিক থেকে মানবিক ঘটনা, সভ্যতা বুঝতে সক্ষম হবে। এবং সে আর মনস্তাত্ত্বিকভাবে যা ঘটছে বা পৃথিবীতে যা ঘটবে তার দ্বারা " স্টাফড" (অপরাধিত *)* হবে না । মানুষ স্বাধীন হতে শুরু করবে। এবং যে মুহূর্ত থেকে সে মুক্ত হতে শুরু করবে, অবশেষে সে জীবনকে এর মৌলিক গুণে বুঝতে শুরু করবে। এবং তিনি যত বেশি বিকশিত হবেন, ততই তিনি জীবনকে নিখুঁত, অবিচ্ছেদ্য এবং শেখার উপায়ে বুঝতে পারবেন, এমন অর্থে যা আজ পঞ্চম মূল-জাতির চেতনার অংশ নয়।

কেন এই সব কথাবার্তা? মানুষকে একটু একটু করে বোঝার জন্য যে তিনি নিজেকে দিতে পারেন, নিজেকে তৈরি করতে পারেন, তা হল নিজের প্রতি বিশ্বস্ততা। আমরা এমন এক শতাব্দীতে বাস করছি যেখানে ব্যক্তিস্বাতন্ত্র্যের প্রতি ভালোবাসা, বিশেষ করে পশ্চিমা বিশ্বে, খুব উন্নত। আমরা আরও বেশি করে ব্যক্তিবাদী হয়েছি, কিন্তু ব্যক্তিবাদ, যদি এটি একটি মনোভাব থেকে যায়, তবে তা মানুষের বাস্তবতার সাথে মৌলিকভাবে একীভূত হয় না। অন্য কথায়, লাল প্যান্টি এবং হলুদ চপ্পল পরে রাস্তায় হাঁটা এবং নিউ ইয়র্কের টাইমস স্কোয়ারে প্রেম করা একধরনের ব্যক্তিবাদ। কিন্তু এটা উদ্ভটতা, এটা মানুষের চেতনার সূক্ষ্মায়নের একটি রূপ।

মানুষের তার স্বতন্ত্রতা বজায় রাখার, তার ব্যক্তিত্বকে নির্দিষ্ট অর্থে প্রকাশ করার, জনগণের সংবেদনশীলতা বা তার জনগণের সংবেদনশীলতা বা তার জনসংখ্যার সংবেদনশীলতাকে তুচ্ছ করার প্রয়োজন নেই। এটা একটা মায়া! এবং এটি বিংশ শতাব্দীর বৈশিষ্ট্যযুক্ত ফ্যাশনের অংশ, অবশেষে এটি সাধারণ হয়ে ওঠে, অবশেষে এটি এমনকি বোকা হয়ে ওঠে, অবশেষে এটি একেবারে নান্দনিকতার অভাব হয়। সুতরাং নতুন মানুষ, পৃথিবীতে আধিক্যগত (উচ্চ মানসিক) চেতনার বিবর্তন, প্রকৃতপক্ষে, মানুষকে একটি অত্যন্ত ব্যক্তিকেন্দ্রিক চেতনা বিকাশের অনুমতি দেবে কিন্তু ব্যক্তিবাদী চেতনা নয়।

মানুষ কেন ব্যক্তিভিত্তিক হবে? কারণ তার চেতনার বাস্তবতা তার আত্মার সংমিশ্রণের উপর ভিত্তি করে তৈরি হবে এবং পুরুষের দৃষ্টিতে বিশ্বে অভিক্ষিপ্ত হবে না, উদ্ভটতার সাথে এক ধরণের ফ্লার্টেশন প্রকাশ করবে। বাস্তব হতে একজন মানুষকে সারা বিশ্বে ঘোরাঘুরি করতে হবে না এবং প্রান্তিক হতে হবে না। অপরদিকে. মানুষ যত বেশি সচেতন, সে তত কম প্রান্তিক হবে, সে তত বেশি বাস্তব হবে এবং তার বাস্তবতায় সে তত বেশি বেনামী হবে। কারণ মানুষের বাস্তবতা এমন কিছু যা তার এবং তার মধ্যে যায় এবং তার এবং অন্যদের মধ্যে নয়।

আমরা যদি আমাদের গ্রহে একটি শিকড়-জাতির প্রয়োজনীয় বিবর্তনের দিকে তাকাই, তবে এটি মানুষের ঘটনাটি একটু বুঝতে হবে। আমরা যে স্থানাঙ্ক স্থাপন করি, এটি সম্পূর্ণরূপে বাস্তবসম্মত, এটি অনিবার্য ঘটনাগুলির কালানুক্রমিক বোঝার কাঠামো প্রদান করা! কিন্তু যদি আমরা একটি সচেতন জাতির কথা বলি, যদি আমরা একটি সচেতন মানবতার কথা বলি, তাহলে আমরা সচেতন পুরুষ এবং ব্যক্তিদের কথা বলতে বাধ্য।

পৃথিবীতে অতিপ্রাকৃত চেতনার (উচ্চ মন) বিবর্তন কখনই কোনো সমষ্টির স্কেলে ঘটবে না। পৃথিবীতে অতিপ্রাকৃত (উচ্চ মন) চেতনার বিবর্তন কখনই একটি যৌথ শক্তির প্রকাশ হবে না। বিশ্বের সর্বদা এমন ব্যক্তিরা থাকবেন যারা তাদের চেতনার সেই বিন্দুর দিকে ধীরে ধীরে, আরও বেশি করে মাধ্যাকর্ষণ করবে যেখানে তারা তাদের নিজস্ব উত্স, তাদের আত্মা, তাদের দ্বিগুণ, যাকে আমরা যাই বলি না কেন এই বাস্তবতার সাথে একত্রিত হবে। মানুষের অংশ।

কিন্তু এই দিকের মৌলিক আন্দোলন হবে এর উপর ভিত্তি করে: এটি হবে চিন্তার ঘটনাকে বোঝার উপর ভিত্তি করে যা বিবর্তনের পর থেকে কখনও করা হয়নি। এটা বলা যথেষ্ট নয়: " আমি মনে করি, তাই আমি"। দেকার্তের পক্ষে এটা বলা ভাল ছিল , "আমি মনে করি, তাই আমি" কারণ এটি উপলব্ধির অংশ ছিল যে চিন্তার নিজের মধ্যে এমন একটি শক্তি রয়েছে যা ব্যক্তির স্তরে উপলব্ধি করা উচিত।

কিন্তু একটি সৃজনশীল চেতনার স্তরে, বিন্দু আসবে যখন মানুষের চিন্তা সম্পূর্ণরূপে, অখণ্ডভাবে রূপান্তরিত হবে। আর বিবর্তনের সময় মানুষ আর ভাববে না। তার চিন্তা তার উচ্চ মনের সৃজনশীল প্রকাশের একটি মোড়ে রূপান্তরিত হবে। আর সেই মন হয়ে যাবে সম্পূর্ণ টেলিসাইকিক অন্য কথায়, মানুষ সর্বজনীন প্লেনের সাথে তাত্ক্ষণিক যোগাযোগের অভিজ্ঞতা লাভ করবে এবং যোগাযোগের এই পদ্ধতিটি আর প্রতিফলিত হবে না। যে মুহূর্তে চিন্তাভাবনা মানুষের মনে প্রতিফলিত হওয়া বন্ধ হয়ে যায়, চিন্তাভাবনা বিষয়গত হওয়া বন্ধ করে দেয়। আমরা আর বলতে পারি না যে মানুষ চিন্তা করে, আমরা বলি যে মানুষ তার নিজের চেতনার সর্বজনীন প্লেনের সাথে যোগাযোগ করে।

কিন্তু মানুষের একটি অবিচ্ছেদ্য উপায়ে এটি বুঝতে আসার জন্য, তার জন্য এই চিন্তাটি উপলব্ধি করা প্রয়োজন, যেমন আমরা আজ এটিকে ধারণ করি, যেমন আজ আমরা এটিকে বাস করি, যেমন এটি আমাদের মনে স্থির করে, যেমন এটি তৈরি বা উপলব্ধি করে। আমাদের অচেতন অহং হিসাবে, আমাদের মধ্যে একটি নির্দিষ্ট উপলব্ধি জাগ্রত করতে হবে, এই অর্থে যে মানুষকে বুঝতে সক্ষম হতে হবে যে তার চিন্তাভাবনা নিজেই তাকে নিজের বিরুদ্ধে বিভক্ত করে। কেবলমাত্র যতদূর তিনি, অন্তর্নিহিততা এবং অসচেতনতার কারণে, তাকে সত্য এবং মিথ্যার ভাল বা মন্দের মেরুত্বের অধীন করে।

যে মুহূর্ত থেকে মানুষ তার মনের মেরুকরণ করে, সে নেতিবাচক বা ইতিবাচক স্থানাঙ্ক স্থাপন করুক না কেন, সে কেবল নিজের মধ্যে বিভাজন তৈরি করেছে বস্তুগত সমতলে এবং নিজের মধ্যে মহাজাগতিক এবং সর্বজনীন সমতলে। এই অত্যন্ত গুরুত্বপূর্ণ! এটি এত গুরুত্বপূর্ণ যে এটি পরবর্তী বিবর্তনের মৌলিক চাবিকাঠি। একটি মেরুত্বের সাথে সম্পর্ক রেখে আমাদের চিন্তাভাবনাকে সবসময় বাঁচতে যে প্রবণতা তৈরি করে তা হল আমাদের অহংকার মৌলিক নিরাপত্তাহীনতা। এটি আমাদের আবেগের শক্তিশালী এবং ভ্যাম্পারিক ক্ষমতা। আমরা যা জানি তা সহ্য করতে না পারা একটি অহং বা অশিক্ষিত বা অতিরিক্ত শিক্ষিত ব্যক্তি হিসাবে আমাদের অক্ষমতা।

পৃথিবীতে এমন মানুষ নেই যে কিছু জানে না। সমস্ত পুরুষ কিছু জানে কিন্তু বিশ্বব্যাপী কোন কর্তৃপক্ষ নেই, কোন সাংস্কৃতিক সংজ্ঞা নেই, পৃথিবীতে এমন কোন সাংস্কৃতিক সমর্থন নেই যা একজন মানুষকে কিছু জানার সমর্থন করতে পারে। এমন কিছু প্রতিষ্ঠান আছে যারা এই জ্ঞানকে প্রতিষ্ঠিত করার জন্য এবং মানুষের মনকে এর সাথে সংযুক্ত করার জন্য নিজেকে কিছু জানার অধিকার দেয়। একে আমরা বিভিন্ন স্তরে বিজ্ঞান বলে থাকি, এটাই স্বাভাবিক।

কিন্তু এমন কোন বিপরীত আন্দোলন নেই যেখানে বিশ্বের প্রতিষ্ঠানগুলো মানুষকে তার কর্তৃত্ব দিতে পারে বা ফিরিয়ে দিতে পারে, অর্থাৎ তাকে তার নিজের ক্ষুদ্র মাত্রা ফিরিয়ে দিতে পারে যা একদিন অনেক বড় হয়ে উঠতে পারে, তার নিজের আলো। এবং আপনি আধ্যাত্মিক ক্ষেত্রে, ধর্মীয় ক্ষেত্রে খুব সহজ উপায়ে পরীক্ষা দিতে পারেন। একদিন, যখন মানুষের কেন্দ্রগুলি পর্যাপ্তভাবে খোলা থাকবে, তখন সে বিজ্ঞানের ক্ষেত্রেও একই কাজ করতে পারবে।

একজন ব্যক্তি যিনি পৃথিবীতে আছেন এবং যিনি, উদাহরণস্বরূপ, একজন ধর্মগুরু বা ধর্মে কাজ করেন এমন কাউকে দেখতে যাবেন এবং যিনি তাকে ঈশ্বর সম্পর্কে কথা বলবেন, এবং যিনি বলবেন: "আচ্ছা, ঈশ্বর এমন একটি জিনিস, অমুক জিনিস , অমুক জিনিস" , একজন তাকে বলবে: " কিন্তু তুমি কোন অধিকারে ঈশ্বরের কথা বলছ? আপনি কোন অধিকারে ঈশ্বরের কথা বলেন...? এবং যদি মানুষ কম বিকশিত হয় এবং সত্যই ঈশ্বরের রূপকে খণ্ড খণ্ড করে অন্য রূপগুলিকে বের করে আনতে বা উত্থাপন করতে পারে যা তার মনের সৃজনশীল মাত্রার অংশ, তবে সে ঈশ্বরের প্রাতিষ্ঠানিকীকরণের দ্বারা আরও বেশি বিমুখ হবে। অদৃশ্য জগতের উপলব্ধি।

তাই আমি বলি যে, মানুষ জগতের সমর্থনে, অতিপ্রাকৃত চেতনায় (উচ্চ মনে) জগতে প্রবেশ করতে পারবে না। যখন সে নিজেকে জাগতিক সমর্থনের প্রয়োজন থেকে সম্পূর্ণরূপে মুক্ত করে ফেলে এবং অবশেষে সে যা জানে তা উপলব্ধি করতে এবং সহ্য করতে শুরু করে তখন মানুষের অতিপ্রাকৃত (উচ্চ মন) চেতনা থাকবে। আর এর জন্য শর্ত হলো সত্য-মিথ্যার মেরুত্বের ফাঁদে পা না দেওয়া।

মানুষ যদি সত্য-মিথ্যার মেরুত্বের ফাঁদে পড়ে, সে তার বিবেককে উত্তেজিত করে, সে তার অহংকারকে নিরাপত্তা দেয় এবং বাস্তবতার প্রতি চরম মনোভাব গড়ে তোলে। সত্য এবং মিথ্যা শুধুমাত্র একটি মানসিক অক্ষমতার মানসিক উপাদানের প্রতিনিধিত্ব করে! আপনি যখন একটি ভাল স্টেক খান, তখন আপনি ভাববেন না যে এটি আসল কিনা বা এটি নকল, কোন পোলারিটি নেই, তাই এটি ভাল। কিন্তু আপনি যদি ভাবতে শুরু করেন যে সেখানে কীট আছে, ওহ, তাহলে আপনার পেট সাড়া দেবে না! এবং এটি জ্ঞানের স্তরে, জ্ঞানের স্তরে একই জিনিস।

জ্ঞান নিম্ন মনের কাছে যা জ্ঞান উচ্চ মনের কাছে। জ্ঞান হল অহংকার প্রয়োজনের অংশ এবং জানা হল আত্মের বাস্তবতার অংশ। তাই জানা ও জানার মধ্যে কোনো বিভাজন বা বিভাজন নেই। জ্ঞান চেতনার এক স্তরের অংশ এবং জ্ঞান অন্য স্তরের অংশ।

জ্ঞানের রাজ্যে, আমরা কিছু বিষয় নিয়ে কথা বলি এবং জ্ঞানের রাজ্যে আমরা অন্যান্য বিষয় সম্পর্কে কথা বলি। দু'জন দেখা করতে পারে, একসাথে ভ্রাতৃত্ব করতে পারে এবং একসাথে খুব ভাল থাকতে পারে। চতুর্থ তলা সর্বদাই ভালো থাকে পঞ্চম তলার উপরে... এবং মানুষ একটি বহুমাত্রিক সত্তা, কিন্তু মানুষও এমন একটি সত্তা যিনি একটি অভিজ্ঞতামূলক চেতনার অধিকারী এবং জীবনযাপন করেন। আমরা পৃথিবীতে একটি পরীক্ষামূলক চেতনা আছে. আমাদের সৃজনশীল চেতনা নেই।

আপনার জীবন দেখুন! আপনার জীবন অভিজ্ঞতা! আপনি পৃথিবীতে প্রবেশ করার মুহূর্ত থেকে, আপনার জীবন ক্রমাগত অভিজ্ঞতার সাথে জড়িত, কিন্তু মানুষ অনির্দিষ্টকালের জন্য অভিজ্ঞতার উপর বাঁচতে পারে না। একদিন মানুষকে সৃজনশীল চেতনা নিয়ে বাঁচতে হবে, সেই সময় জীবন বেঁচে থাকার যোগ্য, জীবন হয়ে ওঠে অনেক বড়, অনেক বিশাল, এটি সৃজনশীলতায় শক্তিশালী, এবং মানুষ আত্মার অভিজ্ঞতা থেকে বেঁচে থাকা বন্ধ করে দেয়। কিন্তু মানুষ কেন অভিজ্ঞতায় বেঁচে থাকে? কারণ এটি শক্তিশালী শক্তির সাথে সংযুক্ত - যাকে আমি স্মৃতি বলি - যাকে আপনি "আত্মা" বলছেন।

মানুষ তার আত্মা দ্বারা বাঁচে না, সে আত্মার সাথে সংযুক্ত, সে আত্মার দ্বারা বেঁচে থাকে, সে ক্রমাগত আত্মার দ্বারা ভ্যাম্পারাইজ হয়। যারা পুনর্জন্ম নিয়ে গবেষণা করেছেন বা যারা একটি নির্দিষ্ট অতীতে ফিরে আসার বিষয়ে গবেষণা করেছেন তারা খুব ভালভাবে নির্ধারণ করেছেন যে আজ নির্দিষ্ট কিছু মানুষ কিছু জিনিসের জন্য ভুগছেন, কারণ আগের জীবনে তারা এই কারণে ভুগছেন। আজ এমন কিছু লোক আছে যারা লিফটে (লিফট) প্রবেশ করতে পারছে না কারণ তারা বস্তুগত জীবনের আগে থেকে আসা ট্রমাগুলি অনুভব করছে, বা যারা পূর্বের পরিস্থিতিতে দম বন্ধ হয়ে গেছে, তারা সক্ষম নয়... তারা শ্বাসরুদ্ধ করছে। তাই মানুষ আত্মার অভিজ্ঞতা নিয়ে বেঁচে থাকে।

তিনি বেঁচে আছেন, তিনি তার স্মৃতির সাথে সংযুক্ত, তার আগের বিবর্তনীয় আন্দোলনের খুব বিশাল অচেতন স্মৃতি যতটা বিশাল স্মৃতি তিনি আজ একটি পরীক্ষামূলক সত্তা হিসাবে বেঁচে আছেন। মানুষ পৃথিবীতে অভিজ্ঞতা থেকে অনির্দিষ্টকালের জন্য বাঁচতে পারে না! এটা তার সার্বজনীন বুদ্ধিমত্তার অপমান। এটা মানুষের প্রকৃতির সাথে একেবারেই অসংলগ্ন যে মানুষ বলতে পারে না: " আচ্ছা, ঠিক আছে, আমি দশ বছরে এমন একটি কাজ করতে চাই, পাঁচ বছরে আমি এমন একটি কাজ করতে চাই", এটি প্রকৃতির সাথে একেবারেই অমিল। মানুষ যে তার ভবিষ্যৎ জানে না!

এটা মানুষের প্রকৃতির সাথে অসংলগ্ন যে সে তার আগে মানুষের প্রকৃতি জানে না। অন্য কথায়, এটি মানুষের আত্মার সাথে অসংলগ্ন যে মানুষের মধ্যে এই আত্মাকে যুক্তির নির্দেশ অনুসারে জীবনযাপন করতে বাধ্য করা হয়, কারণ বস্তুগত সমতলে মানুষ আজ এমন একটি প্রজন্মের অংশ যার চেতনা অবতরণ করছে। মানুষের চেতনা অবশ্যই অবতরণ থেকে বস্তুর মধ্যে চলে যেতে হবে ইথারিকের দিকে চূড়ান্ত প্রস্থানের দিকে, অর্থাৎ গ্রহের বাস্তবতার অংশ যা শেষ পর্যন্ত সেই বিশ্ব যেখানে মানুষকে স্বাভাবিকভাবেই তার অমরত্ব বাস করতে হবে।

মানুষকে বস্তুতে এসে মরার জন্য তৈরি করা হয়নি। আমরা যাকে মৃত্যু বলি, অর্থাৎ যাকে আমরা বলি মানুষের প্রত্যাবর্তন বা আত্মার সূক্ষ্ম সমতলে, তা মানুষের অচেতনতার অংশ। এটা এই সত্যের অংশ যে মানুষ তার প্রজন্মের উৎস, যেগুলো তার বুদ্ধিমত্তার উৎস, যেগুলো তার জীবনীশক্তির উৎস, যেগুলো তার গ্রহস্বত্বের উৎস, সার্বজনীন সার্কিট থেকে সম্পূর্ণভাবে বিচ্ছিন্ন! তাই মানুষকে উৎসের কাছে ফিরে আসতে হবে, কিন্তু মানুষ আধ্যাত্মিক, ঐতিহাসিক বিভ্রমের মাধ্যমে উৎসে ফিরে যেতে পারে না।

পুরানো ধারণাগুলি ব্যবহার করে মানুষ তার উত্সে ফিরে আসতে পারবে না যা তাকে বস্তুর বন্দী হতে বাধ্য করেছিল। মানুষ পুরানো উপায় ব্যবহার করে তার উত্সে ফিরে যাচ্ছে না যা তাকে একটি পরীক্ষামূলক চেতনা সহ একটি সত্তা বানিয়েছে। মানুষ বিশ্বাস করে তার উৎসে ফিরে আসবে না।

মানুষ তার বিবর্তনের সময় ধীরে ধীরে বিকাশ করে তার উত্সে ফিরে আসবে, সে যা জানে তাকে সমর্থন করার ক্ষমতা।

কিন্তু আজকের বিশ্বে, আমরা একটি পৌরাণিক কাহিনী, আমাদের নিজের মনস্তাত্ত্বিক পদ্ধতিগতকরণের জন্য ধ্বংসপ্রাপ্ত। আমরা একটি মনস্তাত্ত্বিক মানসিক মনোভাবের কবলে পড়েছি যা সমস্ত মানবতাকে প্রভাবিত করে: বিশ্বাস। কেন মানুষের বিশ্বাস করতে হবে? কারণ সে জানে না! কেন মানুষের বিশ্বাস করতে হবে? কারণ তিনি একজন অভিজ্ঞ চেতনাময় সত্তা, তাই তার মনে কোন আলো নেই। তিনি তার সামান্য চেতনার খুব অন্ধকার আন্দোলনে বাস করেন, তাই তিনি নিজেকে অত্যাবশ্যক এবং পরম কিছুতে সংযুক্ত করার জন্য বিশ্বাস করতে বাধ্য।

কিন্তু পরমের এই বিশ্বাস যা অহং-এর মনস্তাত্ত্বিক অবস্থার অংশ, এই পরম বিশ্বাস, তা কার দ্বারা প্রতিষ্ঠিত? এটি ম্যান অফ ইনভোলিউশন দ্বারা প্রতিষ্ঠিত হয়েছিল। আপনি ভাল করেই জানেন যে আপনি যদি পৃথিবীতে যান এবং আপনি যদি কাউকে একটি গল্প বলেন, যে গল্পটি আপনি বলতে চলেছেন যখন এটি অন্যের দ্বারা গ্রহণ করা হয় এবং বলা হয় তখন আপনি যে গল্পটি প্রথমে বলেছিলেন তার চেয়ে আর আগের মতো থাকবে না। .

কল্পনা করুন যে কেউ পৃথিবীতে চলে যায় এবং আমি আজ যা বলছি তা পুনরাবৃত্তি করার চেষ্টা করে, একটি উদ্যোগ হিসাবে, আপনি কল্পনা করতে পারেন যে এটি আগামীকাল কীভাবে বেরিয়ে আসবে! সুতরাং অতীতে এমন কিছু পুরুষ আছেন যারা কাজ করেছেন, এমন কিছু দীক্ষা নিয়েছেন যারা মানবতার বিবর্তনে সাহায্য করার জন্য পৃথিবীতে এসেছিলেন। কিন্তু এই প্রাণীরা কী বলেছিল এবং তারা যা বলেছিল তার সম্পর্কে কী রিপোর্ট করা হয়েছিল তা অন্য বিষয়।

এবং আমি আপনাকে একটি জিনিস স্পষ্টভাবে বলতে পারি - কারণ আমি বছরের পর বছর ধরে ঘটনাটি জানি - একজন মানুষের পক্ষে নিখুঁতভাবে যা বলা হয়েছে তার পুনরাবৃত্তি করা একেবারেই অসম্ভব। আপনি আজ রাতে বাড়িতে ফিরে এটি করার চেষ্টা করুন! নিখুঁতভাবে যা বলা হয়েছে তা পুনরাবৃত্তি করা একজন মানুষের পক্ষে অসম্ভব। এবং কেন আমি আপনাকে বলব. কারণ যা নিখুঁতভাবে বলা হয়েছে - অন্য কথায় যা অহং দ্বারা রঙ্গিন নয়, যা অস্ট্রালাইজড নয়, যা মানুষের অচেতনতার অংশ নয়, তবে যা মানুষের বিশ্বজগতের অংশ - তা অহংকে নির্দেশিত নয়। মানুষ নাকি মানুষের অহংকার, নাকি মানুষের বুদ্ধির কাছে। এটা তার আত্মার নির্দেশিত.

এবং যদি মানুষটি তার আত্মায় না থাকে, তবে আপনি কীভাবে আশা করবেন যে অন্য আত্মা ইতিমধ্যে যা বলেছেন তা তিনি গ্রহণ করবেন? এটা অসম্ভব. তাই সেই মুহূর্তে রং আছে। এবং ইনিশিয়েটদের শব্দের রঙ থেকে জন্ম হয়েছিল যাকে আমরা মানবতার বিবর্তনীয় সুবিধার জন্য ধর্ম বলি। এবং আমি সম্মত এবং আমি খুব খুশি যে এটি ঘটছে এবং এটি করা হয়েছে, কারণ এটি প্রয়োজনীয়। কিন্তু বিবর্তনের সময় এমন একটি সময় আসবে যখন মানুষের আর তার বিবেককে তার নিজস্ব জ্ঞানের পূর্ণতা দেওয়ার জন্য নৈতিক সমর্থনের প্রয়োজন হবে না। সেটা হল পরম চেতনা (উচ্চ মন)।

এবং যেহেতু আমরা কুইবেকারদের সাথে কথা বলছি, যেহেতু আমরা এমন একটি লোকের সাথে কথা বলছি যারা, খুব ভাল কারণে, ধর্ম তাদের যে আধ্যাত্মিক জগতের একটি নির্দিষ্ট নৈকট্য অনুভব করার সুযোগ পেয়েছে, সেহেতু আমাদের ইতিমধ্যেই এই অর্থে একটি অগ্রগতি রয়েছে যে ইতিমধ্যেই, আমরা এমন প্রাণী যারা ইতিমধ্যেই অদৃশ্যের প্রতি একটি নির্দিষ্ট সংবেদনশীলতা রয়েছে।

কিন্তু সেখান থেকে আধ্যাত্মিক আধ্যাত্মিক পথ ব্যবহার করে চেতনার গভীর অন্বেষণে প্রবেশ করা আমাদের সরাসরি আত্মের মেরুতে নিয়ে যাবে। এটা আমাদের ভালো-মন্দ, সত্য-মিথ্যার দ্বন্দ্বে নিয়ে যাবে এবং মনের মধ্যে আমাদের জন্য বড় কষ্টের সৃষ্টি করবে।

এই কারণেই আমি বলি: সচেতন মানুষ, পৃথিবীতে অতিপ্রাকৃত চেতনার (উচ্চ মন) বিবর্তন সেই মুহূর্ত থেকে শুরু হবে যখন মানুষ ইতিমধ্যে তার চিন্তাকে সত্য এবং নকলের অধীন না করার প্রয়োজনীয়তা বুঝতে পেরেছে। কিন্তু ধীরে ধীরে এটিকে বাঁচতে শেখা এবং এর আন্দোলনকে সমর্থন করা যতক্ষণ না এই চিন্তা একদিন নিখুঁত হয়, অর্থাৎ সম্পূর্ণরূপে তার নিজস্ব আলোতে বলা যায়, সম্পূর্ণরূপে বিধ্বংসী, যাতে অবশেষে তিনি অহংকার, আমি… অহং, আত্মা। এবং আত্মা একত্রিত হয় এবং মানুষকে একটি বাস্তব সত্তা করে তোলে।

একটি বাস্তব সত্তা কি? একটি বাস্তব সত্তা একটি বাস্তব সত্তা! তিনি এমন সত্তা নন যার সত্যের প্রয়োজন, তিনি এমন সত্তা নন যিনি সত্য খায়। আপনি যদি সত্য খান তবে আগামীকাল আপনি মিথ্যা খাবেন, কারণ এমন কিছু লোক থাকবে যারা আপনাকে বাস্তবতার অনন্ত গণ্ডিতে নিয়ে যাবে। আপনি যদি সত্য খান, তবে একদিন আপনাকে আবার এই পদক্ষেপ নিতে হবে, কারণ একমাত্র জিনিস যা মানুষের জন্য উপযুক্ত, যা তার বিবেকের সাথে খাপ খায়, যা তার আত্মার জন্য উপযুক্ত, যা তার আত্মার জন্য উপযুক্ত, যেটি তার অহংকার জন্য উপযুক্ত, যা তার সত্তার জন্য উপযুক্ত। , শান্তি।

কিন্তু শান্তি কি? শান্তি হল স্তব্ধতা, অনুসন্ধানের থেমে যাওয়া। আপনি বলতে যাচ্ছেন: " হ্যাঁ, তবে আপনাকে অনুসন্ধান করতে হবে" , আমি বলি: হ্যাঁ, মানুষ খুঁজছে, আপনি নিজেরাই খুঁজছেন সত্ত্বেও, সমস্ত পুরুষই খুঁজছে, কিন্তু বিবর্তনের সময় এমন একটি বিন্দু আসবে যেখানে মানুষ না আর কোন অনুসন্ধান হবে না, মানুষকে আর অনুসন্ধান করতে হবে না, এবং মানুষ যখন শেষ পর্যন্ত বুঝতে পারে যে সে জানে তখন অনুসন্ধান বন্ধ করে দেবে।

এবং সেখানে আপনি বলতে যাচ্ছেন: " হ্যাঁ, কিন্তু কেউ কীভাবে জানবে যে একজন জানে"... আপনি যতক্ষণ না নিজেকে এটি সহ্য করার অনুমতি দেবেন ততক্ষণ আপনি এটি জানতে পারবেন, কারণ এটি জানার জন্য আপনাকে কাউকে কল করার দরকার নেই। আপনি যদি সঠিক হন এবং তারপরে আপনি বলতে যাচ্ছেন: " আচ্ছা হ্যাঁ, তবে আমরা যদি সঠিক থাকি বা যদি আমরা মনে করি আমরা সঠিক, তবে এটি বিপজ্জনক"। আমি বলব: হ্যাঁ, কারণ একজন মানুষ যে সঠিক হতে চায় সে একজন মানুষ যে ইতিমধ্যে তার কারণের সন্ধান করছে!

কিন্তু আপনার জীবনে কি এমন অভিজ্ঞতা নেই, আপনার দৈনন্দিন জীবনে, আপনার ব্যক্তিগত কোণে, আপনার জীবনে এমন সময় নেই যখন আপনি অনুভব করতে পারেন যে আপনি যা জানেন, তাই কি? আর যখন সেটা, সেটাই!

(সুতরাং আপনি যোগ করুন এবং আপনি যোগ করুন, এবং আপনি যোগ করুন, এবং যারা তাদের " এটাই এটি" অন্য " এটি এটি" এর সাথে অন্য " এটি এটি" যোগ করার ক্ষমতা রাখে, তবে একটি " এটাই এটি" যা বাস্তব, একটি " এটিই এটি" যা মনের অহংকারে নির্মিত হবে না, একটি " এটিই এটি" যা আধ্যাত্মিকতা বা আপনার আধ্যাত্মিকতার গর্ব নিয়ে নির্মিত হবে না, একটি " এটাই এটি" যা ব্যক্তিগত হবে আপনার কাছে, একটি " এটাই যে" যা আপনার সাথে দেখা সমস্ত পুরুষদের সাথে সর্বজনীন হবে এবং যারা তাদের " এটাই যে" তে থাকবেন , সেই মুহূর্তে আপনি জানতে পারবেন এটি !) (যদি অনুবাদ করা না যায় তবে এই অনুচ্ছেদটি বাদ দিন) .

मराठी

बर्नार्ड डी मॉन्ट्रियल द्वारे 2 परिषदांचे प्रतिलेखन आणि भाषांतर.



तात्पुरते स्वरूप

हे पुस्तक कृत्रिम बुद्धिमत्तेद्वारे अनुवादित केले गेले आहे परंतु एखाद्या व्यक्तीद्वारे सत्यापित केलेले नाही. आपण या पुस्तकाचे पुनरावलोकन करून योगदान देऊ इच्छित असल्यास, कृपया आमच्याशी संपर्क साधा.

आमच्या वेबसाइटचे मुख्य पृष्ठ: http://diffusion-bdm-intl.com/

आमचा ईमेल: contact@diffusion-bdm-intl.com

सामग्री

1 - CP-36 ओळख

2 – इन्व्हॉल्यूशन वि. इव्होल्यूशन RG-62

संपूर्ण डिफ्यू BdM Intl टीमकडून शुभेच्छा.

Pierre Riopel 18 एप्रिल 2023

प्रकरण १

ओळख *CP036*

इतरांच्या विरूद्ध स्वत: ची ओळख ही सार्वत्रिक मानवी समस्या आहे. आणि जेव्हा माणूस आधुनिक समाजासारख्या गुंतागुंतीच्या समाजात राहतो तेव्हा ही समस्या वाढते. ओळखीची समस्या म्हणजे अहंकाराच्या जीवनातील दु:ख, ज्या वयापासून तो स्वतःला इतरांच्या तुलनेत पाहतो तेव्हापासून त्याला भोगावे लागते. परंतु ओळखीची समस्या ही एक खोटी समस्या आहे जी या वस्तुस्थितीतून उद्भवते की अहंकार, स्वतःला स्वतःला समजून घेण्याऐवजी, म्हणजे स्वतःच्या मोजमापानुसार, स्वतःला इतर अहंकारांच्या विरूद्ध स्पर्धात्मकपणे जाणण्याचा प्रयत्न करतो . , त्याच्यासारख्याच समस्येतून.

अहंकार त्याच्या कुंपणाच्या पलीकडे आपल्या फुलांचे कौतुक करण्यासाठी दुसऱ्याच्या शेताकडे पाहत असताना, दुसरा स्वतःचेच करत आहे हे पाहण्यात तो अपयशी ठरतो. आज माणसामध्ये ओळख किंवा ओळखीचे संकट इतके तीव्र आहे की यामुळे आत्मविश्वास कमी होतो आणि कालांतराने वैयक्तिक चेतना पूर्णपणे नष्ट होते. धोकादायक परिस्थिती, विशेषत: जर अहंकार आधीपासूनच कमकुवत असेल आणि असुरक्षिततेचा धोका असेल.

ओळखीची समस्या, म्हणजे स्वतःला स्वतःइतके उच्च न पाहण्याच्या अहंकाराचे हे वैशिष्ट्य म्हणायचे आहे, ही खरेतर सर्जनशीलतेची समस्या आहे. परंतु जेव्हा अहंकार सर्जनशील असतो, तेव्हा ओळखीची समस्या त्याद्वारे नाहीशी होत नाही, कारण जोपर्यंत त्याला त्याच्या खालच्या आत्म्याचा भ्रम कळत नाही तोपर्यंत अहंकार कधीही स्वतःमध्ये पूर्णपणे समाधानी नसतो. जेणेकरुन कमी दर्जाच्या अहंकाराला उच्च दर्जाच्या अहंकारासारखीच ओळखीची समस्या येईल, कारण त्याची आणि दुसऱ्याची तुलना केवळ प्रमाणात बदलेल, परंतु नेहमीच अस्तित्वात राहील, कारण अहंकार नेहमी सुधारण्याच्या शक्तीमध्ये असतो. आणि तो स्वतःसाठी शोधत असलेल्या सुधारणेला अंत नाही.

परंतु स्वत: ची सुधारणा ही एक घोंगडी आहे ज्यात अहंकार लपवून ठेवतो जेणेकरून स्वत: ला आनंदाने जगण्याचे काही कारण मिळेल. पण त्याला माहित नाही की सर्व सुधारणा आधीच इच्छा शरीराने निर्माण केली आहे?

ओळखीची समस्या माणसामध्ये वास्तविक बुद्धीची जाणीव नसल्यामुळे उद्भवते. जोपर्यंत माणूस त्याच्या बुद्धीने जगतो तोपर्यंत त्याला त्याच्या मतांचे समर्थन केवळ संवेदनात्मक अनुभवाने केले जाते, त्याला जे समजते किंवा समजते ते अनिश्चित बुद्धिमत्तेच्या निरपेक्ष मूल्याद्वारे बदलणे त्याच्यासाठी अवघड आहे.

जोपर्यंत मनुष्याला जीवनात स्वतःला प्रकट करण्याची इच्छा असते, आपला ठसा उमटवायचा असतो तोपर्यंत त्याला या इच्छेचा त्रास होतो. जर त्याने आपली इच्छा साध्य केली तर दुसरा त्याला मागे ढकलेल आणि असेच. म्हणूनच, मनुष्यामध्ये, कोणत्याही प्रकारच्या पराभवामुळे त्याच्यासाठी ओळखीचे संकट उद्भवते, मग त्याची स्थिती कशीही असो, कारण ओळखीची समस्या ही यशाची समस्या नसून विवेकाची समस्या आहे. , म्हणजे खऱ्या बुद्धीची समस्या आहे. .

वास्तविक बुद्धिमत्ता बुद्धीला ओव्हरहँग करते हे त्याच्या आयुष्यात ज्या माणसाला कळते, त्याला आधीच ओळखीच्या समस्येने कमी त्रास होऊ लागतो, जरी तो अजूनही वास्तविक सर्जनशीलतेच्या अभावाने ग्रस्त होऊ शकतो, जे त्याला वाटते तितकेच तो प्रकट करू शकतो. जेव्हा त्याची ओळख त्याच्या जीवनपद्धतीशी जुळते तेव्हाच त्याला हे समजेल की सर्जनशीलता असंख्य रूपे घेऊ शकते आणि प्रत्येक माणसाकडे त्याच्यासाठी अनुकूल अशी सर्जनशीलता असते. आणि या फॉर्ममधून तो त्याच्या इच्छेनुसार शरीर आणि त्याच्या सर्जनशील बुद्धिमत्तेच्या बाबतीत परिपूर्ण सुसंवादाने जगू शकतो.

सर्जनशील होण्याचा अर्थ जग बदलणे असा नाही, तर स्वतःसाठी परिपूर्ण मार्गाने कार्य करणे, जेणेकरून आंतरिक जग बाह्य बनते. जग अशा प्रकारे बदलते: नेहमी आतून बाहेरून, कधीही विरुद्ध दिशेने नाही. ओव्हरमाइंडला ओळखीची समस्या जाणवू लागते. तो पाहतो की तो जे आहे ते अजूनही आहे. पण तो हे देखील पाहतो की जसजसे त्याचे शरीर बदलत जाते, त्याची चेतना वाढते आणि ओळखीची समस्या हळूहळू नाहीशी होते, ज्याच्या पृष्ठभागावर पूर्वी बेशुद्ध अहंकार होता.

ओव्हरमाईंडमध्ये ओळखीच्या समस्येचे हळूहळू निर्मूलन केल्याने शेवटी त्याला त्याचे जीवन तो खरोखर पाहतो तसे जगू देतो आणि स्वतःबद्दल चांगले आणि चांगले बनू शकतो. माणसामध्ये अस्मितेचा त्रास सहन करण्याइतके कठीण असे काहीही नाही. कारण त्याला खरेतर भ्रामक स्वरूपांचा त्रास होतो, म्हणजेच तो सुरवातीपासून निर्माण करतो या कारणास्तव, तंतोतंत तो हुशार नसल्यामुळे, म्हणजेच त्याच्यातील सर्जनशील बुद्धिमत्तेची जाणीव असल्यामुळे.

ओळखीची एक बाजू म्हणजे काही प्रकरणांमध्ये लाज, इतरांमध्ये लाजिरवाणी, बहुसंख्यांमध्ये असुरक्षितता. सामाजिक चिंतनाच्या जाळ्यात कैद झालेले सामाजिक चिंतन असताना उत्तम आचारसंहिता असलेला माणूस लाजेने का जगेल? इतर काय विचार करत असतील ते ताबडतोब काढून टाकण्याच्या अहंकाराच्या अक्षमतेमुळे उद्भवलेल्या पेचाच्या बाबतीतही हेच खरे आहे. लाज वाटणारा अहंकार इतरांच्या विचारांपासून दूर झाला तर त्याची लाजिरवाणी नाहीशी होईल आणि तो त्याच्या खऱ्या ओळखीमध्ये अधिक त्वरेने प्रवेश करू शकेल, म्हणजेच ही मनाची स्थिती ज्यामुळे मनुष्य स्वतःला नेहमी त्याच्या स्वतःच्या दिवसाच्या प्रकाशात पाहतो.

ओळखीची समस्या माणसामध्ये केंद्रित नसल्यामुळे उद्भवते. आणि ही अनुपस्थिती बुद्धीची भेदक शक्ती कमी करते, ज्यामुळे मनुष्य त्याच्या बुद्धीचा गुलाम बनतो, स्वतःच्या त्या भागाचा ज्याला मनाचे नियम किंवा मनाची यंत्रणा माहित नाही. त्यामुळे मनुष्याला, त्याच्या अनुभवानुसार, त्याच्या बुद्धिमत्तेत प्रकाश नसतो आणि मनुष्याच्या स्वभावाविषयी इतरांचे मत स्वीकारण्यास भाग पाडले जाते.

जर मनुष्याने स्वतःबद्दल आश्चर्य व्यक्त केले, तर दुसऱ्या मनुष्याला त्याचे ज्ञान कसे शक्य आहे, जर हा दुसरा मनुष्य त्याच्या सारखीच स्थिती असेल तर? पण माणसाला हे कळत नाही आणि घटनांद्वारे अहंकाराविरुद्ध निर्माण होणाऱ्या दबावानुसार त्याच्या ओळखीची समस्या बिघडते.

मनातील अहंकार निःसंशयपणे त्याच्या विचार करण्याच्या पद्धतीमध्ये अडकलेला असतो जो त्याच्या वास्तविक बुद्धिमत्तेशी जुळवून घेत नाही. आणि ही विचारसरणी त्याच्या बुद्धिमत्तेच्या वास्तविकतेच्या विरोधाभासी आहे, कारण जर त्याला त्याच्या अंतर्ज्ञानाद्वारे त्याच्या बुद्धिमत्तेची वास्तविकता समजली असेल, उदाहरणार्थ, तो त्यातील वास्तविकता नाकारणारा पहिला असेल, कारण बुद्धीचा अंतर्ज्ञानावर विश्वास नाही. तो स्वतःचा एक अतार्किक भाग म्हणून पाहतो. आणि बुद्धी तर्कसंगत किंवा कथित तर्कसंगत असल्याने, तिच्या विरुद्ध असलेली कोणतीही गोष्ट बुद्धिमत्ता म्हणून ओळखण्यास योग्य नाही. आणि तरीही, अंतर्ज्ञान हे खरोखरच वास्तविक बुद्धिमत्तेचे प्रकटीकरण आहे, परंतु हे प्रकटीकरण अद्याप अहंकारासाठी त्याचे महत्त्व आणि बुद्धिमत्ता समजून घेण्यास सक्षम नाही. मग तो त्याच्या तर्कामध्ये माघार घेतो आणि त्याच्या ओळखीच्या समस्येवर प्रकाश टाकू शकणाऱ्या मनाच्या सूक्ष्म यंत्रणा शोधण्याची संधी गमावतो.

परंतु जोपर्यंत बुद्धी सोडत नाही आणि अहंकाराने स्वतःचे ऐकले नाही, तोपर्यंत ओळखीची समस्या माणसाबरोबरच राहिली पाहिजे. जर अहंकार त्याच्यातील वास्तविक बुद्धिमत्तेचे स्वरूप आणि स्वरूप याबद्दल संवेदनशील असेल तर तो हळूहळू जुळवून घेतो आणि त्या बुद्धिमत्तेत आपले घर बनवतो. कालांतराने, तो अधिकाधिक नियमितपणे तिथे जातो आणि त्याच्या ओळखीची समस्या दूर होत जाते, कारण त्याला हे समजते की त्याने स्वतःबद्दल जे काही विचार केले होते ते केवळ त्याच्या वास्तविक बुद्धिमत्तेची एक मानसिक आणि मानसिक विकृती आहे, त्याच्या तर्कशक्तीच्या उंच भिंतींच्या पलीकडे जाण्यास असमर्थ आहे.

गुंतागुंतीच्या समाजात, जसे आपण जाणतो, केवळ अहंकाराची आंतरिक शक्ती, तिची खरी बुद्धिमत्ता, त्याला मतांच्या झाडापासून वर उचलून त्याच्या खऱ्या ओळखीच्या खडकावर बसवू शकते. आणि समाज जितका विस्कळीत होईल, तितकी तिची पारंपारिक मूल्ये तुटत जातील तितकाच अहंकार नष्ट होण्याच्या मार्गावर जाईल, कारण आधुनिक काळातील वाढत्या विस्मयकारक घटनांसमोर उभे राहण्याची औपचारिक सामाजिक मचान यापुढे उरलेली नाही. जीवन

परंतु अहंकार नेहमी त्यांचे ऐकण्यास तयार नसतो जे स्वतःचे गूढ समजून घेण्यासाठी आवश्यक चाव्या देऊ शकतात. कारण त्याचे मनोवैज्ञानिक विकृती त्याला आधीपासूनच प्रत्येक गोष्टीवर प्रश्न विचारण्यास प्रवृत्त करते जे त्याच्या व्यक्तिनिष्ठ विचारसरणीला अनुरूप नाही. म्हणूनच अहंकाराला त्याने पुढे पाहण्यास नकार दिल्याबद्दल फारसा दोष देता येत नाही, परंतु हे लक्षात घेतले जाऊ शकते की तो आज पुढे पाहू शकत नसला तरी उद्या त्याची दृष्टी त्याच्यामध्ये असलेल्या उर्जेच्या अंशानुसार विस्तृत होईल.

कारण किंबहुना, स्वतःच्या प्रयत्नांनी स्वतःच्या अस्मितेच्या भिंतीवर मात करणारा अहंकार नाही, तर तो आत्मा जो दुःखाने आणतो, म्हणजेच त्याच्या प्रकाशाच्या प्रवेशाने, बुद्धीच्या पलीकडे, स्पंदने नोंदवणे. बुद्धिमत्तेचे. आणि हा कंपनाचा धक्का शेवटची सुरुवात बनतो.

तेथे कमी गर्विष्ठ अहंकारी आहेत जे वास्तविकतेकडे उघडतात, कारण एक प्रकारची नम्रता त्यांना आधीच त्यांच्या स्वत: च्या प्रकाशाकडे प्रवृत्त करते. दुसरीकडे, हा प्रकाश, हा सुरेख धागा पार करण्यासाठी अहंकारी आहेत. आणि हे ते अहंकार आहेत जे मोठ्या वळणांना सर्वात जास्त प्रवण असतात, मोठे धक्के त्यांना बाद करतात आणि त्यांना अधिक वास्तववादी बनवतात.

ओळख संकट माणसाच्या अपरिपक्वतेने ओळखले जाते. खरी ओळख खऱ्या परिपक्वतेचा विकास दर्शवते.

आत्मा त्याच्या कृतींमध्ये अहंकारापासून स्वतंत्र आहे आणि नंतरचे चांगले खेळ आहे, जोपर्यंत तो स्वत: ला घरात सामर्थ्यवान वाटत नाही. हाच क्षण अहंकाराला कळत नाही. आणि जेव्हा तो समोर येतो, तेव्हा त्याला जाणवते की त्याचा व्यर्थपणा, त्याचा अभिमान, त्याला स्वतःबद्दल असलेला मोह, त्याच्या कल्पना, दबावाखाली अंड्याप्रमाणे फुटतात.

आत्म्याच्या दुःखाची काही कारणे आहेत जी प्रथम अहंकाराला समजू शकत नाहीत, परंतु ती जगण्यास मदत करू शकत नाहीत. आत्माच कार्य करतो. त्याला एका टप्प्यातून दुसऱ्या टप्प्यात जाण्याची वेळ आली आहे. ओळखीची समस्या, जी त्याला सुरुवातीस अनुभवली होती, ती स्वतःला पुनर्स्थित करते आणि त्याचा अभिमान मुलांच्या खेळासारखा कोसळतो. अहंकार कमी असो वा कमी असो, हे सर्व असुरक्षिततेवर उतरते. अनेकदा एखाद्याला तथाकथित " ठोस", "मजबूत" अहंकाराचा सामना करावा लागतो , ज्यांच्यासाठी वास्तविक हे शुद्ध कल्पनारम्य असते; या अहंकारांचाच त्यांच्या ओळखीवर सर्वात जास्त परिणाम होतो, जेव्हा आत्मा मानसिक आणि भावनिक कंपन करतो, जीवनातील घटनांच्या दबावाखाली अहंकार यापुढे नियंत्रण ठेवू शकत नाही.

तिथेच, या कठीण अनुभवांमध्ये, अहंकार स्वतःला त्याच्या कमकुवतपणाच्या खऱ्या प्रकाशात पाहू लागतो. तिथेच त्याला दिसते की त्याच्या खोट्या ओळखीची सुरक्षितता, जिथे त्याच्या बुद्धीचा अभिमान प्रबळ होता, प्रकाशाच्या स्पंदनात्मक दबावाखाली फुटतो. मग त्याच्याबद्दल असे म्हटले जाते की तो बदलत आहे, तो आता पूर्वीसारखा राहिला नाही किंवा त्याला त्रास होत आहे. आणि ही फक्त सुरुवात आहे, कारण जेव्हा आत्मा खोट्या ओळखीच्या भिंती फोडू लागतो तेव्हा तो त्याचे कार्य थांबवत नाही. कारण मानवामध्ये चेतना, बुद्धिमत्ता आणि खरी इच्छाशक्ती आणि प्रेम यांच्यात उतरण्याची वेळ आली आहे.

खोट्या ओळखीतून प्रबळ वाटणारा अहंकार, कंपनाचा धक्का बसला की वेळूसारखा कमकुवत वाटतो. आणि नंतरच तो त्याच्या शक्ती, आत्म्याच्या शक्तींना परत मिळवतो आणि त्याच्या इच्छा शरीराची खोटी शक्ती नाही, भावना आणि खालच्या मनाला पोषण देणाऱ्या स्वरूपावर.

मनुष्यातील ओळख संकट आत्म्याच्या प्रकाशासाठी अहंकाराच्या प्रतिकाराशी संबंधित आहे. या पत्रव्यवहारात अहंकाराच्या जीवनात या प्रतिकाराच्या प्रमाणात दुःखाचा समावेश होतो. आणि सर्व प्रतिकार नोंदणीकृत आहे, जरी ते मनोवैज्ञानिक किंवा प्रतीकात्मक किंवा तात्विकदृष्ट्या अहंकाराद्वारे समजले जाते. कारण आत्म्यासाठी, मनुष्यामध्ये सर्वकाही ऊर्जा आहे, परंतु मनुष्यासाठी सर्वकाही प्रतीक आहे. म्हणूनच माणसाला हे पाहणे इतके अवघड जाते, कारण या रूपांपासून मुक्त झाल्यावर त्याला जे दिसेल ते स्पंदनाद्वारे दिसेल, स्वरूपाच्या चिन्हाद्वारे नाही. म्हणूनच असे म्हटले जाते की वास्तविक हे रूपाने समजले जात नाही, परंतु कंपनाने ओळखले जाते जे स्वतःला व्यक्त करण्यासाठी रूप निर्माण करते आणि तयार करते.

ओळखीची समस्या नेहमी प्रतीकविज्ञानाच्या अधिशेषाला आमंत्रण देते, म्हणजेच मनुष्यातील व्यक्तिनिष्ठ विचार-स्वरूपांचा. हे अधिशेष, कोणत्याही वेळी, विचार-स्वरूप चिन्हाद्वारे अहंकाराशी संपर्क साधण्याच्या आत्म्याच्या प्रयत्नाशी एकरूप होतो, कारण तेच ते मनाच्या आत अहंकारापर्यंत विकसित होण्याचे एकमेव साधन आहे.

सखोल कारणे समजून न घेता, अहंकाराला हे जाणवते की तो स्वतःला स्वतःच्या विरुद्ध स्थितीत ठेवण्याचा प्रयत्न करतो. पण तो अजूनही त्याच्या विचार-स्वरूपाचा, त्याच्या भावनांचा कैदी असल्याने, तो त्याच्या चळवळीवर, त्याच्या चळवळीवर विश्वास ठेवतो! म्हणजे ही संशोधन प्रक्रिया त्यांच्यापासूनच उत्पन्न होत आहे, असे ते मानतात. आणि ही त्याची अकिलीस टाच आहे, कारण अहंकार योग्य आणि चुकीच्या भ्रमात आहे, इच्छा स्वातंत्र्याच्या भ्रमात आहे.
जेव्हा आत्म्याची उर्जा आत प्रवेश करते आणि खोट्या ओळखीच्या अडथळयाला तोडते, तेव्हा अहंकाराला हे समजते की तो मुद्दा बरोबर नसून त्याच्या वास्तविक बुद्धिमत्तेपर्यंत पोहोचण्याचा आहे. मग त्याला समजू लागते. आणि त्याला जे समजते ते त्याच बुद्धिमत्तेत नसलेल्यांना समजत नाही, मग त्यांची चांगली इच्छा असो. कारण सर्व काही चिन्हाच्या बाहेर आहे, सर्व काही **स्पंदनात्मक आहे** .

जेव्हा अहंकार आणि आत्मा एकमेकांशी जुळवून घेतात तेव्हा ओळखीची समस्या अनाकलनीय असते, कारण अहंकार यापुढे वास्तविकतेचे "आवरण " *(आवरण)* त्याच्या बाजूने खेचत नाही, तर आत्मा दुसरीकडे कार्य करतो. दोघांमध्ये पत्रव्यवहार आहे आणि व्यक्तिमत्व लाभार्थी आहे. कारण व्यक्तिमत्व नेहमी आत्मा आणि अहंकार यांच्यातील अंतराला बळी पडत असते.

जोपर्यंत माणसामध्ये अस्मितेची समस्या आहे तोपर्यंत तो आनंदी होऊ शकत नाही. कारण त्याच्या जीवनात विभागणी आहे, जरी पृष्ठभागावर त्याचे भौतिक जीवन चांगले चालले आहे असे दिसते. हे केवळ स्वतःच्या एकतेच्या प्रमाणात खरोखर चांगले जाऊ शकते.

आधुनिक माणसातील ओळख संकट केवळ अशा लोकांवर फायदेशीरपणे प्रभावित करते ज्यांना आधीच पुरेसा धक्का बसला आहे ज्यामुळे त्यांच्यात संतुलनाची मोठी इच्छा जागृत होते. परंतु समतोल साधण्याची ही इच्छा केवळ तेव्हाच पूर्ण होऊ शकते जेव्हा अहंकाराने आत्म्याच्या सूक्ष्म उर्जेचा वापर करण्यासाठी छळाची साधने बाजूला ठेवली. मानवी जीवनाच्या क्षेत्रात जिथे महान अध्यात्म आहे, तिथे ओळखीचे संकट तितकेच तीव्र असू शकते, नाही तर त्याहून अधिक, जिथे एखाद्या व्यक्तीला या आंतरिक गोष्टीबद्दल अहंकाराची ही मोठी संवेदनशीलता येत नाही जी त्याला वाढत्या अध्यात्माकडे असह्यपणे ढकलते. अधिकाधिक, अधिकाधिक शोधले जाणारे आणि शेवटी अधिकाधिक अपूर्ण.

जे मानवतेच्या या श्रेणीतील आहेत त्यांनी हे पाहिले पाहिजे की सर्व रूपे, अगदी सर्वोच्च, सर्वात सुंदर, आत्म्याच्या खऱ्या चेहऱ्यावर पडदा टाकतात, कारण आत्मा अहंकाराच्या तळाचा नाही; तो अमर्यादपणे पाहतो, आणि जेव्हा अहं स्वरूपाशी, अगदी अध्यात्मिक स्वरूपाशी अत्याधिक संलग्न होतो, तेव्हा ते वैश्विक ऊर्जेमध्ये हस्तक्षेप करते जी आत्म्यामधून जाणे आवश्यक आहे आणि आत्म्याच्या सर्व खालच्या तत्त्वांचा कंपन दर वाढवतो. 'मनुष्य, जेणेकरून तो जीवनाचा स्वामी होऊ शकतो. जेव्हा वरवरचा (उच्च मानसिक) मनुष्य जीवनाचा स्वामी असतो, तेव्हा त्याला आत्म्याच्या समतलाकडे आध्यात्मिकरित्या खेचण्याची गरज नसते, कारण तो आत्मा, त्याची उर्जा आहे, जी त्याच्याकडे उतरते आणि त्याच्याकडे प्रकाशाची शक्ती प्रसारित करते. .

मनुष्याची आध्यात्मिक ओळख म्हणजे त्याच्या आत, आत्म्याच्या उर्जा स्वरूपाद्वारे अस्तित्व. परंतु या उर्जेमध्ये परिवर्तनाची शक्ती नसते, जरी ती व्यक्तिमत्त्वावर परिवर्तनाची शक्ती असते.

परंतु केवळ व्यक्तिमत्त्वाचे परिवर्तन पुरेसे नाही, कारण ती माणसाची शेवटची बाजू आहे. आणि जोपर्यंत अहंकार आत्म्याशी एकरूप होत नाही, तोपर्यंत आध्यात्मिक व्यक्तिमत्व माणसाला त्याच्या नैतिकतेच्या जलद रूपांतरणात सहजतेने नेऊ शकते, इतके की मनाचा समतोल आणि भावनिक आत्म्याचा अभाव त्याला प्रवृत्त करू शकते. अध्यात्माचे, धार्मिक कट्टरतेचे तीव्र संकट.

अशाप्रकारे, उग्र आध्यात्मिक मनुष्य देखील स्वतःचे आणि समाजाचे नुकसान करू शकतो. कारण धर्मांध हा एक आध्यात्मिक रोग आहे आणि ज्यांना त्याचा त्रास होतो ते सहजपणे, त्यांच्या आध्यात्मिक स्वरूपाच्या विशिष्ट शोषणामुळे, इतरांमध्ये असे आकर्षण निर्माण करू शकतात जे त्यांना महान आस्तिक बनवू शकतात, म्हणजे, नवीन गुलाम म्हणू शकतात. त्याच्यासारख्या अज्ञानी, परंतु आजारपणाच्या या प्रकाराबद्दल अधिक असंवेदनशील असलेल्या लोकांच्या नम्र विश्वासाने त्याला मदत केली तर केवळ आध्यात्मिकरित्या आजारी व्यक्तीच पाळू शकेल अशा धर्मांधतेने उभारलेला.

अधिकाधिक पुरुष, कट्टर अध्यात्मिक न बनता, त्यांच्या अध्यात्माने खूप प्रभावित होतात आणि त्यांना त्याच्या मर्यादा, म्हणजेच स्वरूपाचे भ्रम माहित नाहीत. लवकरच किंवा नंतर ते भूतकाळात डोकावतात आणि लक्षात येतात की ते त्यांच्या अध्यात्माच्या भ्रमाला बळी पडले आहेत. म्हणून ते स्वतःला दुसऱ्या अध्यात्मिक रूपात फेकून देतात, आणि ही सर्कस अनेक वर्षे चालू राहू शकते, त्या दिवसापर्यंत, जेव्हा, भ्रमाचा तिरस्कार होऊन, ते त्यातून कायमचे बाहेर पडतात, आणि जाणीव होते की चेतना या स्वरूपाच्या पलीकडे आहे. त्यांना स्वरूपाच्या मर्यादेपलीकडे जाण्याची आणि शेवटी उच्च मनाचे महान नियम शोधण्याची संधी आहे.

अध्यात्मिक अस्मितेचे संकट यावेळी त्यांच्यासाठी शक्य नाही. कारण त्यांना त्यांच्या स्वतःच्या अनुभवावरून हे माहीत आहे की प्रत्येक गोष्ट अहंकाराविरुद्ध आत्म्याच्या अनुभवाची सेवा करते, ज्या दिवसापर्यंत अहंकार केवळ त्याच्यातील अत्युच्च चैतन्य (उच्च मन) जाणून घेण्यासाठी अनुभवाची आवश्यकता सोडत नाही.

अध्यात्मिक अस्मितेचे संकट हे आधुनिक काळातील संकट बनत चालले आहे. कारण माणूस आता केवळ तंत्रज्ञान आणि विज्ञानावर जगू शकत नाही. त्याला त्याच्या जवळ काहीतरी हवे आहे, आणि विज्ञान त्याला देऊ शकत नाही. पण ऑर्थोडॉक्स धर्माचे जुने स्वरूपही आले नाही. म्हणून तो स्वतःला असंख्य आध्यात्मिक किंवा गूढ-अध्यात्मिक साहसांमध्ये झोकून देतो, तो काय शोधत आहे किंवा त्याला काय शोधायचे आहे ते शोधण्याच्या ठाम हेतूने आणि त्याला अचूकपणे माहित नाही. म्हणून, त्याचा अनुभव त्याला सर्व पंथांच्या, सर्व तात्विक किंवा गूढ शाळांच्या मर्यादेत आणतो आणि येथे त्याला पुन्हा आढळून आले की, जर तो सरासरीपेक्षा अधिक हुशार असेल, तर उत्तरे शोधण्यासाठी त्याला मर्यादा आहेत.

शेवटी तो स्वतःला एकटा शोधतो आणि त्याच्या आध्यात्मिक ओळखीचे संकट अधिकाधिक असह्य होत जाते. ज्या दिवसापर्यंत त्याला हे समजते की त्याच्यातील प्रत्येक गोष्ट बुद्धिमत्ता, इच्छाशक्ती आणि प्रेम आहे, परंतु शोधत असलेल्या माणसाच्या डोळ्यात लपलेली आणि झाकलेली यंत्रणा शोधण्यासाठी त्याला अद्याप त्यांचे कायदे पुरेसे माहित नाहीत. त्याला काय आश्चर्य वाटले! जेव्हा त्याला हे समजते की त्याच्या संकटाच्या वेळी तो जे शोधत होता ती फक्त त्याच्या आतल्या आत्म्याची एक यंत्रणा होती ज्याने त्याला स्वतःकडे, म्हणजेच तिच्याकडे जागे करण्यासाठी पुढे नेले.

आणि जेव्हा हा टप्पा शेवटी सुरू होतो, तेव्हा मनुष्य, मनुष्याचा अहंकार, अध्यात्मिक बनतो आणि त्याच्या आत असलेल्या अतिप्रचंड बुद्धिमत्तेचे (उच्च मन) स्वरूप समजून घेण्यास सुरुवात करतो, आणि त्याला त्या सर्व पुरुषांचा भ्रम ओळखायला लावतो जे स्वतःच्या बाहेर शोधतात. जगातील सर्वोत्तम हेतू, आणि ज्यांना अद्याप हे समजले नाही की ही संपूर्ण प्रक्रिया आत्म्याच्या अनुभवाचा भाग आहे जी त्याला तिच्याशी कंपनात्मक संपर्कात येण्यास तयार करण्यासाठी अहंकार वापरते.

माणूस आता त्याच्या अस्तित्वाच्या वास्तवाशी संपर्कात नाही. आणि हा संपर्क तुटणे जगावर इतके व्यापक आहे की ही पृथ्वी वेड्या माणसांनी भरलेल्या जहाजाचे प्रतिनिधित्व करते ज्यांना हे जहाज कोठे जात आहे हे माहित नाही. त्यांचे नेतृत्व अदृश्य शक्तींद्वारे केले जाते आणि कोणालाही या शक्तींच्या उत्पत्तीची किंवा त्यांच्या हेतूंची कल्पना नाही. माणूस इतक्या शतकांपासून अदृश्यतेपासून विभक्त झाला की त्याने वास्तवाची कल्पना पूर्णपणे गमावली. आणि ही चेतना नष्ट होण्यामागे त्याच्या अस्तित्वाच्या समस्येची भिंत उभी राहण्याचे कारण आहे: ओळख. आणि तरीही उपाय त्याच्या खूप जवळ आहे आणि त्याच वेळी खूप दूर आहे. त्याला जे ऐकायचे नाही ते कसे ऐकायचे हे त्याला कळले असते तर.

शब्दांची लढाई आणि विचारांची लढाई एवढंच त्याच्या हातात उरलं आहे. आपला एक भाग महान आहे, तर दुसरा त्याच्या इंद्रियांनी मर्यादित आहे आणि ते दोघे एकत्र येऊ शकतात हे त्याला कळत नसेल तर तो कोणता माणूस आत्मनिर्भर होऊ शकतो? जर एखाद्या दिवशी माणसाला हे समजले असेल की स्वतःच्या बाहेर कोणीही त्याच्यासाठी करू शकत नाही आणि फक्त स्वतःच स्वतःसाठी करू शकत नाही... पण तो स्वतःसाठी जगायला घाबरतो, कारण त्याला भीती वाटते की इतर आपल्याबद्दल काय म्हणतील... तो गरीब आहे!

पुरुष हे असे प्राणी आहेत जे सतत भ्रमाशी लढा गमावतात, कारण तेच ते जिवंत आणि सामर्थ्यवान असतात. प्रत्येकाला जे नुकसान होते ते नष्ट करण्याची भीती वाटते. एक वास्तविक दुःस्वप्न! आणि सर्वात वाईट अजून येणे बाकी आहे! कारण XX व्या शतकातील मनुष्य ताऱ्यांमधून फिरणारे आणि पूर्वी त्याच्यासाठी देव होते असे प्राणी त्याच्याकडे उतरताना दिसतील.

वैयक्तिक ओळखीची समस्या ग्रहांच्या प्रमाणात चालू आहे. ही समस्या खालच्या मन आणि उच्च मन यांच्यातील संबंधाच्या अभावामुळे उद्भवली असल्याने, त्याचा परिणाम जागतिक स्तरावर आणि वैयक्तिक पातळीवर जाणवतो, कारण केवळ उच्च मनच मनुष्याला त्याच्या ग्रहातील महान रहस्ये समजावून सांगू शकते. त्याचे प्राचीन देव. जोपर्यंत हे देव प्राचीन इतिहासाचा भाग आहेत, तोपर्यंत मनुष्याला त्यांचा त्रास होत नाही. पण जेव्हा हेच प्राणी परत येतात आणि आधुनिक प्रकाशात स्वतःची ओळख करून देतात, तेव्हा जागतिक स्तरावर धक्का बसतो आणि ज्या माणसाने आपली खरी ओळख शोधली नाही तो स्वतःला त्याच्या खोट्या ओळखीमध्ये अडकतो - आणि ती काय विचार करते आणि विश्वास करते - आणि चक्रीय घटना.

जर त्याचे मन अनुभवासाठी खुले असेल आणि त्याला त्याच्यामध्ये खरी बुद्धिमत्ता प्राप्त झाली असेल, त्याला माहित नसलेल्या आणि माहित नसलेल्या ग्रहासाठी सर्वात त्रासदायक घटनांपैकी एकाशी संबंधित आवश्यक माहिती, मनुष्याला ग्रह ओळखीचे संकट अनुभवता येत नाही, कारण त्याच्याकडे आहे. आधीच स्वत: मध्ये वैयक्तिक ओळख संकट निराकरण.

मानवता इतिहास आणि जीवनातील एका महत्त्वपूर्ण वळणाच्या दिशेने वेगाने प्रगती करत असल्याने, व्यक्तिमत्व, म्हणजेच मनुष्य आणि विश्व यांच्यातील वाढत्या परिपूर्ण संबंधांची स्थापना करणे आवश्यक आहे कारण वास्तविक व्यक्तिमत्त्वातूनच माणसामध्ये स्पंदन आढळते. त्याची खरी ओळख शोधून काढली आहे. आणि जोपर्यंत ही खरी ओळख स्थिर होत नाही, तोपर्यंत व्यक्तिमत्त्व पूर्णपणे सिद्ध होत नाही, आणि माणूस " प्रौढ" आहे असे म्हणू शकत नाही, म्हणजे कोणत्याही वैयक्तिक किंवा जागतिक प्रसंगाला व्यत्यय न आणता सामोरे जाण्यास सक्षम आहे, कारण त्याला आधीच माहित आहे. आणि त्याला त्याचे कारण माहीत आहे.

जेव्हा आपण सर्वसाधारणपणे ओळखीच्या संकटाबद्दल बोलतो तेव्हा आपण त्याबद्दल मनोवैज्ञानिक मार्गाने बोलत असतो, या अर्थाने आपण माणूस आणि समाज यांच्यातील संबंध परिभाषित करण्याचा प्रयत्न करीत आहोत. पण ओळखीचे संकट त्यापेक्षा खूप खोलवर जाते. आता समाजपुरुष हा मोजमापाची काठी बनत नाही, जी सामान्यता आपण प्राप्त केली पाहिजे. याउलट, सामान्यता बदलणे आवश्यक आहे, म्हणजे स्वतःला पुनर्स्थित करणे.

जेव्हा मनुष्याला याची जाणीव होऊ लागते की त्याची खरी ओळख कंसातील सामान्य माणसाच्या सामान्य ओळखीच्या वर आहे, तेव्हा त्याला दोन गोष्टी जाणवतात. पहिली गोष्ट म्हणजे, सामान्य माणसाला ज्या गोष्टीची काळजी वाटते ती आता त्याची चिंता करत नाही; आणि जे काही असामान्य ग्रहाला धक्का देते, पॅरेंथेटिकली, ते सामान्य आहे. मग या दृष्टीकोनातून पाहिलेली वास्तविक ओळखीची घटना अधिकाधिक महत्त्वाची बनत जाते, कारण ते ठरवते की कोणता माणूस सामान्य किंवा बेशुद्ध माणसाच्या सामान्य कमकुवतपणावर मात करू शकतो आणि त्याशिवाय, जो माणूस करत नाही तो अधिक सामान्य आहे - ते ठरवते. असे म्हणायचे आहे की, बेशुद्ध आणि तुलनेने संतुलित मनुष्याच्या मर्यादेपर्यंत - ग्रहांच्या व्यवस्थेच्या दबावांना समर्थन देऊ शकतो ज्यामुळे एखाद्या सामान्य व्यक्तीला त्रास होतो आणि अशा माणसाला जन्म देणारी संस्कृती नष्ट होण्याचा धोका असतो.

ज्या माणसाने आपली खरी ओळख शोधली आहे तो निर्विवादपणे सर्व प्रकारच्या मनोवैज्ञानिक अनुभवांपेक्षा वरचढ आहे ज्यामुळे एखाद्या माणसाला त्रास होण्याचा धोका असतो जो आपल्या संस्कृतीचे उत्पादन आहे आणि जो केवळ त्याच्या संस्कृतीच्या मूल्यांनुसार जगतो. कारण खरं तर, संस्कृती ही एक अतिशय पातळ आणि अत्यंत नाजूक कॅनव्हास असते जेव्हा बाह्य घटनांमुळे तिला त्रास होतो, म्हणजेच तिला माहित नसलेल्या किंवा पूर्णपणे अनभिज्ञ असलेल्या वास्तविकतेच्या संदर्भात तिची पुनर्व्याख्या करणे. निराकरण न झालेल्या ओळखीच्या घटनेच्या मॅनमध्ये हा धोका आहे.

कारण जर त्याला त्याची खरी ओळख सापडली नाही, तर तो भावनिक आणि मानसिकदृष्ट्या सामाजिक मानसशास्त्राचा गुलाम होईल आणि चक्राच्या शेवटच्या घटनांमुळे त्याच्या विकासाच्या सामान्य वाटचालीत व्यत्यय आल्यावर त्याच्या नैसर्गिक प्रतिक्रिया येतील. सार्वभौमिक समजुतीच्या पद्धतीनुसार अनुभव जगण्यास सक्षम होण्यासाठी, मनुष्याने सामाजिक-वैयक्तिक प्रतिक्रियांपासून मुक्त असणे आवश्यक आहे. फक्त खरी ओळख खऱ्या माणसाशी आणि खऱ्या बुद्धिमत्तेशी जुळते. मनुष्याच्या मर्यादित भावनांपासून अलिप्त असलेल्या बुद्धिमत्तेनुसार, केवळ वास्तविक ओळखच अडचणीशिवाय वैश्विक घटनांचा अर्थ लावू शकते.

माणसातील ओळख संकटाची समस्या ही एका साध्या मानसिक समस्येपेक्षा जीवनाची समस्या आहे. मनुष्य स्वतःच्या शोधात ज्या मानसशास्त्रीय श्रेणी समजून घेण्याचा प्रयत्न करतो त्या यापुढे त्यांची खरी ओळख शोधणाऱ्यांना शोभत नाहीत, कारण त्यांना यापुढे स्वतःशी संघर्ष करताना जीवनात पूर्वीसारखा रस नाही. त्याची खरी ओळख त्याच्या अस्तित्वाचा प्रत्येक कोपरा व्यापून टाकते, त्याला स्वतःला अशा आत्म्याचा सामना करावा लागतो जो त्याच्या मनाच्या दुसऱ्या परिमाणात, परिमाणात किंवा उर्जेच्या समतलात वसलेला असतो जो अनुकरणाने जोडला जाऊ शकत नाही कारण तो मनोवैज्ञानिक श्रेणींपासून पूर्णपणे स्वतंत्र आहे. वास्तविक ओळख नसलेल्या बेशुद्ध माणसाची भावनिक आणि मानसिक संरचना.

आयडेंटिटी क्रायसिसची घटना ही माणसासाठी एक दुःख आहे, कारण तो स्वत:मध्ये, स्वत:मध्ये, ज्याचा तो सतत शोध घेतो त्यात तो कधीही पूर्णपणे आनंदी राहू शकत नाही. त्याच्यासाठी, आनंदी असणे हा एक अनुभव आहे जो त्याला कायमस्वरूपी जगू इच्छितो. परंतु त्याला हे समजत नाही की तो ज्याला " आनंदी" म्हणतो , ते होण्यासाठी तुम्हाला स्वतःबद्दल चांगले वाटले पाहिजे, म्हणजे बाहेरील जग या सुसंवादात व्यत्यय आणू शकल्याशिवाय परिपूर्ण आंतरिक सुसंवाद अनुभवण्यास सक्षम असणे आवश्यक आहे. जीवनाला रंग देणाऱ्या पार्श्वभूमीला छेद देण्याची आंतरिक शक्ती जोपर्यंत त्याच्यात येत नाही तोपर्यंत जीवन स्वतःहून वेगळे करता येत नाही हे त्याला कळत नाही.

एक माणूस ज्याने आपली खरी ओळख शोधली आहे तो आता पूर्वीसारखे जीवन जगत नाही. रंग बदलले आहेत, आयुष्याला आता सारखे आकर्षण राहिलेले नाही, ते प्रत्येक स्तरावर वेगळे आहे. कारण तो ज्या संस्कृतीत रुजला आहे त्या संस्कृतीद्वारे त्याच्यावर स्पष्टपणे लादल्या जाण्याऐवजी, त्याच्या शक्यता निश्चित करणारी ती वास्तविक व्यक्ती आहे या वस्तुस्थितीवरून ते इतर मागील जीवनापासून वेगळे केले जाते.

ज्या माणसाने आपली ओळख शोधली आहे त्याचे जीवन हे एक निरंतरता दर्शवते जे कालांतराने हरवले आहे आणि ज्याला आता मर्यादा नाही, म्हणजे शेवट. आधीच, ही जाणीव जीवनाच्या मार्गात आणि जीवनाच्या सर्जनशील मार्गामध्ये हस्तक्षेप करते. जोपर्यंत माणूस ओळखीचा त्रास घेतो, जोपर्यंत त्याचा त्याच्यातील वास्तविक बुद्धिमत्तेशी संपर्क होत नाही तोपर्यंत तो फक्त त्याच्या गरजा पूर्ण करू शकतो. जेव्हा तो प्रकाशात असतो, तेव्हा त्याला यापुढे स्वतःचे समर्थन करावे लागत नाही, कारण त्याला कंपनाद्वारे, त्याच्या जीवनाची पद्धत आधीच माहित असते आणि हे ज्ञान त्याला त्याच्या गरजांसाठी आवश्यक असलेली सर्जनशील ऊर्जा निर्माण करण्यास सक्षम करते. जगण्याची मनोवैज्ञानिक श्रेणी केवळ सर्जनशील उर्जेसाठी जागा सोडण्यासाठी कमी होते जी मनुष्याची सर्व संसाधने वापरते आणि त्यांना त्याच्या कल्याणासाठी ठेवते.

मनुष्याला त्याच्या ओळखीच्या समस्येवर मात करण्यासाठी, त्याच्यामध्ये मानसशास्त्रीय स्तरापासून शुद्ध बुद्धिमत्तेच्या विमानापर्यंत मूल्यांचे विस्थापन होणे आवश्यक आहे. मनोवैज्ञानिक मूल्ये त्याच्या संकटात हातभार लावतात, कारण ती त्याच्या इंद्रियांपुरती, संवेदी सामग्रीचा अर्थ लावणाऱ्या त्याच्या बुद्धीपुरती मर्यादित असतात, त्याला मोजमापाची काठी लागते जी त्याच्या बुद्धीच्या मान्यतेच्या अधीन नसते.

इथेच त्याच्यात प्रथमच एक प्रकारचा विरोध निर्माण होतो जे त्याच्यात शिरते आणि ज्याला तो त्याच्या हालचालीत रोखू शकत नाही. जेव्हा चळवळ सुरू केली जाते, तेव्हा या बुद्धिमत्तेचा प्रकाश असतो जो त्याच्या अहंकारापासून आणि त्याच्या chimeras पासून स्वतंत्र असतो. येथेच मूल्यांचे विस्थापन जाणवू लागते ज्याचा परिणाम आतील दुःखात होतो, जो जागृत झालेल्या मनुष्याने जगला पाहिजे त्यानुसार प्रकाशाच्या बुद्धिमत्तेमध्ये प्रवेश करण्यासाठी पुरेसा असतो.

अहंकाराला विशिष्ट संतुलन राखता यावे यासाठी मूल्यांमध्ये बदल फक्त हळूहळू केला जातो. परंतु कालांतराने, एक नवीन समतोल तयार होतो आणि सामाजिकदृष्ट्या, अहंकार आता सामान्य नाही; तो जागरूक आहे. म्हणजेच, तो स्वरूप आणि आदर्श यांच्या भ्रमातून पाहतो आणि त्याच्या सूक्ष्म शरीराची स्पंदने वाढवण्यासाठी, त्याचे व्यक्तिमत्व ज्या स्तरांवर आधारित असेल आणि त्याची खरी ओळख वाढवण्यासाठी तो अधिकाधिक वैयक्तिक बनतो.

मूल्यांचे विस्थापन हे खरे तर मूल्यांचे पतन आहे, परंतु आम्ही त्याला "विस्थापन" म्हणतो, कारण जे बदल घडतात ते स्पंदनशील शक्तीशी संबंधित असतात जे पाहण्याच्या पद्धतीमध्ये बदल करतात, ज्यामुळे विचार करण्याची पद्धत बुद्धिमत्तेशी जुळवून घेते. मॅनमधील उच्च केंद्राचे. जोपर्यंत अहंकार कंपनाने हे कोसळत नाही तोपर्यंत, तो विचारांच्या श्रेणी, चिन्हांच्या श्रेणींवर चर्चा करत राहतो, जे त्याच्या खोट्या ओळखीच्या भिंती बनवतात. परंतु या भिंती कमकुवत होण्यास सुरुवात होताच, मूल्यांचे विस्थापन एका गहन बदलाशी संबंधित आहे, जे अहंकाराने तर्कसंगत केले जाऊ शकत नाही. आणि त्याला तर्कसंगत बनवता न आल्याने शेवटी त्याला प्रकाशाचा झटका बसतो, म्हणजेच तो शेवटी त्याच्याशी कायमस्वरूपी आणि वाढत्या मार्गाने जोडला जातो.

त्यानंतर, त्याचे जीवन चक्राद्वारे बदलले जाते आणि लवकरच, तो यापुढे मर्यादेत नाही तर संभाव्यतेमध्ये जगतो. तिची ओळख तिच्या व्यक्तिपरक इच्छांच्या संबंधात परिभाषित करण्याऐवजी तिच्या संबंधात अधिकाधिक परिभाषित केली जात आहे. आणि " वास्तविक आणि वस्तुनिष्ठ स्व" म्हणजे काय हे त्याला कळू लागते.

जेव्हा त्याला वास्तविक आणि वस्तुनिष्ठ स्वत्वाची जाणीव होते, तेव्हा तो अगदी स्पष्टपणे पाहतो की हा स्वतःचा स्वतःचा आहे आणि त्याच्या आत आणखी काहीतरी आहे जे त्याला दिसत नाही, परंतु जे त्याला सध्या जाणवते, तेथे काहीतरी त्याच्या आत जाते. काहीतरी हुशार, कायम आणि सतत उपस्थित. एखादी गोष्ट जी डोळ्यांनी पाहते आणि जगाला जसे आहे तसे समजते, आणि अहंकाराने ते आधी पाहिले होते तसे नाही.

हा माणूस “ मानसिक” आहे असे आपण यापुढे म्हणत नाही, आपण म्हणतो की तो “ अतिरिक्त (उच्च मानसिक)” आहे , म्हणजेच हे जाणून घेण्यासाठी त्याला आता विचार करण्याची गरज नाही. ओळखीचा त्रास त्याच्यापासून, त्याच्या अनुभवापासून इतका दूर आहे की जेव्हा तो त्याच्या भूतकाळाकडे मागे वळून पाहतो तेव्हा तो आश्चर्यचकित होतो आणि तो आता काय आहे हे पाहतो आणि त्याची तुलना तो काय होता त्याच्याशी करतो.

प्रकरण २

अधोगामी उत्क्रांती आणि ऊर्ध्वगामी उत्क्रांती *BdM-RG #62A (*सुधारित*)*

ठीक आहे, म्हणून मी मनुष्याची उत्क्रांती विभक्त करतो, मी त्याला एक खालचा वक्र आणि वरचा वक्र देतो. ? अधोगामी वक्र ज्याला मी "आक्रमण" म्हणतो, वरच्या वक्रला मी उत्क्रांती म्हणतो. आणि आज मनुष्य या वक्रांच्या मिलन बिंदूवर आहे. जर तुम्हाला हवे असेल तर तारीख टाकूया: 1969. जर आपण उत्क्रांतीकडे पाहिले तर - डार्विनवादी दृष्टिकोनातून नाही - परंतु गूढ दृष्टिकोनातून, दुसऱ्या शब्दात, मनुष्याच्या अंतर्गत संशोधनानुसार आणि जर आपण काळाच्या मागे गेलो, तर आपल्याला तेथे बारा हजार वर्षांपूर्वीचा नाश सापडेल. एक महान सभ्यता ज्याला अटलांटिसचे नाव दिले गेले.

म्हणून हा एक काळ होता जेव्हा मनुष्याने सूक्ष्म शरीराचा विकास केला जो त्याच्या चेतनेचा एक पैलू आहे, जो त्याच्या चेतनेचे एक सूक्ष्म वाहन आहे, जो थेट मनो-भावनिक सर्वांशी संबंधित आहे. आणि मग आजपर्यंत या सभ्यतेच्या नाशानंतर, मनुष्याने त्याच्या चेतनेचा आणखी एक भाग विकसित केला, ज्याला गुप्तपणे निम्न मानसिक चेतनेचा विकास म्हटले जाऊ शकते, ज्याने बुद्धीच्या अत्यंत प्रगत विकासास जन्म दिला, ज्याचा आज मनुष्य वापर करतो. भौतिक जग समजून घेण्यासाठी.

आणि या ग्रहावर 1969 पासून, मनुष्याच्या चेतनामध्ये एक नवीन घटना घडली आहे ज्याला फ्यूजनचे नाव दिले जाऊ शकते किंवा ज्याला पृथ्वीवरील अधिमान्य चेतना (उच्च मन) जागृत करण्याचे नाव दिले जाऊ शकते. आणि जगात असे काही पुरुष आहेत ज्यांनी खालच्या मनाच्या, म्हणून बुद्धीच्या स्तरावर कार्य करणे थांबवले आहे आणि त्यांनी चेतनेचा आणखी एक स्तर विकसित करण्यास सुरुवात केली आहे ज्याला सुप्रमेंटल चेतना (उच्च मन) म्हणतात. आणि या पुरुषांनी अशा विद्याशाखा विकसित केल्या आहेत ज्या विकासाच्या प्रक्रियेत आहेत आणि ते देखील उत्क्रांतीच्या दुसऱ्या चक्राशी एकरूप होतील, ज्याला सहाव्या मूळ-शर्यती म्हणता येईल.

गूढपणे सांगायचे तर, जेव्हा आपण मनुष्याच्या उत्क्रांतीबद्दल बोलतो, तेव्हा आपण अटलांटिसबद्दल बोलत आहोत जी त्याच्या उप-शर्यतींसह चौथी मूळ शर्यत होती, इंडो-युरोपियन शर्यती ज्याचा आपण भाग आहोत, ज्या पाचव्या मूळ-शर्यतीचा भाग आहेत. आणि त्याच्या उप-शर्यती. आणि आता नवीन मूळ-शर्यतीच्या जगात सुरुवात झाली आहे जी त्याच्या उप-शर्यती देखील देईल. आणि शेवटी एक सातवी मूळ शर्यत असेल जी मनुष्याला उत्क्रांतीच्या एका पातळीवर पोहोचण्यास सक्षम करेल ज्यामुळे त्याच्या भौतिक शरीराच्या सेंद्रीय वापराची आवश्यकता नाही. परंतु आपण या क्षणी याला सामोरे जात नाही, म्हणून आपण सहाव्या मूळ-वंशाशी व्यवहार करत आहोत जी शारीरिक शर्यतीचे प्रतिनिधित्व करत नाही, परंतु भविष्यातील मानवतेच्या नवीन मानसिक चेतनेचे पूर्णपणे मानसिक पैलू दर्शवते.

या विमानावरील मानवाची उत्क्रांती समजून घेण्यासाठी, उलट भोवर्याच्या बिंदूपासून त्याच्या अंतिमतेच्या दिशेने, जे आपल्याला मिळालेल्या माहितीनुसार कदाचित दोन हजार पाचशे वर्षे आहे, हे उघड आहे की माणूस पुढे जाणार आहे. चेतनेच्या अगदी विलक्षण टप्प्यांतून, म्हणजे मॅन ऑफ द इंडो-युरोपियन रेसच्या तुलनेत अटलांटिसचा माणूस जितका मर्यादित होता, तितकाच आजचा माणूस मर्यादित आहे आणि पुढच्या माणसाच्या तुलनेत मर्यादित असेल. पृथ्वीवरील सुप्रमेंटल चेतनेची (उच्च मनाची) उत्क्रांती, ज्याचा अंदाज अरबिंदांनी वर्तवला होता.

सुप्रमेंटल चेतनेच्या (उच्च मनाच्या) उत्क्रांतीमध्ये मनोरंजक गोष्ट अशी आहे: आज आपण जितके मानव आहोत, तर्कसंगत मानव, कार्टेशियन मानव, पाचव्या मूळ-वंशातील अत्यंत चिंतनशील मानव, तितकीच आपली प्रवृत्ती आहे. आपले मन आपल्या अहंकारावर चालते असे मानणे, उद्या मनुष्याला हे समजेल की मानवी मन हे अहंकाराने नियंत्रित होत नाही, मानवी मन त्याच्या मानसिक व्याख्येनुसार, अहंकाराची प्रतिबिंबित अभिव्यक्ती आहे आणि त्याचा स्रोत आहे. समांतर जगामध्ये स्थित आहे ज्याला क्षणासाठी "मानसिक जग" म्हटले जाऊ शकते, परंतु ज्याला नंतर "स्थापत्य जग" म्हटले जाईल .

दुसऱ्या शब्दांत, मला असे म्हणायचे आहे की मनुष्य जितका त्रास घेतो किंवा त्याच्या विचारांचे स्रोत शोधण्याची क्षमता किंवा स्वातंत्र्य घेतो, तितकेच त्याला समांतर जगांशी टेलिसायकिक संवादात प्रवेश करणे शक्य होईल. शेवटी उत्क्रांतीच्या मार्गावर, जागतिक स्तरावर, शर्यतीच्या सार्वत्रिक स्तरावर, जीवनातील रहस्ये त्वरित डीकोड करण्यास सक्षम होण्यासाठी, पदार्थाच्या क्षेत्रामध्ये आणि आत्म्याच्या सूक्ष्म क्षेत्रापेक्षा आत्म्याचे मानसिक क्षेत्र. दुसऱ्या शब्दांत, मला असे म्हणायचे आहे की, मनुष्य, अशा टप्प्यावर पोहोचला आहे जिथे त्याला स्वतःसाठी पुरेशी मानसिक चेतनेची स्थिती गाठणे आज शक्य आहे.

आणि जेव्हा मी स्वयंपूर्ण मानसिक जागरूकता म्हणतो, तेव्हा माझा अर्थ सत्याच्या मानसिक मूल्यावर आधारित मानसिक जागरूकता असा होत नाही. सत्य ही एक संज्ञा आहे, ती एक वैयक्तिक खात्री आहे किंवा सामाजिक श्रद्धा आहे, किंवा सामूहिक समाजशास्त्रीय खात्री आहे, जी व्यक्ती म्हणून माणसाच्या भावनिक गरजांचा भाग आहे किंवा एक सामूहिक म्हणून समाजाच्या, पदार्थाच्या जगात वर्चस्व सुनिश्चित करण्यासाठी.

परंतु मानवजातीच्या भावी चेतनेच्या उत्क्रांतीच्या दृष्टीने, सत्याची घटना किंवा तिचा मानसशास्त्रीय प्रतिरूप, किंवा त्याचे भावनिक मूल्य, या साध्या कारणास्तव पूर्णपणे निरुपयोगी होईल की मनुष्य यापुढे भावनिकतेचा वापर करू शकणार नाही. त्याच्या ज्ञानाचे मानसशास्त्रीय मूल्यांकन. त्याला यापुढे त्याच्या आत्म्याच्या मानसिक सुरक्षिततेच्या विकासासाठी त्याच्या विवेकबुद्धीचा भावनिक वापर करावा लागणार नाही.
म्हणून मनुष्य मानसिक स्तरावर व्यायाम करण्यास सक्षम होण्यासाठी मनाने पूर्णपणे मुक्त असेल, अभिव्यक्ती, विस्तार आणि वैश्विक चेतनेच्या अंतीम अनंत थीमची व्याख्या, जे जगातील सर्व वंशांचे भाग आहेत, जे भाग आहेत. ब्रह्मांडातील सर्व शर्यतींचे, आणि जे खरेतर स्पिरिटच्या अपरिवर्तनीय एकतेचा भाग आहेत, त्याच्या परिपूर्ण व्याख्येनुसार, प्रकाशाचा मूळ स्रोत आणि ब्रह्मांडातील त्याची हालचाल.

म्हणून मानवतेच्या उत्क्रांतीमध्ये असा एक मुद्दा येईल जेव्हा शेवटी अहंकाराने स्वतःच्या चेतनेवर गमावलेल्या वेळेची भरपाई केली असेल आणि जिथे स्व शेवटी त्याच्या चेतनेमध्ये प्रवेश करून त्याच्या मानसिक व्याख्येच्या संभाव्य मर्यादेपर्यंत पोहोचेल. त्याच्या शुद्ध मनाची, म्हणजेच त्याच्या आत्म्याची सर्जनशील क्षमता.

आणि आपण पृथ्वीवर, वेगवेगळया वंशांमध्ये, वेगवेगळया राष्ट्रांमध्ये, वेगवेगळया काळात, अशा व्यक्ती शोधू ज्यांना फ्यूजन माहित असेल, म्हणजेच ज्यांना ताबडतोब ज्ञानाच्या स्त्रोतांकडे गुरुत्वाकर्षण करण्यास सक्षम बनवता येईल. तंत्रज्ञान, तंत्र, वैद्यकशास्त्र, मानसशास्त्र किंवा इतिहासाच्या दृष्टीने जागतिक विज्ञान पूर्णपणे उखडून टाकले जाईल. कशासाठी ? कारण मनुष्याच्या उत्क्रांतीनंतर प्रथमच, आत्म्याचे पदार्थात अवतरण झाल्यापासून प्रथमच आणि आत्म्याचे भौतिकाशी संयोग झाल्यापासून प्रथमच, मानवाने शेवटी त्याचे परिपूर्ण ज्ञान सहन करण्याची क्षमता प्राप्त केली असेल. .

ज्याला मी निरपेक्ष ज्ञान म्हणतो तो म्हणजे मानवी मनाचा स्वतःचा प्रकाश सहन करण्याची आणि शोषून घेण्याची क्षमता. परिपूर्ण ज्ञान म्हणजे विद्याशाखा नव्हे. निरपेक्ष ज्ञान म्हणजे पूर्वनिश्चित नाही. परिपूर्ण ज्ञानाची गरज नाही. परिपूर्ण ज्ञान हा एक सुधारात्मक उत्क्रांतीचा शेवट आहे, म्हणजेच, ब्रह्मांडातील प्रकाशाच्या क्रियाकलापांच्या महान क्षेत्राचा एक भाग आहे आणि जे सर्व क्षेत्रांना, सर्व बुद्धिमान उदाहरणांना सक्षम करते, म्हणजे - विश्वातील सर्व बुद्धिमान प्रजातींना भेटण्यास सांगणे. उच्च मानसिक समतल, म्हणजे उत्क्रांतीदरम्यान शक्यतो परवानगी देण्याइतपत शक्तीशाली उर्जेच्या विमानावर, इथरिक शरीराच्या अपरिहार्य पुनरुत्थानासाठी शरीराची सामग्री अंतिमतः नाहीशी होते.

म्हणजेच, सार्वभौमिक जीव बनवणाऱ्या वेगवेगळया सूर्यांसह आणि त्याचा आत्मा, त्याचा प्रकाश आणि त्याचा पाया, हालचाल आणि आकलनात शेवटी ऊर्जावान घटकात प्रवेश करण्याची मनुष्याची क्षमता. अणु चेतना कॉल! त्यामुळे उत्क्रांतीदरम्यान एक असा बिंदू येईल जिथे मनुष्य विचार न करता, विचार करण्याची गरज न ठेवता सक्षम असेल, मानव शेवटी पृथ्वीवरील क्रांतिकारी आर्किटेप आणि वैश्विक चेतनेच्या उत्क्रांतीच्या मानसिक बांधणीत स्पष्टपणे हस्तक्षेप करण्यास सक्षम असेल. . याचा अर्थ असा की शेवटी मनुष्याला समजेल की तो पूर्णपणे एक बुद्धिमान प्राणी आहे.

मनुष्याला हे समजेल की बुद्धिमत्ता ही केवळ शिक्षणाच्या स्वरूपाची अभिव्यक्ती नाही, तर बुद्धिमत्ता ही कोणत्याही परिस्थितीत कोणत्याही मनाचे मूलभूत वैशिष्ट्य आहे. केवळ आपण आज अशा वळणावर आहोत जिथे एक अहंकार म्हणून किंवा मानवी आत्म म्हणून, आपल्याला सार्वभौमिक प्रतिबिंबाने, म्हणजेच इतिहासाद्वारे आणि मानवतेच्या स्मृतीद्वारे आपल्यावर लादलेल्या मर्यादेत राहण्यास भाग पाडले जाते.

आणि मनुष्याला अद्याप दिलेले नाही - कारण या क्षेत्रात पुरेसे विज्ञान नाही - मनुष्याला त्याचे मानस कसे कार्य करते, त्याचा अहंकार कसा कार्य करतो, त्याचा अहंकार कसा कार्य करतो हे जाणून घेण्याची आणि समजून घेण्याची क्षमता अद्याप दिलेली नाही. इंटेलिजन्स या शब्दाचा त्याच्या सार्वत्रिक परिभाषेत काय अर्थ होतो, म्हणजे मनुष्य आज त्याच्या सूक्ष्म शरीराने, म्हणजे त्याच्या इंद्रियांद्वारे अडकलेला आहे!

त्याला त्याच्या मूलभूत आणि सार्वभौमिक ज्ञानाचा पर्याय करणे बंधनकारक आहे, उत्क्रांतीदरम्यान इतिहास आणि विषयाद्वारे अट असलेले एक लहान मर्यादित ज्ञान सुधारित केले जावे, कारण विज्ञानाचे सर्व सिद्धांत असावे लागतील, या अर्थाने नाही की आजचे विज्ञान उपयुक्त नाही. उलट ते अतिशय उपयुक्त आहे, पण त्या अर्थाने आज विज्ञानही स्वतःच्याच लोप पावण्याच्या दिशेने आपला अपरिहार्य प्रवास करत आहे. ज्याप्रमाणे सर्व सभ्यता त्यांच्या स्वत: च्या समाप्तीच्या दिशेने अपरिहार्य प्रवास करतात.

परंतु ज्याप्रमाणे एखाद्या सभ्यतेला स्वतःचे निर्मूलनाचे वास्तव खूप कठीण वाटते, त्याचप्रमाणे विज्ञानाला स्वतःचे निर्मूलन साध्य करणे कठीण जाईल. आणि ते अगदी सामान्य आहे. विचार करणाऱ्या प्राण्यांना किंवा ज्यांना जगामध्ये स्वतःचा अधःपतन किंवा स्वतःचा नायनाट करण्याची विशिष्ट जाणीव आहे त्यांना कोणी विचारू शकत नाही. आपण काय आहोत, आपण काय केले आहे, आपण काय करू शकतो, उत्क्रांत होण्यासाठी, मानवतेला उत्क्रांत होऊ देण्यासाठी आपण काय करू शकतो याची जाणीव करून देणे आपल्याला बंधनकारक आहे.

परंतु एक व्यक्ती म्हणून - मी एक व्यक्ती म्हणून स्पष्टपणे सांगत आहे - आपल्या ग्रहावरील सार्वभौमिक आणि वैश्विक व्यवस्थेच्या परिस्थितीला तोंड देण्यास आपण बांधील असू, ज्या परिमाणांना भूतकाळात अंधश्रद्धेच्या मोठ्या चळवळी उभ्या राहिल्या त्या परिमाणांना तोंड देण्यास आपण बांधील असू. जगामध्ये; ज्या चळवळी विज्ञानाच्या उत्क्रांतीसह संपुष्टात आल्या आणि ज्या चळवळी नंतर विज्ञानाने स्पष्टपणे नाकारल्या.

त्यामुळे ब्रह्मांड अमर्यादित आहे हे जाणण्यासाठी आम्ही काही अनुभवांचे पुनरावलोकन आणि पुनरुज्जीवन करणे कालांतराने बांधील असू. मानवी चेतना अमर्यादित आहे आणि मनुष्य त्याच्या अंतर्भागात त्याच्या चेतनेइतका शक्तिशाली आहे. आजच्या जगात हे खूप महत्वाचे आहे जिथे आपल्याला मनाच्या अनेक प्रवाहांच्या क्रॉसरोडवर जगणे भाग पडले आहे जे एकंदरीत... आणि जेव्हा मी एकंदरीत असे म्हणतो तेव्हा मी नक्कीच युनायटेड स्टेट्सकडे पाहत आहे जिथे हे व्यक्तिमत्त्वाशी सामना करताना सामूहिक अनुभव हळूहळू सामूहिक मनोविकृती निर्माण करतो.

दूरचित्रवाणीद्वारे किंवा वर्तमानपत्रांद्वारे किंवा मुक्त प्रेसच्या विविध प्रकारांद्वारे त्यांच्या संख्येत वाढलेल्या कल्पनांच्या प्रवाहांनी जगामध्ये माणसावर अनिश्चित काळासाठी भडिमार होऊ शकत नाही. सत्य आणि असत्य यांच्यातील विविध संघर्षांतून निर्माण होणारा हा मानसिक आणि मानसिक ताण मनुष्य यापुढे सहन करू शकणार नाही. पृथ्वीवरील सुप्रमेंटल (उच्च मन) चेतनेच्या उत्क्रांतीमध्ये एक बिंदू येईल जेव्हा मनुष्याला स्वतःच्या संबंधात वास्तवाची व्याख्या करण्यास भाग पाडले जाईल. पण तो "स्वतः एक" असेल जो सार्वत्रिक असेल, तो "स्वतः" नसतो जो त्याच्या स्वतःच्या आत्म्याच्या खेळकरपणावर किंवा स्वतःच्या अहंकाराच्या व्यर्थतेवर किंवा स्वतःच्या माझ्या असुरक्षिततेवर आधारित असेल.

तर त्या क्षणापासून, मनुष्य मानवी घटना, सभ्यता त्याच्या सर्व पैलूंमधून समजून घेण्यास सक्षम होईल. आणि तो यापुढे जगात काय घडत आहे किंवा जे घडणार आहे त्याद्वारे मानसिकदृष्ट्या " भरलेले" (शोषित) होणार नाही . माणूस मुक्त होऊ लागेल. आणि ज्या क्षणापासून तो मुक्त होण्यास सुरवात करतो, शेवटी त्याला जीवन त्याच्या मूलभूत गुणवत्तेत समजण्यास सुरवात होईल. आणि तो जितका अधिक विकसित होईल तितकाच तो जीवनाला परिपूर्ण, अविभाज्य आणि शिकलेल्या मार्गाने समजून घेईल, अशा अर्थाने जो आज पाचव्या मूळ-वंशाच्या चेतनेचा भाग नाही.

हे सर्व शब्दप्रयोग का? माणसाला हे समजायला लावणे की तो स्वत:ला देऊ शकतो, स्वत:ला निर्माण करू शकतो, ही स्वत:वरची निष्ठा आहे. आपण अशा शतकात राहतो जिथे व्यक्तिवादाबद्दलचे प्रेम, विशेषतः पाश्चात्य जगात, खूप प्रगत आहे. आपण अधिकाधिक व्यक्तिवादी बनत चाललो आहोत, परंतु व्यक्तिवाद, जर ती एक वृत्ती राहिली तर ती मूलभूतपणे मानवाच्या वास्तविकतेमध्ये समाकलित झालेली नाही. दुसऱ्या शब्दांत, लाल पँटी आणि पिवळी चप्पल घालून रस्त्यावर फिरणे आणि न्यूयॉर्कच्या टाइम्स स्क्वेअरमध्ये प्रेम करणे हा व्यक्तिवादाचा एक प्रकार आहे. पण हे विक्षिप्तपणा आहे, हे मानवी चेतनेचे सूक्ष्मीकरण आहे.

माणसाला त्याचे व्यक्तिमत्व टिकवून ठेवण्याची, शब्दाच्या ठोस अर्थाने आपले व्यक्तिमत्व व्यक्त करण्याची, जनतेच्या संवेदनशीलतेला झुगारण्याची किंवा त्याच्या लोकांच्या संवेदनशीलतेला झुगारण्याची किंवा त्याच्या लोकसंख्येच्या संवेदनशीलतेला बगल देण्याची गरज नसते. तो एक भ्रम आहे! आणि तो विसाव्या शतकातील वैशिष्ट्यपूर्ण फॅशनचा एक भाग आहे, अखेरीस तो सामान्य बनतो, अखेरीस तो अगदी मूर्ख बनतो, अखेरीस त्यात सौंदर्याचा पूर्णपणे अभाव असतो. तर नवा मनुष्य, पृथ्वीवरील सुप्रमेंटल (उच्च मानसिक) चेतनेची उत्क्रांती, खरंच, मनुष्याला एक अत्यंत वैयक्तिक परंतु व्यक्तिवादी चेतना विकसित करण्यास अनुमती देईल.

माणूस वैयक्तिक का होईल? कारण त्याच्या चेतनेची वास्तविकता त्याच्या आत्म्याच्या संमिश्रणावर आधारित असेल आणि पुरुषांच्या नजरेत जगात प्रक्षेपित होणार नाही, विक्षिप्तपणासह एक प्रकारचा फ्लर्टेशन प्रकट करण्यासाठी. वास्तविक होण्यासाठी माणसाला जगभर भटकण्याची आणि किरकोळ असण्याची गरज नाही. याउलट. माणूस जितका जागरूक असेल तितका तो किरकोळ असेल, तो जितका खरा असेल आणि त्याच्या वास्तवात तो अधिक अनामिक असेल. कारण मनुष्याची वास्तविकता ही त्याच्या आणि त्याच्या दरम्यान जाणारी गोष्ट आहे आणि त्याच्या आणि इतरांमध्ये नाही.

जर आपण आपल्या ग्रहावरील मूळ-वंशाची आवश्यक उत्क्रांती पाहिली तर ती मानवी घटना थोडीशी समजून घेण्यासारखी आहे. आपण समन्वय स्थापित करतो, हे पूर्णपणे व्यावहारिक आहे, अपरिहार्य घटनांना कालक्रमानुसार आकलनाची चौकट देणे हे पूर्णपणे आहे! परंतु जर आपण जागरूक वंशाबद्दल बोललो, जर आपण जागरूक मानवतेबद्दल बोललो, तर आपल्याला जागरूक पुरुष आणि व्यक्तींबद्दल बोलणे बंधनकारक आहे.

पृथ्वीवरील अतिपरिचय चेतनेची (उच्च मनाची) उत्क्रांती कोणत्याही सामूहिकतेच्या प्रमाणात होणार नाही. पृथ्वीवरील सुप्रमेंटल (उच्च मन) चेतनेची उत्क्रांती कधीही सामूहिक शक्तीची अभिव्यक्ती होणार नाही. जगात नेहमीच अशा व्यक्ती असतील जे त्यांच्या चेतनेच्या त्या बिंदूकडे हळूहळू, अधिकाधिक गुरुत्वाकर्षण करत जातील, जिथे ते त्यांच्या स्वतःच्या स्त्रोताशी, त्यांच्या आत्म्याशी, त्यांच्या दुहेरीशी एकरूप होतील, ज्याला आपण काहीही म्हणू या. मनुष्याचा भाग आहे.

परंतु या दिशेने मूलभूत चळवळ यावर आधारित असेल: ते विचारांच्या घटनेच्या आकलनावर आधारित असेल जे उत्क्रांतीनंतर कधीही केले गेले नाही. हे म्हणणे पुरेसे नाही: " मला वाटते, म्हणून मी आहे". "मला वाटते, म्हणून मी आहे," असे म्हणणे डेकार्टेससाठी चांगले होते , कारण विचारात स्वतःमध्ये एक शक्ती असते जी व्यक्तीच्या पातळीवर जाणवली पाहिजे या जाणिवेचा भाग होता.

परंतु सर्जनशील चेतनेच्या पातळीवर, तो मुद्दा येईल जेव्हा मनुष्याचा विचार पूर्णपणे, अविभाज्यपणे प्रसारित होईल. आणि उत्क्रांतीच्या काळात मनुष्य यापुढे विचार करणार नाही. त्याचे विचार त्याच्या उच्च मनाच्या सर्जनशील अभिव्यक्तीच्या पद्धतीमध्ये बदलले जातील. आणि ते मन पूर्ण होईल टेलिसायकिक दुसऱ्या शब्दांत, मनुष्याला सार्वत्रिक विमानांसह त्वरित संवादाचा अनुभव येईल आणि संवादाची ही पद्धत यापुढे प्रतिबिंबित होणार नाही. ज्या क्षणी विचार माणसाच्या मनात परावर्तित होणे बंद होते, विचार व्यक्तिनिष्ठ होणे थांबते. मनुष्य विचार करतो असे आपण यापुढे म्हणू शकत नाही, आपण असे म्हणू शकतो की मनुष्य त्याच्या स्वतःच्या चेतनेच्या सार्वत्रिक विमानांशी संवाद साधतो.

परंतु मनुष्याला हे अविभाज्य रीतीने समजण्यासाठी, त्याला तो विचार जाणणे आवश्यक आहे, जसा आपण आज तो विचार करतो, जसे आपण आज जगतो, जसे तो आपल्या मनात स्थिर असतो, जसा तो निर्माण होतो किंवा जाणवतो. अचेतन अहंकार म्हणून, आपल्यामध्ये एक विशिष्ट जाणीव जागृत केली पाहिजे, या अर्थाने मनुष्याने हे जाणण्यास सक्षम व्हायला हवे की त्याचा विचार त्याला स्वतःच्या विरूद्ध विभाजित करतो. केवळ तोपर्यंत, तो, अंतर्भूत आणि बेशुद्धपणाच्या कारणास्तव, त्याला चांगले किंवा वाईट, खरे आणि खोटे यांच्या ध्रुवीयतेच्या अधीन करतो.

ज्या क्षणापासून मनुष्य आपल्या मनाचे ध्रुवीकरण करतो, मग तो नकारात्मक किंवा सकारात्मक समन्वय स्थापित करतो, त्याने फक्त भौतिक आणि वैश्विक आणि वैश्विक स्तरावर स्वतःमध्ये फूट निर्माण केली आहे. हे खूप महत्त्वाचं आहे! हे इतके महत्त्वाचे आहे की पुढील उत्क्रांतीची ती मूलभूत गुरुकिल्ली आहे. ध्रुवीयतेच्या संदर्भात आपला विचार नेहमी जगण्याकडे आपल्याला प्रवृत्त करते ती म्हणजे आपल्या अहंकाराची मूलभूत असुरक्षितता. ही आपल्या भावनांची शक्तिशाली आणि व्हॅम्पिरिक क्षमता आहे. एक अहंकार म्हणून किंवा एक सुशिक्षित किंवा अतिशिक्षित व्यक्ती म्हणून, आपल्याला जे माहित आहे ते सहन करण्यास सक्षम नसणे ही आपली असमर्थता आहे.

जगात असा एकही माणूस नाही ज्याला काही कळत नाही. सर्व पुरुषांना काहीतरी माहित आहे परंतु जगभरात कोणताही अधिकार नाही, कोणतीही सांस्कृतिक व्याख्या नाही, जगात असे कोणतेही सांस्कृतिक समर्थन नाही जे एखाद्या माणसाला काहीतरी जाणून घेण्यास समर्थन देऊ शकेल. अशा संस्था आहेत ज्या स्वतःला काहीतरी जाणून घेण्याचा अधिकार देतात आणि हे ज्ञान स्थापित करण्यासाठी आणि मनुष्याच्या मनाला त्याच्याशी जोडण्यासाठी. ज्याला आपण वेगवेगळ्या पातळ्यांवर विज्ञान म्हणतो, ते सामान्य आहे.

परंतु अशी कोणतीही विरुद्ध चळवळ नाही जिथे जगातील संस्था माणसाला त्याचा अधिकार देऊ शकतील किंवा परत देऊ शकतील, म्हणजे त्याला स्वतःचे छोटे परिमाण परत द्या जे एक दिवस खूप मोठे होऊ शकेल. आणि तुम्ही आध्यात्मिक क्षेत्रात, धार्मिक क्षेत्रात अतिशय सोप्या पद्धतीने परीक्षा देऊ शकता. एक दिवस, जेव्हा मनुष्याची केंद्रे पुरेशी खुली होतील, तेव्हा तो विज्ञानाच्या क्षेत्रातही तेच करू शकेल.

एक माणूस जो जगात आहे आणि जो, उदाहरणार्थ, एखाद्या मौलवीला किंवा धर्मात काम करणाऱ्या व्यक्तीला भेटायला जाईल आणि जो त्याच्याशी देवाबद्दल बोलेल, आणि जो म्हणेल: “ठीक आहे, देव ही अशी गोष्ट आहे, अशी गोष्ट , अशी गोष्ट” , एकजण त्याला म्हणेल: “ पण तू कोणत्या अधिकाराने देवाबद्दल बोलतोस? तुम्ही कोणत्या अधिकाराने देवाविषयी बोलत आहात...? आणि जर मनुष्य कमी विकसित झाला असेल आणि त्याच्या मनाच्या सर्जनशील परिमाणाचा भाग असलेल्या इतर रूपांना बाहेर आणण्यासाठी किंवा उगवण्याकरता तो खरोखरच देवाच्या स्वरूपाचे तुकडे करू शकतो, तर त्याला देवाच्या संस्थात्मकतेने आणखीच मागे टाकले जाईल. अदृश्य जगाची समज.

म्हणूनच मी म्हणतो की, मनुष्य जगाच्या आधाराने, पराभूत चेतनेने (उच्च मनाने) जगात प्रवेश करू शकणार नाही. जेव्हा मनुष्य जगिक आधाराच्या गरजेपासून पूर्णपणे मुक्त होतो आणि शेवटी त्याला जे माहित आहे ते समजण्यास आणि सहन करण्यास हळू हळू सुरुवात करतो तेव्हा त्याला सुप्रीमेंटल (उच्च मन) चेतना असते. आणि त्यासाठी अट ही आहे की खऱ्या-खोट्याच्या ध्रुवीयतेच्या फंदात पडू नये.

जर माणूस खऱ्या आणि खोट्याच्या ध्रुवतेच्या सापळ्यात सापडला तर तो त्याच्या विवेकबुद्धीला उत्तेजित करतो, तो त्याचा अहंकार असुरक्षित करतो आणि तो वास्तविकतेकडे टोकाचा दृष्टिकोन विकसित करतो. खरे आणि खोटे हे जाणून घेण्याच्या मानसिक अक्षमतेचे केवळ मानसिक घटक दर्शवतात! जेव्हा तुम्ही एक चांगला स्टेक खाता, तेव्हा तुम्हाला आश्चर्य वाटत नाही की ते खरे आहे की खोटे आहे, ध्रुवीयपणा नाही, म्हणूनच ते चांगले आहे. पण जर तुम्हाला वाटायला लागलं की तिथे कीटक आहे का, अरे, तुमचे पोट प्रतिसाद देणार नाही! आणि तीच गोष्ट ज्ञानाच्या पातळीवर, ज्ञानाच्या पातळीवर.

ज्ञान हे खालच्या मनाला असते जे जाणणे उच्च मनाला असते. ज्ञान हा अहंकाराच्या गरजेचा भाग आहे तर जाणणे हा स्वतःच्या वास्तवाचा भाग आहे. त्यामुळे जाणणे आणि जाणणे यात कोणतेही विभाजन किंवा भेद नाही. ज्ञान हा चेतनेच्या एका स्तराचा भाग आहे आणि ज्ञान दुसऱ्या स्तराचा भाग आहे.

ज्ञानाच्या क्षेत्रात आपण काही गोष्टींबद्दल बोलतो आणि ज्ञानाच्या क्षेत्रात आपण इतर गोष्टींबद्दल बोलतो. दोघे भेटू शकतात, एकत्र बांधू शकतात आणि खूप चांगले एकत्र राहू शकतात. त्याच्या वरच्या पाचव्या मजल्यासह चौथा मजला नेहमीच चांगला असतो... आणि माणूस हा एक बहुआयामी प्राणी आहे, परंतु माणूस देखील एक असा प्राणी आहे जो अनुभवात्मक चेतना बाळगतो आणि जगतो. आपल्याकडे पृथ्वीवर प्रायोगिक चेतना आहे. आपल्याकडे सर्जनशील जाणीव नाही.

आपले जीवन पहा! तुमचे जीवन म्हणजे अनुभव! ज्या क्षणापासून तुम्ही जगात प्रवेश करता, त्या क्षणापासून तुमचे जीवन हे सतत अनुभवाचे असते, परंतु मनुष्य अनुभवावर अनिश्चित काळ जगू शकत नाही. एक दिवस माणसाला सर्जनशील जाणीवेने जगावे लागेल, त्या वेळी जीवन जगणे योग्य आहे, जीवन खूप मोठे, खूप विशाल बनते, ते सर्जनशीलतेमध्ये सामर्थ्यवान आहे आणि माणूस आत्म्याचा अनुभव घेणे सोडून देतो. पण माणूस अनुभव का जगतो? कारण ते शक्तिशाली शक्तींशी संलग्न आहे - ज्याला मी स्मृती म्हणतो - ज्याला तुम्ही "आत्मा" म्हणता.

मनुष्य त्याच्या आत्म्याने जगत नाही, तो आत्म्याशी संलग्न आहे, तो आत्म्याने जगतो, तो सतत आत्म्याने पिशाच बनतो. ज्या लोकांनी पुनर्जन्मावर संशोधन केले आहे किंवा ज्या लोकांनी एखाद्या विशिष्ट भूतकाळात परत जाण्याचे संशोधन केले आहे त्यांनी हे चांगले ठरवले आहे की आज काही लोक काही गोष्टींमुळे त्रस्त आहेत, कारण मागील जन्मात त्यांना कारणामुळे त्रास झाला होता. आज असे लोक आहेत जे लिफ्टमध्ये (लिफ्टमध्ये) प्रवेश करू शकत नाहीत कारण त्यांना भौतिक जीवनाच्या आधीपासून आलेल्या आघातांचा अनुभव येत आहे, किंवा ज्यांना पूर्वीच्या परिस्थितीत गुदमरले गेले आहे, ते सक्षम नाहीत… ते गुदमरत आहेत. म्हणून मनुष्य आत्म्याचा अनुभव जगतो.

तो जगतो, त्याच्या स्मृतीशी तो जडलेला असतो, त्याच्या पूर्वीच्या उत्क्रांतीवादी चळवळीतील अचेतन स्मृती तितक्याच विशाल स्मृती ज्या तो आज एक प्रयोगशील प्राणी म्हणून जगतो. पृथ्वीवरील अनुभवातून माणूस अनिश्चित काळ जगू शकत नाही! हा त्याच्या वैश्विक बुद्धिमत्तेचा अपमान आहे. हे मनुष्याच्या स्वभावाशी पूर्णपणे विसंगत आहे की माणूस असे म्हणू शकत नाही: “ ठीक आहे, मला दहा वर्षांत असे कार्य करायचे आहे, पाच वर्षांत मला असे कार्य करायचे आहे”, हे त्याच्या स्वभावाशी पूर्णपणे विसंगत आहे. माणूस की त्याला त्याचे भविष्य माहीत नाही!

त्याच्या आधीच्या माणसाचा स्वभाव त्याला माहीत नसणे हे माणसाच्या स्वभावाशी विसंगत आहे. दुसऱ्या शब्दांत, मनुष्याच्या आत्म्याशी हे असंबद्ध आहे की मनुष्यातील हा आत्मा तर्कशास्त्रानुसार जगण्यास भाग पाडतो, कारण आज भौतिक स्तरावर असलेला मनुष्य हा त्या पिढीचा भाग आहे ज्याची चेतना खाली येत आहे. माणसाची चेतना कूळातून पदार्थात उत्तीर्ण होऊन इथरिककडे जाणे आवश्यक आहे, म्हणजे ग्रहाच्या वास्तविकतेचा तो भाग जो शेवटी जग आहे ज्यामध्ये मनुष्याने नैसर्गिकरित्या अमरत्व जगले पाहिजे.

माणूस पदार्थात येऊन मरण्यासाठी बनलेला नाही. ज्याला आपण मृत्यू म्हणतो, म्हणजेच ज्याला आपण मनुष्याचे किंवा आत्म्याचे सूक्ष्म स्तरावर परत येणे म्हणतो, तो मनुष्याच्या बेशुद्धीचा भाग आहे. हा या वस्तुस्थितीचा एक भाग आहे की मनुष्य सार्वत्रिक सर्किट्सपासून पूर्णपणे तोडला गेला आहे जे त्याच्या पिढीचे स्त्रोत आहेत, जे त्याच्या बुद्धिमत्तेचे स्त्रोत आहेत, जे त्याच्या जीवनशक्तीचे स्त्रोत आहेत, जे त्याच्या ग्रहांचे स्वतःचे स्त्रोत आहेत! म्हणून मनुष्याने स्त्रोताकडे परत जाणे आवश्यक आहे, परंतु मनुष्य उत्पत्तीच्या आध्यात्मिक, ऐतिहासिक भ्रमातून स्त्रोताकडे परत येऊ शकत नाही.

जुन्या कल्पनांचा वापर करून मनुष्य त्याच्या स्त्रोताकडे परत येऊ शकणार नाही ज्याने त्याला पदार्थाचा कैदी बनण्यास भाग पाडले. जुने माध्यम वापरून माणूस त्याच्या स्त्रोताकडे परत जाणार नाही ज्याने त्याला प्रायोगिक चेतनेचे अस्तित्व बनवले. विश्वास ठेवून मनुष्य त्याच्या स्त्रोताकडे परत जाणार नाही.

मनुष्य त्याच्या उत्क्रांती दरम्यान हळूहळू विकसित होऊन त्याच्या स्त्रोताकडे परत येईल, त्याला जे माहित आहे त्याचे समर्थन करण्याची क्षमता.

पण आजच्या जगात, आपण एका पौराणिक कथेला, आपल्या स्वतःच्या मनोवैज्ञानिक पद्धतशीरीकरणासाठी नशिबात आहोत. सर्व मानवतेला प्रभावित करणाऱ्या मनोवैज्ञानिक मानसिक वृत्तीच्या पकडीत आम्ही नशिबात आहोत: विश्वास. माणसाला विश्वास ठेवण्याची गरज का आहे? कारण त्याला माहित नाही! माणसाला विश्वास ठेवण्याची गरज का आहे? कारण तो एक अनुभवात्मक चैतन्य आहे, म्हणून त्याच्या मनात प्रकाश नाही. तो त्याच्या छोट्याशा चेतनेच्या अगदी गडद हालचालीत जगतो, म्हणून त्याला स्वतःला काहीतरी महत्त्वपूर्ण आणि निरपेक्ष जोडण्यासाठी विश्वास ठेवण्यास बांधील आहे.

पण अहंकाराच्या मानसशास्त्रीय कंडिशनिंगचा भाग असलेला हा पूर्णत्वावरचा विश्वास, हा निरपेक्षतेवरचा विश्वास, तो कोणी प्रस्थापित केला? त्याची स्थापना मॅन ऑफ इन्व्होल्यूशनने केली होती. तुम्हाला हे चांगलंच माहीत आहे की जर तुम्ही या जगात गेलात आणि एखाद्याला एखादी गोष्ट सांगितली तर तुम्ही जी गोष्ट सांगणार आहात ती गोष्ट यापुढे ती प्राप्त झाल्यावर आणि सांगितल्यावर सारखी राहणार नाही. .

कल्पना करा की कोणीतरी या जगात जाते आणि आज मी जे म्हणत आहे ते पुन्हा सांगण्याचा प्रयत्न करतो, एक आरंभ म्हणून, उद्या ते कसे बाहेर येईल याची तुम्ही कल्पना करू शकता! म्हणून भूतकाळातील पुरुष आहेत ज्यांनी कामे केली, मानवतेच्या उत्क्रांतीस मदत करण्यासाठी जगात आलेले आरंभिक होते. परंतु हे प्राणी काय म्हणाले आणि त्यांनी कथितपणे जे सांगितले त्याबद्दल काय नोंदवले गेले हा वेगळा मुद्दा आहे.

आणि मी तुम्हाला एक गोष्ट ठामपणे सांगू शकतो - कारण मला ही घटना वर्षानुवर्षे माहित आहे - माणसाला जे सांगितले आहे ते अचूकपणे सांगणे पूर्णपणे अशक्य आहे. आज रात्री घरी आल्यावर ते करण्याचा प्रयत्न करा! माणसाला अगदी अचूकपणे सांगितलेल्या गोष्टींची पुनरावृत्ती करणे अशक्य आहे. आणि मी तुम्हाला का सांगेन. कारण जे तंतोतंत सांगितले आहे - दुसऱ्या शब्दांत जे अहंकाराने रंगलेले नाही, जे सूक्ष्मातीत नाही, जे मनुष्याच्या अचेतनतेचा भाग नाही, परंतु मनुष्याच्या वैश्विकतेचा भाग काय आहे - ते अहंकाराकडे निर्देशित केलेले नाही. माणसाला किंवा माणसाच्या अहंकाराला, की माणसाच्या बुद्धीला. हे त्याच्या आत्म्याकडे निर्देशित केले आहे.

आणि जर मनुष्य त्याच्या आत्म्यामध्ये नसेल, तर दुसऱ्या आत्म्याने आधीच जे सांगितले आहे ते स्वीकारावे अशी तुमची अपेक्षा कशी आहे? हे अशक्य आहे. त्यामुळे त्या क्षणी रंगत असते. आणि मानवतेच्या उत्क्रांतीच्या फायद्यासाठी ज्याला आपण धर्म म्हणतो त्या आरंभीच्या शब्दांच्या रंगातून जन्माला आले. आणि मी सहमत आहे आणि मला खूप आनंद झाला आहे की हे घडत आहे आणि हे केले गेले आहे, कारण ते आवश्यक आहे. परंतु उत्क्रांतीदरम्यान एक वेळ येईल जेव्हा मनुष्याला त्याच्या विवेकबुद्धीला त्याच्या स्वतःच्या ज्ञानाची पूर्णता देण्यासाठी नैतिक समर्थनाची गरज भासणार नाही. ती सुप्रम चेतना (उच्च मन) आहे.

आणि आम्ही क्वेबेकर्सशी बोलत असल्यामुळे, आम्ही अशा लोकांशी बोलत आहोत ज्यांना, अतिशय चांगल्या कारणांमुळे, धर्माने त्यांना दिलेल्या आध्यात्मिक जगाशी एक विशिष्ट जवळीक अनुभवण्याची संधी मिळाली आहे, या अर्थाने आमच्याकडे आधीच प्रगती आहे. की आधीच, आपण असे प्राणी आहोत ज्यांच्यामध्ये अदृश्यतेबद्दल एक विशिष्ट संवेदनशीलता आहे.

पण तेथून आत्मिकरणाच्या अध्यात्मिक मार्गांचा वापर करून चेतनेच्या खोल गूढ शोधात प्रवेश केल्याने आपल्याला थेट स्वत्वाच्या ध्रुवीयतेकडे नेले जाईल. हे आपल्याला चांगले आणि वाईट, खरे आणि खोटे यांच्या द्वंद्वाकडे नेईल आणि आपल्यासाठी मनात खूप दुःख निर्माण करेल.

म्हणूनच मी म्हणतो: चेतन मनुष्य, पृथ्वीवरील सुप्रममेंटल चेतनेची (उच्च मनाची) उत्क्रांती त्या क्षणापासून सुरू होईल जेव्हा मनुष्याला त्याच्या विचारांना सत्य आणि खोट्याच्या अधीन न करण्याची गरज आधीच समजली असेल. पण हळूहळू ते जगायला शिकणे आणि हा विचार एक दिवस परिपूर्ण होईपर्यंत त्याच्या चळवळीला पाठिंबा देणे, म्हणजे पूर्णपणे स्वतःच्या प्रकाशात, पूर्णपणे अध्रुवीकरण, जेणेकरून शेवटी तो अहंकार, मी... अहंकार, आत्मा. आणि आत्मा एकरूप होतो आणि मनुष्याला वास्तविक प्राणी बनवतो.

वास्तविक प्राणी म्हणजे काय? एक वास्तविक अस्तित्व एक वास्तविक अस्तित्व आहे! तो असा प्राणी नाही ज्याला सत्याची गरज आहे, तो सत्य खाणारा प्राणी नाही. जर तुम्ही सत्य खाल्ले तर उद्या तुम्ही खोटे खाणार, कारण असे लोक असतील जे तुम्हाला वास्तवाच्या अनंताच्या मर्यादेत आणखी पुढे नेतील. जर तुम्ही सत्य खाल्ले तर एके दिवशी तुम्हाला पुन्हा हे पाऊल उचलावे लागेल, कारण माणसाला फक्त एकच गोष्ट अनुकूल आहे, जी त्याच्या विवेकाला अनुकूल आहे, जी त्याच्या आत्म्याला अनुकूल आहे, जी त्याच्या आत्म्याला अनुकूल आहे, जी त्याच्या अहंकाराला अनुकूल आहे, जी त्याच्या अस्तित्वाला अनुकूल आहे. , शांतता आहे.

पण शांतता म्हणजे काय? शांतता म्हणजे थांबणे, शोध थांबवणे. तुम्ही म्हणणार आहात: " होय, पण तुम्हाला शोधावे लागेल" , मी म्हणतो: होय, माणूस शोधत आहे, तुम्ही स्वत: असूनही तुम्ही शोधत आहात, सर्व पुरुष शोधत आहेत, परंतु उत्क्रांतीदरम्यान एक बिंदू येईल जिथे माणूस शोधेल. नाही यापुढे शोध लागणार नाही, माणसाला यापुढे शोधावे लागणार नाही, आणि माणूस शोधणे थांबवेल जेव्हा त्याला कळेल की त्याला माहित आहे.

आणि तिथे तुम्ही म्हणणार आहात: “ होय, पण एखाद्याला हे कसे कळेल”... तुम्ही स्वतःला ते सहन करू देता तेव्हाच तुम्हाला ते कळेल, कारण हे जाणून घेण्यासाठी तुम्हाला कोणालाही कॉल करण्याची गरज नाही. तुम्ही बरोबर असाल तर. आणि मग तुम्ही म्हणाल: “ ठीक आहे, पण जर आम्ही बरोबर आहोत किंवा आम्हाला वाटत असेल की आम्ही बरोबर आहोत, तर ते धोकादायक आहे”. मी म्हणेन: होय, कारण जो माणूस बरोबर होऊ पाहतो तो माणूस आधीच त्याच्या कारणाच्या शोधात असतो!

पण तुमच्या आयुष्यात, तुमच्या दैनंदिन जीवनात, तुमच्या वैयक्तिक कोपर्यात असे काही अनुभव येत नाहीत का, जेव्हा तुम्हाला जाणवेल की तुम्हाला जे माहीत आहे, तेच आहे का? आणि जेव्हा ते आहे, तेच आहे!

तेच ते” दुसऱ्या “ ते ते आहे” दुसऱ्या “ ते ते आहे” जोडण्याची क्षमता असेल , परंतु “ हे ते आहे” जे आहे वास्तविक, एक " हेच ते आहे" जे मनाच्या अभिमानावर बांधले जाणार नाही, एक " हे ते आहे" जे अध्यात्मावर किंवा तुमच्या अध्यात्माच्या अभिमानावर बांधले जाणार नाही, "तेच ते " वैयक्तिक असेल तुमच्यासाठी, " तेच ते" जे तुम्ही भेटता त्या सर्व पुरुषांसाठी सार्वत्रिक असेल आणि त्यांच्या " तेच ते" मध्ये कोण असेल , त्या क्षणी तुम्हाला ते कळेल !) (या परिच्छेदाचे भाषांतर करणे शक्य नसल्यास काढून टाका) .

తెలిగు

బెర్నార్డ్ డి మాంట్రియల్ ద్వారా 2 సమావేశాల లిప్యంతరీకరణ మరియు అనువాదం.



తాత్కాలిక ఆకృతి

ఈ పుస్తకం కృత్రిమ మేధస్సు ద్వారా అనువదించబడింది కానీ ఒక వ్యక్తి ద్వారా ధృవీకరించబడలేదు. మీరు ఈ పుస్తకాన్ని సమీక్షించడం ద్వారా సహకారం అందించాలనుకుంటే, దయచేసి మమ్మల్ని సంప్రదించండి.

మా వెబ్‌సైట్ యొక్క ప్రధాన పేజీ: http://diffusion-bdm-intl.com/

మా ఇమెయిల్: contact@diffusion-bdm-intl.com

కంటెంట్‌లు

మొత్తం డిఫ్యూజన్ BdM Intl బృందం నుండి శుభాకాంక్షలు.

పియర్ రియోపెల్ ఏప్రిల్ 18, 2023

1 వ అధ్యాయము

గుర్తింపు *CP036*

ఇతరులకు వ్యతిరేకంగా స్వీయ-గుర్తింపు అనేది సార్వత్రిక మానవ సమస్య. మరియు మనిషి ఆధునిక సమాజం వంటి సంక్లిష్ట సమాజంలో జీవిస్తున్నప్పుడు ఈ సమస్య పెరుగుతుంది. గుర్తింపు సమస్య అనేది అహం యొక్క జీవిత బాధ, ఇతరులతో పోలిస్తే తనను తాను చూసుకున్న వయస్సు నుండి అతనిని అనుసరించే బాధ. కానీ గుర్తింపు సమస్య అనేది ఒక తప్పుడు సమస్య, ఇది అహం, దాని ప్రకారం తనను తాను గ్రహించుకునే బదులు, అంటే దాని స్వంత కొలత ప్రకారం, బాధపడే ఇతర అహంకారులతో పోటీగా తనను తాను గ్రహించుకోవడానికి ప్రయత్నిస్తుంది . , అతనికి అదే సమస్య నుండి.

అహం తన కంచె దాటి తన పువ్వులను ఆరాధించడానికి మరొకరి పొలం వైపు చూస్తున్నప్పుడు, మరొకరు తనకు తాను అదే చేస్తున్నాడని చూడడంలో విఫలమవుతుంది. ఈ రోజు మనిషిలో గుర్తింపు లేదా గుర్తింపు సంక్షోభం చాలా తీవ్రంగా ఉంది, ఇది ఆత్మవిశ్వాసాన్ని కోల్పోతుంది, ఇది కాలక్రమేణా పూర్తిగా వ్యక్తిగత స్పృహ కోల్పోయేలా చేస్తుంది. ప్రమాదకరమైన పరిస్థితి, ప్రత్యేకించి అహం ఇప్పటికే పాత్రలో బలహీనంగా ఉంటే మరియు అభద్రతకు గురవుతుంది.

ఐడెంటిటీ సమస్య, అంటే తనను తాను తనంత ఎత్తుగా చూడకూడదనే అహం యొక్క ఈ లక్షణాన్ని చెప్పాలంటే, నిజానికి సృజనాత్మకతకు సంబంధించిన సమస్య. కానీ అహం సృజనాత్మకంగా ఉన్నప్పుడు, గుర్తింపు సమస్య తొలగించబడదు, ఎందుకంటే అహం తన దిగువ స్వీయ భ్రమను గ్రహించే వరకు ఎప్పుడూ దానితో సంపూర్ణంగా సంతృప్తి చెందదు. తద్వారా తక్కువ-స్టేటస్ అహం ఉన్నత స్థాయి అహం వలె అదే గుర్తింపు సమస్యను ఎదుర్కొంటుంది, ఎందుకంటే అతని మరియు మరొకరి మధ్య పోలిక స్కేల్‌లో మాత్రమే మారుతుంది, కానీ ఎల్లప్పుడూ ఉనికిలో ఉంటుంది, ఎందుకంటే అహం ఎల్లప్పుడూ అభివృద్ధి శక్తిలో ఉంటుంది. మరియు అతను తన కోసం కోరుకునే అభివృద్ధికి అంతం లేదు.

కానీ స్వీయ-అభివృద్ధి అనేది మీరు సంతోషంగా జీవించడానికి కొన్ని కారణాలను అందించడానికి అహం దాచుకునే దుప్పటి. కానీ అన్ని అభివృద్ధి ఇప్పటికే కోరిక శరీరం ద్వారా ఉత్పత్తి అని అతనికి తెలియదా?

మనిషిలో నిజమైన మేధస్సు యొక్క స్పృహ లేకపోవడం వల్ల గుర్తింపు సమస్య వస్తుంది. మనిషి తన తెలివితేటలతో జీవించినంత కాలం, ఇంద్రియ అనుభవం ద్వారా మాత్రమే తన అభిప్రాయాలకు మద్దతునిస్తుంది, అహంకార అనుభవం ద్వారా అతను తనకు తెలుసునని లేదా అర్థం చేసుకున్నాడని భావించే దానిని నిర్ణయించలేని తెలివితేటలతో భర్తీ చేయడం కష్టం.

మనిషి జీవితంలో తనను తాను వ్యక్తపరచాలని కోరుకున్నంత కాలం, తన ముద్ర వేయడానికి, అతను ఈ కోరికతో బాధపడుతున్నాడు. అతను తన కోరికను సాధించగలిగితే, మరొకటి అతనిని వెనుకకు నెట్టివేస్తుంది మరియు మొదలైనవి. అందుకే, మనిషిలో, ఏ విధమైన ఓటమి అయినా అతనికి ఏదైనా గుర్తింపు సంక్షోభం, అతని స్థితి ఏమైనప్పటికీ, గుర్తింపు సమస్య విజయానికి సంబంధించిన సమస్య కాదు, మనస్సాక్షి సమస్య. , అంటే నిజమైన తెలివితేటల సమస్య. .

తన జీవితంలో నిజమైన తెలివితేటలు మేధస్సును అధిగమిస్తాయని కనుగొన్న వ్యక్తి, గుర్తింపు సమస్య నుండి ఇప్పటికే తక్కువగా బాధపడటం ప్రారంభించాడు, అయినప్పటికీ అతను ఇప్పటికీ నిజమైన సృజనాత్మకత లేకపోవటంతో బాధపడవచ్చు, అది అతను వ్యక్తపరచగలనని భావించే దానికి సమానంగా ఉంటుంది. అతని గుర్తింపు తనకు సరిపోయే జీవన విధానానికి అనుగుణంగా ఉన్నప్పుడే, సృజనాత్మకత అనేక రూపాలను తీసుకుంటుందని మరియు ప్రతి మనిషికి తనకు సరిపోయే సృజనాత్మకత యొక్క రూపాన్ని కలిగి ఉంటుందని అతను గ్రహిస్తాడు. మరియు ఈ రూపం నుండి అతను తన కోరిక శరీరం మరియు అతని సృజనాత్మక మేధస్సు పరంగా పరిపూర్ణ సామరస్యంతో జీవించగలడు.

సృజనాత్మకంగా ఉండటం అంటే ప్రపంచాన్ని మార్చడం కాదు, కానీ తన కోసం పరిపూర్ణమైన మార్గంలో చేయడం, తద్వారా అంతర్గత ప్రపంచం బాహ్యంగా ఉంటుంది. ప్రపంచం ఈ విధంగా మారుతుంది: ఎల్లప్పుడూ లోపలి నుండి, ఎప్పుడూ వ్యతిరేక దిశలో కాదు. ఓవర్‌మైండ్ గుర్తింపు సమస్యను గ్రహించడం ప్రారంభిస్తుంది. అతను ఇంకా కొంతవరకు ఎలా ఉన్నాడో అతను చూస్తాడు. కానీ అతను తన శరీరాలు మారుతున్నప్పుడు, అతని స్పృహ పెరుగుతుందని మరియు గుర్తింపు సమస్య నెమ్మదిగా అదృశ్యమవుతుందని అతను చూస్తాడు, గతంలో అపస్మారక అహం యొక్క ఉపరితలంపై.

ఓవర్‌మైండ్‌లో ఉన్న గుర్తింపు సమస్యను క్రమంగా తొలగించడం వలన చివరకు అతను తన జీవితాన్ని నిజంగా చూసే విధంగా జీవించడానికి మరియు తన గురించి మరింత మెరుగ్గా మరియు మెరుగ్గా ఉండటానికి అనుమతిస్తుంది. గుర్తింపుతో బాధపడేంత కష్టం మనిషిలో లేదు. అతను నిజానికి భ్రాంతి రూపాలతో బాధపడుతున్నాడు, అంటే అతను మొదటి నుండి సృష్టించే కారణాల వల్ల, అతను తెలివైనవాడు కాదు, అంటే అతనిలోని సృజనాత్మక మేధస్సు గురించి స్పృహతో ఉన్నాడు.

గుర్తింపు యొక్క ఒక వైపు కొన్ని సందర్భాల్లో అవమానం, మరికొన్నింటిలో ఇబ్బంది, మెజారిటీలో అభద్రత. సామాజిక ఆలోచనల వలల్లో బంధించబడిన తన మనస్సులోని సామాజిక ప్రతిబింబం మాత్రమే అయినప్పుడు మంచి నీతిమంతుడు సిగ్గుతో ఎందుకు జీవిస్తాడు? ఇతరులు ఏమనుకుంటున్నారో వెంటనే వదిలించుకోలేని అహం యొక్క అసమర్థత నుండి వచ్చే ఇబ్బంది కూడా అదే. ఇబ్బందికరమైన అహం ఇతరులు ఏమనుకుంటున్నారో వదిలించుకుంటే, అతని ఇబ్బంది అదృశ్యమవుతుంది మరియు అతను తన నిజమైన గుర్తింపును మరింత త్వరగా పొందగలడు, అంటే, మనిషి తనను తాను ఎల్లప్పుడూ తన రోజు వెలుగులో చూసుకునేలా చేసే ఈ మానసిక స్థితి.

మనిషిలో సెంట్రిసిటీ లేకపోవడం వల్ల గుర్తింపు సమస్య వస్తుంది. మరియు ఈ లేకపోవడం మేధస్సు యొక్క చొచ్చుకుపోయే శక్తిని తగ్గిస్తుంది, ఇది మనిషిని తన తెలివికి బానిసగా చేస్తుంది, మనస్సు యొక్క నియమాలు లేదా మనస్సు యొక్క యంత్రాంగాలను తెలియని తనలోని భాగం. కాబట్టి మనిషి తన అనుభవానికి వదిలివేసాడు, అతని తెలివితేటలలో కాంతి లేదు మరియు మనిషి స్వభావం గురించి ఇతరుల అభిప్రాయాన్ని అంగీకరించవలసి వస్తుంది.

మనిషి తన గురించి తాను ఆశ్చర్యపోతుంటే, మరొక మనిషి అతనికి జ్ఞానోదయం చేయడం ఎలా సాధ్యం? కానీ మనిషి దీనిని గుర్తించలేడు మరియు సంఘటనల ద్వారా అహంపై చూపే ఒత్తిడికి అనుగుణంగా అతని గుర్తింపు సమస్య తీవ్రమవుతుంది.

మనస్సులోని అహం నిస్సందేహంగా దాని ఆలోచనా విధానం ద్వారా దాని నిజమైన తెలివితేటలతో సర్దుబాటు చేయబడదు. మరియు ఈ ఆలోచనా విధానం అతని మేధస్సు యొక్క వాస్తవికతకు విరుద్ధంగా ఉంది, ఎందుకంటే అతను తన అంతర్ దృష్టి ద్వారా తన మేధస్సు యొక్క వాస్తవాన్ని గ్రహించినట్లయితే, ఉదాహరణకు, అతను దాని వాస్తవికతను తిరస్కరించే మొదటి వ్యక్తి అవుతాడు, ఎందుకంటే తెలివికి అంతర్ దృష్టిపై విశ్వాసం లేదు. అతను దానిని తనలో అహేతుకమైన భాగంగా చూస్తాడు. మరియు మేధస్సు హేతుబద్ధమైనది లేదా హేతుబద్ధమైనదిగా భావించబడుతోంది కాబట్టి, దానిని వ్యతిరేకించేది మేధస్సుగా గుర్తించబడదు. ఇంకా, అంతర్ దృష్టి నిజంగా నిజమైన మేధస్సు యొక్క అభివ్యక్తి, కానీ ఈ అభివ్యక్తి అహం దాని ప్రాముఖ్యత మరియు తెలివితేటలను గ్రహించలేనంత బలహీనంగా ఉంది. అప్పుడు అతను తన హేతుబద్ధతను విరమించుకుంటాడు మరియు అతని గుర్తింపు సమస్యపై వెలుగునిచ్చే మనస్సు యొక్క సూక్ష్మ విధానాలను కనుగొనే అవకాశాన్ని కోల్పోతాడు.

ఐడెంటిటీ సమస్య మనిషిలో ఉండిపోవాలి, తెలివి వదలనంత కాలం మరియు అహం తనంతట తాను వినలేదు, అంతర్గతంగా. అహం తనలోని నిజమైన మేధస్సు యొక్క స్వభావాన్ని మరియు రూపాన్ని గ్రహించినట్లయితే, అది క్రమంగా సర్దుబాటు చేసుకుంటుంది మరియు ఆ మేధస్సులో తన ఇంటిని మరింత ఎక్కువగా చేస్తుంది. కాలక్రమేణా, అతను మరింత క్రమం తప్పకుండా అక్కడికి వెళ్తాడు మరియు అతని గుర్తింపు సమస్య తొలగిపోతుంది, అతను తన గురించి తాను అనుకున్నదంతా కేవలం తన తెలివితేటల యొక్క మానసిక మరియు మానసిక వక్రీకరణ అని అతను గ్రహించాడు, తన తార్కికం యొక్క ఎత్తైన గోడలను దాటి వెళ్ళలేడు.

సంక్లిష్టమైన సమాజంలో, మనకు తెలిసినట్లుగా, అహం యొక్క అంతర్గత బలం, దాని నిజమైన తెలివితేటలు మాత్రమే దానిని అభిప్రాయాల బొరడుపైకి ఎత్తగలవు మరియు దాని నిజమైన గుర్తింపు యొక్క శిలపై ఉంచగలవు. మరియు సమాజం ఎంతగా విచ్ఛిన్నమైతే, దాని సాంప్రదాయిక విలువలు అంతగా నాశనమమతున్నాయి, అహం అంతగా నాశనానికి దారి తీస్తుంది, ఎందుకంటే ఆధునికంగా పెరుగుతున్న దిగ్భ్రాంతికరమైన దృగ్విషయాన్ని ఎదుర్కొనే అధికారిక సామాజిక పరంజా దానికి ఇకపై లేదు. జీవితం.

కానీ అహం తన స్వంత రహస్యాన్ని అర్థం చేసుకోవడానికి అవసరమైన కీలను ఇవ్వగల వారి మాట వినడానికి ఎల్లప్పుడూ సిద్ధంగా ఉండదు. ఎందుకంటే అతని మానసిక వైకల్యం ఇప్పటికే అతని ఆత్మాశ్రయ ఆలోచనా విధానానికి అనుగుణంగా లేని ప్రతిదాన్ని ప్రశ్నించేలా చేస్తుంది. అందుకే అహం మరింతగా చూడడానికి నిరాకరించినందుకు ఎక్కువగా నిందించలేము, కానీ అది ఈ రోజు మరింత చూడలేనప్పటికీ, రేపు దాని దృష్టి అతనిలోకి శక్తి చొచ్చుకుపోయే స్థాయికి అనుగుణంగా విస్తృతమమతుందని గ్రహించవచ్చు.

ఎందుకంటే నిజానికి, అది తన స్వంత కృషితో తన గుర్తింపు యొక్క గోడను అధిగమించే అహం కాదు, కానీ బాధ ద్వారా దానిని తీసుకువచ్చే ఆత్మ, అంటే తన కాంతిని చొచ్చుకుపోవటం ద్వారా, తెలివికి, ప్రకంపనలకు మించి నమోదు చేసుకోవడం. తెలివితేటలు. మరియు ఈ కంపన షాక్ ముగింపు ప్రారంభం అమతుంది.

అసలైన వాటిని తెరుచుకునే తక్కువ గర్వించదగిన అహంకారాలు ఉన్నాయి , ఎందుకంటే ఒక రకమైన వినయం ఇప్పటికే వారి స్వంత వెలుగులోకి వారిని ప్రోత్సహిస్తుంది. మరోవైపు, ఈ కాంతి, ఈ చక్కటి థ్రెడ్ గుండా వెళ్ళడానికి చాలా గర్వంగా ఉంది. మరియు పెద్ద మలుపులు, పెద్ద ఎదురుదెబ్బలు వాటిని పడగొట్టే మరియు వాటిని మరింత వాస్తవికంగా చేసే అహంకారాలు ఎక్కువగా ఉంటాయి.

గుర్తింపు సంక్షోభం మనిషి యొక్క అపరిపక్వతతో గుర్తించబడుతుంది. నిజమైన గుర్తింపు నిజమైన పరిపక్వత అభివృద్ధిని ప్రదర్శిస్తుంది.

ఆత్మ తన చర్యలలో అహంతో సంబంధం లేకుండా స్వతంత్రంగా ఉంటుంది, మరియు రెండోది ఇంట్లో తనను తాను శక్తిగా భావించనంత వరకు మంచి ఆటను కలిగి ఉంటుంది. ఈ క్షణమే అహం తెలియదు. మరియు అతను కనిపించినప్పుడు, అతను తన వానిటీ, తన గర్వం, తనపై తనకున్న వ్యామోహం, తన ఆలోచనలతో, ఒత్తిడిలో గుడ్డులా పగిలిపోతాయని అతను గ్రహిస్తాడు.

ఆత్మ యొక్క బాధకు దాని కారణాలు ఉన్నాయి, అహం మొదట అర్థం చేసుకోదు, కానీ అది జీవించడానికి సహాయం చేయదు. పని చేసేది ఆత్మ. అతను ఒక దశ నుండి మరొక దశకు వెళ్ళే సమయం ఇది. అతను ప్రారంభంలో అనుభవించిన గుర్తింపు సమస్య, దానినే తిరిగి మార్చుకుంటుంది మరియు అతని గర్వం పిల్లల ఆటలా కూలిపోతుంది. అహం ఎక్కువైనా, తక్కువైనా గర్వించదగ్గదంతా అభద్రతా భావంతోనే వస్తుంది. తరచుగా " ఘన", "బలమైన" అహం అని పిలవబడే వాటిని ఎదుర్కొంటారు , వీరికి నిజమైనది స్వచ్ఛమైన ఫాంటసీ; అహం ఇకపై నియంత్రించలేని జీవిత సంఘటనల ఒత్తిడిలో ఆత్మ మానసిక మరియు భావోద్వేగాలను కంపింపజేసినప్పుడు, ఈ అహంకారాలు వారి గుర్తింపుపై ఎక్కువ ప్రభావాన్ని చూపుతాయి .

ఈ కష్టమైన అనుభవాల సమయంలో, అహం తన బలహీనత యొక్క నిజమైన వెలుగులో తనను తాను చూడటం ప్రారంభమవుతుంది. తన తెలివి యొక్క గర్వం ప్రబలంగా ఉన్న తన తప్పుడు గుర్తింపు యొక్క భద్రత, కాంతి యొక్క ప్రకంపన ఒత్తిడిలో పగిలిపోవడాన్ని అతను అక్కడ చూస్తాడు. అప్పుడు అతను మారుతున్నాడని, అతను ఇకపై అలాగే లేడని లేదా అతను బాధపడుతున్నాడని అతని గురించి చెప్పబడింది. మరియు ఇది ప్రారంభం మాత్రమే, ఎందుకంటే ఆత్మ తప్పుడు గుర్తింపు గోడలను పగలగొట్టడం ప్రారంభించినప్పుడు, అది తన పనిని ఆపదు. ఎందుకంటే మనిషిలోకి చైతన్యం, తెలివితేటలు మరియు నిజమైన సంకల్పం మరియు ప్రేమ యొక్క అవరోహణకు సమయం ఆసన్నమైంది.

తన తప్పుడు గుర్తింపు నుండి బలంగా భావించే అహం, ప్రకంపన షాక్ అనుభవించినప్పుడు రెల్లు వలె బలహీనంగా అనిపిస్తుంది. మరియు తరువాత మాత్రమే అతను తన శక్తులను, ఆత్మ యొక్క శక్తులను తిరిగి పొందుతాడు మరియు అతని కోరిక శరీరం యొక్క తప్పుడు శక్తిని కాదు, భావోద్వేగం మరియు దిగువ మనస్సును పోషించే రూపంలో.

మనిషిలోని గుర్తింపు సంక్షోభం ఆత్మ యొక్క కాంతికి అహం యొక్క ప్రతిఘటనకు అనుగుణంగా ఉంటుంది. ఈ కరస్పాండెన్స్ అహం యొక్క జీవితంలో ఈ ప్రతిఘటనకు అనులోమానుపాతంలో బాధను కలిగి ఉంటుంది. మరియు అన్ని ప్రతిఘటన నమోదు చేయబడింది, అయినప్పటికీ ఇది అహం ద్వారా మానసికంగా లేదా ప్రతీకాత్మకంగా లేదా తాత్వికంగా గ్రహించబడుతుంది. ఎందుకంటే మనిషిలో ఆత్మకు అన్నీ శక్తి అయితే మనిషికి ప్రతీదీ ప్రతీక. అందుకే మనిషికి చూడటం చాలా కష్టంగా ఉంది, ఎందుకంటే ఈ రూపాల నుండి విముక్తి పొందిన తర్వాత అతను ఏమి చూస్తాడో అది కంపనం ద్వారా ఉంటుంది, రూపం యొక్క చిహ్నం ద్వారా కాదు. ఈ కారణంగానే వాస్తవాన్ని రూపం ద్వారా అర్థం చేసుకోలేమని చెప్పబడింది, కానీ ప్రకంపనల ద్వారా తెలుస్తుంది, ఇది వ్యక్తీకరించడానికి రూపాన్ని సృష్టించి, సృష్టిస్తుంది.

గుర్తింపు సమస్య ఎల్లప్పుడూ సంకేతశాస్త్రం యొక్క మిగులును ప్రేరేపిస్తుంది, అంటే మనిషిలోని ఆత్మాశ్రయ ఆలోచన-రూపాల గురించి చెప్పవచ్చు. ఈ మిగులు, ఏ సమయంలోనైనా, ఆలోచన-రూప చిహ్నం ద్వారా అహాన్ని సంప్రదించడానికి ఆత్మ యొక్క ప్రయత్నంతో సమానంగా ఉంటుంది, ఎందుకంటే అది మనస్సులోని అహంకారానికి పరిణామం చెందడానికి దాని ఏకైక సాధనం.

అహం లోతైన కారణాలను అర్థం చేసుకోకుండానే, అది తనకు తానే సారూప్యంగా ఉండాలని కోరుకుంటుంది. కానీ అతను ఇప్పటికీ తన ఆలోచనా రూపాలకు, భావోద్వేగాలకు బందీగా ఉన్నాడు, అతను తన కదలికను, తన కదలికను నమ్ముతాడు! అంటే, ఈ పరిశోధన ప్రక్రియ తన నుండి మాత్రమే వెలువడుతుందని అతను నమ్ముతున్నాడు. మరియు ఇది దాని అకిలెస్ మడమ, ఎందుకంటే అహం సరైనది మరియు తప్పుల భ్రమలో, స్వేచ్ఛా సంకల్పం యొక్క భ్రమలో ఉంది.
ఆత్మ యొక్క శక్తి తప్పుడు గుర్తింపు యొక్క అవరోధాన్ని చొచ్చుకుపోయి, విచ్ఛిన్నం చేసినప్పుడు, అహం తనకు సరైనది కాదు, కానీ అతని నిజమైన తెలివితేటలను యాక్సెస్ చేయడమే అని గ్రహిస్తుంది. అప్పుడు అతను అర్థం చేసుకోవడం ప్రారంభిస్తాడు. మరియు అతను అర్థం చేసుకున్నది అదే తెలివితేటలు లేని వారికి అర్థం కాదు, వారి మంచి సంకల్పం. ప్రతిదీ గుర్తుకు వెలుపల ఉన్నందున, ప్రతిదీ **కంపనం చేస్తుంది** .

అహం మరియు ఆత్మ ఒకదానికొకటి సర్దుబాటు చేసుకున్నప్పుడు గుర్తింపు సమస్య అనూహ్యమైనది, ఎందుకంటే అహం ఇకపై వాస్తవికత యొక్క “కవర్ ” *(కవర్)* ను దాని వైపు నుండి లాగదు, ఆత్మ మరొకదానిపై పనిచేస్తుంది. రెండింటి మధ్య అనురూప్యం ఉంది మరియు వ్యక్తిత్వమే లబ్ధిదారు. ఎందుకంటే వ్యక్తిత్వం ఎల్లప్పుడూ ఆత్మ మరియు అహం మధ్య అంతరానికి గురవుతుంది.

మనిషిలో గుర్తింపు సమస్య ఉన్నంత కాలం అతను సంతోషంగా ఉండలేడు. ఎందుకంటే అతని జీవితంలో విభజన ఉంది, ఉపరితలంపై అతని భౌతిక జీవితం బాగానే ఉన్నట్లు అనిపించినప్పటికీ. ఇది నిజంగా దానిలోని ఐక్యతకు అనులోమానుపాతంలో మాత్రమే బాగా సాగుతుంది.

ఆధునిక మనిషిలో గుర్తింపు సంక్షోభం ఇప్పటికే తగినంత ఎదురుదెబ్బలు ఎదుర్కొన్న వారిని మాత్రమే ప్రయోజనకరంగా ప్రభావితం చేస్తుంది, వారిలో సమతుల్యత కోసం గొప్ప కోరికను రేకెత్తిస్తుంది. ఆత్మ యొక్క చక్కటి శక్తిని మార్చటానికి అహం తన హింస సాధనాలను పక్కన పెట్టినప్పుడు మాత్రమే సమతుల్యత కోసం ఈ కోరిక పూర్తిగా గ్రహించబడుతుంది. గొప్ప ఆధ్యాత్మికత ఉన్న మానవ జీవితంలో, గుర్తింపు సంక్షోభం అంత తీవ్రంగా ఉంటుంది, కాకపోయినా, ఈ అంతర్గత విషయానికి అహం యొక్క ఈ గొప్ప సున్నితత్వాన్ని ఎవరైనా ఎదుర్కొనకపోతే, అది అతనిని పెరుగుతున్న ఆధ్యాత్మికత వైపు నిర్దాక్షిణ్యంగా నెట్టివేస్తుంది. ఎక్కువ, మరింత ఎక్కువగా కోరింది మరియు చివరికి మరింత అసంపూర్ణమైనది.

మానవత్వం యొక్క ఈ వర్గానికి చెందిన వారు, అన్ని రూపాలు, అత్యున్నతమైన, అత్యంత అందమైన, ఆత్మ యొక్క నిజమైన ముఖాన్ని కప్పి ఉంచేలా చూడాలి, ఎందుకంటే ఆత్మ అహం యొక్క విమానం కాదు; అది అనంతంగా చూస్తుంది, మరియు అహం రూపంతో, ఆధ్యాత్మిక రూపానికి కూడా అతిగా అటాచ్ అయినప్పుడు, అది విశ్వశక్తికి ఆటంకం కలిగిస్తుంది, ఇది ఆత్మ గుండా వెళుతుంది మరియు ఆత్మ యొక్క అన్ని దిగువ సూత్రాల కంపన రేటును పెంచుతుంది. 'మనిషి, తద్వారా అతను జీవితం యొక్క మాస్టర్ కావచ్చు. ఉన్నతమైన (ఉన్నతమైన మానసిక) మనిషి జీవితానికి యజమాని అయినప్పుడు, అతను ఇకపై ఆత్మ యొక్క తలపైకి ఆధ్యాత్మికంగా ఆకర్షించాల్సిన అవసరం లేదు, ఎందుకంటే ఇది ఆత్మ, అతని శక్తి, అతని వైపు దిగి, అతని కాంతి శక్తిని అతనికి ప్రసారం చేస్తుంది. .

మనిషి యొక్క ఆధ్యాత్మిక గుర్తింపు అనేది ఆత్మ యొక్క శక్తి రూపం ద్వారా అతనిలోని ఉనికి. కానీ ఈ శక్తికి వ్యక్తిత్వంపై పరివర్తన శక్తి ఉన్నప్పటికీ, పరివర్తన శక్తి లేదు.

కానీ వ్యక్తిత్వం యొక్క పరివర్తన మాత్రమే సరిపోదు, ఎందుకంటే ఇది మనిషి యొక్క చివరి అంశం. మరియు అహం కూడా ఆత్మతో ఐక్యం కానంత కాలం, ఆధ్యాత్మిక వ్యక్తిత్వం మనిషిని తన నైతికతలను వేగంగా మార్చుకునేలా చేస్తుంది, ఆ మేరకు మనస్సు మరియు ఆత్మ భావోద్వేగాలలో సమతుల్యత లోపించడం అతన్ని దారి తీస్తుంది. ఆధ్యాత్మికత యొక్క తీవ్రమైన సంక్షోభం, మతపరమైన మతోన్మాదం.

అందువలన, తీవ్రమైన ఆధ్యాత్మిక మనిషి కూడా తనకు మరియు సమాజానికి హాని కలిగించవచ్చు. మతోన్మాదం అనేది ఒక ఆధ్యాత్మిక వ్యాధి, మరియు దానితో బాధపడేవారు, వారి ఆధ్యాత్మిక రూపాన్ని ప్రత్యేకంగా ఉపయోగించుకోవడం వల్ల, ఇతరులలో వారిని గొప్ప విశ్వాసులుగా మార్చేంత బలమైన ఆకర్షణను సులభంగా సృష్టించవచ్చు, అంటే - ఆ రూపానికి కొత్త బానిసలను చెప్పండి, ఈ పీఠంపై మతోన్మాదంతో పెంచబడి, ఆధ్యాత్మికంగా అనారోగ్యంతో ఉన్నవారు మాత్రమే ఉంచుకోగలరు, అతను తనలాంటి అజ్ఞాని, కానీ ఈ రకమైన అనారోగ్యానికి ఎక్కువ సున్నితంగా లేని వారి యొక్క లొంగదీసుకునే విశ్వాసం ద్వారా అతనికి సహాయం చేస్తే.

ఎక్కువ మంది పురుషులు, మతోన్మాదంగా ఆధ్యాత్మికంగా మారకుండా, వారి ఆధ్యాత్మికతతో చాలా ఆకర్షితులవుతారు మరియు దాని పరిమితులు, అంటే రూపం యొక్క భ్రమలు తెలియదు. ముందుగానే లేదా తరువాత వారు గతాన్ని పరిశీలిస్తారు మరియు వారు తమ ఆధ్యాత్మికత యొక్క భ్రమకు బలి అయ్యారని తెలుసుకుంటారు. కాబట్టి వారు తమను తాము మరొక ఆధ్యాత్మిక రూపంలోకి విసిరివేస్తారు, మరియు ఈ సర్కస్ చాలా సంవత్సరాలు కొనసాగుతుంది, భ్రమతో విసుగు చెంది, వారు దాని నుండి శాశ్వతంగా బయటకు వచ్చి, చైతన్యం రూపానికి అతీతమైనదని గ్రహించే రోజు వరకు. ఇవి రూపం యొక్క పరిమితులను దాటి చివరకు ఉన్నత మనస్సు యొక్క గొప్ప చట్టాలను కనుగొనే అవకాశం ఉంది.

ఆధ్యాత్మిక గుర్తింపు సంక్షోభం ఈ సమయంలో వారికి సాధ్యం కాదు. ఎందుకంటే, వారి స్వంత అనుభవం నుండి, ప్రతిదీ అహంకారానికి వ్యతిరేకంగా ఆత్మ యొక్క అనుభవానికి ఉపయోగపడుతుందని వారికి తెలుసు, అహం అతనిలోని ఉన్నతమైన స్పృహను (ఉన్నతమైన మనస్సు) మాత్రమే తెలుసుకోవాలనే అనుభవం యొక్క ఆవశ్యకతను విడిచిపెట్టే రోజు వరకు.

ఆధ్యాత్మిక గుర్తింపు సంక్షోభం ఆధునిక కాలంలో సంక్షోభంగా మారుతోంది. ఎందుకంటే మనిషి ఇకపై టెక్నాలజీ మరియు సైన్స్‌పై మాత్రమే జీవించలేడు. అతనికి దగ్గరగా మరొకటి కావాలి మరియు సైన్స్ అతనికి ఇవ్వదు. కానీ ఆర్థడాక్స్ మతం యొక్క పాత రూపం కూడా లేదు. కాబట్టి అతను వెతుకుతున్నదాన్ని కనుగొనాలనే దృఢమైన ఉద్దేశ్యంతో, లేదా అతను కనుగొనాలనుకుంటున్నదాని కోసం వెతుకుతున్నాడు మరియు అతనికి ఖచ్చితంగా తెలియదు అనే దృఢమైన ఉద్దేశ్యంతో అతను అసంఖ్యాకమైన ఆధ్యాత్మిక లేదా నిగూఢ-ఆధ్యాత్మిక సాహసాలలో మునిగిపోతాడు. కాబట్టి, అతని అనుభవం అతన్ని అన్ని వర్గాల, అన్ని తాత్విక లేదా రహస్య పాఠశాలల పరిమితికి తీసుకువస్తుంది మరియు ఇక్కడ అతను సగటు కంటే ఎక్కువ తెలివితేటలు కలిగి ఉంటే, సమాధానాలను కనుగొనడానికి అతను విశ్వసించే పరిమితులు ఉన్నాయని అతను మళ్లీ కనుగొన్నాడు.

అతను చివరకు ఒంటరిగా ఉంటాడు మరియు అతని ఆధ్యాత్మిక గుర్తింపు యొక్క సంక్షోభం మరింత భరించలేనిదిగా మారుతుంది. అతనిలో ఉన్న ప్రతిదీ తెలివితేటలు, సంకల్పం మరియు ప్రేమ అని అతను కనుగొన్న రోజు వరకు, కానీ అతను కోరుకునే మనిషి దృష్టిలో దాగి మరియు కప్పబడిన యంత్రాంగాన్ని కనుగొనడానికి వారి చట్టాల గురించి ఇంకా తగినంతగా తెలియదు. అతను చూసిన ఆశ్చర్యం! తన సంక్షోభ సమయంలో అతను వెతుకుతున్నది కేవలం తనలోని ఆత్మ యొక్క యంత్రాంగం మాత్రమేనని అతను గ్రహించినప్పుడు, అది తనను తాను మేల్కొలపడానికి, అంటే ఆమెకు.

మరియు ఈ దశ చివరకు ప్రారంభమైనప్పుడు, మనిషి, మనిషి యొక్క అహం, తృణీకరించబడతాడు మరియు అతనిలోని అత్యున్నత మేధస్సు (ఉన్నత మనస్సు) యొక్క స్వభావాన్ని అర్థం చేసుకోవడం ప్రారంభిస్తాడు, అది మేల్కొల్పుతుంది మరియు తమను తాము వెతుకుతున్న పురుషులందరి భ్రమను గుర్తించేలా చేస్తుంది. ప్రపంచంలోని ఉత్తమ ఉద్దేశాలు, మరియు ఈ మొత్తం ప్రక్రియ ఆత్మ యొక్క అనుభవంలో భాగమని ఇంకా గ్రహించని వారు ఆమెతో కంపన సంబంధంలోకి రావడానికి అహాన్ని ఉపయోగించుకుంటారు.

మనిషి ఇప్పుడు తన ఉనికి యొక్క వాస్తవికతతో సన్నిహితంగా లేడు. మరియు ఈ పరిచయం కోల్పోవడం ప్రపంచవ్యాప్తంగా చాలా విస్తృతంగా ఉంది, ఈ భూమి ఓడ ఎక్కడికి వెళుతుందో తెలియని పిచ్చివాళ్లతో నిండిన ఓడను సూచిస్తుంది. వారు కనిపించని శక్తులచే నడిపించబడ్డారు మరియు ఈ శక్తుల మూలం గురించి లేదా వారి ఉద్దేశాల గురించి ఎవరికీ తెలియదు. మనిషి చాలా శతాబ్దాలుగా అదృశ్యం నుండి వేరు చేయబడ్డాడు, అతను వాస్తవికత యొక్క భావనను పూర్తిగా కోల్పోయాడు. మరియు ఈ స్పృహ కోల్పోవడం అతని అస్తిత్వ సమస్య యొక్క గోడను పెంచడానికి కారణం: గుర్తింపు. మరియు ఇంకా పరిష్కారం అతనికి చాలా దగ్గరగా ఉంది, మరియు అదే సమయంలో చాలా దూరంగా ఉంది. తాను వినకూడనిది ఎలా వినాలో తెలుసుకుంటే.

మాటల యుద్ధం మరియు ఆలోచనల యుద్ధం మాత్రమే అతనికి మిగిలి ఉంది. తనలో కొంత భాగం గొప్పదని, మరొకటి తన ఇంద్రియాలకు పరిమితమై, రెండూ కలసి రాగలవని గ్రహించకపోతే, ఏ మనిషి స్వయం సమృద్ధిగా ఉండగలడు? మనిషి తన కోసం బయట ఎవరూ చేయలేరని, మరియు తన కోసం తాను మాత్రమే చేయగలడని మనిషి ఏదో ఒక రోజు గ్రహించగలిగితే, కానీ అతను తన కోసం జీవించడానికి భయపడతాడు, ఎందుకంటే ఇతరులు తన గురించి ఏమి చెబుతారో అతను భయపడతాడు ... అతను పేదవాడు!

పురుషులు భ్రమకు వ్యతిరేకంగా పోరాటంలో నిరంతరం ఓడిపోయే జీవులు, ఎందుకంటే వారు దానిని సజీవంగా మరియు శక్తివంతంగా ఉంచుతారు. ప్రతి ఒక్కరూ తమకు హాని కలిగించే వాటిని నాశనం చేయడానికి భయపడతారు. నిజమైన పీడకల! మరియు చెత్త ఇంకా రావలసి ఉంది! ఎందుకంటే XX వ శతాబ్దపు మనిషి నక్షత్రాల మధ్య తిరిగే మరియు గతంలో తనకు దేవుళ్లుగా ఉన్న జీవులు అతని వైపు దిగడం చూస్తాడు.

వ్యక్తిగత గుర్తింపు సమస్య గ్రహ స్థాయిలో కొనసాగుతుంది. దిగువ మనస్సు మరియు ఉన్నత మనస్సు మధ్య సంబంధం లేకపోవడం వల్ల ఈ సమస్య ఉత్పన్నమవుతుంది కాబట్టి, దాని ప్రభావం ప్రపంచ స్థాయిలో మరియు వ్యక్తిగత స్థాయిలో కనిపిస్తుంది, ఎందుకంటే ఉన్నత మనస్సు మాత్రమే మనిషికి తన గ్రహం యొక్క గొప్ప రహస్యాలను వివరించగలదు. దాని పురాతన దేవతలు. ఈ దేవుళ్ళు ప్రాచీన చరిత్రలో భాగమైనంత కాలం, వాటి వల్ల మనిషికి ఇబ్బంది లేదు. కానీ అదే జీవులు తిరిగి వచ్చి తమను తాము ఆధునిక వెలుగులో తెలియజేసినప్పుడు, ప్రపంచ స్థాయిలో షాక్ ప్రతిధ్వనిస్తుంది మరియు తన నిజమైన గుర్తింపును కనుగొనని వ్యక్తి తన తప్పుడు గుర్తింపు - మరియు ఆమె ఏమనుకుంటుందో మరియు నమ్ముతున్నదో - మరియు చక్రీయ దృగ్విషయం.

అతని మనస్సు అనుభవానికి తెరిచి ఉంటే మరియు అతను తనలో నిజమైన తెలివితేటలను పొందినట్లయితే, అతనికి తెలియని మరియు తెలియని గ్రహం యొక్క అత్యంత కలతపెట్టే దృగ్విషయాలలో ఒకదానికి సంబంధించిన అవసరమైన సమాచారం, మనిషికి గ్రహాల గుర్తింపు సంక్షోభం ఉండదు, ఎందుకంటే అతను కలిగి ఉన్నాడు. ఇప్పటికే తనలోని వ్యక్తిగత గుర్తింపు సంక్షోభాన్ని పరిష్కరించుకున్నాడు.

మానవత్వం చరిత్ర మరియు జీవితంలో ఒక మలుపు వైపు వేగంగా అభివృద్ధి చెందుతోంది కాబట్టి, వ్యక్తిత్వం, అంటే మనిషి మరియు విశ్వానికి మధ్య పెరుగుతున్న పరిపూర్ణమైన సంబంధాన్ని స్థాపించాలి, ఎందుకంటే మనిషిలో కనిపించే ప్రకంపనలు నిజమైన వ్యక్తిత్వం నుండి. అతని నిజమైన గుర్తింపును కనుగొన్నాడు. మరియు ఈ నిజమైన గుర్తింపు స్థిరీకరించబడనంత కాలం, వ్యక్తిత్వం పూర్తిగా సాధించబడదు మరియు మనిషి " పరిపక్వత" అని చెప్పలేము , అంటే ఏదైనా వ్యక్తిగత లేదా ప్రపంచ సంఘటనలను కలవరపడకుండా ఎదుర్కోగల సామర్థ్యం కలిగి ఉంటాడు, ఎందుకంటే అతనికి దాని గురించి ఇప్పటికే తెలుసు. అది మరియు దానికి కారణం అతనికి తెలుసు.

మేము సాధారణంగా గుర్తింపు సంక్షోభం గురించి మాట్లాడేటప్పుడు, మనం దాని గురించి మానసిక మార్గంలో మాట్లాడుతున్నాము, మనిషి మరియు సమాజం మధ్య సంబంధాన్ని నిర్వచించడానికి ప్రయత్నిస్తున్నాము. కానీ గుర్తింపు సంక్షోభం దాని కంటే చాలా లోతుగా ఉంది. ఇక సామాజిక మనిషి కొలిచే కర్రగా మారతాడు, మనం సాధించాల్సిన సాధారణత. దీనికి విరుద్ధంగా, నార్మాలిటీని తప్పనిసరిగా మార్చాలి, అంటే దానినే పునఃస్థితికి మార్చాలి.

కుండలీకరణాల్లో సాధారణ మనిషి యొక్క సాధారణ గుర్తింపు కంటే తన నిజమైన గుర్తింపు ఉందని మనిషి గ్రహించడం ప్రారంభించినప్పుడు, అతను రెండు విషయాలను గ్రహిస్తాడు. మొదటిది, సాధారణ మనిషికి చింతించేది ఇకపై అతనికి చింతించదు; మరియు కుండలీకరణ ప్రకారం, ఒక సబ్నార్మల్ గ్రహాన్ని కదిలించేది సాధారణమైనది. ఈ దృక్కోణం నుండి చూసినప్పుడు నిజమైన గుర్తింపు యొక్క దృగ్విషయం మరింత ముఖ్యమైనది, ఎందుకంటే సాధారణ లేదా అపస్మారక మనిషి యొక్క సాధారణ బలహీనతలను ఏ మనిషి అధిగమించగలడో అది నిర్ణయిస్తుంది మరియు అది లేని మనిషి మరింత సాధారణమని నిర్ణయిస్తుంది. చెప్పాలంటే, అపస్మారక మరియు సాపేక్షంగా సమతుల్యత ఉన్న మనిషి - ఒక సాధారణ జీవిని కలవరపరిచే మరియు అటువంటి మనిషికి జన్మనిచ్చే సంస్కృతి పతనానికి కారణమయ్యే గ్రహ క్రమం యొక్క ఒత్తిడికి మద్దతు ఇవ్వగలదు.

తన నిజమైన గుర్తింపును కనుగొన్న వ్యక్తి అన్ని రకాల మానసిక అనుభవాల కంటే వివాదాస్పదంగా ఉంటాడు, ఇది చాలా సరళంగా తన సంస్కృతి యొక్క ఉత్పత్తి అయిన మరియు అతని సంస్కృతి యొక్క విలువలతో మాత్రమే జీవించే వ్యక్తిని కలవరపెట్టే ప్రమాదం ఉంది. ఎందుకంటే వాస్తవానికి, సంస్కృతి అనేది చాలా సన్నని మరియు చాలా పెళుసుగా ఉండే కాన్వాస్, బాహ్య సంఘటనలు దానికి భంగం కలిగించడానికి వచ్చినప్పుడు, అంటే తనకు తెలియని లేదా పూర్తిగా తెలియని వాస్తవికతకు సంబంధించి దానిని పునర్నిర్వచించడం. ఇది పరిష్కరించబడని గుర్తింపు యొక్క దృగ్విషయం యొక్క మనిషిలో ప్రమాదం.

ఎందుకంటే అతను తన నిజమైన గుర్తింపును కనుగొనకపోతే, అతను మానసికంగా మరియు మానసికంగా సామాజిక మనస్తత్వ శాస్త్రానికి బానిసగా ఉంటాడు మరియు చక్రం ముగింపు సంఘటనలు అతని సాధారణ అభివృద్ధిని అంతరాయం కలిగించినప్పుడు అతని సహజ ప్రతిచర్యలు. సార్వత్రిక అవగాహన విధానం ప్రకారం అనుభవాన్ని జీవించగలిగేలా మనిషి సామాజిక-వ్యక్తిగత ప్రతిచర్యల నుండి విముక్తి పొందాలి. నిజమైన వ్యక్తి మరియు నిజమైన తెలివితేటలతో నిజమైన గుర్తింపు మాత్రమే సరిపోతుంది. మనిషి యొక్క పరిమిత భావోద్వేగాల నుండి వేరు చేయబడిన తెలివితేటల ప్రకారం, నిజమైన గుర్తింపు మాత్రమే విశ్వ సంఘటనలను కష్టం లేకుండా అర్థం చేసుకోగలదు.

మనిషిలో గుర్తింపు సంక్షోభం యొక్క సమస్య సాధారణ మానసిక సమస్య కంటే చాలా ఎక్కువ జీవిత సమస్య. మనిషి తనను తాను అన్వేషించడంలో అర్థం చేసుకోవడానికి ప్రయత్నించే మానసిక వర్గాలు వారి నిజమైన గుర్తింపును కనుగొనే వారికి ఇకపై సరిపోవు, ఎందుకంటే వారు తనతో పోరాడుతున్నప్పుడు వారికి జీవితంలో ఉన్న అదే ఆసక్తిని కలిగి ఉండరు. అతని నిజమైన గుర్తింపు అతని ఉనికిలోని ప్రతి మూలను నింపింది, అతను తన మనస్సు, పరిమాణం లేదా శక్తి యొక్క మరొక కోణంలో నిమగ్నమై ఉన్న వ్యక్తిని ఎదుర్కొంటాడు, అది అనుకరణతో సంబంధం కలిగి ఉండదు, ఎందుకంటే అతను ఏర్పడిన మానసిక వర్గాల నుండి పూర్తిగా స్వతంత్రుడు. నిజమైన గుర్తింపు లేకుండా అపస్మారక స్థితిలో ఉన్న వ్యక్తి యొక్క భావోద్వేగ మరియు మానసిక నిర్మాణాలు.

గుర్తింపు సంక్షోభం యొక్క దృగ్విషయం మనిషికి బాధగా ఉంటుంది, ఎందుకంటే అతను తనలో, తనతో, అతను నిరంతరం కోరుకునే దానిలో ఎప్పుడూ సంపూర్ణంగా సంతోషంగా ఉండలేడు. అతనికి, సంతోషంగా ఉండటం అతను శాశ్వతంగా జీవించాలనుకుంటున్న అనుభవం. కానీ అతను " సంతోషం" అని పిలవడానికి , మీరు మీ గురించి మంచి అనుభూతిని కలిగి ఉండాలని, అంటే బాహ్య ప్రపంచం ఈ సామరస్యానికి భంగం కలిగించకుండా పరిపూర్ణ అంతర్గత సామరస్యాన్ని అనుభవించగలరని అతను గ్రహించలేడు. జీవితానికి దాని రంగును ఇచ్చే నేపథ్యాన్ని గుచ్చుకునే అంతర్గత శక్తి ఉన్నంత వరకు జీవితం దాని నుండి వేరు చేయలేనిదని అతను గ్రహించలేడు.

తన నిజస్వరూపాన్ని కనిపెట్టిన వ్యక్తి తాను ఇంతకు ముందు జీవించిన జీవితాన్నే జీవించడు. రంగులు మారాయి, జీవితం ఇకపై అదే ఆకర్షణను కలిగి ఉండదు, ఇది ప్రతి స్థాయిలో భిన్నంగా ఉంటుంది. అతను పాతుకుపోయిన సంస్కృతి ద్వారా అతనిపై నిర్దిష్టంగా విధించబడటానికి బదులుగా, దాని అవకాశాలను నిర్ణయించే వ్యక్తి నిజమైన వ్యక్తి అనే వాస్తవం ద్వారా ఇది ఇతర మునుపటి జీవితం నుండి వేరు చేయబడుతుంది.

తన గుర్తింపును కనుగొన్న వ్యక్తి యొక్క జీవితం కాలక్రమేణా కోల్పోయిన మరియు ఇకపై పరిమితి లేని కొనసాగింపును సూచిస్తుంది, అంటే ముగింపు. ఇప్పటికే, ఈ సాక్షాత్కారం జీవిత మార్గంలో మరియు సృజనాత్మక జీవన విధానంలో జోక్యం చేసుకుంటుంది. మనిషి గుర్తింపుతో బాధపడుతున్నంత కాలం, అతనిలోని నిజమైన మేధస్సుతో అతనికి సంబంధం లేనంత కాలం, అతను తన అవసరాలను మాత్రమే తీర్చగలడు. అతను వెలుగులో ఉన్నప్పుడు, అతను ఇకపై తనకు మద్దతు ఇవ్వాల్సిన అవసరం లేదు, ఎందుకంటే అతను కంపనం ద్వారా తన జీవిత విధానాన్ని ఇప్పటికే తెలుసుకుంటాడు మరియు ఈ జ్ఞానం అతని అవసరాలకు అవసరమైన సృజనాత్మక శక్తిని ఉత్పత్తి చేయడానికి అతన్ని అనుమతిస్తుంది. మనిషి యొక్క అన్ని వనరులను ఉపయోగించుకునే మరియు అతని శ్రేయస్సు యొక్క పారవేయడం వద్ద వాటిని ఉంచే సృజనాత్మక శక్తి కోసం మాత్రమే మనుగడ యొక్క మానసిక వర్గం మసకబారుతుంది.

మనిషి తన గుర్తింపు సమస్యను అధిగమించాలంటే, అతనిలో మానసిక స్థాయి నుండి స్వచ్ఛమైన మేధస్సు యొక్క సమతలానికి విలువల స్థానభ్రంశం జరగాలి. మానసిక విలువలు అతని సంక్షోభానికి దోహదపడతాయి, ఎందుకంటే అవి అతని ఇంద్రియాలకు, ఇంద్రియ పదార్థాన్ని వివరించే అతని తెలివికి పరిమితం అయినందున, అతనికి అతని తెలివి యొక్క ఆమోదానికి లోబడి లేని కొలిచే కడ్డీ అవసరం.

తనలోకి చొచ్చుకుపోయి, దాని కదలికలో అడ్డుకోలేని విషయానికి అతనిలో మొదటిసారిగా ఒక రకమైన వ్యతిరేకత ఇక్కడే పుడుతుంది. ఉద్యమం ప్రారంభించినప్పుడు, ఇది దాని అహం మరియు దాని చిమెరాస్ నుండి స్వతంత్రంగా ఉన్న ఈ తెలివితేటల కాంతి. ఇక్కడే విలువల స్థానభ్రంశం అనుభూతి చెందడం ప్రారంభమవుతుంది, దీని ఫలితంగా అంతర్గత బాధ వస్తుంది, మేల్కొనే మనిషి జీవించాల్సిన దాని ప్రకారం కాంతి యొక్క తెలివితేటలను చొచ్చుకుపోయేలా చేస్తుంది.

అహం ఒక నిర్దిష్ట సమతుల్యతను కొనసాగించడానికి అనుమతించడానికి విలువలలో మార్పు క్రమంగా జరుగుతుంది. కానీ కాలక్రమేణా, ఒక కొత్త సంతులనం ఏర్పడుతుంది మరియు సామాజికంగా చెప్పాలంటే అహం సాధారణమైనది కాదు; అతను స్పృహలో ఉన్నాడు. అంటే, అతను రూపం మరియు ప్రమాణం యొక్క భ్రాంతి ద్వారా చూస్తాడు మరియు అతని సూక్ష్మ శరీరాల ప్రకంపనలు, అతని వ్యక్తిత్వం ఆధారంగా ఉండే స్థాయిలు మరియు అతని నిజమైన గుర్తింపును పెంచడానికి మరింత వ్యక్తిగతంగా మారుతాడు.

విలువల స్థానభ్రంశం వాస్తవానికి విలువల పతనం, కానీ మేము దానిని "స్థానభ్రంశం" అని పిలుస్తాము, ఎందుకంటే జరిగే మార్పులు ప్రకంపన శక్తికి అనుగుణంగా ఉంటాయి, ఇది చూసే విధానాన్ని మారుస్తుంది, తద్వారా ఆలోచనా విధానం తెలివితేటలకు అనుగుణంగా ఉంటుంది. మనిషిలో ఉన్నత కేంద్రం. అహం ప్రకంపనల ద్వారా ఈ పతనానికి సాక్ష్యమివ్వనంత కాలం, అది దాని తప్పుడు గుర్తింపు యొక్క గోడలను ఏర్పరిచే ఆలోచనలు, చిహ్నాల వర్గాలను చర్చిస్తూనే ఉంటుంది. కానీ ఈ గోడలు బలహీనపడటం ప్రారంభించిన వెంటనే, విలువల స్థానభ్రంశం ఒక లోతైన మార్పుకు అనుగుణంగా ఉంటుంది, ఇది అహంతో హేతుబద్ధం కాదు. మరియు అతనిచే హేతుబద్ధీకరించబడలేక, అతను చివరకు వెలుగుతో కొట్టబడ్డాడు, అంటే, అతను చివరకు శాశ్వత మరియు పెరుగుతున్న మార్గంలో దానితో ముడిపడి ఉన్నాడు.

అతని జీవితం, అప్పుడు, చక్రం ద్వారా రూపాంతరం చెందుతుంది మరియు త్వరలో, అతను ఇకపై దానిని పరిమితులలో జీవించడు, కానీ సంభావ్యతలో జీవిస్తాడు. ఆమె ఆత్మాశ్రయ కోరికలకు సంబంధించి నిర్వచించబడటానికి బదులుగా, ఆమె గుర్తింపు ఆమెకు సంబంధించి ఎక్కువగా నిర్వచించబడింది. మరియు అతను " నిజమైన మరియు ఆబ్జెక్టివ్ సెల్ఫ్" అంటే ఏమిటో గ్రహించడం ప్రారంభిస్తాడు.

అతను నిజమైన మరియు ఆబ్జెక్టివ్ స్వీయతను గ్రహించినప్పుడు, అతను ఈ నేనే అని చాలా స్పష్టంగా చూస్తాడు, దానితో పాటు తనలో తాను చూడనిది, కానీ అతను ఉన్నట్లు అనిపిస్తుంది, అక్కడ ఏదో అతనిలోకి వెళుతుంది. ఏదో తెలివైనది, శాశ్వతమైనది మరియు నిరంతరం ఉంటుంది. ఏదో దాని కళ్లతో చూస్తుంది మరియు ప్రపంచాన్ని అది ఉన్నట్లుగా అర్థం చేసుకుంటుంది మరియు అహం ముందు చూసినట్లుగా కాదు.

" మానసికం" అని మనం ఇకపై చెప్పము , అతను " అత్యుత్తమ (ఉన్నతమైన మానసిక)" అని చెప్పాము , అంటే అతను తెలుసుకోవటానికి ఇక ఆలోచించాల్సిన అవసరం లేదు. గుర్తింపుతో బాధపడటం అతనికి చాలా దూరంగా ఉంది, అతని అనుభవం నుండి, అతను తన గతాన్ని తిరిగి చూసుకున్నప్పుడు మరియు అతను ఇప్పుడు ఉన్నదానిని చూసినప్పుడు మరియు అతను ఉన్నదానితో పోల్చినప్పుడు అతను ఆశ్చర్యపోతాడు. .

అధ్యాయం 2

డౌన్‌వర్డ్ ఎవల్యూషన్ మరియు అప్‌వర్డ్ ఎవల్యూషన్
BdM-RG #62A (మార్పు చేయబడింది)

సరే, కాబట్టి నేను మనిషి యొక్క పరిణామాన్ని విడదీస్తాను, నేను అతనికి క్రిందికి వక్రరేఖను మరియు పైకి వక్రతను OK ఇస్తాను. ? నేను "ఇన్వల్యూషన్" అని పిలుస్తాను, పైకి వంపుని నేను పరిణామం అని పిలుస్తాను. మరియు ఈ రోజు మనిషి ఈ వక్రతలను కలిసే ప్రదేశంలో ఉన్నాడు. కావాలంటే 1969 తేదీ పెట్టుకుందాం. మనం పరిణామాన్ని పరిశీలిస్తే - డార్వినిస్ట్ దృక్కోణం నుండి కాదు - క్షుద్ర దృక్కోణం నుండి, మరో మాటలో చెప్పాలంటే, మనిషి యొక్క అంతర్గత పరిశోధనల ప్రకారం మరియు మనం వెనుకకు వెళితే, పన్నెండు వేల సంవత్సరాల క్రితం పతనాన్ని మనం గుర్తించవచ్చు. అట్లాంటిస్ పేరు ఇవ్వబడిన గొప్ప నాగరికత.

కాబట్టి మనిషి తన స్పృహలో ఒక అంశమైన జ్యోతిష్య శరీరం అని పిలవబడే దానిని తీవ్రంగా అభివృద్ధి చేసిన కాలం, ఇది అతని స్పృహ యొక్క సూక్ష్మ వాహనం, ఇది మానసిక-భావోద్వేగానికి సంబంధించిన అన్నింటికీ నేరుగా సంబంధించినది. ఈ రోజు వరకు ఈ నాగరికత నాశనమైన తరువాత, మనిషి తన స్పృహలో మరొక భాగాన్ని అభివృద్ధి చేసాడు, దీనిని క్షుద్రంగా తక్కువ మానసిక స్పృహ యొక్క అభివృద్ధి అని పిలుస్తారు, ఇది తెలివి యొక్క చాలా అధునాతన అభివృద్ధికి దారితీసింది, దీనిని నేడు మనిషి ఉపయోగిస్తున్నాడు. భౌతిక ప్రపంచాన్ని అర్థం చేసుకోవడానికి.

మరియు ఈ గ్రహం మీద 1969 నుండి, మనిషి యొక్క స్పృహలో ఒక కొత్త దృగ్విషయం ఉంది, దీనికి ఫ్యూజన్ పేరు ఇవ్వవచ్చు లేదా భూమిపై ఉన్నతమైన స్పృహ (ఉన్నత మనస్సు) మేల్కొలుపు అని పేరు పెట్టవచ్చు. మరియు ప్రపంచంలోని పురుషులు ఉన్నారు, వారు తక్కువ మనస్సు యొక్క స్థాయిలో, అందువల్ల తెలివి యొక్క స్థాయిలో పనిచేయడం మానేశారు మరియు స్పృహ యొక్క మరొక పొరను అభివృద్ధి చేయడం ప్రారంభించారు, దీనిని అత్యున్నత స్పృహ (ఉన్నత మనస్సు) అని పిలుస్తారు. మరియు ఈ పురుషులు అభివృద్ధి ప్రక్రియలో ఉన్న ఫ్యాకల్టీలను అభివృద్ధి చేశారు మరియు అవి కూడా మరొక పరిణామ చక్రంతో సమానంగా ఉంటాయి, దీనిని ఆరవ మూల-జాతి అని పిలుస్తారు.

క్షుద్రంగా చెప్పాలంటే, మనం మనిషి యొక్క పరిణామం గురించి మాట్లాడేటప్పుడు, అట్లాంటిస్ గురించి మాట్లాడుతున్నాము, దాని ఉప-జాతులతో నాల్గవ రూట్-రేస్, ఐదవ మూల-జాతిలో భాగమైన మనం భాగమైన ఇండో-యూరోపియన్ జాతులు. మరియు దాని ఉప జాతులు. మరియు దాని ఉప జాతులను కూడా అందించే కొత్త రూట్-జాతి ప్రపంచంలో ఇప్పుడు ప్రారంభమైంది. మరియు చివరికి ఏడవ రూట్-జాతి ఉంటుంది, ఇది మనిషి తన భౌతిక శరీరం యొక్క సేంద్రీయ ఉపయోగం అవసరం లేకుండా తగినంత అభివృద్ధి చెందిన పరిణామ స్థాయిని చేరుకోవడానికి వీలు కల్పిస్తుంది. కానీ మేము ప్రస్తుతం దీనితో వ్యవహరించడం లేదు, కాబట్టి మేము భౌతిక జాతికి ప్రాతినిధ్యం వహించని ఆరవ మూల-జాతితో వ్యవహరిస్తున్నాము, కానీ భవిష్యత్ మానవత్వం యొక్క కొత్త మానసిక స్పృహ యొక్క పూర్తిగా మానసిక కోణాన్ని సూచిస్తుంది.

మనకు అందుతున్న సమాచారం ప్రకారం బహుశా రెండువేల ఐదు వందల సంవత్సరాల వరకు తిరగబడిన సుడిగుండం నుండి ఈ విమానంలో మానవుని పరిణామాన్ని అర్థం చేసుకోవాలంటే, మానవుడు గడిచిపోతున్నాడని స్పష్టంగా తెలుస్తుంది. స్పృహ యొక్క ఖచ్చితంగా అసాధారణ దశల ద్వారా, అంటే ఇండో-యూరోపియన్ జాతుల మనిషితో పోల్చితే అట్లాంటిస్ మనిషి ఎంత పరిమితం అయ్యాడో, ఈనాటి మనిషి అంత పరిమితం మరియు తరువాతి మనిషితో పోలిస్తే పరిమితం అవుతాడు. అరబిందో అంచనా వేసిన భూమిపై ఉన్నతమైన స్పృహ (ఉన్నత మనస్సు) యొక్క పరిణామం .

అత్యున్నత స్పృహ (ఉన్నతమైన మనస్సు) యొక్క పరిణామంలో ఆసక్తికరమైన విషయం ఏమిటంటే: ఈ రోజు మనం మానవులు, హేతుబద్ధమైన మానవులు, కార్టేసియన్ మానవులు, ఐదవ మూల జాతికి చెందిన చాలా ప్రతిబింబించే మానవులు, మనకు ఎంత ధోరణి ఉందో అంతే. మన మనస్సు మన అహంచే నియంత్రించబడుతుందని నమ్మడం, రేపు మనిషి మానవ మనస్సు అహంచే నియంత్రించబడదని, మానవ మనస్సు దాని మానసిక నిర్వచనంలో ఉందని, అహం యొక్క ప్రతిబింబ వ్యక్తీకరణలో ఉందని మరియు దాని మూలం ప్రస్తుతానికి "మానసిక ప్రపంచం" అని పిలవబడే సమాంతర ప్రపంచాలలో ఉంది, కానీ తరువాత దీనిని "వాస్తు ప్రపంచం" అని పిలుస్తారు .

మరో మాటలలో చెప్పాలంటే, నా ఉద్దేశ్యం ఏమిటంటే, మనిషి తన ఆలోచన యొక్క మూలాన్ని కనుగొనే ఇబ్బంది లేదా సామర్థ్యం లేదా స్వేచ్ఛను ఎంత ఎక్కువగా తీసుకుంటాడో, అతను సమాంతర ప్రపంచాలతో టెలిస్పైకిక్ కమ్యూనికేషన్‌లోకి ప్రవేశించడం అంత ఎక్కువగా సాధ్యమవుతుంది. పరిణామ క్రమంలో, ప్రపంచ స్థాయిలో, జాతి యొక్క సార్వత్రిక స్థాయికి చేరుకోవడం, జీవిత రహస్యాలను తక్షణమే డీకోడ్ చేయగలగడం, పదార్థం యొక్క రాజ్యం మరియు ఆత్మ యొక్క జ్యోతిష్య రంగంలో కంటే ఆత్మ యొక్క మానసిక రాజ్యం. మరో మాటలలో చెప్పాలంటే, నా ఉద్దేశ్యం ఏమిటంటే, అతను వచ్చాడు, మనిషి, ఈ రోజు అతను తనకు సరిపోయే మానసిక స్పృహ స్థితికి చేరుకోవడం సాధ్యమవుతుంది.

మరియు నేను స్వీయ-సమృద్ధమైన మానసిక అవగాహన అని చెప్పినప్పుడు, సత్యం యొక్క మానసిక విలువపై ఆధారపడిన మానసిక అవగాహన నా ఉద్దేశ్యం కాదు. సత్యం అనేది ఒక పదం, ఇది వ్యక్తిగత విశ్వాసం లేదా సామాజిక నమ్మకం లేదా సామూహిక సామాజిక విశ్వాసం, ఇది వ్యక్తిగా మనిషి లేదా సమాజం యొక్క సామూహిక భావోద్వేగ అవసరాలలో భాగం, ఇది పదార్థం యొక్క ప్రపంచంలో ఆధిపత్యాన్ని నిర్ధారించడం.

కానీ మానవత్వం యొక్క భవిష్యత్తు స్పృహ యొక్క పరిణామం పరంగా, నిజం యొక్క దృగ్విషయం లేదా దాని మానసిక ప్రతిరూపం లేదా దాని భావోద్వేగ విలువ, మనిషి ఇకపై తన మనస్సాక్షి యొక్క భావోద్వేగాలను ఉపయోగించలేరనే సాధారణ కారణంతో పూర్తిగా పనికిరానిది. అతని జ్ఞానం యొక్క మానసిక మూల్యాంకనం. అతను ఇకపై తన మానసిక భద్రత అభివృద్ధికి తన మనస్సాక్షి యొక్క భావోద్వేగాలను ఉపయోగించాల్సిన అవసరం లేదు.

కాబట్టి మనిషి మానసిక విమానంలో వ్యాయామం చేయగలడు, ప్రపంచంలోని అన్ని జాతులలో భాగమైన సార్వత్రిక చైతన్యం యొక్క అంతిమంగా అనంతమైన ఇతివృత్తాల వ్యక్తీకరణ, వివరణ మరియు నిర్వచనం. కాస్మోస్‌లోని అన్ని జాతులు, మరియు వాస్తవానికి ఇది స్పిరిట్ యొక్క మార్పులేని ఐక్యతలో భాగం, దాని సంపూర్ణ నిర్వచనంలో, కాంతి యొక్క అసలు మూలం మరియు కాస్మోస్‌లో దాని కదలిక.

కాబట్టి మానవత్వం యొక్క పరిణామంలో ఒక పాయింట్ వస్తుంది, చివరకు అహం స్వీయ స్పృహపై కోల్పోయిన సమయాన్ని భర్తీ చేస్తుంది మరియు స్వీయ స్పృహలోకి ప్రవేశించడం ద్వారా చివరకు దాని మానసిక నిర్వచనం యొక్క సాధ్యమైన పరిమితులను చేరుకుంటుంది. అతని స్వచ్ఛమైన మనస్సు యొక్క సృజనాత్మక సామర్థ్యం, అంటే అతని ఆత్మ.

మరియు మేము భూమిపై, వివిధ జాతులలో, వివిధ దేశాలలో, వివిధ కాలాలలో, కలయికను తెలుసుకునే వ్యక్తులను కనుగొంటాము, అంటే, ఇంత గొప్ప జ్ఞాన మూలాల వైపు ఆకర్షితుడయ్యే తక్షణమే ఎవరు వస్తారో. ప్రపంచ శాస్త్రం, సాంకేతికత, సాంకేతికత, వైద్యం, మనస్తత్వశాస్త్రం లేదా చరిత్ర పరంగా పూర్తిగా పడగొట్టబడుతుంది. దేనికోసం ? ఎందుకంటే మనిషి పరిణామం చెందిన తర్వాత మొదటిసారిగా, ఆత్మ పదార్థానికి దిగిన తర్వాత మొదటిసారిగా మరియు పదార్థంతో ఆత్మ యొక్క మైత్రి తర్వాత మొదటిసారిగా, మనిషి తన సంపూర్ణ జ్ఞానాన్ని భరించే సామర్థ్యాన్ని ఎట్టకేలకు పొందుతాడు. .

నేను సంపూర్ణ జ్ఞానం అని పిలుస్తాను, దాని స్వంత కాంతిని భరించగలిగే మరియు గ్రహించగల మానవ మనస్సు యొక్క సామర్థ్యాన్ని. సంపూర్ణ జ్ఞానం అధ్యాపకులు కాదు. సంపూర్ణ జ్ఞానం పూర్వజన్మ కాదు. సంపూర్ణ జ్ఞానం అవసరం లేదు. సంపూర్ణ జ్ఞానం అనేది దిద్దుబాటు పరిణామ ముగింపు, అంటే, విశ్వంలోని కాంతి యొక్క గొప్ప కార్యాచరణలో భాగం మరియు ఇది అన్ని రంగాలను, అన్ని తెలివైన సందర్భాలను, అంటే - విశ్వంలోని అన్ని తెలివైన జాతులను ఒకదానితో ఒకటి కలవమని చెప్పడానికి వీలు కల్పిస్తుంది. అధిక మానసిక విమానం, అంటే పరిణామం సమయంలో అనుమతించేంత శక్తివంతమైన శక్తి యొక్క విమానంలో చెప్పాలంటే, ఎథెరిక్ శరీరం యొక్క అనివార్యమైన పునరుత్థానం కోసం శరీర పదార్థం చివరికి అదృశ్యమవుతుంది.

అంటే, సార్వత్రిక జీవిని రూపొందించే వివిధ సూర్యులతో పాటు, దాని ఆత్మ, దాని కాంతి మరియు దాని పునాది, కదలికలో మరియు అర్థం చేసుకోవడంలో చివరకు మానవమనిలో శక్తివంతంగా ప్రవేశించగల సామర్థ్యం. అణు చైతన్యాన్ని పిలువు! కాబట్టి పరిణామ సమయంలో మనిషి ఆలోచించాల్సిన అవసరం లేకుండా, ఆలోచించాల్సిన అవసరం లేకుండానే, భూమిపై సార్వత్రిక స్పృహ యొక్క పరిణామాత్మక ఆర్కిటైప్లు మరియు పరిణామాల యొక్క మానసిక నిర్మాణంలో మానవుడు చివరకు వర్గీకృత మార్గంలో జోక్యం చేసుకోగలడు. . దీనర్థం మనిషి చివరికి తాను పూర్తిగా తెలివైన జీవి అని గ్రహించగలడు.

మేధస్సు అనేది విద్య యొక్క ఒక రూపం యొక్క వ్యక్తీకరణ కాదని, కానీ తెలివితేటలు ఒక సంపూర్ణ మార్గంలో ఏదైనా మనస్సు యొక్క ప్రాథమిక లక్షణం అని మనిషి గ్రహించగలడు. ఈ రోజు మనం మాత్రమే ఒక అహం లేదా మానవ స్వీయంగా, విశ్వవ్యాప్త ప్రతిబింబం ద్వారా, అంటే చరిత్ర ద్వారా మరియు మానవత్వం యొక్క జ్ఞాపకశక్తి ద్వారా మనపై విధించిన పరిమితులలో జీవించవలసి వస్తుంది.

మరియు మనిషికి ఇంకా ఇవ్వబడలేదు - ఎందుకంటే ఈ రంగంలో తగినంత సైన్స్ లేదు - మనిషికి తన మనస్సు ఎలా పని చేస్తుందో, అతని అహం ఎలా పని చేస్తుందో, అతని అహం ఎలా పని చేస్తుందో తెలుసుకునే మరియు అర్థం చేసుకునే సామర్థ్యం ఇంకా ఇవ్వబడలేదు. ఇంటెలిజెన్స్ అనే పదానికి దాని సార్వత్రిక నిర్వచనంలో అర్థం ఏమిటి, కాబట్టి మనిషి ఈ రోజు తన జ్యోతిష్య శరీరం ద్వారా చిక్కుకున్నాడు, అంటే అతని ఇంద్రియాల ద్వారా!

అతను తన ప్రాథమిక మరియు సార్వత్రిక జ్ఞానాన్ని భర్తీ చేయడానికి బాధ్యత వహిస్తాడు, పరిణామ సమయంలో చరిత్ర మరియు సబ్జెక్ట్ ద్వారా కండిషన్ చేయబడిన ఒక చిన్న పరిమిత జ్ఞానాన్ని సవరించాలి, ఎందుకంటే సైన్స్ యొక్క అన్ని సిద్ధాంతాలు ఈ రోజు విజ్ఞాన శాస్త్రం ఉపయోగపడవు అనే కోణంలో కాదు. దీనికి విరుద్ధంగా ఇది చాలా ఉపయోగకరంగా ఉంది, కానీ ఈ రోజు సైన్స్ కూడా దాని స్వంత నిర్మూలన వైపు తన అనివార్య ప్రయాణాన్ని చేస్తుంది. అన్ని నాగరికతలు తమ స్వంత నిర్మూలన వైపు తమ అనివార్య ప్రయాణాన్ని చేస్తున్నట్లే.

కానీ ఒక నాగరికత దాని నిర్మూలన యొక్క వాస్తవికతను చాలా కష్టంగా భావించినట్లే, సైన్స్ దాని స్వంత నిర్మూలనను సాధించడం కష్టతరం చేస్తుంది. మరియు ఇది చాలా సాధారణమైనది. ప్రపంచంలో తమ స్వంత క్షీణతను లేదా వారి స్వంత వినాశనాన్ని ప్రోత్సహించమని ఆలోచించే జీవులను లేదా ఒక నిర్దిష్ట స్పృహ ఉన్న జీవులను ఎవరూ అడగలేరు. మానవత్వం పరిణామం చెందడానికి, అభివృద్ధి చెందడానికి, మనం ఏమి చేసాము, మనం ఏమి చేయగలం అనే దాని గురించి మనం తెలుసుకోవలసిన అవసరం ఉంది.

కానీ వ్యక్తులుగా - వ్యక్తులుగా నేను స్పష్టంగా చెప్తున్నాను - చివరికి మన గ్రహం మీద సార్వత్రిక మరియు విశ్వ క్రమం యొక్క పరిస్థితులను ఎదుర్కోవలసి ఉంటుంది, గతంలో మూఢనమ్మకాల యొక్క గొప్ప కదలికలను పెంచిన పరిమాణాలను ఎదుర్కోవటానికి మనం బాధ్యత వహిస్తాము. ఈ ప్రపంచంలో; సైన్స్ పరిణామంతో అంతరించిపోయిన ఉద్యమాలు, మరియు సైన్స్ ద్వారా నిర్ద్వంద్వంగా తిరస్కరించబడిన ఉద్యమాలు.

కాబట్టి కాస్మోస్ అపరిమితంగా ఉందని గ్రహించడానికి కొన్ని అనుభవాలను సమీక్షించడానికి మరియు పునరుద్ధరించడానికి మేము కాలక్రమేణా కట్టుబడి ఉంటాము. మానవ స్పృహ అపరిమితమైనది మరియు మనిషి తన అంతర్భాగంలో తన స్పృహ ఎంత శక్తివంతంగా ఉంటుందో. ఈ రోజు మనం అనేక మానసిక ప్రవాహాల కూడలిలో జీవించవలసి వచ్చిన ప్రపంచంలో ఇది చాలా ముఖ్యమైనది, ఇది మొత్తంగా... మరియు నేను మొత్తంగా చెప్పినప్పుడు, నేను ఖచ్చితంగా యునైటెడ్ స్టేట్స్ వైపు చూస్తున్నాను. వ్యక్తిత్వంతో సంఘర్షణలో సామూహిక అనుభవం నెమ్మదిగా సామూహిక మానసిక రోగాన్ని సృష్టిస్తుంది.

టెలివిజన్ ద్వారా లేదా వార్తాపత్రికల ద్వారా లేదా వివిధ రకాల స్వేచ్ఛా పత్రికల ద్వారా వారి సంఖ్యలో విస్తరించిన ఆలోచనల ప్రవాహాల ద్వారా మనిషి నిరవధికంగా ప్రపంచంలో బాంబులు వేయలేడు. నిజం మరియు అబద్ధాల మధ్య వివిధ ఘర్షణల నుండి ఉత్పన్నమయ్యే ఈ మానసిక మరియు మానసిక ఉద్రిక్తతను మనిషి ఇక భరించలేని స్థితి వస్తుంది. మనిషి తనకు సంబంధించి వాస్తవికతను నిర్వచించవలసి వచ్చినప్పుడు భూమిపై ఉన్నతమైన (ఉన్నతమైన మనస్సు) చైతన్యం యొక్క పరిణామంలో ఒక పాయింట్ వస్తుంది. కానీ అది సార్వజనీనమైన "ఒకే" అవుతుంది, అది "ఒకే" కాదు, అది దాని స్వంత ఆత్మ యొక్క ఉల్లాసభరితత్వం లేదా దాని స్వంత అహం యొక్క వ్యర్థం లేదా దాని స్వంత నా యొక్క అభద్రతపై ఆధారపడి ఉంటుంది.

కాబట్టి ఆ క్షణం నుండి, మనిషి మానవ దృగ్విషయాన్ని, నాగరికతను దాని అన్ని అంశాలలో అర్థం చేసుకోవడం ప్రారంభిస్తాడు. మరియు అతను ఇకపై " సగ్గుబియ్యబడడు" (దుర్వినియోగం) మానసికంగా ఏమి జరుగుతుందో లేదా ప్రపంచంలో ఏమి జరుగుతుందో దాని ద్వారా. మనిషి స్వేచ్ఛగా ఉండడం ప్రారంభిస్తాడు. మరియు అతను స్వేచ్ఛగా ఉండటం ప్రారంభించిన క్షణం నుండి, అతను చివరకు జీవితాన్ని దాని ప్రాథమిక నాణ్యతలో అర్థం చేసుకోవడం ప్రారంభిస్తాడు. మరియు అతను ఎంతగా పరిణామం చెందుతాడో, ఐదవ మూల-జాతి యొక్క స్పృహలో ఈ రోజు భాగం కాని ఒక కోణంలో అతను జీవితాన్ని సంపూర్ణ, సమగ్ర మరియు నేర్చుకున్న మార్గంలో అర్థం చేసుకుంటాడు.

ఈ మాటలన్నీ ఎందుకు? మనిషి తనకు తాను ఇవ్వగలిగిన గొప్ప విశ్వసనీయత, తనను తాను సృష్టించుకోవడం, తనకు తానుగా విశ్వసనీయత అని అర్థం చేసుకోవడానికి కొంచెం కొంచెంగా తీసుకురావడం. ప్రత్యేకించి పాశ్చాత్య ప్రపంచంలో వ్యక్తివాదం పట్ల ప్రేమ చాలా అభివృద్ధి చెందిన శతాబ్దంలో మనం జీవిస్తున్నాం. మేము మరింత ఎక్కువ మంది వ్యక్తివాదులుగా మారాము, కానీ వ్యక్తివాదం, అది ఒక వైఖరిగా మిగిలిపోతే, మానవుల వాస్తవికతతో ప్రాథమికంగా విలీనం చేయబడదు. మరో మాటలో చెప్పాలంటే, ఎర్రటి ప్యాంటీలు మరియు పసుపు చెప్పులతో వీధిలో నడవడం మరియు న్యూయార్క్‌లో, న్యూయార్క్‌లోని టైమ్స్ స్క్వేర్‌లో ప్రేమించడం ఒక రకమైన వ్యక్తివాదం. కానీ ఇది అసాధారణత, ఇది మానవ స్పృహ యొక్క జ్యోతిష్యం యొక్క ఒక రూపం.

మనిషి తన వ్యక్తిత్వాన్ని కాపాడుకోవడం, పదం యొక్క నిర్దిష్ట అర్థంలో తన వ్యక్తిత్వాన్ని వ్యక్తీకరించడం, ప్రజల సున్నితత్వాన్ని లేదా తన ప్రజల సున్నితత్వాన్ని ఉల్లంఘించడం లేదా అతని జనాభా యొక్క సున్నితత్వాన్ని ఉల్లంఘించడం అవసరం లేదు. ఇది భ్రమ! మరియు ఇది ఇరవయ్యవ శతాబ్దపు లక్షణమైన ఫ్యాషన్లలో భాగం, చివరికి అది సామాన్యమైనదిగా మారుతుంది, చివరికి అది తెలివితక్కువది కూడా అవుతుంది, చివరికి ఇది పూర్తిగా సౌందర్యం లేదు. కాబట్టి కొత్త మనిషి, భూమిపై ఉన్నతమైన (అధిక మానసిక) స్పృహ యొక్క పరిణామం, నిజానికి, మనిషి చాలా వ్యక్తిగతీకరించబడిన కానీ వ్యక్తిగత స్పృహను అభివృద్ధి చేయడానికి అనుమతిస్తుంది.

మనిషి వ్యక్తిగతంగా ఎందుకు ఉంటాడు? ఎందుకంటే అతని స్పృహ యొక్క వాస్తవికత అతని ఆత్మ యొక్క కలయికపై ఆధారపడి ఉంటుంది మరియు పురుషుల దృష్టిలో ప్రపంచంలోకి అంచనా వేయబడదు, విపరీతతతో ఒక రకమైన సరసతను బహిర్గతం చేస్తుంది. ఒక మనిషి నిజం కావడానికి ప్రపంచం చుట్టూ తిరగాల్సిన అవసరం లేదు. దీనికి విరుద్ధంగా. మనిషి ఎంత స్పృహతో ఉంటాడో, అంత తక్కువ అతను ఉపాంతంగా ఉంటాడు, అతను మరింత వాస్తవికంగా ఉంటాడు మరియు అతని వాస్తవంలో అనామకుడిగా ఉంటాడు. ఎందుకంటే మనిషి యొక్క వాస్తవికత అతనికి మరియు అతనికి మధ్య జరిగేది మరియు అతని మరియు ఇతరుల మధ్య కాదు.

మన గ్రహం మీద మూల-జాతి యొక్క అవసరమైన పరిణామాన్ని పరిశీలిస్తే, మానవ దృగ్విషయాన్ని కొద్దిగా అర్థం చేసుకోవడం. మేము కోఆర్డినేట్లను ఏర్పరుస్తాము, ఇది పూర్తిగా ఆచరణాత్మకమైనది, అనివార్య సంఘటనలకు కాలక్రమానుసారం అవగాహన యొక్క ఫ్రేమ్వర్క్ను అందించడం మాత్రమే! కానీ మనం ఒక చేతన జాతి గురించి మాట్లాడినట్లయితే, మనం చేతన మానవత్వం గురించి మాట్లాడినట్లయితే, మనం స్పృహ కలిగిన పురుషులు మరియు వ్యక్తుల గురించి మాట్లాడవలసి ఉంటుంది.

భూమిపై ఉన్నతమైన స్పృహ (ఉన్నతమైన మనస్సు) యొక్క పరిణామం ఏ సామూహికత స్థాయిలోనూ జరగదు. భూమిపై ఉన్నతమైన (ఉన్నతమైన మనస్సు) చైతన్యం యొక్క పరిణామం ఎప్పటికీ సామూహిక శక్తి యొక్క వ్యక్తీకరణ కాదు. ప్రపంచంలోని వ్యక్తులు ఎల్లప్పుడూ వారి స్పృహలో కొంచెం కొంచెంగా, మరింత ఎక్కువగా ఆకర్షితులవుతారు, అక్కడ వారు తమ స్వంత మూలంతో, వారి ఆత్మతో, వారి రెట్టింపుతో ఐక్యం అవుతారు, ఈ వాస్తవికతకు. మనిషిలో భాగం.

కానీ ఈ దిశలో ప్రాథమిక ఉద్యమం దీనిపై ఆధారపడి ఉంటుంది: ఇది అధికార వికేంద్రీకరణ నుండి ఎన్నడూ జరగని ఆలోచన యొక్క దృగ్విషయం యొక్క అవగాహనపై ఆధారపడి ఉంటుంది. “ నేను అనుకుంటున్నాను, అందుకే నేను” అని చెప్పడం సరిపోదు . "నేను అనుకుంటున్నాను, అందుచేత నేను ఉన్నాను" అని డెస్కార్టెస్ చెప్పడం మంచిది , ఎందుకంటే ఆలోచనలో ఒక వ్యక్తి యొక్క స్థాయిలో గ్రహించవలసిన శక్తి ఉందని గ్రహించడంలో ఇది భాగం.

కానీ సృజనాత్మక స్పృహ స్థాయిలో, మనిషి యొక్క ఆలోచన పూర్తిగా, సమగ్రంగా మార్చబడినప్పుడు పాయింట్ వస్తుంది. మరియు పరిణామ సమయంలో మనిషి ఇకపై ఆలోచించడు. అతని ఆలోచన అతని ఉన్నత మనస్సు యొక్క సృజనాత్మక వ్యక్తీకరణ యొక్క మోడ్‌గా మార్చబడుతుంది. మరియు ఆ మనస్సు పూర్తిగా అవుతుంది టెలిసైకిక్. మరో మాటలో చెప్పాలంటే, మనిషి సార్వత్రిక విమానాలతో తక్షణ కమ్యూనికేషన్‌ను అనుభవిస్తాడు మరియు ఈ కమ్యూనికేషన్ మోడ్ ఇకపై ప్రతిబింబించదు. మనిషి మనస్సులో ఆలోచన ప్రతిఫలించడం మానేసిన క్షణం, ఆలోచన ఆత్మాశ్రయమవుతుంది. మనిషి ఆలోచిస్తాడని మనం ఇకపై చెప్పలేము, మనిషి తన స్వంత స్పృహ యొక్క సార్వత్రిక విమానాలతో కమ్యూనికేట్ చేస్తున్నాడని చెప్పాము.

కానీ మనిషి దీనిని సమగ్ర మార్గంలో అర్థం చేసుకోవడానికి, అతను ఈ ఆలోచనను గ్రహించడం అవసరం, ఈ రోజు మనం గర్భం దాల్చినప్పుడు, ఈ రోజు మనం జీవిస్తున్నప్పుడు, అది మన మనస్సులో స్థిరపడినట్లుగా, ఉత్పత్తి చేయబడినప్పుడు లేదా గ్రహించినప్పుడు. అపస్మారక అహంకారంగా, మనలో ఒక నిర్దిష్ట అవగాహనను మేల్కొల్పాలి, అంటే మనిషి తన ఆలోచన స్వయంగా తనను తాను విభజిస్తుందని గ్రహించగలగాలి. అతను ఇన్వాల్యూషన్ మరియు అపస్మారక కారణాల వల్ల మాత్రమే, అతనిని మంచి లేదా చెడు, నిజం మరియు అబద్ధం యొక్క ధ్రువణతకు గురిచేస్తాడు.

మనిషి తన మనస్సును ధ్రువీకరించిన క్షణం నుండి, అతను ప్రతికూల లేదా సానుకూల కోఆర్డినేట్‌లను ఏర్పాటు చేసుకున్నా, అతను భౌతిక విమానంలో మరియు విశ్వ మరియు సార్వత్రిక విమానంలో తన మధ్య విభజనను సృష్టించుకున్నాడు. ఇది చాలా ముఖ్యం! ఇది చాలా ముఖ్యమైనది, తదుపరి పరిణామానికి ఇది ప్రాథమిక కీ. మన ఆలోచనలను ఎల్లప్పుడూ ధ్రువణతకు సంబంధించి జీవించేలా చేసేది మన అహం యొక్క ప్రాథమిక అభద్రత. ఇది మన భావోద్వేగాల యొక్క శక్తివంతమైన మరియు రక్త పిశాచ సామర్థ్యం. మనకు తెలిసిన వాటిని భరించలేకపోవడం అహంకారంగా లేదా బాగా చదువుకున్న లేదా ఎక్కువగా చదువుకున్న వ్యక్తిగా మన అసమర్థత.

ప్రపంచంలో ఏదో తెలియని మనిషి లేడు. మనుష్యులందరికీ ఏదో తెలుసు కానీ ప్రపంచవ్యాప్త అధికారం లేదు, సాంస్కృతిక నిర్వచనం లేదు, మనిషికి ఏదైనా తెలుసుకోవడం ద్వారా మద్దతు ఇవ్వగల సాంస్కృతిక మద్దతు ప్రపంచంలో లేదు. ఈ జ్ఞానాన్ని ఏర్పరచడానికి మరియు దానితో మనిషి మనస్సును కండిషన్ చేయడానికి ఏదైనా తెలుసుకునే హక్కును తమకు తాముగా ఇచ్చే సంస్థలు ఉన్నాయి. దీన్ని మనం వివిధ స్థాయిలలో సైన్స్ అని పిలుస్తాము, ఇది సాధారణం.

కానీ ప్రపంచంలోని సంస్థలు మనిషికి అతని అధికారాన్ని ఇవ్వగల లేదా తిరిగి ఇవ్వగల విరుద్ధమైన ఉద్యమం లేదు, అంటే ఒక రోజు చాలా పెద్దదిగా మారగల చిన్న కోణాన్ని అతనికి తిరిగి ఇవ్వండి. , అతని స్వంత కాంతి. మరియు మీరు ఆధ్యాత్మిక రంగంలో, మతపరమైన రంగంలో చాలా సులభమైన మార్గంలో పరీక్షను తీసుకోవచ్చు. ఒక రోజు, మనిషి యొక్క కేంద్రాలు తగినంతగా తెరిచినప్పుడు, అతను సైన్స్ రంగంలో కూడా అదే చేయగలడు.

ప్రపంచంలో ఉన్న వ్యక్తి మరియు ఉదాహరణకు, ఒక మతాధికారి లేదా మతంలో పనిచేసే వ్యక్తిని చూడటానికి వెళ్లి, అతనితో దేవుని గురించి మాట్లాడేవాడు మరియు ఇలా అంటాడు: “సరే, దేవుడు అలాంటివాడు, అలాంటిది , అలాంటిది ” , ఒక వ్యక్తి అతనితో ఇలా అంటాడు: “ అయితే మీరు దేవుని గురించి ఏ హక్కుతో మాట్లాడుతున్నారు? మీరు ఏ హక్కుతో దేవుని గురించి మాట్లాడుతున్నారు”...? మరియు మనిషి తక్కువ పరిణామం చెంది, తన మనస్సు యొక్క సృజనాత్మక కోణంలో భాగమైన ఇతర రూపాలను బయటకు తీసుకురావడానికి లేదా బయటకు తీసుకురావడానికి నిజంగా భగవంతుని రూపాన్ని విచ్ఛిన్నం చేయగలిగితే, అతను భగవంతుని సంస్థాగతీకరణ ద్వారా మరింతగా తిప్పికొట్టబడతాడు. అదృశ్య ప్రపంచాల అవగాహన.

అందుకే నేను చెప్పేదేమిటంటే, మనిషి ప్రపంచం యొక్క మద్దతుతో, ఉన్నతమైన స్పృహలో (ఉన్నతమైన మనస్సులో) ప్రపంచంలోకి ప్రవేశించలేడు. ప్రాపంచిక మద్దతు అవసరం నుండి పూర్తిగా విముక్తి పొందినప్పుడు మనిషికి ఉన్నతమైన (ఉన్నతమైన మనస్సు) స్పృహ ఉంటుంది, చివరకు తనకు తెలిసిన వాటిని గ్రహించడం మరియు భరించడం నెమ్మదిగా ప్రారంభమవుతుంది. మరియు దీనికి షరతు నిజం మరియు తప్పుడు ధ్రువణత యొక్క ఉచ్చులో పడకూడదు.

మనిషి నిజం మరియు అబద్ధం యొక్క ధ్రువణత యొక్క ఉచ్చులో పడితే, అతను తన మనస్సాక్షిని ఉత్తేజపరుస్తాడు, అతను తన అహాన్ని అసురక్షిస్తాడు మరియు అతను వాస్తవికత పట్ల తీవ్ర వైఖరిని పెంచుకుంటాడు. నిజం మరియు తప్పు అనేది తెలుసుకోవడంలో మానసిక అసమర్థత యొక్క మానసిక భాగాలను మాత్రమే సూచిస్తాయి! మీరు మంచి స్టీక్ తిన్నప్పుడు, అది నిజమా లేదా నకిలీదా అని మీరు ఆశ్చర్యపోకండి, ధ్రువణత లేదు, అందుకే ఇది మంచిది. కానీ అక్కడ పురుగులు ఉన్నాయా అని మీరు ఆశ్చర్యపోతే, ఓహ్, మీ కడుపు స్పందించదు! మరియు ఇది జ్ఞాన స్థాయిలో, జ్ఞానం యొక్క స్థాయిలో అదే విషయం.

జ్ఞానం తక్కువ మనస్సుకు ఏది ఉన్నతమైన మనస్సుకు జ్ఞానం. జ్ఞానం అహం యొక్క అవసరంలో భాగం అయితే తెలుసుకోవడం స్వీయ వాస్తవికతలో భాగం. కాబట్టి తెలుసుకోవడం మరియు తెలుసుకోవడం మధ్య విభజన లేదా విభజన లేదు. జ్ఞానం ఒక స్థాయి స్పృహలో భాగం మరియు జ్ఞానం మరొక స్థాయిలో ఉంటుంది.

జ్ఞాన రంగంలో, మనం కొన్ని విషయాల గురించి మాట్లాడుతాము మరియు జ్ఞాన రంగంలో ఇతర విషయాల గురించి మాట్లాడుతాము. ఇద్దరూ కలుసుకోవచ్చు, సోదరభావంతో మెలగవచ్చు మరియు చాలా బాగా కలిసి ఉండవచ్చు. నాల్గవ అంతస్తు దాని పైన ఉన్న ఐదవ అంతస్తుతో ఎల్లప్పుడూ మంచిది... మరియు మనిషి బహుమితీయ జీవి, కానీ మనిషి కూడా అనుభవ స్పృహను కలిగి ఉండి జీవించే జీవి. భూమిపై మనకు ప్రయోగాత్మక స్పృహ ఉంది. మాకు సృజనాత్మక స్పృహ లేదు.

మీ జీవితాలను చూడండి! మీ జీవితాలు అనుభవం! మీరు ప్రపంచంలోకి ప్రవేశించిన క్షణం నుండి, మీ జీవితం నిరంతరం అనుభవంతో ఉంటుంది, కానీ మనిషి అనుభవంతో నిరవధికంగా జీవించలేడు. ఒక రోజు మనిషి సృజనాత్మక స్పృహతో జీవించవలసి ఉంటుంది, ఆ సమయంలో జీవితం విలువైనది, జీవితం చాలా పెద్దది, చాలా విశాలమైనది, సృజనాత్మకతలో శక్తివంతమైనది మరియు మనిషి ఆత్మానుభవంతో జీవించడం మానేస్తాడు. కానీ మనిషి అనుభవాన్ని ఎందుకు జీవిస్తాడు? ఎందుకంటే ఇది శక్తివంతమైన శక్తులతో ముడిపడి ఉంది - నేను మామెరో అని పిలుస్తాను - వాస్తవానికి మీరు "ఆత్మ" అని పిలుస్తాము.

మనిషి తన ఆత్మ ద్వారా జీవించడు, అతను ఆత్మతో అనుబంధించబడ్డాడు, అతను ఆత్మ ద్వారా జీవిస్తాడు, అతను నిరంతరం ఆత్మ ద్వారా రక్త పిశాచం చేస్తాడు. పునర్జన్మ గురించి పరిశోధించిన వ్యక్తులు లేదా ఒక నిర్దిష్ట గతానికి తిరిగి రావడాన్ని పరిశోధించిన వ్యక్తులు ఈ రోజు కొంతమంది వ్యక్తులు కొన్ని విషయాలతో బాధపడుతున్నారని చాలా బాగా నిర్ణయించారు, ఎందుకంటే గత జన్మలో వారు కారణంతో బాధపడ్డారు. భౌతిక జీవితానికి ముందు నుండి వచ్చిన గాయాలు లేదా మునుపటి పరిస్థితులలో ఉక్కిరిబిక్కిరి అయినందున వారు ఎలివేటర్ (ఎలివేటర్)లోకి ప్రవేశించలేని వ్యక్తులు నేడు ఉన్నారు, వారు సామర్థ్యం లేరు... వారు ఊపిరి పీల్చుకుంటున్నారు. కాబట్టి మనిషి ఆత్మ యొక్క అనుభవాన్ని జీవిస్తాడు.

అతను జీవిస్తున్నాడు, అతను తన జ్ఞాపకశక్తితో జతచేయబడ్డాడు, అతని మునుపటి పరిణామ ఉద్యమం యొక్క చాలా విస్తారమైన అపస్మారక జ్ఞాపకం, ఈ రోజు అతను ప్రయోగాత్మక జీవిగా జీవించే చాలా విస్తారమైన జ్ఞాపకశక్తి. భూమిపై అనుభవం నుండి మనిషి నిరవధికంగా జీవించలేడు! ఇది అతని యూనివర్సల్ ఇంటెలిజెన్స్‌కు అవమానం. మనిషి యొక్క స్వభావంతో ఇది పూర్తిగా సరిదిద్దలేనిది: “ సరే, సరే, పదేళ్లలో నేను అలాంటి పని చేయాలనుకుంటున్నాను, ఐదేళ్లలో నేను అలాంటి పని చేయాలనుకుంటున్నాను”, ఇది స్వభావంతో పూర్తిగా సరిదిద్దలేనిది. తన భవిష్యత్తు తెలియని మనిషి!

మనిషికి ముందు మనిషి స్వభావం తెలియకపోవడం మనిషి స్వభావంతో సరిపెట్టుకోలేనిది. మరో మాటలో చెప్పాలంటే, మనిషిలోని ఈ ఆత్మ హేతువు యొక్క ఆదేశాల ప్రకారం జీవించవలసి వస్తుంది, ఎందుకంటే ఈ రోజు భౌతిక విమానంలో ఉన్న మనిషి స్పృహ దిగజారుతున్న తరంలో భాగం. మనిషి యొక్క స్పృహ పదార్థానికి అవరోహణ నుండి ఈథరిక్ వైపు చివరికి నిష్క్రమణ వైపుకు వెళ్ళాలి, అంటే గ్రహం యొక్క వాస్తవికతలో భాగం, ఇది చివరికి ప్రపంచం అయిన మనిషి సహజంగా తన అమరత్వాన్ని జీవించాలి.

మనిషి పదార్థంలోకి వచ్చి చనిపోయేలా చేయబడలేదు. మనం మరణం అని పిలుస్తాము, అంటే మనిషి లేదా ఆత్మ జ్యోతిష్య సమతలానికి తిరిగి రావడాన్ని మనం పిలుస్తాము, ఇది మనిషి యొక్క అపస్మారక స్థితిలో భాగం. మనిషి తన తరానికి మూలమైన, అతని తెలివితేటలకు మూలమైన, అతని జీవశక్తికి మూలమైన, అతని గ్రహ స్వభావానికి మూలమైన సార్వత్రిక సర్క్యూట్ల నుండి పూర్తిగా నరికివేయబడిన వాస్తవంలో ఇది భాగం! కాబట్టి మనిషి మూలానికి తిరిగి రావాలి, కానీ మనిషి ఆత్మీయమైన, చారిత్రక భ్రమల ద్వారా మూలానికి తిరిగి రాలేడు.

మనిషి పదార్థ ఖైదీగా ఉండాల్సిన పాత ఆలోచనలను ఉపయోగించడం ద్వారా తన మూలానికి తిరిగి రాలేడు. మనిషిని ప్రయోగాత్మక స్పృహతో జీవిగా మార్చిన పాత మార్గాలను ఉపయోగించి తన మూలానికి తిరిగి వెళ్ళడం లేదు. నమ్మడం ద్వారా మనిషి తన మూలానికి తిరిగి రాడు.

మనిషి తన పరిణామంలో క్రమంగా అభివృద్ధి చెందడం ద్వారా తన మూలానికి తిరిగి వస్తాడు, తనకు తెలిసిన వాటికి మద్దతు ఇవ్వగల సామర్థ్యం.

కానీ నేటి ప్రపంచంలో, మనం ఒక పురాణగాథకు, మన స్వీయ మానసిక వ్యవస్థీకరణకు విచారకరంగా ఉన్నాము. అన్ని హ్యుమానిటీలను ప్రభావితం చేసే మానసిక మానసిక వైఖరి యొక్క పట్టుకు మనం విచారకరంగా ఉన్నాము: నమ్మకం. మనిషికి నమ్మకం ఎందుకు అవసరం? ఎందుకంటే అతనికి తెలియదు! మనిషికి నమ్మకం ఎందుకు అవసరం? ఎందుకంటే అతను అనుభవపూర్వక స్పృహ జీవి, కాబట్టి అతని మనస్సులో కాంతి లేదు. అతను తన చిన్న స్పృహ యొక్క చాలా చీకటి కదలికలో నివసిస్తాడు, కాబట్టి అతను తనను తాను ముఖ్యమైన మరియు సంపూర్ణమైనదానికి అటాచ్ చేసుకోవడానికి విశ్వసించాల్సిన అవసరం ఉంది.

అయితే అహం యొక్క మానసిక కండిషనింగ్‌లో భాగమైన సంపూర్ణమైన ఈ నమ్మకం, సంపూర్ణమైన ఈ నమ్మకం, ఇది ఎవరిచే స్థాపించబడింది? ఇది మ్యాన్ ఆఫ్ ఇన్వల్యూషన్ చేత స్థాపించబడింది. మీరు ప్రపంచంలోకి వెళ్లి ఎవరికైనా కథ చెబితే, మీరు మొదట చెప్పిన కథ కంటే, మరొకరు స్వీకరించినప్పుడు మరియు చెప్పినప్పుడు మీరు చెప్పబోయే కథ ఇకపై ఉండదని మీకు బాగా తెలుసు. .

ఎవరైనా ప్రపంచంలోకి వెళ్లి, ఈ రోజు నేను చెప్పేదాన్ని పునరావృతం చేయడానికి ప్రయత్నిస్తున్నారని ఊహించుకోండి, ఒక దీక్షాపరుడిగా, రేపు అది ఎలా వస్తుందో మీరు ఊహించవచ్చు! కాబట్టి గతంలో పనులు చేసిన పురుషులు ఉన్నారు, మానవత్వం యొక్క పరిణామానికి సహాయం చేయడానికి ప్రపంచంలోకి వచ్చిన ఇనిషియేట్లు ఉన్నారు. కానీ ఈ జీవులు ఏమి చెప్పారో మరియు వారు చెప్పినట్లు నివేదించబడినది మరొక విషయం.

మరియు నేను మీకు ఒక విషయం చెప్పగలను - ఎందుకంటే ఈ దృగ్విషయం నాకు చాలా సంవత్సరాలుగా తెలుసు - ఒక వ్యక్తి ఖచ్చితంగా చెప్పినదానిని ఖచ్చితంగా పునరావృతం చేయడం అసాధ్యం. మీరు ఈ రాత్రి ఇంటికి వచ్చినప్పుడు దీన్ని ప్రయత్నించండి! పరిపూర్ణంగా చెప్పిన దానిని పునరావృతం చేయడం మానవునికి అసాధ్యం. మరియు ఎందుకు అని నేను మీకు చెప్తాను. ఎందుకంటే సరిగ్గా చెప్పబడినది - మరో మాటలో చెప్పాలంటే, అహంకారానికి రంగు వేయనిది, జ్యోతిష్యం చేయనిది, మనిషి యొక్క అపస్మారక స్థితిలో ఏది భాగం కాదు, కానీ మనిషి యొక్క విశ్వంలో భాగమైనది - ఇది అహంకారానికి దర్శకత్వం వహించదు. మనిషి లేదా మనిషి యొక్క అహంకారానికి, లేదా మనిషి యొక్క తెలివికి. ఇది అతని ఆత్మకు దర్శకత్వం వహించబడింది.

మరియు మనిషి తన ఆత్మలో లేకుంటే, మరొక ఆత్మ ఇప్పటికే చెప్పిన దానిని అతను ఎలా తీసుకుంటాడని మీరు ఆశించారు? అది అసాధ్యం. కాబట్టి ఆ సమయంలో కలరింగ్ ఉంది. మరియు మానవత్వం యొక్క పరిణామ ప్రయోజనం కోసం మనం మతాలు అని పిలిచే దీక్షాపరుల పదాల రంగు నుండి పుట్టింది. మరియు నేను అంగీకరిస్తున్నాను మరియు ఇది జరుగుతున్నందుకు మరియు ఇది జరిగినందుకు నేను చాలా సంతోషంగా ఉన్నాను, ఎందుకంటే ఇది అవసరం. కానీ పరిణామ సమయంలో మనిషికి తన మనస్సాక్షికి తన స్వంత జ్ఞానం యొక్క సంపూర్ణతను అందించడానికి నైతిక మద్దతు అవసరం లేని సమయం వస్తుంది. అది అత్యున్నత చైతన్యం (ఉన్నతమైన మనస్సు).

మరియు మేము క్యూబెకర్స్తో మాట్లాడుతున్నాము కాబట్టి, చాలా మంచి కారణాల వల్ల, మతం వారికి ఇచ్చిన ఆధ్యాత్మిక ప్రపంచానికి కొంత సామీప్యాన్ని అనుభవించే అవకాశం ఉన్న వ్యక్తులతో మేము మాట్లాడుతున్నాము కాబట్టి, ఈ కోణంలో మనకు ఇప్పటికే పురోగతి ఉంది. అప్పటికే, మనం అదృశ్యమైన వాటి పట్ల ఇప్పటికే కొంత సున్నితత్వాన్ని కలిగి ఉన్న జీమలం.

కానీ అక్కడి నుండి చైతన్యం కోసం లోతైన క్షుద్ర శోధనలోకి ప్రవేశించే వరకు, ఆత్మీయమైన మార్గాన్ని ఉపయోగించి స్వీయ ధ్రువణానికి నేరుగా తీసుకెళుతుంది. ఇది మంచి మరియు చెడు, నిజం మరియు అబద్ధాల సంఘర్షణకు మనలను తీసుకువస్తుంది మరియు ఇది మన మనస్సులో గొప్ప బాధను సృష్టిస్తుంది.

అందుకే నేను చెప్తున్నాను: స్పృహతో కూడిన మనిషి, భూమిపై ఉన్న అత్యున్నత స్పృహ (ఉన్నత మనస్సు) యొక్క పరిణామం మనిషి తన ఆలోచనను నిజం మరియు నకిలీకి గురి చేయకూడదని ఇప్పటికే అర్థం చేసుకున్న క్షణం నుండి ప్రారంభమవుతుంది. కానీ క్రమంగా జీవించడం నేర్చుకోవడం మరియు ఈ ఆలోచన ఒక రోజు పరిపూర్ణం అయ్యే వరకు దాని కదలికకు మద్దతు ఇవ్వడం, అంటే పూర్తిగా దాని స్వంత కాంతిలో, పూర్తిగా డిపోలరైజ్ చేయబడి, చివరకు అతను అహం, నేను... అహం, ఆత్మ మరియు ఆత్మ ఏకీకృతమై మనిషిని నిజమైన జీవిగా మారుస్తుంది.

అసలు జీవి అంటే ఏమిటి? నిజమైన జీవి నిజమైన జీవి! అతను సత్యం అవసరం ఉన్న జీవి కాదు, అతను సత్యాన్ని తినే జీవి కాదు. మీరు సత్యాన్ని తింటే, రేపు మీరు అబద్ధాన్ని తింటారు, ఎందుకంటే మిమ్మల్ని వాస్తవికత యొక్క అనంతమైన పరిమితులకు మరింత ముందుకు తీసుకెళ్లే వ్యక్తులు ఉంటారు. మీరు సత్యాన్ని తింటే, ఒక రోజు మీరు మళ్ళీ ఈ అడుగు వేయవలసి ఉంటుంది, ఎందుకంటే మనిషికి సరిపోయేది, అతని మనస్సాక్షికి సరిపోతుంది, అతని ఆత్మకు సరిపోతుంది, అది అతని ఆత్మకు సరిపోతుంది, అది అతని అహంకారానికి సరిపోతుంది. , శాంతి.

అయితే శాంతి అంటే ఏమిటి? శాంతి అనేది ఆగిపోవడం, శోధన యొక్క ఆగిపోవడం. మీరు చెప్పబోతున్నారు: " అవును, కానీ మీరు వెతకాలి" , నేను చెప్తున్నాను: అవును, మనిషి వెతుకుతున్నాడు, మీ కోసం మీరు వెతుకుతున్నప్పటికీ, మనుషులందరూ వెతుకుతున్నారు, కానీ పరిణామ సమయంలో మనిషి వెతుకుతున్న ఒక పాయింట్ వస్తుంది. ఇక అన్వేషణ ఉండదు, మనిషి ఇక శోధించనవసరం ఉండదు, చివరకు తనకు తెలుసని తెలుసుకున్నప్పుడు మనిషి శోధనను ఆపివేస్తాడు.

మరియు అక్కడ మీరు ఇలా చెప్పబోతున్నారు: " అవును, కానీ ఒకరికి తెలుసు అని ఎలా తెలుసుకోగలరు"... మీరు దానిని భరించడానికి మిమ్మల్ని అనుమతించినంత వరకు మీకు తెలుస్తుంది, కనుక మీరు తెలుసుకోవడానికి ఎవరికీ కాల్ చేయవలసిన అవసరం ఉండదు. మీరు సరైనది అయితే. ఆపై మీరు ఇలా చెప్పబోతున్నారు: “ అవును, కానీ మనం సరైనది అయితే లేదా మనం సరైనది అని అనుకుంటే, అది ప్రమాదకరం". నేను చెప్తాను: అవును, ఎందుకంటే సరైనదిగా ఉండాలని కోరుకునే వ్యక్తి ఇప్పటికే తన కారణాన్ని వెతుకుతున్న వ్యక్తి!

కానీ మీ జీవితంలో, మీ దైనందిన జీవితంలో, మీ వ్యక్తిగత మూలాలలో అనుభవాలు లేవు, మీ జీవితంలో మీకు తెలిసినది అదే అని మీరు భావించే సందర్భాలు లేదా? మరియు అది ఉన్నప్పుడు, అంతే!

అది ఇది" మరొక “ అది" అని మరొక “ అది", కానీ “ ఇది ఇదే" అని జోడించగల సామర్థ్యం ఉన్నవారు నిజమే, మనస్సు యొక్క అహంకారంపై నిర్మించబడని “ ఇది ఇది" , “ ఇది ఇది" ఇది ఆధ్యాత్మికతపై లేదా మీ ఆధ్యాత్మికత యొక్క అహంకారంపై నిర్మించబడదు, “అది ఇది" వ్యక్తిగతమైనది మీకు, " అది" అనేది మీరు కలిసే మరియు వారి " అది" లో ఉన్నవారందరితో విశ్వవ్యాప్తం అవుతుంది , ఆ క్షణంలో మీకు ఇది తెలుస్తుంది !) (ఈ పేరాని అనువదించలేకపోతే తొలగించండి) .

தமிழ்

பெர்னார்ட் டி மாண்ட்ரீலின் 2 மாநாடுகளின் படியெடுத்தல் மற்றும் மொழிபெயர்ப்பு.



தற்காலிக வடிவம்

இந்த புத்தகம் செயற்கை நுண்ணறிவால் மொழிபெயர்க்கப்பட்டுள்ளது, ஆனால் ஒருவரால் சரிபார்க்கப்படவில்லை. இந்த புத்தகத்தை மதிப்பாய்வு செய்வதன் மூலம் நீங்கள் பங்களிக்க விரும்பினால், எங்களை தொடர்பு கொள்ளவும்.

எங்கள் வலைத்தளத்தின் முதன்மைப் பக்கம்: http://diffusion-bdm-intl.com/

எங்கள் மின்னஞ்சல்: contact@diffusion-bdm-intl.com

உள்ளடக்கங்கள்

முழு பரவல் BdM Intl குழுவின் வாழ்த்துக்கள்.

பியர் ரியோபெல் ஏப்ரல் 18, 2023

அத்தியாயம் 1

அடையாளம் *CP036*

மற்றவர்களுக்கு எதிரான சுய-அடையாளம் என்பது ஒரு உலகளாவிய மனிதப் பிரச்சனை. நவீன சமுதாயம் போன்ற சிக்கலான சமூகத்தில் மனிதன் வாழும்போது இந்தப் பிரச்சனை அதிகரிக்கிறது. தன்னைப் பிறருடன் ஒப்பிட்டுப் பார்க்கும் வயதிலிருந்தே அவனைப் பின்தொடரும் ஈகோவின் வாழ்க்கையின் துன்பம்தான் அடையாளப் பிரச்சனை. ஆனால் அடையாளப் பிரச்சனை என்பது ஒரு தவறான பிரச்சனை, ஈகோ, தன்னைத் தானே உணர்ந்து கொள்வதற்குப் பதிலாக, அதாவது தன் சொந்த அளவின்படி, பாதிக்கப்படும் மற்ற ஈகோக்களுக்கு எதிராக தன்னைப் போட்டியாக உணர முயல்கிறது . , அவரைப் போலவே அதே பிரச்சனையில் இருந்து.

தன் பூக்களை ரசிப்பதற்காக தன் வேலிக்கு அப்பால் மற்றவரின் வயல்களை ஈகோ பார்க்கும்போது, மற்றவர் தனக்கும் அதையே செய்கிறார் என்பதை பார்க்கத் தவறிவிடுகிறது. இன்று மனிதனின் அடையாளம் அல்லது அடையாள நெருக்கடி மிகவும் கடுமையானது, அது தன்னம்பிக்கை இழப்பை ஏற்படுத்துகிறது, இது காலப்போக்கில் தனிப்பட்ட நனவை இழக்கிறது. ஆபத்தான சூழ்நிலை, குறிப்பாக ஈகோ ஏற்கனவே பலவீனமான தன்மை மற்றும் பாதுகாப்பின்மைக்கு ஆளானால்.

அடையாளச் சிக்கல், அதாவது தன்னைப் போல் தன்னை உயர்வாகக் கருதாத ஈகோவின் இந்தப் பண்பு, உண்மையில் படைப்பாற்றலின் பிரச்சனை. ஆனால் ஈகோ ஆக்கப்பூர்வமாக இருக்கும்போது, அடையாளத்தின் சிக்கல் அகற்றப்படுவதில்லை, ஏனென்றால் தன் சுயத்தின் மாயையை உணரும் வரை ஈகோ தன்னுடன் முழுமையாக திருப்தி அடைவதில்லை. குறைந்த அந்தஸ்து கொண்ட ஈகோ, உயர் நிலை ஈகோ போன்ற அதே அடையாளச் சிக்கலை அனுபவிக்கும், ஏனென்றால் அவருக்கும் மற்றொருவருக்கும் இடையிலான ஒப்பீடு அளவுகளில் மட்டுமே மாறும், ஆனால் எப்போதும் இருக்கும், ஏனெனில் ஈகோ எப்போதும் முன்னேற்ற சக்தியில் இருக்கும். மேலும் அவர் தனக்காகத் தேடும் முன்னேற்றத்திற்கு முடிவே இல்லை.

ஆனால் சுய முன்னேற்றம் என்பது ஒரு போர்வையாகும், அது உங்களுக்கு மகிழ்ச்சியாக வாழ சில காரணங்களை வழங்குவதற்காக ஈகோ மறைக்கிறது. ஆனால் அனைத்து முன்னேற்றங்களும் ஏற்கனவே ஆசை உடலால் உருவாக்கப்பட்டவை என்பது அவருக்குத் தெரியாதா?

அடையாளப் பிரச்சனை மனிதனில் உண்மையான நுண்ணறிவு உணர்வு இல்லாததால் வருகிறது. மனிதன் தனது அறிவாற்றலால் வாழும் வரை, புலன் அனுபவத்தால் மட்டுமே அவனது கருத்துக்கள் ஆதரிக்கப்படும், அவன் தனக்குத் தெரியும் அல்லது புரிந்துகொள்கிறான் என்று நினைப்பதை, தீர்மானிக்கப்படாத புத்திசாலித்தனத்தின் முழுமையான மதிப்பின் மூலம் ஈகோசென்ட்ரிக் அனுபவத்தின் மூலம் மாற்றுவது கடினம்.

மனிதன் தன் முத்திரையைப் பதிக்க, வாழ்க்கையில் தன்னை வெளிப்படுத்த விரும்பும் வரை, அவன் இந்த ஆசையால் அவதிப்படுகிறான். அவர் தனது விருப்பத்தை அடைய முடிந்தால், மற்றொருவர் அவரை பின்னால் தள்ளுவார், மற்றும் பல. அதனால்தான், மனிதனில், எந்த வகையான தோல்வியும் அவனுக்கு எந்த அடையாள நெருக்கடியையும், அவனது நிலை என்னவாக இருந்தாலும், அடையாளப் பிரச்சினை வெற்றியின் பிரச்சினை அல்ல, மனசாட்சியின் பிரச்சினை. .

உண்மையான புத்திசாலித்தனம் புத்தியைக் கட்டுப்படுத்துகிறது என்பதைத் தன் வாழ்நாளில் கண்டறிந்த மனிதன், அடையாளப் பிரச்சனையால் குறைவாகவே அவதிப்படத் தொடங்குகிறான். அவனுடைய அடையாளம் தனக்குப் பொருத்தமான வாழ்க்கை முறைக்கு ஒத்துப்போகும் போதுதான், படைப்பாற்றல் எண்ணற்ற வடிவங்களை எடுக்க முடியும் என்பதையும், ஒவ்வொரு மனிதனுக்கும் அவனது மனதிற்கு ஏற்றவாறு படைப்பாற்றல் இருக்கும் என்பதையும் அவன் உணர்வான். இந்த வடிவத்தில் இருந்து அவர் தனது ஆசை உடல் மற்றும் அவரது படைப்பு நுண்ணறிவின் அடிப்படையில் சரியான இணக்கத்துடன் வாழ முடியும்.

ஆக்கப்பூர்வமாக இருப்பது என்பது உலகத்தை மாற்றுவதைக் குறிக்காது, ஆனால் தனக்குத்தானே ஒரு சரியான வழியில் செய்வது, அதனால் உள் உலகம் வெளிப்புறமாக இருக்கும். உலகம் இப்படித்தான் மாறுகிறது: எப்போதும் உள்ளே இருந்து வெளியே, எதிர் திசையில் இல்லை. மேலோட்டமானவர் அடையாளப் பிரச்சனையை உணரத் தொடங்குகிறார். அவன் என்னவாக இருக்கிறானோ அது இன்னும் ஓரளவுக்கு இருப்பதை அவன் காண்கிறான். ஆனால் அவரது உடல்கள் மாறும்போது, அவரது நனவு வளர்வதையும், அடையாளத்தின் சிக்கல் மெதுவாக மறைந்துவிடுவதையும் அவர் காண்கிறார், முன்பு மயக்கத்தில் இருந்த ஈகோவின் மேற்பரப்பில்.

மேலோட்டமாக இருப்பதில் உள்ள அடையாளச் சிக்கலை படிப்படியாக நீக்குவது, இறுதியாக அவர் தனது வாழ்க்கையை அவர் உண்மையில் பார்க்கிறபடி வாழவும், தன்னைப் பற்றி சிறப்பாகவும் சிறப்பாகவும் இருக்க அனுமதிக்கிறது. அடையாளத்தால் தவிப்பது போன்ற கடினமான ஒன்று மனிதனில் இல்லை. அவர் உண்மையில் மாயையான வடிவங்களால் அவதிப்படுகிறார், அதாவது அவர் புத்திசாலித்தனமாக இல்லாததால், அதாவது, அவரிடம் உள்ள படைப்பு நுண்ணறிவை அறிந்தவர் என்ற உண்மையின் காரணமாக அவர் புதிதாக உருவாக்குகிறார்.

அடையாளத்தின் ஒரு பக்கம் சில சமயங்களில் அவமானம், மற்றவற்றில் சங்கடம், பெரும்பான்மையினரில் பாதுகாப்பின்மை. சமூக சிந்தனையின் வலையில் சிக்கிய மனதின் சமூகப் பிரதிபலிப்பு மட்டுமே நல்ல ஒழுக்கமுள்ள ஒருவன் வெட்கத்துடன் வாழ்வது ஏன்? மற்றவர்கள் என்ன நினைக்கிறார்களோ அதை உடனடியாக அகற்ற முடியாமல் ஈகோவால் வரும் சங்கடமும் உண்மைதான். மற்றவர்கள் என்ன நினைக்கலாம் என்று வெட்கப்படும் அகங்காரம் நீங்கிவிட்டால், அவரது சங்கடம் மறைந்துவிடும், மேலும் அவர் தனது உண்மையான அடையாளத்தை விரைவாக அணுக முடியும், அதாவது, ஒரு மனிதனை தனது சொந்த நாளின் வெளிச்சத்தில் எப்போதும் பார்க்க வைக்கும் இந்த மனநிலை.

மனிதனில் மையத்தன்மை இல்லாததால் அடையாளச் சிக்கல் வருகிறது. இந்த இல்லாமை, புத்திசாலித்தனத்தின் ஊடுருவும் சக்தியைக் குறைக்கிறது, இது மனிதனை அவனது அறிவுக்கு அடிமையாக்குகிறது, மனதின் விதிகளையோ அல்லது மனதின் வழிமுறைகளையோ அறியாத அவனுடைய ஒரு பகுதியாகும். அதனால் மனிதன் தன் அனுபவத்திற்கு விடப்பட்டான், அவனுடைய புத்திசாலித்தனத்தில் வெளிச்சம் இல்லை, மேலும் மனிதனின் இயல்பு பற்றிய மற்றவர்களின் கருத்தை ஏற்றுக்கொள்ள வேண்டிய கட்டாயத்தில் இருக்கிறான்.

மனிதன் தன்னைப் பற்றி வியந்தால், அவனைப் போலவே இந்த இன்னொரு மனிதனும் இருந்தால், இன்னொரு மனிதனால் அவனுக்கு அறிவூட்டுவது எப்படி சாத்தியமாகும்? ஆனால் மனிதன் இதை உணரவில்லை, மேலும் நிகழ்வுகளால் ஈகோவுக்கு எதிராக செலுத்தப்படும் அழுத்தத்தின்படி அவனது அடையாளப் பிரச்சனை மோசமடைகிறது.

மனதில் உள்ள ஈகோ சந்தேகத்திற்கு இடமின்றி அதன் உண்மையான புத்திசாலித்தனத்துடன் சரிசெய்யப்படாத அதன் சிந்தனை முறையால் சிக்கியுள்ளது. இந்த சிந்தனை முறை அவரது புத்திசாலித்தனத்தின் உண்மைக்கு முரணானது, ஏனென்றால் அவர் தனது உள்ளுணர்வின் மூலம் தனது புத்திசாலித்தனத்தை உணர்ந்தால், எடுத்துக்காட்டாக, அவர் அதை முதலில் மறுப்பார், ஏனென்றால் புத்திக்கு உள்ளுணர்வில் நம்பிக்கை இல்லை. அவர் அதை ஒரு பகுத்தறிவற்ற பகுதியாக பார்க்கிறார். புத்தி பகுத்தறிவு அல்லது பகுத்தறிவு என்று கூறப்படுவதால், அதற்கு எதிரான எதையும் புத்திசாலித்தனமாக அங்கீகரிக்க முடியாது. இன்னும், உள்ளுணர்வு உண்மையில் உண்மையான புத்திசாலித்தனத்தின் வெளிப்பாடாகும், ஆனால் இந்த வெளிப்பாடு ஈகோவால் அதன் முக்கியத்துவத்தையும் புத்திசாலித்தனத்தையும் புரிந்து கொள்ள முடியாத அளவுக்கு பலவீனமாக உள்ளது. பின்னர் அவர் தனது பகுத்தறிவுக்குத் திரும்புகிறார், மேலும் அவரது அடையாளப் பிரச்சினையில் வெளிச்சம் போடக்கூடிய மனதின் நுட்பமான வழிமுறைகளைக் கண்டறியும் வாய்ப்பை இழக்கிறார்.

ஆனால், அறிவாற்றல் வெளியேறாத வரையிலும், அகங்காரம் தனக்குச் செவிசாய்க்காத வரையிலும், அடையாளப் பிரச்சனை மனிதனிடம் இருக்க வேண்டும். ஈகோ தனக்குள் இருக்கும் உண்மையான புத்திசாலித்தனத்தின் தன்மை மற்றும் வடிவத்தை உணர்ந்தால், அது படிப்படியாக சரிசெய்து, அந்த புத்திசாலித்தனத்தில் தனது வீட்டை மேலும் மேலும் உருவாக்குகிறது. காலப்போக்கில், அவர் மேலும் மேலும் தொடர்ந்து அங்கு செல்கிறார், மேலும் அவர் தன்னைப் பற்றி நினைத்ததெல்லாம் அவரது உண்மையான புத்திசாலித்தனத்தின் உளவியல் மற்றும் மன சிதைவு, அவரது பகுத்தறிவின் உயரமான சுவர்களைத் தாண்டிச் செல்ல இயலாது என்பதை உணர்ந்ததால், அவரது அடையாளச் சிக்கல் நீங்குகிறது.

ஒரு சிக்கலான சமூகத்தில், நமக்குத் தெரிந்தபடி, அகங்காரத்தின் உள் வலிமை, அதன் உண்மையான புத்திசாலித்தனம் மட்டுமே அதை கருத்துகளின் பட்டைக்கு மேலே உயர்த்தி அதன் உண்மையான அடையாளத்தின் பாறையில் அமைக்க முடியும். மேலும் சமூகம் எவ்வளவு சிதைவடைகிறதோ, அந்த அளவுக்கு அதன் பாரம்பரிய விழுமியங்கள் சிதைகின்றன, அகங்காரம் அழிவின் பாதையில் செல்கிறது, ஏனென்றால், நவீனத்தின் பெருகிய முறையில் திகைப்பூட்டும் நிகழ்வின் முகத்தில் நிற்கும் முறையான சமூக சாரக்கட்டு இல்லை. வாழ்க்கை.

ஆனால் ஈகோ தனது சொந்த மர்மத்தைப் புரிந்துகொள்வதற்கான அத்தியாவசிய திறவுகோல்களைக் கொடுக்கக்கூடியவர்களின் பேச்சைக் கேட்க எப்போதும் தயாராக இல்லை. ஏனெனில் அவரது உளவியல் சிதைவு ஏற்கனவே அவரது அகநிலை சிந்தனைக்கு ஒத்துப்போகாத அனைத்தையும் கேள்விக்குள்ளாக்குகிறது. அதனால்தான் தன்முனைப்பு மேலும் பார்க்க மறுப்பதற்காக அதிகமாக குற்றம் சாட்ட முடியாது, ஆனால் அது இன்று மேலும் பார்க்க முடியாவிட்டாலும், நாளை அவனில் ஆற்றலின் ஊடுருவலுக்கு ஏற்ப அதன் பார்வை விரிவடையும் என்பதை உணர முடியும்.

ஏனெனில் உண்மையில், தன் சுய முயற்சியால் தன் அடையாளச் சுவரை வெல்லும் அகங்காரம் அல்ல, துன்பத்தால் அதைக் கொண்டுவரும் ஆன்மா, அதாவது தன் ஒளியின் ஊடுருவலால், புத்தி, அதிர்வு ஆகியவற்றைப் பதிவு செய்ய வேண்டும். உளவுத்துறை. இந்த அதிர்வு அதிர்ச்சி முடிவின் தொடக்கமாகிறது.

உண்மையானதைத் திறக்கும் பெருமை குறைவான ஈகோக்கள் உள்ளன , ஏனென்றால் ஒரு வகையான பணிவு ஏற்கனவே அவர்களின் சொந்த வெளிச்சத்திற்கு அவர்களை முன்வைக்கிறது. மறுபுறம், இந்த ஒளியைக் கடந்து செல்ல முடியாத அளவுக்கு ஈகோக்கள் உள்ளன, இந்த சிறந்த நூல். மேலும் பெரிய திருப்பங்கள், பெரிய பின்னடைவுகள் போன்றவற்றுக்கு அதிக வாய்ப்புள்ள ஈகோக்கள் தான் அவற்றைத் தட்டிச் சென்று அவற்றை மிகவும் யதார்த்தமாக்குகின்றன.

அடையாள நெருக்கடி மனிதனின் முதிர்ச்சியின்மையுடன் அடையாளம் காணப்படுகிறது. உண்மையான அடையாளம் உண்மையான முதிர்ச்சியின் வளர்ச்சியை நிரூபிக்கிறது.

ஆன்மா அதன் செயல்களில் ஈகோவிலிருந்து சுயாதீனமாக உள்ளது, மேலும் பிந்தையது வீட்டில் தன்னை வலுவாக உணராத வரையில் நல்ல விளையாட்டு உள்ளது. ஈகோ அறியாத இந்த தருணம். அவர் வெளிப்படும் போது, அவர் தனது வீண், பெருமை, அவர் மீது கொண்ட மோகம், அவரது கருத்துக்கள், அழுத்தத்தில் ஒரு முட்டை போல் வெடிப்பதை உணர்கிறார்.

ஆன்மாவின் துன்பத்திற்கு அதன் காரணங்கள் உள்ளன, அவை ஈகோவால் முதலில் புரிந்து கொள்ள முடியாது, ஆனால் அது வாழ உதவாது. ஆன்மா தான் இயங்குகிறது. அவர் ஒரு கட்டத்தில் இருந்து மற்றொரு நிலைக்கு நகரும் நேரம் இது. தொடக்கத்தில் அவன் அனுபவித்த அடையாளச் சிக்கல், தன்னைத்தானே மாற்றிக் கொள்கிறது, அவனது பெருமையும் குழந்தை விளையாட்டைப் போல் சரிந்து விடுகிறது. ஈகோ அதிகமாகவோ அல்லது குறைவாகவோ பெருமையாக இருந்தாலும், அது அனைத்தும் பாதுகாப்பின்மைக்கு வரும். பெரும்பாலும் ஒருவர் " திடமான", "வலுவான" ஈகோக்கள் என்று அழைக்கப்படுபவர்களை சந்திக்கிறார் , யாருக்காக உண்மையானது தூய கற்பனை; இந்த ஈகோக்கள் தான் தங்கள் அடையாளத்தில் மிகவும் பாதிப்பை ஏற்படுத்துகின்றன, ஆன்மா மன மற்றும் உணர்ச்சிகளை அதிர்வுறும் போது, வாழ்க்கை நிகழ்வுகளின் அழுத்தத்தின் கீழ், ஈகோ இனி கட்டுப்படுத்த முடியாது.

இந்த கடினமான அனுபவங்களின் போது, ஈகோ அதன் பலவீனத்தின் உண்மையான வெளிச்சத்தில் தன்னைப் பார்க்கத் தொடங்குகிறது. அங்குதான் அவனது புத்தியின் பெருமை மேலோங்கியிருந்த அவனது பொய்யான அடையாளத்தின் பாதுகாப்பு ஒளியின் அதிர்வு அழுத்தத்தில் வெடிப்பதைக் காண்கிறான். பின்னர் அவர் மாறுகிறார், அவர் இனி அதே போல் இல்லை அல்லது அவர் கஷ்டப்படுகிறார் என்று கூறப்படுகிறது. இது ஆரம்பம் மட்டுமே, ஏனென்றால் ஆன்மா தவறான அடையாளத்தின் சுவர்களை வெடிக்கத் தொடங்கும் போது, அது அதன் வேலையை நிறுத்தாது. ஏனென்றால், மனிதனுக்குள் உணர்வு, புத்திசாலித்தனம் மற்றும் உண்மையான விருப்பம் மற்றும் அன்பின் இறங்குவதற்கான நேரம் வந்துவிட்டது.

தன் தவறான அடையாளத்திலிருந்து வலுவாக உணரும் ஈகோ, அதிர்வு அதிர்ச்சியை உணரும்போது ஒரு நாணலாக பலவீனமாக உணர்கிறது. பின்னர்தான் அவர் தனது சக்திகளை, ஆன்மாவின் சக்திகளை மீண்டும் பெறுகிறார், மேலும் அவரது ஆசை உடலின் தவறான சக்தியை அல்ல, உணர்ச்சியையும் கீழ் மனதையும் வளர்க்கும் வடிவத்தில்.

மனிதனின் அடையாள நெருக்கடி ஆன்மாவின் வெளிச்சத்திற்கு ஈகோவின் எதிர்ப்பிற்கு ஒத்திருக்கிறது. இந்த கடிதப் பரிமாற்றம் ஈகோவின் வாழ்க்கையில் இந்த எதிர்ப்பிற்கு விகிதாசாரமாக ஒரு துன்பத்தை உள்ளடக்கியது. மற்றும் அனைத்து எதிர்ப்புகளும் பதிவு செய்யப்படுகின்றன, இருப்பினும் இது உளவியல் ரீதியாக அல்லது அடையாளமாக அல்லது தத்துவ ரீதியாக ஈகோவால் உணரப்படுகிறது. ஏனென்றால், ஆன்மாவைப் பொறுத்தவரை, மனிதனில் உள்ள அனைத்தும் ஆற்றல், ஆனால் மனிதனுக்கு, அனைத்தும் சின்னம். அதனால்தான் மனிதன் பார்ப்பது மிகவும் கடினம், ஏனென்றால் இந்த வடிவங்களிலிருந்து விடுபட்டவுடன், அவன் பார்ப்பது அதிர்வு மூலம் இருக்கும், வடிவத்தின் சின்னம் வழியாக அல்ல. அதனால்தான், உண்மையானது வடிவத்தால் புரிந்து கொள்ளப்படவில்லை, ஆனால் அதிர்வுகளால் அறியப்படுகிறது, இது தன்னை வெளிப்படுத்தும் வகையில் வடிவத்தை உருவாக்குகிறது மற்றும் உருவாக்குகிறது.

அடையாளச் சிக்கல் எப்பொழுதும் சிம்பாலாஜியின் உபரியைத் தூண்டுகிறது, அதாவது மனிதனில் உள்ள அகநிலை சிந்தனை வடிவங்கள். இந்த உபரி, எந்த நேரத்திலும், எண்ண வடிவ சின்னத்தின் மூலம் ஈகோவைத் தொடர்பு கொள்ள ஆன்மாவின் முயற்சியுடன் ஒத்துப்போகிறது, அதுவே மனதிற்குள் அதை ஈகோவாக மாற்றுவதற்கான ஒரே வழி.

அகங்காரம், ஆழமான காரணங்களைப் புரிந்து கொள்ளாமல், அது தன்னைப் போலவே தன்னை நிலைநிறுத்திக் கொள்ள முயல்கிறது என்பதை உணர்ந்து கொள்கிறது. ஆனால் அவர் இன்னும் தனது சிந்தனை வடிவங்களில், உணர்ச்சிகளின் கைதியாக இருப்பதால், அவர் தனது இயக்கத்தில், தனது இயக்கத்தில் தன்னை நம்புகிறார்! அதாவது, இந்த ஆராய்ச்சி செயல்முறை தன்னிடமிருந்து மட்டுமே வெளிப்படுகிறது என்று அவர் நம்புகிறார். மேலும் இது அதன் அகில்லெஸ் ஹீல் ஆகும், ஏனென்றால் ஈகோ என்பது சரி மற்றும் தவறு என்ற மாயையில், சுதந்திரமான விருப்பத்தின் மாயையில் உள்ளது.

ஆன்மாவின் ஆற்றல் ஊடுருவி, தவறான அடையாளத்தின் தடையை உடைக்கும்போது, ஈகோ பின்னர் அவர் சரியாக இருக்க வேண்டியதில்லை, ஆனால் அவரது உண்மையான புத்திசாலித்தனத்தை அணுக வேண்டும் என்பதை உணர்ந்துகொள்கிறது. பின்னர் அவர் புரிந்து கொள்ள ஆரம்பிக்கிறார். மேலும் அவர் என்ன புரிந்து கொள்கிறார்களோ அதே புத்திசாலித்தனத்தில் இல்லாதவர்களுக்கு அவர்களின் நல்லெண்ணம் புரியாது. எல்லாமே சின்னத்திற்கு வெளியே இருப்பதால், எல்லாமே **அதிர்வுற்றது** .

ஈகோவும் ஆன்மாவும் ஒன்றுக்கொன்று ஒத்துப்போகும் போது அடையாளப் பிரச்சனை நினைத்துப் பார்க்க முடியாதது, ஏனென்றால் ஈகோ இனி யதார்த்தத்தின் "மூடலை " *(கவர்)* அதன் பக்கத்திலிருந்து இழுக்காது, அதே நேரத்தில் ஆன்மா மற்றொன்றில் வேலை செய்கிறது. இருவருக்கும் இடையே கடித தொடர்பு உள்ளது, மேலும் ஆளுமை பயனாளி. ஏனெனில் ஆன்மாவிற்கும் ஈகோவிற்கும் இடையிலான இடைவெளிக்கு ஆளுமை எப்போதும் பலியாகிறது.

மனிதனுக்கு அடையாளப் பிரச்சனை இருக்கும் வரை அவன் மகிழ்ச்சியாக இருக்க முடியாது. ஏனென்றால், மேலோட்டமாகப் பார்த்தால் அவனது ஜட வாழ்க்கை நன்றாகப் போவதாகத் தோன்றினாலும் அவனுடைய வாழ்க்கையில் பிரிவு இருக்கிறது. அது உண்மையில் தன்னை ஒருமைப்பாடு விகிதத்தில் நன்றாக செல்ல முடியும்.

நவீன மனிதனின் அடையாள நெருக்கடி ஏற்கனவே போதுமான பின்னடைவைச் சந்தித்தவர்களை மட்டுமே சாதகமாக பாதிக்கிறது. ஆனால் ஆன்மாவின் நுண்ணிய ஆற்றலைக் கையாள ஈகோ அதன் சித்திரவதைக் கருவிகளை ஒதுக்கிவிட்டால் மட்டுமே சமநிலைக்கான இந்த ஆசை முழுமையாக உணரப்படும். பெரிய ஆன்மீகம் இருக்கும் மனித வாழ்வில், அடையாள நெருக்கடி என்பது, இந்த அகத்தின் மீதான அகங்காரத்தின் பெரும் உணர்திறனை ஒருவர் சந்திக்காததை விட, தீவிரமானதாக இருக்கலாம். பெரியது, மேலும் மேலும் தேடப்பட்டது மற்றும் இறுதியில் மேலும் மேலும் அபூரணமானது.

மனித நேயத்தின் இந்த வகையைச் சேர்ந்தவர்கள், எல்லா வடிவங்களும், மிக உயர்ந்த, மிக அழகானவை, ஆன்மாவின் உண்மையான முகத்தை மறைக்கின்றன என்பதைக் காண வேண்டும், ஏனென்றால் ஆன்மா அகங்காரத்தின் விமானத்தில் இல்லை; அது எல்லையற்றுப் பார்க்கிறது, மேலும் ஈகோ வடிவத்தில், ஆன்மீக வடிவத்துடன் கூட அதிகமாக இணைக்கப்படும்போது, அது ஆன்மா வழியாகச் செல்ல வேண்டிய அண்ட ஆற்றலில் குறுக்கிடுகிறது மற்றும் ஆன்மாவின் அனைத்து கீழ்நிலை கொள்கைகளின் அதிர்வு விகிதத்தை உயர்த்துகிறது. 'மனிதன், அதனால் அவன் வாழ்க்கையின் எஜமானர் ஆகலாம். மேலான (உயர்ந்த மன) மனிதன் வாழ்க்கையின் தலைவனாக இருக்கும்போது, அவன் இனி ஆன்மாவின் விமானத்திற்கு ஆன்மீக ரீதியில் இழுக்கப்பட வேண்டியதில்லை, ஏனென்றால் அது ஆன்மா, அவனது ஆற்றல், அவனை நோக்கி இறங்கி, அவனுடைய ஒளியின் சக்தியை அவனுக்கு கடத்துகிறது. .

மனிதனின் ஆன்மீக அடையாளம் ஆன்மாவின் ஆற்றல் வடிவத்தின் மூலம் அவனுக்குள் இருப்பது. ஆனால் இந்த ஆற்றல் ஆளுமையின் மீது மாற்றும் ஆற்றலைக் கொண்டிருந்தாலும், மாற்றும் சக்தியைக் கொண்டிருக்கவில்லை.

ஆனால் ஆளுமையின் மாற்றம் மட்டும் போதாது, ஏனென்றால் அது மனிதனின் கடைசி அம்சமாகும். ஆன்மாவுடன் அகங்காரமும் ஒன்றுபடாத வரை, ஆன்மீக ஆளுமை மனிதனை அவனது ஒழுக்க நெறிகளை விரைவாக மாற்றுவதற்கு எளிதாக இட்டுச் செல்லும். ஆன்மீகத்தின் கடுமையான நெருக்கடி, மத வெறி.

எனவே, கடுமையான ஆன்மீக மனிதன் கூட தனக்கும் சமூகத்திற்கும் தீங்கு விளைவிக்க முடியும். மதவெறி என்பது ஒரு ஆன்மீக நோயாகும், மேலும் அதிலிருந்து பாதிக்கப்படுபவர்கள், ஆன்மீக வடிவத்தை குறிப்பாக சுரண்டுவதால், மற்றவர்களிடம் ஒரு ஈர்ப்பை உருவாக்க முடியும், அவர்களை சிறந்த விசுவாசிகளாக ஆக்குகிறது, அதாவது - புதிய அடிமைகளை வடிவத்திற்குச் சொல்லுங்கள். அவரைப் போன்ற அறியாமை, ஆனால் இந்த வகையான நோய்க்கு அதிக உணர்வற்றவர்களின் அடிபணிந்த நம்பிக்கையால் அவர் உதவினால், ஆன்மீக ரீதியில் நோயாளிகள் மட்டுமே இடத்தில் வைத்திருக்கக்கூடிய பீடத்தின் மீது வெறித்தனத்தால் வளர்க்கப்படுகிறார்கள்.

அதிகமான ஆண்கள், வெறித்தனமாக ஆன்மீகமாக மாறாமல், அவர்களின் ஆன்மீகத்தில் மிகவும் ஈர்க்கப்படுகிறார்கள் மற்றும் அதன் வரம்புகளை, அதாவது உருவத்தின் மாயைகளை அறியவில்லை. விரைவில் அல்லது பின்னர் அவர்கள் கடந்த காலத்தைப் பார்த்து, அவர்கள் ஆன்மீகத்தின் மாயைக்கு பலியாகியிருப்பதை உணர்கிறார்கள். எனவே அவர்கள் தங்களை வேறொரு ஆன்மீக வடிவத்திற்குத் தள்ளுகிறார்கள், மேலும் இந்த சர்க்கஸ் பல ஆண்டுகளாக தொடரலாம், அந்த நாள் வரை, மாயையால் வெறுப்படைந்து, அவர்கள் அதிலிருந்து நிரந்தரமாக வெளியே வந்து, உணர்வு வடிவத்திற்கு அப்பாற்பட்டது என்பதை உணரும் வரை. இவை வடிவத்தின் வரம்புகளைத் தாண்டி இறுதியாக உயர்ந்த மனதின் சிறந்த சட்டங்களைக் கண்டறியும் வாய்ப்பைப் பெற்றுள்ளன.

ஆன்மீக அடையாளத்தின் நெருக்கடி இந்த நேரத்தில் அவர்களுக்கு சாத்தியமில்லை. ஏனென்றால், தன் சொந்த அனுபவத்திலிருந்து, எல்லாமே அகங்காரத்திற்கு எதிரான ஆன்மாவின் அனுபவத்திற்கு சேவை செய்கின்றன என்பதை அவர்கள் அறிவார்கள், அந்த ஈகோ அனுபவத்தின் அவசியத்தை விட்டு வெளியேறும் நாள் வரை, அவரில் உள்ள மேலான உணர்வை (உயர்ந்த மனதை) மட்டுமே அறிய வேண்டும்.

ஆன்மீக அடையாளத்தின் நெருக்கடி பெருகிய முறையில் நவீன காலத்தின் நெருக்கடியாக மாறி வருகிறது. ஏனெனில் மனிதனால் தொழில்நுட்பம் மற்றும் அறிவியலை மட்டும் நம்பி வாழ முடியாது. அவருக்கு வேறு ஏதாவது நெருக்கமாக இருக்க வேண்டும், அறிவியலால் அதை அவருக்கு வழங்க முடியாது. ஆனால் ஆர்த்தடாக்ஸ் மதத்தின் பழைய வடிவமும் இல்லை. எனவே, அவர் எண்ணற்ற ஆன்மீக அல்லது ஆழ்ந்த ஆன்மீக சாகசங்களில் தலைகீழாகத் தன்னைத் தூக்கி எறிகிறார், அவர் எதைத் தேடுகிறாரோ, அல்லது எதைக் கண்டுபிடிக்க விரும்புகிறாரோ அதைத் தேட வேண்டும் என்ற உறுதியான நோக்கத்துடன், அவருக்குத் துல்லியமாகத் தெரியாது. எனவே, அவரது அனுபவம் அவரை அனைத்து பிரிவுகள், அனைத்து தத்துவ அல்லது எஸோதெரிக் பள்ளிகளின் வரம்புகளுக்கு கொண்டு செல்கிறது, மேலும் அவர் சராசரியை விட அதிக புத்திசாலியாக இருந்தால், அவர் பதில்களைக் கண்டுபிடிப்பதற்கு வரம்புகள் இருப்பதை இங்கே மீண்டும் கண்டுபிடித்தார்.

அவர் இறுதியாக தன்னைத் தனியாகக் காண்கிறார், மேலும் அவரது ஆன்மீக அடையாளத்தின் நெருக்கடி மேலும் மேலும் தாங்க முடியாததாகிறது. தன்னில் உள்ள அனைத்தும் புத்திசாலித்தனம், விருப்பம் மற்றும் அன்பு என்று அவர் கண்டுபிடிக்கும் நாள் வரை, ஆனால் தேடும் மனிதனின் கண்களில் மறைந்திருக்கும் மற்றும் மறைக்கப்பட்ட பொறிமுறையைக் கண்டறிய அவர்களின் சட்டங்களை அவர் இன்னும் அறியவில்லை. என்ன ஆச்சரியம் பார்த்தான்! அவனது நெருக்கடியின் போது அவன் தேடுவது அவனுக்குள் இருக்கும் ஆன்மாவின் ஒரு பொறிமுறையை மட்டுமே என்று அவன் உணர்ந்ததும், அது தன்னை நோக்கி, அதாவது அவளிடம் எழுந்திருக்க அவனை முன்னோக்கி செலுத்த உதவியது.

இந்த நிலை இறுதியாகத் தொடங்கும் போது, மனிதன், மனிதனின் அகங்காரம், ஆசையற்றவனாக மாறி, தனக்குள் இருக்கும் உயர்வான புத்தியின் (உயர்ந்த மனதின்) இயல்பைப் புரிந்து கொள்ளத் தொடங்குகிறான், அது விழித்தெழுந்து, தன்னை வெளியே தேடும் அனைத்து மனிதர்களின் மாயையையும் அடையாளம் காண வைக்கிறது. உலகின் சிறந்த நோக்கங்கள், மற்றும் இந்த முழு செயல்முறையும் ஆன்மாவின் அனுபவத்தின் ஒரு பகுதியாகும் என்பதை இன்னும் உணராதவர்கள், அது தன்னுடன் அதிர்வுத் தொடர்புக்கு வருவதற்கு அவரைத் தயார்படுத்துவதற்கு ஈகோவைப் பயன்படுத்துகிறது.

மனிதன் இப்போது தன் இருப்பின் யதார்த்தத்துடன் தொடர்பில் இல்லை. இந்த தொடர்பு இழப்பு உலகில் மிகவும் பரவலாக உள்ளது, இந்த பூமி கப்பல் எங்கு செல்கிறது என்று தெரியாத பைத்தியக்காரர்கள் நிறைந்த கப்பலைக் குறிக்கிறது. அவர்கள் கண்ணுக்குத் தெரியாத சக்திகளால் வழிநடத்தப்படுகிறார்கள், இந்த சக்திகளின் தோற்றம் அல்லது அவர்களின் நோக்கங்கள் பற்றி யாருக்கும் தெரியாது. மனிதன் பல நூற்றாண்டுகளாக கண்ணுக்குத் தெரியாதவற்றிலிருந்து பிரிக்கப்பட்டிருந்தான், அவன் யதார்த்தத்தின் கருத்தை முற்றிலும் இழந்தான். இந்த சுயநினைவு இழப்புதான் அவரது இருத்தலியல் பிரச்சனையின் சுவரை எழுப்புகிறது: அடையாளம். இன்னும் தீர்வு அவருக்கு மிகவும் நெருக்கமாக உள்ளது, அதே நேரத்தில் வெகு தொலைவில் உள்ளது. அவர் கேட்க விரும்பாததைக் கேட்கத் தெரிந்திருந்தால்.

வார்த்தைப் போரும் கருத்துச் சண்டையும்தான் அவனுக்கு மிச்சம். அவனுடைய ஒரு பகுதி பெரியது, மற்றொன்று தன் புலன்களால் மட்டுப்படுத்தப்பட்டது, இரண்டும் ஒன்றுசேர முடியும் என்பதை அவன் உணரவில்லை என்றால், எந்த மனிதன் தன்னிறைவாக இருக்க முடியும்? தன்னால் வெளியில் யாராலும் முடியாது, தன்னால் மட்டுமே முடியும் என்பதை ஒரு நாள் மனிதன் உணர்ந்தால்... ஆனால், தன்னைப் பற்றி மற்றவர்கள் என்ன சொல்வார்களோ என்று பயப்படுவதால், தனக்காக வாழ பயப்படுகிறான்.

மனிதர்கள் மாயைக்கு எதிரான போராட்டத்தில் தொடர்ந்து தோல்வியடையும் மனிதர்கள், ஏனென்றால் அவர்கள் அதை உயிரோடும் சக்தியுடனும் வைத்திருப்பவர்கள். தமக்குத் தீங்கு விளைவிப்பவற்றை அழிப்பதற்கு எல்லோரும் பயப்படுகிறார்கள். ஒரு உண்மையான கனவு! மேலும் மோசமானது இன்னும் வரவில்லை! ஏனென்றால், XX ஆம் நூற்றாண்டின் மனிதன், நட்சத்திரங்களுக்கு இடையில் நகரும் மற்றும் அவருக்கு முன்பு கடவுள்களாக இருந்த மனிதர்கள் அவரை நோக்கி இறங்குவதைக் காண்பார்.

தனிப்பட்ட அடையாளத்தின் சிக்கல் கிரக அளவில் தொடர்கிறது. இந்த பிரச்சனை கீழ் மனதுக்கும் உயர்ந்த மனதுக்கும் இடையே உள்ள தொடர்பு இல்லாததால் உருவாகிறது என்பதால், அதன் தாக்கம் உலக அளவிலும் தனிப்பட்ட அளவிலும் உணரப்படுகிறது, ஏனென்றால் உயர்ந்த மனம் மட்டுமே மனிதனுக்கு அவனது கிரகத்தின் பெரிய மர்மங்களை விளக்க முடியும். அதன் பண்டைய கடவுள்கள். இந்த கடவுள்கள் பண்டைய வரலாற்றின் ஒரு பகுதியாக இருக்கும் வரை, மனிதன் அவர்களால் கவலைப்படுவதில்லை. ஆனால் அதே உயிரினங்கள் திரும்பி வந்து தங்களை நவீன வெளிச்சத்தில் வெளிப்படுத்தும்போது, உலக அளவில் அதிர்ச்சி எதிரொலிக்கிறது, மேலும் தனது உண்மையான அடையாளத்தைக் கண்டுபிடிக்காத மனிதன் தனது தவறான அடையாளத்திற்கும் - அவள் நினைப்பதற்கும் நம்புவதற்கும் இடையில் சிக்கிக் கொள்கிறான். சுழற்சி நிகழ்வு.

அவனது மனம் அனுபவத்திற்குத் திறந்திருந்தால், அவனுக்குள் உண்மையான புத்திசாலித்தனத்தைப் பெற்றால், தனக்குத் தெரியாத மற்றும் அறியாத ஒரு கிரகத்தின் மிகவும் குழப்பமான நிகழ்வுகளில் ஒன்றின் தேவையான தகவல்களைப் பெற்றால், மனிதன் கிரக அடையாள நெருக்கடியை அனுபவிப்பதில்லை, ஏனென்றால் அவனுக்கு ஏற்கனவே தனக்குள் இருந்த தனிப்பட்ட அடையாள நெருக்கடியை தீர்த்துக்கொண்டார்.

மனிதகுலம் வரலாற்றிலும் வாழ்க்கையிலும் ஒரு திருப்புமுனையை நோக்கி வேகமாக முன்னேறி வருவதால், தனித்துவம், அதாவது மனிதனுக்கும் பிரபஞ்சத்திற்கும் இடையிலான பெருகிய முறையில் பரிபூரணமான உறவை நிறுவ வேண்டும், ஏனென்றால் அது உண்மையான தனித்துவத்தில் இருந்து தான் மனிதனில் காணப்படும் அதிர்வு. அவர் தனது உண்மையான அடையாளத்தை வெளிப்படுத்தினார். இந்த உண்மையான அடையாளத்தை நிலைநிறுத்தாத வரை, தனித்துவம் முழுமையாக நிறைவேறாது, மேலும் மனிதன் " முதிர்ச்சியடைந்தவன்" என்று சொல்ல முடியாது , அதாவது எந்தவொரு தனிப்பட்ட அல்லது உலக நிகழ்வையும் தொந்தரவு செய்யாமல் எதிர்கொள்ளும் திறன் கொண்டவன், ஏனென்றால் அவனுக்கு ஏற்கனவே தெரியும். அது மற்றும் அதற்கான காரணம் அவருக்கு தெரியும்.

பொதுவாக அடையாள நெருக்கடி பற்றிப் பேசும்போது, மனிதனுக்கும் சமூகத்துக்கும் இடையிலான உறவை வரையறுக்க முயல்கிறோம் என்ற பொருளில், உளவியல் ரீதியாகப் பேசுகிறோம். ஆனால் அடையாள நெருக்கடி அதை விட மிக ஆழமாக செல்கிறது. இனி சமூக மனிதன் தான் அளக்கும் தடியாக மாறுவது, நாம் அடைய வேண்டிய இயல்பு. மாறாக, இயல்புநிலை மாற்றப்பட வேண்டும், அதாவது, விஸ்-ஏ-விஸ் தன்னைத் திரும்பப் பெற வேண்டும்.

அடைப்புக்குறிக்குள் உள்ள சாதாரண மனிதனின் இயல்பான அடையாளத்தை விட தனது உண்மையான அடையாளம் உள்ளது என்பதை மனிதன் உணரத் தொடங்கும் போது, அவன் இரண்டு விஷயங்களை உணர்கிறான். முதலாவதாக, சாதாரண மனிதன் கவலைப்படுவது இனி அவனைக் கவலையடையச் செய்யாது; மற்றும் ஒரு துணைக் கோளுக்கு இடையூறு விளைவிக்கும் அனைத்தும், அடைப்புக்குறிக்குள், இயல்பானது. இந்த கண்ணோட்டத்தில் பார்க்கும் உண்மையான அடையாளத்தின் நிகழ்வு மேலும் மேலும் முக்கியமானது, ஏனென்றால் சாதாரண அல்லது மயக்கமடைந்த மனிதனின் இயல்பான பலவீனங்களை எந்த மனிதனால் கடக்க முடியும் என்பதை இது தீர்மானிக்கிறது, மேலும், இல்லாத மனிதன் மிகவும் சாதாரணமானவன் என்பதை தீர்மானிக்கிறது. அதாவது, உணர்வற்ற மற்றும் ஒப்பீட்டளவில் சமநிலையான மனிதனின் அளவிற்கு - ஒரு கிரக ஒழுங்கின் அழுத்தங்களை ஆதரிக்க முடியும், இது ஒரு சாதாரண உயிரினத்தை சீர்குலைக்கும் மற்றும் அத்தகைய மனிதனைப் பெற்றெடுக்கும் கலாச்சாரத்தின் வீழ்ச்சியை ஏற்படுத்தும்.

தனது உண்மையான அடையாளத்தைக் கண்டறிந்த ஒரு மனிதன், தனது கலாச்சாரத்தின் விளைபொருளான, தனது கலாச்சாரத்தின் மதிப்புகளை மட்டுமே பின்பற்றும் ஒரு மனிதனைத் தொந்தரவு செய்யும் அனைத்து வகையான உளவியல் அனுபவங்களுக்கும் மேலானவன். ஏனெனில் உண்மையில், ஒரு கலாச்சாரம் மிகவும் மெல்லிய மற்றும் மிகவும் உடையக்கூடிய கேன்வாஸ் ஆகும், வெளிப்புற நிகழ்வுகள் அதை தொந்தரவு செய்ய வரும்போது, அதாவது, தனக்குத் தெரியாத அல்லது முற்றிலும் அறியாத ஒரு யதார்த்தத்துடன் அதை மறுவரையறை செய்வது. தீர்க்கப்படாத அடையாளத்தின் நிகழ்வின் மனிதனில் உள்ள ஆபத்து இதுதான்.

ஏனென்றால், அவர் தனது உண்மையான அடையாளத்தைக் கண்டறியவில்லை என்றால், அவர் உணர்ச்சி ரீதியாகவும் மனரீதியாகவும் சமூக உளவியலுக்கு அடிமையாகிவிடுவார் மற்றும் சுழற்சியின் இறுதி நிகழ்வுகள் அவரது இயல்பான வளர்ச்சியை சீர்குலைக்கும் போது அவரது இயல்பான எதிர்வினைகள். இங்குதான் மனிதன் சமூக-தனிப்பட்ட எதிர்விளைவுகளிலிருந்து விடுபட்டிருக்க வேண்டும், உலகளாவிய புரிதலின் முறையின்படி அனுபவத்தை வாழ முடியும். உண்மையான அடையாளம் மட்டுமே உண்மையான மனிதன் மற்றும் உண்மையான புத்திசாலித்தனத்துடன் ஒத்துப்போகிறது. மனிதனின் மட்டுப்படுத்தப்பட்ட உணர்ச்சிகளில் இருந்து விலகிய ஒரு உளவுத்துறையின் படி, உண்மையான அடையாளம் மட்டுமே பிரபஞ்ச நிகழ்வுகளை சிரமமின்றி விளக்க முடியும்.

மனிதனின் அடையாள நெருக்கடியின் சிக்கல் ஒரு எளிய உளவியல் சிக்கலை விட வாழ்க்கையின் பிரச்சினை. மனிதன் தன்னைத் தேடிப் புரிந்து கொள்ள முற்படும் உளவியல் பிரிவுகள் தங்களுடைய உண்மையான அடையாளத்தைக் கண்டறிபவர்களுக்கு இனி பொருந்தாது, ஏனென்றால் அவர்கள் தன்னுடன் போராடும் போது அவர்களுக்கு இருந்த அதே ஆர்வம் வாழ்க்கையில் இல்லை. அவனுடைய உண்மையான அடையாளம் அவனது ஒவ்வொரு மூலையிலும் நிறைந்து, அவனது மனம், பரிமாணம் அல்லது ஆற்றல் விமானத்தின் மற்றொரு பரிமாணத்தில் அடைக்கப்பட்டுள்ள ஒரு சுயத்தை எதிர்கொள்கிறான், அது உருவகப்படுத்தப்பட்ட உளவியல் வகைகளில் இருந்து முற்றிலும் சுயாதீனமாக உள்ளது. உண்மையான அடையாளம் இல்லாமல் உணர்வற்ற மனிதனின் உணர்ச்சி மற்றும் மன கட்டமைப்புகள்.

அடையாள நெருக்கடியின் நிகழ்வு ஒரு மனிதனுக்கு ஒரு துன்பம், ஏனென்றால் அவர் எப்போதும் தன்னைத்தானே, தன்னுடன், அவர் தொடர்ந்து தேடுவதைப் பற்றி முழுமையாக மகிழ்ச்சியாக இருக்க முடியாது. அவரைப் பொறுத்தவரை, மகிழ்ச்சியாக இருப்பது அவர் நிரந்தரமாக வாழ விரும்பும் ஒரு அனுபவம். ஆனால் அவர் " மகிழ்ச்சி" என்று அழைப்பதை அவர் உணரவில்லை , நீங்கள் உங்களைப் பற்றி நன்றாக உணர வேண்டும், அதாவது வெளியுலகம் இந்த நல்லிணக்கத்தை சீர்குலைக்காமல் சரியான உள் இணக்கத்துடன் உணர முடியும். வாழ்க்கை அதன் நிறத்தைத் தரும் பின்னணியைத் துளைக்கும் உள் சக்தியைப் பெறும் வரை, வாழ்க்கை தன்னிலிருந்து பிரித்தறிய முடியாதது என்பதை அவர் உணரவில்லை.

தனது உண்மையான அடையாளத்தை கண்டுபிடித்த ஒரு மனிதன் முன்பு வாழ்ந்த அதே வாழ்க்கையை இனி வாழ முடியாது. நிறங்கள் மாறிவிட்டன, வாழ்க்கை இனி அதே முறையீடு இல்லை, அது ஒவ்வொரு மட்டத்திலும் வேறுபட்டது. ஏனென்றால், அவர் வேரூன்றிய கலாச்சாரத்தால் அவர் மீது திட்டவட்டமாகத் திணிக்கப்படுவதற்குப் பதிலாக, அதன் சாத்தியக்கூறுகளைத் தீர்மானிப்பது உண்மையான தனிநபர் என்பதன் மூலம் இது மற்ற முந்தைய வாழ்க்கையிலிருந்து வேறுபடுகிறது.

தனது அடையாளத்தைக் கண்டுபிடித்த மனிதனின் வாழ்க்கை, காலப்போக்கில் தொலைந்துபோகும் ஒரு தொடர்ச்சியைக் குறிக்கிறது, அது ஒரு முடிவைக் கூறுகிறது. ஏற்கனவே, இந்த உணர்தல் வாழ்க்கை முறையிலும், ஆக்கப்பூர்வமான வாழ்க்கை முறையிலும் தலையிடுகிறது. மனிதன் அடையாளத்தால் பாதிக்கப்படும் வரை, அவனுக்குள் இருக்கும் உண்மையான அறிவுத்திறனுடன் தொடர்பு இல்லாத வரை, அவனால் அவனது தேவைகளை மட்டுமே பூர்த்தி செய்ய முடியும். அவர் வெளிச்சத்தில் இருக்கும்போது, அவர் இனி தன்னைத்தானே ஆதரிக்க வேண்டியதில்லை, ஏனென்றால் அவர் ஏற்கனவே அதிர்வு மூலம், அவரது வாழ்க்கை முறையை அறிந்திருக்கிறார், மேலும் இந்த அறிவு அவரது தேவைகளுக்குத் தேவையான படைப்பு ஆற்றலை உருவாக்க அவருக்கு உதவுகிறது. மனிதனின் அனைத்து வளங்களையும் பயன்படுத்தி, அவனது நல்வாழ்வின் வசம் அவற்றை வைக்கும் ஒரு படைப்பு ஆற்றலுக்கு மட்டுமே உயிர்வாழ்வதற்கான உளவியல் வகை மங்குகிறது.

ஒரு மனிதன் தனது அடையாளப் பிரச்சனையைச் சமாளிக்க, உளவியல் தளத்திலிருந்து தூய நுண்ணறிவுத் தளத்திற்கு மதிப்புகளின் இடப்பெயர்ச்சி அவனுக்குள் நிகழ வேண்டும். உளவியல் மதிப்புகள் அவரது நெருக்கடிக்கு பங்களிக்கும் போது, அவை அவரது புலன்களுக்கு மட்டுப்படுத்தப்பட்டதால், புலன் பொருள்களை விளக்கும் அவரது புத்திசாலித்தனம், அவரது புத்தியின் ஒப்புதலுக்கு உட்பட்டது அல்ல, அவருக்கு ஒரு அளவிடும் கம்பி தேவைப்படுகிறது.

தனக்குள் ஊடுருவிச் செல்லும், அதன் இயக்கத்தில் தடுக்க முடியாத ஒரு விஷயத்திற்கு முதன்முறையாக அவனுக்குள் ஒருவித எதிர்ப்பு எழுவது இங்குதான். இயக்கம் தொடங்கும் போது, அதன் ஈகோ மற்றும் அதன் சிம்மராக்கள் சுயாதீனமான இந்த புத்திசாலித்தனத்தின் வெளிச்சம். இங்குதான் மதிப்புகளின் இடப்பெயர்ச்சி உணரத் தொடங்குகிறது, இதன் விளைவாக ஒரு உள் துன்பம் ஏற்படுகிறது, விழித்திருக்கும் மனிதன் என்ன வாழ வேண்டும் என்பதற்கு ஏற்ப ஒளியின் நுண்ணறிவை ஊடுருவச் செய்ய போதுமானது.

ஈகோ ஒரு குறிப்பிட்ட சமநிலையை பராமரிக்க அனுமதிக்கும் வகையில் மதிப்புகளின் மாற்றம் படிப்படியாக மட்டுமே செய்யப்படுகிறது. ஆனால் காலப்போக்கில், ஒரு புதிய சமநிலை உருவாகிறது மற்றும் ஈகோ சாதாரணமாக இல்லை, சமூக ரீதியாக பேசுகிறது; அவர் உணர்வுடன் இருக்கிறார். அதாவது, அவர் வடிவம் மற்றும் நெறியின் மாயையின் மூலம் பார்க்கிறார், மேலும் அவரது நுட்பமான உடல்களின் அதிர்வுகளை உயர்த்துவதற்காக மேலும் மேலும் தனித்துவமாக மாறுகிறார், அவருடைய தனித்துவம் அடிப்படையாக இருக்கும் நிலைகள் மற்றும் அவரது உண்மையான அடையாளம்.

மதிப்புகளின் இடப்பெயர்ச்சி உண்மையில் மதிப்புகளின் சரிவு, ஆனால் நாம் அதை "இடப்பெயர்ச்சி" என்று அழைக்கிறோம், ஏனென்றால் ஏற்படும் மாற்றங்கள் ஒரு அதிர்வு சக்தியுடன் ஒத்துப்போகின்றன, இது பார்க்கும் முறையை மாற்றுகிறது, இதனால் சிந்தனை முறை புத்திசாலித்தனத்துடன் சரிசெய்ய முடியும். மனிதனில் ஒரு உயர்ந்த மையம். ஈகோ அதிர்வுகளால் இந்த சரிவைக் காணாத வரை, அது அதன் தவறான அடையாளத்தின் சுவர்களை உருவாக்கும் எண்ணங்கள், சின்னங்களின் வகைகளைப் பற்றி விவாதித்துக்கொண்டே இருக்கும். ஆனால் இந்த சுவர்கள் பலவீனமடையத் தொடங்கியவுடன், மதிப்புகளின் இடப்பெயர்ச்சி ஒரு ஆழமான மாற்றத்திற்கு ஒத்திருக்கிறது, இது ஈகோவால் பகுத்தறிவு செய்ய முடியாது. மேலும் அவரால் பகுத்தறிவு செய்ய முடியாமல், அவர் இறுதியாக ஒளியால் தாக்கப்படுகிறார், அதாவது, அவர் இறுதியாக அதனுடன் நிரந்தரமான மற்றும் வளர்ந்து வரும் வழியில் இணைக்கப்படுகிறார்.

அவரது வாழ்க்கை, பின்னர், சுழற்சியால் மாற்றப்படுகிறது, விரைவில், அவர் அதை வரம்புகளில் வாழவில்லை, ஆனால் ஆற்றல்களில் வாழ்கிறார். அவளது அகநிலை ஆசைகள் தொடர்பாக வரையறுக்கப்படுவதற்குப் பதிலாக, அவளது அடையாளம் அவளுடன் தொடர்புடையதாக வரையறுக்கப்படுகிறது. மேலும் " உண்மையான மற்றும் புறநிலை சுயம்" என்றால் என்ன என்பதை அவர் உணரத் தொடங்குகிறார்.

அவர் உண்மையான மற்றும் புறநிலை சுயத்தை உணரும்போது, இந்த சுயம் தானே என்பதையும், தனக்குள்ளேயே அவர் காணாத, ஆனால் அவர் இருப்பதை உணர்கிறார், அங்கே ஏதோ ஒன்று அவருக்குள் செல்கிறது என்பதையும் அவர் தெளிவாகக் காண்கிறார். புத்திசாலித்தனமான, நிரந்தரமான மற்றும் தொடர்ந்து இருக்கும் ஒன்று. ஏதோ ஒன்று தன் கண்களால் பார்க்கிறது, மற்றும் உலகத்தை அப்படியே விளக்குகிறது, மற்றும் ஈகோ முன்பு பார்த்தது போல் அல்ல.

இந்த மனிதனை " மனம்" என்று நாம் இனி சொல்லவில்லை, அவர் " மேலானவர் (உயர்ந்த மனது)" , அதாவது அவர் தெரிந்து கொள்ள இனி சிந்திக்க வேண்டிய அவசியமில்லை என்று கூறுகிறோம். அடையாளத்தால் அவதிப்படுவது அவரிடமிருந்து வெகு தொலைவில் உள்ளது, அவரது அனுபவத்திலிருந்து, அவர் தனது கடந்த காலத்தை திரும்பிப் பார்க்கும்போது ஆச்சரியப்படுகிறார், இப்போது அவர் என்னவாக இருக்கிறார் என்பதைப் பார்த்து, அதை அவர் இருந்ததை ஒப்பிடுகிறார்.

பாடம் 2

கீழ்நோக்கிய பரிணாமம் மற்றும் மேல்நோக்கிய பரிணாமம்

BdM-RG #62A (மாற்றியமைக்கப்பட்டது)

சரி, அதனால் நான் மனிதனின் பரிணாமத்தை பிரிக்கிறேன், அவனுக்கு கீழ்நோக்கிய வளைவையும் மேல்நோக்கி வளைவையும் கொடுக்கிறேன். ? கீழ்நோக்கிய வளைவை நான் "இன்வல்யூஷன்" என்று அழைக்கிறேன், மேல்நோக்கிய வளைவை நான் பரிணாமம் என்று அழைக்கிறேன். இன்று மனிதன் இந்த வளைவுகளின் சந்திப்புப் புள்ளியில் இருக்கிறான். வேண்டுமானால் தேதி: 1969 என்று வைத்துக்கொள்வோம். நாம் பரிணாம வளர்ச்சியை - டார்வினிசக் கண்ணோட்டத்தில் அல்ல - ஆனால் அமானுஷ்யக் கண்ணோட்டத்தில் பார்த்தால், மனிதனின் உள் ஆய்வுகளின் படி, நாம் காலப்போக்கில் பின்னோக்கிச் சென்றால், பன்னிரண்டாயிரம் ஆண்டுகளுக்கு முன்பு ஏற்பட்ட சரிவை நாம் கண்டுபிடிக்கலாம். ஒரு பெரிய நாகரீகத்திற்கு அட்லாண்டிஸ் என்ற பெயர் வழங்கப்பட்டது.

ஆகவே, மனிதன் தனது நனவின் ஒரு அம்சமான நிழலிடா உடல் என்று அழைக்கப்படுவதை தீவிரமாக வளர்த்துக் கொண்ட ஒரு காலகட்டம், இது அவனது நனவின் நுட்பமான வாகனம், இது மனோ-உணர்ச்சி சார்ந்த எல்லாவற்றுடனும் நேரடியாக தொடர்புடையது. இந்த நாகரிகத்தின் அழிவுக்குப் பிறகு, இன்று வரை, மனிதன் தனது நனவின் மற்றொரு பகுதியை வளர்த்துக் கொண்டான், இது குறைந்த மன நனவின் வளர்ச்சி என்று அமானுஷ்யமாக அழைக்கப்படலாம், இது இன்று மனிதனால் பயன்படுத்தப்படும் அறிவின் மிகவும் மேம்பட்ட வளர்ச்சிக்கு வழிவகுத்தது. பொருள் உலகத்தை புரிந்து கொள்ள.

இந்த கிரகத்தில் 1969 முதல், மனிதனின் நனவில் ஒரு புதிய நிகழ்வு உள்ளது, இது இணைவு என்ற பெயரைக் கொடுக்கலாம் அல்லது பூமியில் மேலான நனவின் (உயர்ந்த மனம்) விழிப்புணர்வின் பெயரைக் கொடுக்கலாம். மேலும் உலகில் உள்ள மனிதர்கள் கீழ் மனதின், எனவே புத்தியின் மட்டத்தில் செயல்படுவதை நிறுத்திவிட்டு, மேலான உணர்வு (உயர்ந்த மனம்) என்று அழைக்கப்படும் நனவின் மற்றொரு அடுக்கை உருவாக்கத் தொடங்கியுள்ளனர். இந்த மனிதர்கள் வளர்ச்சியின் செயல்பாட்டில் உள்ள திறன்களை உருவாக்கியுள்ளனர், மேலும் அவை பரிணாம வளர்ச்சியின் மற்றொரு சுழற்சியுடன் ஒத்துப்போகின்றன, இதை ஒருவர் ஆறாவது ரூட்-இனம் என்று அழைக்கலாம்.

அமானுஷ்யமாகப் பேசினால், மனிதனின் பரிணாம வளர்ச்சியைப் பற்றிப் பேசும்போது, அட்லாண்டிஸைப் பற்றிப் பேசுகிறோம், அதன் துணை இனங்களைக் கொண்ட நான்காவது வேர்-இனம், ஐந்தாவது வேர்-இனத்தின் ஒரு பகுதியாக இருக்கும் நாம் அங்கம் வகிக்கும் இந்தோ-ஐரோப்பிய இனங்கள். மற்றும் அதன் துணை இனங்கள். இப்போது உலகில் ஒரு புதிய ரூட்-இனத்தின் ஆரம்பம் உள்ளது, அது அதன் துணை இனங்களையும் கொடுக்கும். இறுதியில் ஏழாவது ரூட்-இனம் இருக்கும், இது மனிதன் தனது பொருள் உடலின் இயற்கையான பயன்பாடு தேவைப்படாமல் போதுமான அளவு மேம்பட்ட பரிணாம நிலையை அடைய உதவும். ஆனால் தற்போது இதை நாங்கள் கையாளவில்லை, எனவே நாம் ஆறாவது வேர்-இனத்தை கையாளுகிறோம், இது ஒரு உடல் இனத்தை பிரதிநிதித்துவப்படுத்தாது, ஆனால் இது எதிர்கால மனிதகுலத்தின் புதிய மன நனவின் முற்றிலும் மனநோய் அம்சத்தை பிரதிபலிக்கிறது.

இந்த விமானத்தில் மனிதனின் பரிணாம வளர்ச்சியைப் புரிந்து கொள்ள, தலைகீழான சுழலில் இருந்து அதன் இறுதித்தன்மையை நோக்கி, அதாவது இரண்டாயிரத்து ஐந்நூறு ஆண்டுகள் வரை, நமக்குக் கிடைத்த தகவல்களின்படி, மனிதன் கடந்து செல்கிறான் என்பது வெளிப்படையானது. இந்தோ-ஐரோப்பிய இனங்களின் மனிதனுடன் ஒப்பிடும்போது, அட்லாண்டிஸின் நாயகன் எவ்வளவு மட்டுப்படுத்தப்பட்டிருக்கிறானோ, அதே அளவு இன்றைய மனிதன் மட்டுப்படுத்தப்பட்டவனாகவும் அடுத்த மனிதனுடன் ஒப்பிடும்போது மட்டுப்படுத்தப்பட்டவனாகவும் இருப்பான் என்பது முற்றிலும் அசாதாரண உணர்வு நிலைகளின் மூலம். அரவிந்தரால் கணிக்கப்பட்ட பூமியில் உள்ள மேலான நனவின் (உயர்ந்த மனம்) பரிணாமம் .

மேலோட்டமான நனவின் (உயர்ந்த மனம்) பரிணாம வளர்ச்சியில் சுவாரஸ்யமானது என்னவென்றால்: இன்று நாம் மனிதர்கள், பகுத்தறிவு மனிதர்கள், கார்டீசியன் மனிதர்கள், ஐந்தாவது வேர்-இனத்தின் மிகவும் பிரதிபலிப்பு மனிதர்கள், நமக்கு ஒரு போக்கு உள்ளது. நம் மனம் நமது அகங்காரத்தால் ஆளப்படுகிறது என்று நம்புவது, மனித மனம் ஈகோவால் ஆளப்படுவதில்லை என்பதையும், மனித மனம் அதன் உளவியல் வரையறையிலும், ஈகோவின் பிரதிபலிப்பு வெளிப்பாட்டிலும், அதன் மூலமும் இருப்பதை மனிதன் கண்டுபிடிப்பான். இந்த நேரத்தில் "மன உலகம்" என்று அழைக்கப்படும் இணையான உலகங்களில் அமைந்துள்ளது, ஆனால் இது பின்னர் "கட்டடக்கலை உலகம்" என்று அழைக்கப்படும் .

வேறு வார்த்தைகளில் கூறுவதானால், நான் சொல்வது என்னவென்றால், மனிதன் தனது சிந்தனையின் மூலத்தைக் கண்டறிய எவ்வளவு சிரமம் அல்லது திறன் அல்லது சுதந்திரத்தை எடுத்துக்கொள்கிறானோ, அவ்வளவு அதிகமாக இணையான உலகங்களுடன் தொலைநோக்கு தொடர்பு கொள்ளத் தொடங்க முடியும். இறுதியில் பரிணாம வளர்ச்சியின் போக்கில், உலக அளவில், இனத்தின் உலகளாவிய மட்டத்தில் வர, வாழ்க்கையின் மர்மங்களை உடனடியாக டிகோட் செய்ய முடியும், பொருளின் மண்டலத்திலும் ஆன்மாவின் நிழலிடா மண்டலத்திலும் ஆவியின் மன மண்டலம். வேறு வார்த்தைகளில் கூறுவதானால், நான் என்ன சொல்கிறேன் என்றால், அவர் வந்துவிட்டார், நாயகன், இன்று அவர் தனக்கே போதுமான மன உணர்வு நிலையை அடையக்கூடிய ஒரு கட்டத்தில்.

மேலும் நான் தன்னிறைவான மன விழிப்புணர்வைக் கூறும்போது, உண்மையின் உளவியல் மதிப்பின் அடிப்படையிலான மன விழிப்புணர்வை நான் குறிக்கவில்லை. உண்மை என்பது ஒரு சொல், இது ஒரு தனிப்பட்ட நம்பிக்கை அல்லது ஒரு சமூக நம்பிக்கை, அல்லது ஒரு கூட்டு சமூகவியல் நம்பிக்கை, இது ஒரு தனிநபராக மனிதனின் உணர்ச்சித் தேவைகளின் ஒரு பகுதியாகும் அல்லது ஒரு கூட்டாக சமூகத்தின் ஒரு பகுதியாகும், இது பொருளின் உலகில் ஆதிக்கம் செலுத்துகிறது.

ஆனால் மனிதகுலத்தின் எதிர்கால நனவின் பரிணாம வளர்ச்சியின் அடிப்படையில், உண்மையின் நிகழ்வு அல்லது அதன் உளவியல் எதிர்விளைவு அல்லது அதன் உணர்ச்சி மதிப்பு முற்றிலும் பயனற்றதாக இருக்கும், ஏனெனில் மனிதன் தனது மனசாட்சியின் உணர்ச்சிகளை இனி பயன்படுத்த முடியாது. அவரது அறிவின் உளவியல் மதிப்பீடு. அவர் தனது சுயத்தின் மனப்பாதுகாப்பு வளர்ச்சிக்கு தனது மனசாட்சியின் உணர்ச்சிகளை இனி பயன்படுத்த வேண்டியதில்லை.

ஆகவே, மனிதன் மனதளவில் முற்றிலும் சுதந்திரமாக இருப்பான், உலகில் உள்ள அனைத்து இனங்களின் ஒரு பகுதியாக இருக்கும் உலகளாவிய நனவின் இறுதி முடிவிலா கருப்பொருள்களின் வெளிப்பாடு, விரிவுபடுத்தல் மற்றும் வரையறை ஆகியவற்றில் உடற்பயிற்சி செய்ய முடியும். பிரபஞ்சத்தில் உள்ள அனைத்து இனங்களின், மற்றும் உண்மையில் ஆவியின் மாறாத ஒற்றுமையின் ஒரு பகுதியாகும், அதன் முழுமையான வரையறையில், ஒளியின் அசல் மூலமாகவும் அண்டத்தில் அதன் இயக்கமாகவும் உள்ளது.

ஆகவே, மனிதகுலத்தின் பரிணாம வளர்ச்சியில் ஒரு புள்ளி வரும், இறுதியாக அகங்காரம் சுய உணர்வில் இழந்த நேரத்தை ஈடுசெய்யும், மேலும் சுயமானது அதன் உளவியல் வரையறையின் சாத்தியமான வரம்புகளை அதன் நனவில் அறிமுகப்படுத்துவதன் மூலம் இறுதியாக அடையும். அவரது தூய மனதின், அதாவது அவரது ஆவியின் படைப்பு திறன்.

பூமியில், வெவ்வேறு இனங்களில், வெவ்வேறு நாடுகளில், வெவ்வேறு காலங்களில், இணைவை அறியக்கூடிய நபர்களைக் கண்டுபிடிப்போம், அதாவது, இவ்வளவு பெரிய அறிவின் ஆதாரங்களை நோக்கி உடனடியாக ஈர்க்கக்கூடியவர் யார்? உலக அறிவியல், தொழில்நுட்பம், நுட்பம், மருத்துவம், உளவியல் அல்லது வரலாறு ஆகியவற்றின் அடிப்படையில் முற்றிலும் தூக்கியெறியப்படும். எதற்காக ? ஏனென்றால், மனிதனின் பரிணாம வளர்ச்சிக்குப் பிறகு முதன்முறையாக, ஆவியானவர் ஜடப்பொருளில் இறங்கியதிலிருந்து முதல்முறையாகவும், ஆன்மா பொருளுடன் இணைந்த பிறகு முதல் முறையாகவும், மனிதன் தனது முழுமையான அறிவைத் தாங்கும் திறனை இறுதியாக அடைவான். .

முழுமையான அறிவு என்று நான் அழைப்பது, மனித மனதின் தன் ஒளியைத் தாங்கி உறிஞ்சிக் கொள்ளும் திறனைத்தான். முழுமையான அறிவு என்பது ஒரு ஆசிரியர் அல்ல. முழுமையான அறிவு என்பது முன்னறிவிப்பு அல்ல. முழுமையான அறிவு தேவை இல்லை. முழுமையான அறிவு என்பது ஒரு திருத்தமான பரிணாம முடிவாகும், அதாவது, பிரபஞ்சத்தில் உள்ள ஒளியின் செயல்பாட்டின் பெரும் பகுதியின் ஒரு பகுதியாகும் மற்றும் இது அனைத்து பகுதிகளையும், அனைத்து அறிவார்ந்த நிகழ்வுகளையும், அதாவது - பிரபஞ்சத்தில் உள்ள அனைத்து அறிவார்ந்த உயிரினங்களையும் சந்திக்கச் சொல்கிறது. உயர் மனத் தளம், அதாவது பரிணாம வளர்ச்சியின் போது அனுமதிக்கும் அளவுக்கு சக்திவாய்ந்த ஆற்றல் கொண்ட ஒரு விமானத்தில், ஈதெரிக் உடலின் தவிர்க்க முடியாத உயிர்த்தெழுதலுக்கான உடல் பொருள் இறுதியில் மறைந்துவிடும்.

அதாவது, பிரபஞ்ச உயிரினத்தை உருவாக்கும் வெவ்வேறு சூரியன்களுடன், அதன் ஆவி, ஒளி மற்றும் அதன் அடித்தளம், இயக்கம் மற்றும் புரிந்துகொள்வதில் மனிதனின் ஆற்றல் இறுதியில் நுழையும் திறன். அணு உணர்வு அழைப்பு! எனவே பரிணாம வளர்ச்சியின் போது மனிதன் சிந்திக்காமல், சிந்திக்கத் தேவையில்லாமல், பூமியில் உள்ள உலகளாவிய நனவின் ஆக்கிரமிப்பு தொல்பொருள்கள் மற்றும் பரிணாம வளர்ச்சியின் மனக் கட்டமைப்பில் மனிதனால் இறுதியாக ஒரு திட்டவட்டமான வழியில் தலையிட முடியும். . மனிதன் தான் முற்றிலும் புத்திசாலி என்பதை இறுதியில் உணர்ந்து கொள்வான் என்பதே இதன் பொருள்.

புத்திசாலித்தனம் என்பது கல்வியின் ஒரு வடிவத்தின் வெளிப்பாடு அல்ல என்பதை மனிதன் உணர்ந்து கொள்வான், ஆனால் புத்திசாலித்தனம் என்பது எந்த ஒரு விஷயத்திலும் எந்த மனதின் அடிப்படை பண்பாகவும் இருக்கிறது. ஒரு ஈகோவாக அல்லது மனித சுயமாக, உலகளாவிய பிரதிபலிப்பால், அதாவது வரலாற்றால் மற்றும் மனிதகுலத்தின் நினைவகத்தால் நம்மீது திணிக்கப்பட்ட வரம்புகளுக்குள் வாழ வேண்டிய கட்டாயத்தில் நாம் இன்று இருக்கிறோம்.

மனிதனுக்கு இன்னும் வழங்கப்படவில்லை - ஏனெனில் இந்த துறையில் போதுமான அறிவியல் இல்லை - மனிதனுக்கு அவனது ஆன்மா எவ்வாறு இயங்குகிறது, அவனது ஈகோ எவ்வாறு செயல்படுகிறது, அவனது ஈகோ எவ்வாறு செயல்படுகிறது மற்றும் புரிந்துகொள்ளும் திறன் இன்னும் வழங்கப்படவில்லை. நுண்ணறிவு என்ற சொல் அதன் உலகளாவிய வரையறையில் எதைக் குறிக்கிறது, அதனால் மனிதன் இன்று அவனது நிழலிடா உடலால் சிக்கிக் கொள்கிறான், அதாவது அவனது புலன்களால்!

அவர் தனது அடிப்படை மற்றும் உலகளாவிய அறிவை மாற்றியமைக்கக் கடமைப்பட்டிருக்கிறார், பரிணாம வளர்ச்சியின் போது சரித்திரம் மற்றும் பாடத்தால் நிர்ணயிக்கப்பட்ட ஒரு சிறிய வரையறுக்கப்பட்ட அறிவை மாற்றியமைக்க வேண்டும், ஏனெனில் அறிவியலின் அனைத்து கோட்பாடுகளும் இன்று விஞ்ஞானம் பயனுள்ளதாக இல்லை என்ற அர்த்தத்தில் இருக்க வேண்டும். மாறாக, இது மிகவும் பயனுள்ளதாக இருக்கிறது, ஆனால் இன்று அறிவியலும் அதன் தவிர்க்க முடியாத பயணத்தை அதன் சொந்த ஒழிப்பை நோக்கி செல்கிறது. அனைத்து நாகரிகங்களும் தங்கள் தவிர்க்க முடியாத பயணத்தை தங்கள் சொந்த ஒழிப்பை நோக்கிச் செய்வது போல.

ஆனால் ஒரு நாகரீகம் அதன் ஒழிப்பின் யதார்த்தத்தை மிகவும் கடினமாகக் கருதுவது போல, அறிவியலும் அதன் சொந்த ஒழிப்பை அடைய கடினமாக இருக்கும். அது மிகவும் சாதாரணமானது. உலகில் தங்கள் சொந்த வீழ்ச்சியை அல்லது தங்கள் சொந்த அழிவை ஊக்குவிக்க நினைக்கும் உயிரினங்களையோ அல்லது ஒரு குறிப்பிட்ட உணர்வு கொண்ட உயிரினங்களையோ ஒருவர் கேட்க முடியாது. நாம் என்னவாக இருக்கிறோம், நாம் என்ன செய்தோம், என்ன செய்ய முடியும், பரிணாம வளர்ச்சிக்காக, மனிதகுலத்தை பரிணாம வளர்ச்சிக்கு அனுமதிப்பதற்காக நாம் என்னவாக இருக்கிறோம் என்பதை அறிந்து கொள்ள கடமைப்பட்டுள்ளோம்.

ஆனால் தனிநபர்களாக - தனிநபர்களாக நான் தெளிவாகச் சொல்கிறேன் - இறுதியில் நமது கிரகத்தில் ஒரு உலகளாவிய மற்றும் பிரபஞ்ச ஒழுங்கின் சூழ்நிலைகளை எதிர்கொள்ள வேண்டிய கட்டாயத்தில் இருப்போம், கடந்த காலத்தில் பெரிய மூடநம்பிக்கை இயக்கங்களை எழுப்பிய பரிமாணங்களை நாம் எதிர்கொள்ள வேண்டியிருக்கும். இந்த உலகத்தில்; அறிவியலின் பரிணாம வளர்ச்சியுடன் அழிந்துபோன இயக்கங்கள், பின்னர் அறிவியலால் திட்டவட்டமாக நிராகரிக்கப்பட்ட இயக்கங்கள்.

எனவே பிரபஞ்சம் வரம்பற்றது என்பதை உணர்ந்து கொள்வதற்காக சில அனுபவங்களை மறுபரிசீலனை செய்து மீண்டும் உயிர்ப்பிக்க நாம் காலப்போக்கில் கடமைப்பட்டுள்ளோம். அந்த மனித உணர்வு வரம்பற்றது மற்றும் மனிதன் தனது உள்நிலையில் அவனது உணர்வு எவ்வளவு சக்தி வாய்ந்தது. பலவிதமான மன நீரோட்டங்களின் குறுக்கு வழியில் நாம் வாழ வேண்டிய கட்டாயத்தில் உள்ள உலகில் இன்று இது மிகவும் முக்கியமானது... ஒட்டுமொத்தமாகச் சொல்லும்போது, அமெரிக்காவை நான் நிச்சயமாகப் பார்க்கிறேன். தனித்துவத்துடன் அதன் மோதலில் கூட்டு அனுபவம் மெதுவாக ஒரு கூட்டு மனநோயை உருவாக்க முனைகிறது.

தொலைக்காட்சி அல்லது செய்தித்தாள்கள் அல்லது சுதந்திரமான பத்திரிக்கையின் பல்வேறு வடிவங்கள் மூலம் அவற்றின் எண்ணிக்கையில் பெருக்கப்படும் கருத்துகளின் நீரோட்டங்களால் மனிதன் காலவரையின்றி குண்டுவீசப்பட முடியாது. உண்மைக்கும் பொய்க்கும் இடையிலான பல்வேறு மோதல்களிலிருந்து எழும் இந்த மன மற்றும் உளவியல் பதற்றத்தை மனிதனால் இனி தாங்க முடியாத நிலை வரும். பூமியில் மேலான (உயர்ந்த மனது) நனவின் பரிணாம வளர்ச்சியில் ஒரு புள்ளி வரும், அப்போது மனிதன் தன்னைப் பற்றிய யதார்த்தத்தை வரையறுக்க நிர்பந்திக்கப்படுகிறான். ஆனால் அது உலகளாவியதாக இருக்கும் "ஒருவராக" இருக்கும், அது "ஒருவராக" இருக்காது, அது அதன் சொந்த ஆவியின் விளையாட்டுத்தனம் அல்லது அதன் சொந்த அகங்காரத்தின் மாயை அல்லது அதன் சொந்த நான் என்ற பாதுகாப்பின்மை ஆகியவற்றை அடிப்படையாகக் கொண்டது.

எனவே அந்த தருணத்தில் இருந்து, மனிதன் மனித நிகழ்வை, நாகரீகத்தை அதன் அனைத்து அம்சங்களிலும் புரிந்து கொள்ளத் தொடங்குவான். மேலும் உலகில் என்ன நடக்கிறது அல்லது என்ன நடக்கப் போகிறது என்பதன் மூலம் அவர் உளவியல் ரீதியாக " அடைக்கப்படமாட்டார்" (துஷ்பிரயோகம் செய்யப்படமாட்டார்). மனிதன் சுதந்திரமாக இருக்கத் தொடங்குவான். அவர் சுதந்திரமாக இருக்கத் தொடங்கிய தருணத்திலிருந்து, அவர் இறுதியாக வாழ்க்கையை அதன் அடிப்படைத் தரத்தில் புரிந்து கொள்ளத் தொடங்குவார். மேலும் அவர் எவ்வளவு அதிகமாக பரிணாமம் பெறுகிறாரோ, அவ்வளவு அதிகமாக அவர் வாழ்க்கையை ஒரு முழுமையான, ஒருங்கிணைந்த மற்றும் கற்றறிந்த வழியில் புரிந்துகொள்வார், இது இன்று ஐந்தாவது வேர்-இனத்தின் நனவின் பகுதியாக இல்லை.

எதற்கு இந்த வார்த்தைப் பிரயோகம்? மனிதன் தனக்குக் கொடுக்கக்கூடிய மிகப்பெரிய நம்பகத்தன்மை, தன்னை உருவாக்கிக் கொள்வது, தன்னிடம் உள்ள நம்பகத்தன்மை என்பதை மனிதன் சிறிது சிறிதாகப் புரிந்துகொள்வது. குறிப்பாக மேற்கத்திய நாடுகளில் தனித்துவத்தின் மீதான காதல் மிகவும் முன்னேறிய ஒரு நூற்றாண்டில் நாம் வாழ்கிறோம். நாம் மேலும் மேலும் தனித்துவவாதிகளாகிவிட்டோம், ஆனால் தனித்துவம், அது ஒரு அணுகுமுறையாக இருந்தால், அடிப்படையில் மனிதர்களின் யதார்த்தத்துடன் ஒருங்கிணைக்கப்படவில்லை. வேறு வார்த்தைகளில் கூறுவதானால், சிவப்பு உள்ளாடைகள் மற்றும் மஞ்சள் செருப்புகளுடன் தெருவில் நடந்து செல்வதும், நியூயார்க்கில், நியூயார்க்கின் டைம்ஸ் சதுக்கத்தில் காதல் செய்வதும் ஒரு வகையான தனித்துவம். ஆனால் இது விசித்திரமானது, இது மனித உணர்வின் நிழலிடாமயமாக்கலின் ஒரு வடிவம்.

மனிதன் தனது தனித்துவத்தைத் தக்கவைக்கவோ, வார்த்தையின் உறுதியான அர்த்தத்தில் தனது தனித்துவத்தை வெளிப்படுத்தவோ, வெகுஜனங்களின் உணர்வுகளைப் புறக்கணிக்கவோ அல்லது தனது மக்களின் உணர்வுகளைப் புறக்கணிக்கவோ அல்லது தனது மக்களின் உணர்வுகளைப் புறக்கணிக்கவோ தேவையில்லை. இது ஒரு மாயை! மேலும் இது இருபதாம் நூற்றாண்டின் சிறப்பியல்பு நாகரீகங்களின் ஒரு பகுதியாகும், இறுதியில் அது சாதாரணமானது, இறுதியில் அது முட்டாள்தனமாக மாறும், இறுதியில் அது முற்றிலும் அழகியல் இல்லை. எனவே புதிய மனிதன், பூமியில் உள்ள மேலான (உயர்ந்த மன) நனவின் பரிணாமம், உண்மையில், மனிதனை மிகவும் தனிப்பட்டதாக ஆனால் தனிப்பட்ட நனவை உருவாக்க அனுமதிக்கும்.

மனிதன் தனிமனிதனாக இருப்பான் ஏன்? ஏனென்றால், அவனது நனவின் யதார்த்தம் அவனது ஆவியின் இணைவை அடிப்படையாகக் கொண்டது மற்றும் மனிதர்களின் பார்வையில் உலகிற்குள் காட்டப்படாமல், விசித்திரமான ஒரு வகையான ஊர்சுற்றலை வெளிப்படுத்தும். ஒரு மனிதன் நிஜமாக இருப்பதற்கு உலகம் முழுவதும் அலைந்து திரிந்து விளிம்புநிலையில் இருக்க வேண்டிய அவசியமில்லை. மாறாக. மனிதன் எவ்வளவு விழிப்புணர்வோடு இருக்கிறானோ, அவ்வளவு குறைவாக அவன் விளிம்புநிலையில் இருப்பான், அவன் மிகவும் உண்மையானவனாக இருப்பான், மேலும் அவன் தன் நிஜத்தில் அநாமதேயனாக இருப்பான். ஏனென்றால், மனிதனின் யதார்த்தம் அவனுக்கும் தனக்கும் இடையில் செல்லும் ஒன்றுதான் அவனுக்கும் மற்றவர்களுக்கும் இடையே அல்ல.

நமது கிரகத்தில் ஒரு வேர் இனத்தின் தேவையான பரிணாம வளர்ச்சியைப் பார்த்தால், அது மனித நிகழ்வைக் கொஞ்சம் புரிந்து கொள்ள வேண்டும். நாம் ஆயங்களை நிறுவுகிறோம், அது முற்றிலும் நடைமுறைக்குரியது, தவிர்க்க முடியாத நிகழ்வுகளுக்கு காலவரிசை புரிதலின் கட்டமைப்பை வழங்குவது முற்றிலும்! ஆனால் நாம் ஒரு உணர்வுள்ள இனத்தைப் பற்றி பேசினால், ஒரு உணர்வுள்ள மனிதநேயம் பற்றி பேசினால், உணர்வுள்ள மனிதர்கள் மற்றும் தனிநபர்களைப் பற்றி பேசுவதற்கு நாம் கடமைப்பட்டுள்ளோம்.

பூமியில் மேலான நனவின் (உயர்ந்த மனது) பரிணாமம் எந்த ஒரு கூட்டு அளவிலும் நடைபெறாது. பூமியில் மேலான (உயர்ந்த மனம்) நனவின் பரிணாமம் ஒருபோதும் ஒரு கூட்டு சக்தியின் வெளிப்பாடாக இருக்காது. உலகில் எப்பொழுதும் தனிமனிதர்களாகவே சிறிது சிறிதாக, மேலும் மேலும், அவர்களின் நனவின் அந்த புள்ளியை நோக்கி ஈர்ப்பு செய்வார்கள், அங்கு அவர்கள் தங்கள் சொந்த ஆதாரம், அவர்களின் ஆவி, அவர்களின் இரட்டை, நாம் எதை அழைத்தாலும் இந்த யதார்த்தத்திற்கு ஒன்றிணைவார்கள். மனிதனின் ஒரு பகுதியாகும்.

ஆனால் இந்த திசையில் அடிப்படை இயக்கம் இதை அடிப்படையாகக் கொண்டது: இது அதிகாரப்பகிர்வுக்குப் பிறகு ஒருபோதும் செய்யப்படாத சிந்தனையின் நிகழ்வு பற்றிய புரிதலை அடிப்படையாகக் கொண்டது. " நான் நினைக்கிறேன், அதனால் நான் இருக்கிறேன்" என்று சொல்வது போதாது . "நான் நினைக்கிறேன், அதனால் நான் இருக்கிறேன்" என்று டெஸ்கார்ட்டிற்குச் சொல்வது நல்லது , ஏனென்றால் அது தனிமனிதனின் மட்டத்தில் உணரப்பட வேண்டிய ஒரு சக்தியை தன்னுள் கொண்டுள்ளது என்பதை உணர்ந்ததன் ஒரு பகுதியாக இருந்தது.

ஆனால் ஒரு படைப்பு நனவின் மட்டத்தில், மனிதனின் சிந்தனை முழுமையாக, ஒருங்கிணைக்கப்படும் போது புள்ளி வரும். மேலும் பரிணாம வளர்ச்சியின் போது மனிதன் சிந்திக்க மாட்டான். அவரது சிந்தனையானது அவரது உயர்ந்த மனதை ஆக்கப்பூர்வமாக வெளிப்படுத்தும் முறையாக மாற்றப்படும். அந்த மனம் முழுவதுமாக மாறும் தொலை மனநோய். வேறு வார்த்தைகளில் கூறுவதானால், மனிதன் உலகளாவிய விமானங்களுடன் உடனடி தொடர்பை அனுபவிப்பான், மேலும் இந்த தகவல்தொடர்பு முறை இனி பிரதிபலிக்காது. மனிதனின் மனதில் எண்ணம் பிரதிபலிப்பதை நிறுத்தும் தருணம், சிந்தனை அகநிலையாக மாறுகிறது. மனிதன் நினைக்கிறான் என்று நாம் இனி சொல்ல முடியாது, மனிதன் தனது சொந்த நனவின் உலகளாவிய விமானங்களுடன் தொடர்பு கொள்கிறான் என்று சொல்கிறோம்.

ஆனால், மனிதன் இதை ஒருங்கிணைத்து புரிந்து கொள்வதற்கு, அந்த எண்ணத்தை, இன்று நாம் கருத்தரிக்கும்போது, இன்று நாம் வாழும்போது, நம் மனதில் பதிந்தபடி, உற்பத்தியாகும்போது அல்லது உணரும்போது அந்த எண்ணத்தை உணர வேண்டியது அவசியம். சுயநினைவற்ற ஈகோவாகிய நாம், ஒரு குறிப்பிட்ட உணர்வை நம்மில் எழுப்ப வேண்டும், அதாவது மனிதன் தன் எண்ணம் தன்னைத்தானே தனக்கு எதிராகப் பிரிக்கிறது என்பதை உணர முடியும். ஆக்கிரமிப்பு மற்றும் சுயநினைவின்மை காரணங்களுக்காக, அவரை நல்லது அல்லது கெட்டது, உண்மை மற்றும் பொய்யின் துருவமுனைப்புக்கு உட்படுத்தும் வரை மட்டுமே.

மனிதன் தன் மனதைத் துருவப்படுத்திய தருணத்திலிருந்து, அவன் எதிர்மறையான அல்லது நேர்மறை ஆயங்களை நிறுவினாலும், அவன் தனக்கும் பொருள் விமானத்திலும் தனக்கும் அண்ட மற்றும் உலகளாவிய விமானத்திலும் பிளவுகளை உருவாக்கிக் கொண்டான். இது மிகவும் முக்கியம்! அடுத்த பரிணாம வளர்ச்சிக்கான அடிப்படை திறவுகோலாக இது மிகவும் முக்கியமானது. எப்பொழுதும் ஒரு துருவமுனையுடன் நமது சிந்தனையை வாழ முனைவது நமது ஈகோவின் அடிப்படை பாதுகாப்பின்மை. இது நமது உணர்ச்சிகளின் சக்திவாய்ந்த மற்றும் காட்டேரி திறன். நமக்குத் தெரிந்ததைத் தாங்கிக் கொள்ள முடியாத ஒரு ஈகோவாகவோ அல்லது ஒரு கல்வியறிவு இல்லாதவராகவோ அல்லது அதிகமாகப் படித்தவராகவோ நமது இயலாமை.

உலகில் எதையும் அறியாத மனிதன் இல்லை. எல்லா ஆண்களுக்கும் ஏதாவது தெரியும், ஆனால் உலகளாவிய அதிகாரம் இல்லை, கலாச்சார வரையறை இல்லை, உலகில் எந்த கலாச்சார ஆதரவும் இல்லை, ஒரு மனிதனை ஏதாவது தெரிந்து கொள்ள ஆதரிக்க முடியும். இந்த அறிவை நிறுவுவதற்கும், மனிதனின் மனதை அதனுடன் நிலைநிறுத்துவதற்கும் ஒன்றைத் தெரிந்துகொள்ளும் உரிமையை தங்களுக்கு வழங்கும் நிறுவனங்கள் உள்ளன. இதை நாம் வெவ்வேறு நிலைகளில் அறிவியல் என்று அழைக்கிறோம், இது சாதாரணமானது.

ஆனால் உலகில் உள்ள நிறுவனங்கள் மனிதனுக்கு அவனது அதிகாரத்தை கொடுக்கவோ அல்லது திருப்பிக் கொடுக்கவோ முடியும், அதாவது ஒரு நாள் மிகப்பெரியதாக மாறக்கூடிய ஒரு சிறிய பரிமாணத்தை அவனிடம் திருப்பிக் கொடுக்க முடியும். மேலும் ஆன்மீக ரீதியில், மத ரீதியில் மிக எளிமையான முறையில் தேர்வை எடுக்கலாம். ஒரு நாள், மனிதனின் மையங்கள் போதுமான அளவு திறந்திருக்கும் போது, அறிவியல் துறையிலும் அதையே செய்ய முடியும்.

உலகில் இருக்கும் ஒரு மனிதன், உதாரணமாக, ஒரு மதகுரு அல்லது மதத்தில் பணிபுரியும் ஒருவரைப் பார்க்கச் சென்று, கடவுளைப் பற்றி அவரிடம் பேசுவான், மேலும் கூறுவார்: “சரி, கடவுள் அப்படிப்பட்டவர், அப்படி ஒரு விஷயம் , அப்படி ஒரு விஷயம்” , ஒருவன் அவனிடம் சொல்வான்: “ ஆனால் நீ எந்த உரிமையால் கடவுளைப் பற்றி பேசுகிறாய்? எந்த உரிமையால் கடவுளைப் பற்றி பேசுகிறீர்கள்”...? மேலும் மனிதன் குறைவான பரிணாம வளர்ச்சியடைந்து, அவனது மனதின் ஆக்கப்பூர்வமான பரிமாணத்தின் ஒரு பகுதியான பிற வடிவங்களை வெளிக்கொணரவோ அல்லது பிறப்பிக்கவோ கடவுளின் வடிவத்தை உண்மையில் துண்டு துண்டாகச் சிதைக்க முடிந்தால், அவன் கடவுளின் நிறுவனமயமாக்கலால் இன்னும் அதிகமாக விரட்டப்படுகிறான். கண்ணுக்கு தெரியாத உலகங்களைப் பற்றிய புரிதல்.

அதனால்தான் நான் சொல்கிறேன், மனிதன் உலகத்தின் ஆதரவுடன், ஒரு மேலான உணர்வில் (உயர்ந்த மனதில்) உலகில் நுழைய முடியாது. உலக ஆதரவின் தேவையிலிருந்து தன்னை முழுமையாக விடுவித்து, இறுதியாக தனக்குத் தெரிந்ததை உணர்ந்து தாங்கிக் கொள்ளத் தொடங்கும் போது மனிதன் மேலான (உயர்ந்த மனது) உணர்வைப் பெறுவான். உண்மை மற்றும் பொய்யின் துருவத்தின் வலையில் விழக்கூடாது என்பதே இதற்கான நிபந்தனை.

உண்மை மற்றும் பொய்யின் துருவத்தின் வலையில் மனிதன் விழுந்தால், அவன் தன் மனசாட்சியை உற்சாகப்படுத்துகிறான், அவன் தன் ஈகோவைப் பாதுகாப்பதில்லை, மேலும் அவன் யதார்த்தத்தை நோக்கி தீவிர அணுகுமுறைகளை வளர்த்துக் கொள்வான். உண்மையும் பொய்யும் அறிய மன இயலாமையின் உளவியல் கூறுகளை மட்டுமே குறிக்கின்றன! நீங்கள் ஒரு நல்ல மாமிசத்தை சாப்பிடும்போது, அது உண்மையானதா அல்லது போலியானதா என்று நீங்கள் ஆச்சரியப்பட வேண்டாம், துருவமுனைப்பு இல்லை, அதனால்தான் இது நல்லது. ஆனால் அங்கே பூச்சிகள் இருக்கிறதா என்று நீங்கள் யோசிக்க ஆரம்பித்தால், ஓ, உங்கள் வயிறு பதிலளிக்காது! அறிவின் அளவிலும், அறிவின் அளவிலும் இது ஒன்றே.

அறிவு என்பது தாழ்ந்த மனதுக்கு, அறிதல் உயர்ந்த மனதுக்கு. அறிவு என்பது அகங்காரத்தின் தேவையின் ஒரு பகுதியாகும், அதே நேரத்தில் அறிவது சுயத்தின் யதார்த்தத்தின் ஒரு பகுதியாகும். எனவே அறிவதற்கும் அறிவதற்கும் இடையில் பிரிவோ பிரிவோ இல்லை. அறிவு என்பது நனவின் ஒரு நிலையின் ஒரு பகுதி, அறிவு என்பது மற்றொரு நிலை.

அறிவுப் பரப்பில் சில விஷயங்களைப் பற்றிப் பேசுகிறோம், அறிவுப் பகுதியில் மற்ற விஷயங்களைப் பற்றி பேசுகிறோம். இருவரும் சந்திக்கலாம், சகோதரத்துவம் பெறலாம் மற்றும் நன்றாக ஒன்றாக இருக்கலாம். நான்காவது தளம் அதற்கு மேல் ஐந்தாவது தளத்துடன் எப்போதும் நன்றாக இருக்கும்... மேலும் மனிதன் பல பரிமாணங்கள் கொண்டவன், ஆனால் மனிதனும் ஒரு அனுபவ உணர்வைக் கொண்டு வாழ்பவன். பூமியில் நமக்கு ஒரு சோதனை உணர்வு உள்ளது. எங்களுக்கு படைப்பு உணர்வு இல்லை.

உன் வாழ்க்கையை பார்! உங்கள் வாழ்க்கை அனுபவம்! நீங்கள் உலகில் நுழைந்த தருணத்திலிருந்து, உங்கள் வாழ்க்கை தொடர்ந்து அனுபவத்தைப் பற்றியது, ஆனால் மனிதனால் காலவரையின்றி அனுபவத்தில் வாழ முடியாது. ஒரு நாள் மனிதன் படைப்பு உணர்வோடு வாழ வேண்டும், அந்த நேரத்தில் வாழ்க்கை வாழத் தகுதியானது, வாழ்க்கை மிகப் பெரியது, மிகப் பெரியது, அது படைப்பாற்றலில் சக்தி வாய்ந்தது, மேலும் மனிதன் ஆன்மா அனுபவத்தை வாழ்வதை நிறுத்துகிறான். ஆனால் மனிதன் ஏன் அனுபவத்தை வாழ்கிறான்? ஏனெனில் இது சக்திவாய்ந்த சக்திகளுடன் இணைக்கப்பட்டுள்ளது - நான் நினைவகம் என்று அழைக்கிறேன் - உண்மையில் நீங்கள் "ஆன்மா" என்று அழைக்கும்.

மனிதன் தன் ஆன்மாவால் வாழவில்லை, அவன் ஆன்மாவுடன் இணைந்திருக்கிறான், அவன் ஆன்மாவால் வாழ்கிறான், அவன் ஆன்மாவால் தொடர்ந்து வாம்பரைஸ் செய்யப்படுகிறான். மறுபிறப்பைப் பற்றி ஆராய்ச்சி செய்தவர்கள் அல்லது ஒரு குறிப்பிட்ட கடந்த காலத்திற்குத் திரும்புவது குறித்து ஆராய்ச்சி செய்தவர்கள், சிலர் இன்று சில விஷயங்களால் பாதிக்கப்படுகிறார்கள் என்பதை நன்றாகத் தீர்மானித்துள்ளனர், ஏனென்றால் முந்தைய வாழ்க்கையில், அவர்கள் காரணத்தால் பாதிக்கப்பட்டுள்ளனர். பொருள் வாழ்க்கைக்கு முன்பிருந்து வரும் அதிர்ச்சிகளை அனுபவிப்பதால், அல்லது முந்தைய நிலைமைகளில் மூச்சுத் திணறல் ஏற்பட்டதால், லிஃப்டில் (லிஃப்ட்) நுழைய முடியாதவர்கள் இன்று இருக்கிறார்கள், அவர்கள் திறமையற்றவர்கள்... அவர்கள் மூச்சுத் திணறுகிறார்கள். எனவே மனிதன் ஆன்மாவின் அனுபவத்தை வாழ்கிறான்.

அவர் வாழ்கிறார், அவர் தனது நினைவகத்துடன் இணைக்கப்பட்டுள்ளார், அவரது முந்தைய பரிணாம இயக்கத்தின் மிகப் பெரிய மயக்கமான நினைவகம், இன்று அவர் ஒரு சோதனை உயிரினமாக வாழும் மிகப் பெரிய நினைவகம். பூமியில் அனுபவத்தால் மனிதன் காலவரையின்றி வாழ முடியாது! இது அவரது யுனிவர்சல் இன்டெலிஜென்ஸ் அவமதிப்பு. மனிதனின் இயல்புடன் முற்றிலும் பொருத்தமற்றது: " சரி, சரி, பத்து ஆண்டுகளில் நான் அத்தகைய செயலைச் செய்ய விரும்புகிறேன், ஐந்து ஆண்டுகளில் நான் அத்தகைய செயலைச் செய்ய விரும்புகிறேன்" என்று மனிதன் கூறமுடியாது தன் எதிர்காலத்தை அறியாத மனிதன்!

தனக்கு முன் இருக்கும் மனிதனின் இயல்பை அவன் அறியாதது மனிதனின் இயல்புடன் ஒத்துப்போக முடியாதது. வேறு வார்த்தைகளில் கூறுவதானால், மனிதனில் உள்ள இந்த ஆவி பகுத்தறிவின் கட்டளைகளின்படி வாழ வேண்டிய கட்டாயத்தில் உள்ளது என்பது மனிதனின் ஆவியுடன் சமரசம் செய்ய முடியாதது, ஏனென்றால் இன்று பொருள் விமானத்தில் உள்ள மனிதன் ஒரு தலைமுறையின் ஒரு பகுதியாகும், அதன் நனவு இறங்குகிறது. மனிதனின் உணர்வு பொருளில் இறங்குவதிலிருந்து இறுதியில் ஈதெரிக்கை நோக்கி வெளியேற வேண்டும், அதாவது மனிதன் இயற்கையாகவே அழியாத தன்மையை வாழ வேண்டிய உலகமாக இருக்கும் கிரகத்தின் யதார்த்தத்தின் ஒரு பகுதி.

மனிதன் பொருளுக்குள் வந்து இறப்பதற்காக படைக்கப்படவில்லை. நாம் மரணம் என்று அழைக்கிறோம், அதாவது மனிதன் அல்லது ஆன்மா நிழலிடா விமானத்திற்கு திரும்புவது என்று கூறுவது மனிதனின் மயக்கத்தின் ஒரு பகுதியாகும். மனிதன் தனது தலைமுறைக்கு ஆதாரமான, அவனது புத்திசாலித்தனத்தின் ஆதாரமான, அவனது உயிர்ச்சக்தியின் ஆதாரமான, அவனது கிரக சுயத்தின் ஆதாரமான உலகளாவிய சுற்றுகளிலிருந்து முற்றிலும் துண்டிக்கப்பட்ட உண்மையின் ஒரு பகுதி! எனவே மனிதன் மூலத்திற்குத் திரும்ப வேண்டும், ஆனால் ஆன்மிக, வரலாற்று மாயைகள் மூலம் மனிதனால் மூலத்திற்குத் திரும்ப முடியாது.

மனிதனைப் பொருளின் கைதியாகக் கட்டாயப்படுத்திய பழைய யோசனைகளைப் பயன்படுத்துவதன் மூலம் தனது மூலத்திற்குத் திரும்ப முடியாது. மனிதன் தன்னை ஒரு சோதனை உணர்வு கொண்ட ஒரு உயிரினமாக மாற்றிய பழைய வழிகளைப் பயன்படுத்தி தனது மூலத்திற்குத் திரும்பப் போவதில்லை. மனிதன் நம்பி தன் மூலத்திற்குத் திரும்ப மாட்டான்.

மனிதன் தனது பரிணாம வளர்ச்சியின் போது படிப்படியாக வளர்வதன் மூலம் தனது மூலத்திற்குத் திரும்புவான், தனக்குத் தெரிந்ததை ஆதரிக்கும் திறன்.

ஆனால் இன்றைய உலகில், நாம் ஒரு புராணக்கதைக்கு, நம் சுயத்தின் உளவியல் முறைப்படுத்தலுக்கு அழிந்துவிட்டோம். அனைத்து மனிதநேயங்களையும் பாதிக்கும் ஒரு உளவியல் மன அணுகுமுறையின் பிடியில் நாம் அழிந்துவிட்டோம்: நம்பிக்கை. மனிதன் ஏன் நம்ப வேண்டும்? ஏனென்றால் அவருக்குத் தெரியாது! மனிதன் ஏன் நம்ப வேண்டும்? அவர் அனுபவ உணர்வுள்ளவர் என்பதால், அவர் மனதில் ஒளி இல்லை. அவர் தனது சிறிய நனவின் மிகவும் இருண்ட இயக்கத்தில் வாழ்கிறார், எனவே அவர் முக்கியமான மற்றும் முழுமையான ஒன்றில் தன்னை இணைத்துக் கொள்வதற்காக நம்ப வேண்டிய கட்டாயத்தில் உள்ளார்.

ஆனால் அகங்காரத்தின் உளவியல் நிலைப்பாட்டின் ஒரு பகுதியாக இருக்கும் முழுமையான நம்பிக்கை, இந்த முழுமையான நம்பிக்கை, இது யாரால் நிறுவப்பட்டது? இது மேன் ஆஃப் இன்வல்யூஷனால் நிறுவப்பட்டது. நீங்கள் உலகத்திற்குச் சென்று ஒருவரிடம் கதைத்தால், நீங்கள் முதலில் சொன்னதை விட, நீங்கள் சொல்லப்போகும் கதையை மற்றவர் பெற்றுக் கொண்டு சொல்லும் போது இனி ஒரே மாதிரியாக இருக்காது என்பது உங்களுக்கு நன்றாகத் தெரியும். .

யாரோ ஒருவர் உலகத்திற்குச் சென்று இன்று நான் சொல்வதை மீண்டும் சொல்ல முயற்சிக்கிறார் என்று கற்பனை செய்து பாருங்கள், ஒரு துவக்கமாக, அது நாளை எப்படி வெளிவரும் என்பதை நீங்கள் கற்பனை செய்யலாம்! எனவே கடந்த காலத்தில் விஷயங்களைச் செய்த மனிதர்கள் இருக்கிறார்கள், மனிதகுலத்தின் பரிணாம வளர்ச்சிக்கு உதவுவதற்காக உலகில் தோன்றியவர்கள் இருந்தனர். ஆனால் இந்த உயிரினங்கள் என்ன சொன்னார்கள் மற்றும் அவர்கள் கூறியதாகக் கூறப்பட்டவை வேறு விஷயம்.

நான் உங்களுக்கு ஒரு விஷயத்தைச் சொல்ல முடியும் - ஏனென்றால் இந்த நிகழ்வை நான் பல ஆண்டுகளாக அறிந்திருக்கிறேன் - ஒரு மனிதனால் சரியாகச் சொல்லப்பட்டதை மீண்டும் செய்வது முற்றிலும் சாத்தியமற்றது. இன்றிரவு வீட்டிற்கு வந்ததும் செய்து பாருங்கள்! ஒரு மனிதனால் சரியாகச் சொன்னதைத் திரும்பத் திரும்பச் சொல்வது சாத்தியமில்லை. ஏன் என்று நான் உங்களுக்கு சொல்கிறேன். ஏனென்றால், சரியாகச் சொல்லப்பட்டவை - வேறுவிதமாகக் கூறினால், அகங்காரத்தால் வர்ணம் பூசப்படாதவை, நிழலிடப்படாதவை, மனிதனின் மயக்கத்தின் ஒரு பகுதியாக இல்லாதவை, ஆனால் மனிதனின் பிரபஞ்சத்தின் ஒரு பகுதியாகும் - அது ஈகோவை நோக்கி செலுத்தப்படவில்லை. மனிதன் அல்லது மனிதனின் அகங்காரத்திற்கு, அல்லது மனிதனின் அறிவுக்கு. அது அவருடைய ஆவிக்கு அனுப்பப்பட்டது.

மேலும் மனிதன் தன் ஆவியில் இல்லை என்றால், மற்றொரு ஆவி ஏற்கனவே கூறியதை அவன் எப்படி எடுத்துக்கொள்வான் என்று எதிர்பார்க்கிறீர்கள்? அது முடியாத காரியம். எனவே அந்த நேரத்தில் வண்ணமயமாக்கல் உள்ளது. மனிதகுலத்தின் பரிணாம நலனுக்காக நாம் மதங்கள் என்று அழைக்கும் தொடக்கக்காரர்களின் வார்த்தைகளின் வண்ணத்தில் இருந்து பிறந்தது. நான் ஒப்புக்கொள்கிறேன், இது நடக்கிறது என்பதில் நான் மிகவும் மகிழ்ச்சியடைகிறேன், இது செய்யப்பட்டுள்ளது, ஏனென்றால் இது அவசியம். ஆனால் பரிணாம வளர்ச்சியின் போது மனிதனுக்கு தன் மனசாட்சிக்கு தனது சொந்த அறிவின் முழுமையை வழங்குவதற்கு தார்மீக ஆதரவு தேவையில்லை. அதுவே மேலான உணர்வு (உயர்ந்த மனம்).

நாங்கள் கியூபெக்கர்களுடன் பேசுவதால், நல்ல காரணங்களுக்காக, மதம் அவர்களுக்கு வழங்கிய ஆன்மீக உலகத்திற்கு ஒரு குறிப்பிட்ட அருகாமையை அனுபவிக்கும் வாய்ப்பைப் பெற்ற மக்களுடன் நாங்கள் பேசுகிறோம், இந்த அர்த்தத்தில் ஏற்கனவே ஒரு முன்னேற்றம் உள்ளது. ஏற்கனவே, நாம் ஏற்கனவே கண்ணுக்கு தெரியாதவற்றை நோக்கி ஒரு குறிப்பிட்ட உணர்திறன் கொண்ட உயிரினங்கள்.

ஆனால் அங்கிருந்து ஊடுருவலின் ஆன்மீகப் பாதைகளைப் பயன்படுத்தி நனவுக்கான ஆழ்ந்த அமானுஷ்ய தேடலில் நுழைவது நம்மை நேரடியாக சுயத்தின் துருவமுனைப்புக்கு அழைத்துச் செல்லும். அது நம்மை நன்மைக்கும் தீமைக்கும், உண்மைக்கும் பொய்க்கும் இடையிலான மோதலுக்கு கொண்டு வந்து, மனதில் பெரும் துன்பத்தை உண்டாக்கும்.

அதனால்தான் நான் சொல்கிறேன்: நனவான மனிதனே, பூமியில் மேலான நனவின் (உயர்ந்த மனது) பரிணாமம், மனிதன் தனது எண்ணத்தை உண்மை மற்றும் போலிக்கு உட்படுத்தாமல் இருக்க வேண்டியதன் அவசியத்தை ஏற்கனவே புரிந்துகொண்ட தருணத்திலிருந்து தொடங்கும். ஆனால் இந்த சிந்தனை ஒரு நாள் சரியானதாக இருக்கும் வரை படிப்படியாக அதை வாழ கற்றுக்கொள்வதும் அதன் இயக்கத்தை ஆதரிப்பதும், அதாவது முற்றிலும் அதன் சொந்த வெளிச்சத்தில், முழுவதுமாக துருவப்படுத்தப்பட்டு, இறுதியில் அவன் ஈகோ, நான்... ஈகோ, ஆன்மா மற்றும் ஆவியானவர் ஒருங்கிணைக்கப்பட்டு மனிதனை ஒரு உண்மையான உயிராக ஆக்குகிறார்கள்.

உண்மையான உயிரினம் என்றால் என்ன? ஒரு உண்மையான உயிரினம் ஒரு உண்மையான உயிரினம்! அவர் உண்மை தேவைப்படுபவர் அல்ல, உண்மையை உண்பவர் அல்ல. நீங்கள் உண்மையைச் சாப்பிட்டால், நாளை நீங்கள் பொய்யை உண்பீர்கள், ஏனென்றால் உண்மையின் முடிவிலியின் எல்லைக்கு உங்களை மேலும் அழைத்துச் செல்லும் நபர்கள் இருப்பார்கள். நீங்கள் உண்மையைச் சாப்பிட்டால், ஒரு நாள் நீங்கள் மீண்டும் இந்த நடவடிக்கையை எடுக்க வேண்டியிருக்கும், ஏனென்றால் மனிதனுக்கு ஏற்றது, அவனது மனசாட்சிக்கு ஏற்றது, அவனது ஆவிக்கு ஏற்றது, அது அவனது ஆன்மாவுக்கு ஏற்றது, அது அவனுடைய அகங்காரத்திற்கு ஏற்றது. , அமைதி ஆகும்.

ஆனால் அமைதி என்றால் என்ன? அமைதி என்பது தேடலின் நிறுத்தம், நிறுத்தம். நீங்கள் சொல்லப் போகிறீர்கள்: " ஆம், ஆனால் நீங்கள் தேட வேண்டும்" , நான் சொல்கிறேன்: ஆம், மனிதன் தேடுகிறான், உங்களைத் தேடினாலும், எல்லா மனிதர்களும் தேடுகிறார்கள், ஆனால் பரிணாம வளர்ச்சியின் போது மனிதன் தேடும் ஒரு புள்ளி வரும். இனி தேடுதல் இருக்காது, மனிதன் இனி தேட வேண்டியதில்லை, கடைசியில் தனக்குத் தெரியும் என்பதை மனிதன் உணரும்போது தேடுவதை நிறுத்திவிடுவான்.

அங்கே நீங்கள் சொல்லப் போகிறீர்கள்: “ ஆம், ஆனால் ஒருவருக்குத் தெரியும் என்பதை ஒருவர் எப்படித் தெரிந்துகொள்ள முடியும்”... நீங்கள் அதைத் தாங்கிக்கொள்ள உங்களை அனுமதிக்கும் வரையில் நீங்கள் அதை அறிவீர்கள். நீங்கள் சொல்வது சரி என்றால். பின்னர் நீங்கள் சொல்லப் போகிறீர்கள்: " சரி ஆம், ஆனால் நாங்கள் சொல்வது சரி அல்லது நாங்கள் சரி என்று நினைத்தால், அது ஆபத்தானது". நான் சொல்வேன்: ஆம், ஏனென்றால் சரியாக இருக்க முற்படும் ஒரு மனிதன் ஏற்கனவே தனது காரணத்தைத் தேடும் ஒரு மனிதன்!

ஆனால் உங்கள் வாழ்வில், உங்கள் அன்றாட வாழ்வில், தனிப்பட்ட மூலையில், உங்களுக்குத் தெரிந்த அனுபவங்கள், அதுதான் என்று உங்கள் வாழ்வில் உணரக்கூடிய நேரங்கள் இல்லையா? மற்றும் அது போது, அது தான்!

அதுதான்” என்பதை மற்றொரு “ அதுதான் ” என்று மற்றொரு “ அதுதான்” என்று சேர்க்கும் திறன் பெற்றவர்கள் , ஆனால் ஒரு “ இதுதான்” உண்மையானது, மனதின் பெருமையின் மீது கட்டமைக்கப்படாத “ இதுதான்” , “ இதுதான்” ஆன்மீகம் அல்லது உங்கள் ஆன்மீகத்தின் பெருமை ஆகியவற்றின் மீது கட்டமைக்கப்படாது, “ அதுதான்” என்பது தனிப்பட்டதாக இருக்கும். உங்களுக்கு, " அதுதான்" என்பது நீங்கள் சந்திக்கும் அனைத்து ஆண்களுடனும் உலகளாவியதாக இருக்கும் மற்றும் அவர்களின் " அது தான்" என்பதில் யார் இருப்பார்கள் , அந்த நேரத்தில் நீங்கள் அதை அறிவீர்கள் !) (இந்தப் பத்தியை மொழிபெயர்க்க முடியாவிட்டால் நீக்கவும்) .

ગુજરાતી

બર્નાર્ડ ડી મોન્ટ્રીયલ દ્વારા 2 પરિષદોનું ટ્રાન્સક્રિપ્શન અને અનુવાદ.



ટેમ્પરરી ફોર્મેટ

આ પુસ્તક આર્ટિફિશિયલ ઈન્ટેલિજન્સ દ્વારા અનુવાદિત કરવામાં આવ્યું છે પરંતુ કોઈ વ્યક્તિ દ્વારા ચકાસવામાં આવ્યું નથી. જો તમે આ પુસ્તકની સમીક્ષા કરીને યોગદાન આપવા માંગતા હો, તો કૃપા કરીને અમારો સંપર્ક કરો.

અમારી વેબસાઈટનું મુખ્ય પૃષ્ઠ: http://diffusion-bdm-intl.com/

અમારું ઈમેઈલ: contact@diffusion-bdm-intl.com

સામગ્રી

સમગ્ર Diffusion BdM Intl ટીમ તરફથી શુભેચ્છાઓ.

પિયર રિઓપેલ 18 એપ્રિલ, 2023

પ્રકરણ 1

ઓળખ *CP036*

અન્યની સામે સ્વ-ઓળખ એ સાર્વત્રિક માનવ સમસ્યા છે. અને આ સમસ્યા ત્યારે વધે છે જ્યારે માણસ આધુનિક સમાજ જેવા જટિલ સમાજમાં રહે છે. ઓળખની સમસ્યા એ અહંકારના જીવનની વેદના છે, વેદના જે તેને વયથી અનુસરે છે જ્યારે તે પોતાને અન્યની તુલનામાં જુએ છે. પરંતુ ઓળખની સમસ્યા એ એક ખોટી સમસ્યા છે જે એ હકીકતથી ઉદ્ભવે છે કે અહંકાર, પોતાની જાતને પોતાને અનુભૂતિ કરવાને બદલે, એટલે કે તેના પોતાના માપ મુજબ, પોતાને અન્ય અહંકાર સામે સ્પર્ધાત્મક રીતે અનુભવવા માંગે છે. જે હકીકતમાં પીડાય છે . , તેના જેવી જ સમસ્યામાંથી.

જ્યારે અહંકાર તેના ફૂલોની પ્રશંસા કરવા માટે તેની વાડની બહાર બીજાના ખેતરમાં જુએ છે, ત્યારે તે જોવામાં નિષ્ફળ જાય છે કે અન્ય પોતાની સાથે તે જ કરી રહ્યો છે. આજે માણસમાં ઓળખ, અથવા ઓળખની કટોકટી એટલી તીવ્ર છે કે તે આત્મવિશ્વાસની ખોટને પરિણમે છે જે સમય જતાં વ્યક્તિગત ચેતનાના સંપૂર્ણ નુકશાનમાં અધોગતિ કરે છે. ખતરનાક પરિસ્થિતિ, ખાસ કરીને જો અહંકાર પહેલાથી જ પાત્રમાં નબળો હોય અને અસલામતીની સંભાવના હોય.

ઓળખની સમસ્યા, એટલે કે પોતાને જેટલું ઊંચું ન જોવાના અહંકારની આ લાક્ષણિકતા, હકીકતમાં સર્જનાત્મકતાની સમસ્યા છે. પરંતુ જ્યારે અહંકાર સર્જનાત્મક હોય છે, ત્યારે ઓળખની સમસ્યા ત્યાંથી દૂર થતી નથી, કારણ કે અહંકાર ક્યારેય પોતાની જાતથી સંપૂર્ણ રીતે સંતુષ્ટ થતો નથી જ્યાં સુધી તે તેના નીચા સ્વભાવના ભ્રમને સમજી ન લે. જેથી નિમ્ન-સ્થિતિનો અહંકાર ઉચ્ચ-સ્થિતિના અહંકારની સમાન ઓળખની સમસ્યાનો અનુભવ કરશે, કારણ કે તેની અને બીજા વચ્ચેની સરખામણી માત્ર ધોરણમાં બદલાશે, પરંતુ તે હંમેશા હાજર રહેશે, કારણ કે અહંકાર હંમેશા સુધારણા શક્તિમાં હોય છે. અને તે પોતાના માટે જે સુધારણા શોધે છે તેનો કોઈ અંત નથી.

પરંતુ સ્વ-સુધારણા એ એક ધાબળો છે જેની નીચે અહંકાર છુપાવે છે જેથી તમારી જાતને આનંદથી જીવવાનું કોઈ કારણ મળે. પરંતુ શું તે જાણતો નથી કે તમામ સુધારણા પહેલેથી જ ઇચ્છા શરીર દ્વારા પેદા થાય છે?

ઓળખની સમસ્યા માણસમાં વાસ્તવિક બુદ્ધિની ચેતનાની ગેરહાજરીથી આવે છે. જ્યાં સુધી માણસ તેની બુદ્ધિથી જીવે છે, તે માત્ર સંવેદનાત્મક અનુભવ દ્વારા તેના મંતવ્યોનું સમર્થન કરે છે, તેના માટે તે અઘરું છે કે તે જે વિચારે છે તે તે જાણે છે અથવા સમજે છે તેને અણધારી બુદ્ધિના સંપૂર્ણ મૂલ્ય દ્વારા અહંકારી અનુભવ દ્વારા બદલવું મુશ્કેલ છે.

જ્યાં સુધી માણસ પોતાની છાપ બનાવવા માટે જીવનમાં પોતાને પ્રગટ કરવાની ઈચ્છા રાખે છે, ત્યાં સુધી તે આ ઈચ્છાથી પીડાય છે. જો તે તેની ઇચ્છાને હાંસલ કરવામાં વ્યવસ્થાપિત કરે છે, તો બીજો તેને પાછળ ધકેલી દેશે, વગેરે. તેથી જ, માણસમાં, કોઈપણ પ્રકારની હાર તેના માટે ઓળખની કટોકટી બનાવે છે, પછી ભલે તેની સ્થિતિ ગમે તે હોય, કારણ કે ઓળખની સમસ્યા એ સફળતાની સમસ્યા નથી, પરંતુ અંતરાત્માની સમસ્યા છે. , એટલે કે વાસ્તવિક બુદ્ધિની સમસ્યા છે. .

જે માણસ તેના જીવન દરમિયાન શોધે છે કે વાસ્તવિક બુદ્ધિ બુદ્ધિને વધારે છે, તે પહેલેથી જ ઓળખની સમસ્યાથી ઓછી પીડાય છે, જો કે તે હજી પણ વાસ્તવિક સર્જનાત્મકતાની ગેરહાજરીથી પીડાઈ શકે છે, જે તેને લાગે છે કે તે પ્રગટ કરી શકે છે. જ્યારે તેની ઓળખ તેને અનુકૂળ જીવનશૈલીને અનુરૂપ બને છે ત્યારે જ તેને ખ્યાલ આવશે કે સર્જનાત્મકતા અસંખ્ય સ્વરૂપો ધારણ કરી શકે છે, અને દરેક માણસ પાસે સર્જનાત્મકતાનું એક સ્વરૂપ છે જે તેને અનુકૂળ છે. અને આ સ્વરૂપમાંથી તે તેના ઈચ્છા શરીર અને તેની સર્જનાત્મક બુદ્ધિના સંદર્ભમાં સંપૂર્ણ સુમેળમાં જીવી શકે છે.

સર્જનાત્મક બનવાનો અર્થ એ નથી કે વિશ્વને બદલવું, પરંતુ પોતાના માટે સંપૂર્ણ રીતે કરવું, જેથી આંતરિક વિશ્વ બાહ્ય બને. આ રીતે વિશ્વ બદલાય છે: હંમેશા અંદરથી બહારથી, ક્યારેય વિરુદ્ધ દિશામાં નહીં. ઓવરમાઇન્ડને ઓળખની સમસ્યાનો અહેસાસ થવા લાગે છે. તે જુએ છે કે તે જે છે તે હજુ પણ છે જે તે હતો. પરંતુ તે એ પણ જુએ છે કે જેમ જેમ તેનું શરીર બદલાય છે તેમ તેમ તેની ચેતના વધે છે અને ઓળખની સમસ્યા ધીમે ધીમે અદૃશ્ય થઈ જાય છે, જે અગાઉ અચેતન અહંકાર હતો તેની સપાટી પર.

ઓવરમાઇન્ડમાં ઓળખની સમસ્યાને ધીમે ધીમે દૂર કરવાથી આખરે તેને તેનું જીવન જીવવા માટે પરવાનગી આપે છે કારણ કે તે ખરેખર તેને જુએ છે, અને પોતાના વિશે વધુ સારું અને વધુ સારું બની શકે છે. માણસમાં એવું કંઈ નથી જે ઓળખથી પીડાવું જેટલું મુશ્કેલ છે. કારણ કે તે હકીકતમાં ભ્રામક સ્વરૂપોથી પીડાય છે, એટલે કે તે શરૂઆતથી બનાવે છે તે કારણોસર કહેવાનો અર્થ એ છે કે તે બુદ્ધિશાળી નથી, એટલે કે તેનામાં રહેલી સર્જનાત્મક બુદ્ધિથી સભાન છે.

ઓળખની એક બાજુ કેટલાક કિસ્સાઓમાં શરમ છે, અન્યમાં અકળામણ છે, મોટાભાગનામાં અસુરક્ષા છે. સારા નૈતિકતા ધરાવતો માણસ શરમથી કેમ જીવશે જ્યારે તેના મનમાં સામાજિક ચિંતન જ સામાજિક વિચારની જાળમાં કેદ છે? અહંકારની અસમર્થતાથી તરત જ અન્ય લોકો શું વિચારતા હશે તેમાંથી છૂટકારો મેળવવાની અસમર્થતાને લીધે થતી અકળામણ વિશે પણ એવું જ છે. જો શરમજનક અહંકાર અન્ય લોકો જે વિચારી શકે છે તેનાથી છૂટકારો મેળવશે, તો તેની અકળામણ અદૃશ્ય થઈ જશે અને તે વધુ ઝડપથી તેની વાસ્તવિક ઓળખ મેળવી શકશે, એટલે કે, મનની આ સ્થિતિ જે માણસને હંમેશા તેના પોતાના દિવસના પ્રકાશમાં જોવા માટે બનાવે છે.

ઓળખની સમસ્યા માણસમાં કેન્દ્રિતતાની ગેરહાજરીથી આવે છે. અને આ ગેરહાજરી બુદ્ધિની ઘૂસણખોરી શક્તિને ઘટાડે છે, જે માણસને તેની બુદ્ધિનો ગુલામ બનાવે છે, તે તેના પોતાના ભાગનો જે મનના નિયમો અથવા મનની પદ્ધતિઓ જાણતો નથી. તેથી માણસ, તેના અનુભવ પર છોડી દે છે, તેની બુદ્ધિમાં પ્રકાશનો અભાવ છે અને માણસના સ્વભાવ વિશે અન્યના અભિપ્રાયને સ્વીકારવાની ફરજ પડે છે.

જો માણસ પોતાના વિશે અજાયબી કરે છે, તો બીજા માણસ માટે તે કેવી રીતે શક્ય છે કે તે તેને પ્રકાશિત કરે, જો આ બીજો માણસ તેના જેવી જ પરિસ્થિતિમાં હોય? પરંતુ માણસને આનો અહેસાસ થતો નથી, અને તેની ઓળખની સમસ્યા ઘટનાઓ દ્વારા અહંકાર સામે લાદવામાં આવેલા દબાણને કારણે વધુ ખરાબ થાય છે.

મનમાં રહેલો અહંકાર નિઃશંકપણે તેની વિચારવાની રીતમાં ફસાઈ જાય છે જે તેની વાસ્તવિક બુદ્ધિને અનુરૂપ નથી. અને આ વિચારવાની રીત તેની બુદ્ધિની વાસ્તવિકતાનો વિરોધાભાસ કરે છે, કારણ કે જો તે તેની બુદ્ધિમત્તાની વાસ્તવિકતા તેના અંતર્જ્ઞાન દ્વારા સમજે છે, ઉદાહરણ તરીકે, તે તેની વાસ્તવિકતાનો ઇનકાર કરનાર પ્રથમ વ્યક્તિ હશે, કારણ કે બુદ્ધિને અંતર્જ્ઞાનમાં વિશ્વાસ નથી, તે તેને પોતાના એક અતાર્કિક ભાગ તરીકે જુએ છે. અને બુદ્ધિ તર્કસંગત અથવા માનવામાં આવે છે, તેથી તેની વિરુદ્ધની કોઈપણ વસ્તુને બુદ્ધિ તરીકે ઓળખવા યોગ્ય નથી. અને તેમ છતાં, અંતઃપ્રેરણા ખરેખર વાસ્તવિક બુદ્ધિનું અભિવ્યક્તિ છે, પરંતુ આ અભિવ્યક્તિ અહંકાર માટે તેના મહત્વ અને બુદ્ધિને સમજવા માટે સક્ષમ થવા માટે હજી પણ નબળી છે. તે પછી તેના તર્કમાં પાછો ફરે છે અને મનની સૂક્ષ્મ પદ્ધતિઓ શોધવાની તક ગુમાવે છે જે તેની ઓળખની સમસ્યા પર પ્રકાશ પાડી શકે છે.

પરંતુ ઓળખની સમસ્યા માણસની સાથે જ રહેવી જોઈએ, જ્યાં સુધી બુદ્ધિ જવા દેતી નથી અને અહંકાર આંતરિક રીતે પોતાને સાંભળતો નથી. જો અહંકાર તેની અંદર રહેલી વાસ્તવિક બુદ્ધિના સ્વભાવ અને સ્વરૂપ પ્રત્યે સંવેદનશીલ હોય, તો તે ધીમે ધીમે સમાયોજિત થાય છે અને તે બુદ્ધિમાં વધુને વધુ ઘર બનાવે છે. સમય જતાં, તે વધુને વધુ નિયમિતપણે ત્યાં જાય છે, અને તેની ઓળખની સમસ્યા દૂર થતી જાય છે, કારણ કે તેને ખ્યાલ આવે છે કે તેણે પોતાને વિશે જે વિચાર્યું હતું તે તેની વાસ્તવિક બુદ્ધિની માત્ર એક મનોવૈજ્ઞાનિક અને માનસિક વિકૃતિ હતી, જે તેના તર્કની ઊંચી દિવાલોની બહાર જવા માટે અસમર્થ છે.

જટિલ સમાજમાં, જેમ આપણે જાણીએ છીએ, ફક્ત અહંકારની આંતરિક શક્તિ, તેની વાસ્તવિક બુદ્ધિ, તેને અભિપ્રાયોની છાલથી ઉપર ઉઠાવી શકે છે અને તેની સાચી ઓળખની ખડક પર સ્થાપિત કરી શકે છે. અને સમાજ જેટલો વધુ વિઘટિત થતો જાય છે, તેના પરંપરાગત મૂલ્યો જેટલા વધુ ક્ષીણ થતા જાય છે, તેટલો અહંકાર વિનાશના માર્ગે જાય છે, કારણ કે તેની પાસે આધુનિકતાની વધતી જતી આશ્ચર્યજનક ઘટના સામે ઊભા રહેવા માટે હવે ઔપચારિક સામાજિક પાલખ નથી. જીવન

પરંતુ અહંકાર હંમેશા તે લોકોનું સાંભળવા તૈયાર નથી કે જેઓ તેને તેના પોતાના રહસ્યને સમજવાની આવશ્યક ચાવીઓ આપી શકે. કારણ કે તેનું મનોવૈજ્ઞાનિક વિકૃતિ તેને પહેલાથી જ દરેક વસ્તુ પર પ્રશ્ન કરવા તરફ દોરી જાય છે જે તેની વ્યક્તિલક્ષી વિચારસરણીને અનુરૂપ નથી. આથી જ અહંકારને વધુ જોવાના તેના ઇનકાર માટે બહુ દોષી ઠેરવી શકાય નહીં, પરંતુ તે અહેસાસ કરાવી શકાય છે કે તે આજે આગળ જોઈ શકતો નથી, આવતીકાલે તેની દ્રષ્ટિ તેનામાં ઊર્જાના પ્રવેશને અનુરૂપ વિસ્તરણ કરશે.

કારણ કે વાસ્તવમાં, તે અહંકાર નથી જે તેના પોતાના પ્રયત્નોથી તેની ઓળખની દિવાલ પર કાબુ મેળવે છે, પરંતુ આત્મા જે તેને દુઃખ દ્વારા લાવે છે, એટલે કે તેના પ્રકાશના પ્રવેશ દ્વારા, નોંધણી કરવા માટે, બુદ્ધિની બહાર, સ્પંદન. બુદ્ધિનું. અને આ વાઇબ્રેશનલ આંચકો અંતની શરૂઆત બની જાય છે.

ત્યાં ઓછા ગૌરવપૂર્ણ અહંકાર છે જેઓ વાસ્તવિકતા તરફ ખુલે છે, કારણ કે એક પ્રકારની નમ્રતા પહેલાથી જ તેમને તેમના પોતાના પ્રકાશ તરફ પ્રેરિત કરે છે. બીજી બાજુ, આ પ્રકાશ, આ સુંદર દોરો પસાર કરવા માટે અહંકાર ખૂબ ગર્વ અનુભવે છે. અને તે તે અહંકાર છે જે મોટા વળાંક, મોટા આંચકાઓ માટે સૌથી વધુ સંવેદનશીલ હોય છે જે તેમને પછાડે છે અને તેમને વધુ વાસ્તવિક બનાવે છે.

ઓળખ કટોકટી માણસની અપરિપક્વતા સાથે ઓળખાય છે. સાચી ઓળખ સાચી પરિપક્વતાના વિકાસને દર્શાવે છે.

આત્મા તેની ક્રિયાઓમાં અહંકારથી સ્વતંત્ર છે, અને બાદમાં તે સારી રમત ધરાવે છે, જ્યાં સુધી તે ઘરમાં પોતાને બળમાં અનુભવતો નથી. આ ક્ષણ અહંકારને ખબર નથી. અને જ્યારે તે દેખાય છે, ત્યારે તેને ખ્યાલ આવે છે કે તેની મિથ્યાભિમાન, તેનું ગૌરવ, તેની પોતાની જાત સાથેનો મોહ, તેના વિચારો સાથે, દબાણ હેઠળ ઇંડાની જેમ ફૂટી જાય છે.

આત્માની વેદનાના તેના કારણો છે જે અહંકાર પહેલા સમજી શકતો નથી, પરંતુ તે જીવવામાં પણ મદદ કરી શકતો નથી. આત્મા જ કામ કરે છે. તેના માટે એક તબક્કામાંથી બીજા તબક્કામાં જવાનો સમય છે. ઓળખની સમસ્યા, જે તેણે શરૂઆતમાં અનુભવી હતી, તે પોતાને ફરીથી ગોઠવે છે, અને તેનું ગૌરવ બાળકની રમતની જેમ તૂટી જાય છે. અહંકાર વધુ હોય કે ઓછો અભિમાન હોય, તે બધું જ અસલામતી પર ઉતરી આવે છે. ઘણી વાર કોઈ વ્યક્તિ કહેવાતા " નક્કર", "મજબૂત" અહંકારનો સામનો કરે છે , જેમના માટે વાસ્તવિક શુદ્ધ કાલ્પનિક છે; તે આ અહંકાર છે જે તેમની ઓળખ પર સૌથી વધુ અસર કરે છે, જ્યારે આત્મા માનસિક અને ભાવનાત્મક કંપન કરે છે, જીવનની ઘટનાઓના દબાણ હેઠળ અહંકાર હવે નિયંત્રિત કરી શકતો નથી.

આ મુશ્કેલ અનુભવો દરમિયાન, અહંકાર તેની નબળાઈના સાચા પ્રકાશમાં પોતાને જોવાનું શરૂ કરે છે. તે ત્યાં જ તે જુએ છે કે તેની ખોટી ઓળખની સુરક્ષા, જ્યાં તેની બુદ્ધિનો અભિમાન પ્રવર્તે છે, તે પ્રકાશના કંપનશીલ દબાણ હેઠળ ફૂટે છે. તે પછી તેના વિશે એવું કહેવામાં આવે છે કે તે બદલાઈ રહ્યો છે, તે હવે પહેલા જેવો નથી અથવા તે પીડાઈ રહ્યો છે. અને આ તો માત્ર શરૂઆત છે, કારણ કે જ્યારે આત્મા ખોટી ઓળખની દીવાલો તોડવા લાગે છે, ત્યારે તે પોતાનું કામ રોકતો નથી. કારણ કે માણસમાં ચેતના, બુદ્ધિમત્તા અને સાચી ઈચ્છા અને પ્રેમના વંશનો સમય આવી ગયો છે.

પોતાની ખોટી ઓળખથી મજબૂત લાગતો અહંકાર જ્યારે કંપનનો આંચકો અનુભવાય છે ત્યારે રીડની જેમ નબળો લાગે છે. અને તે પછીથી જ તે તેની શક્તિઓ, આત્માની શક્તિઓ, અને તેના ઈચ્છિત શરીરની ખોટી શક્તિને નહીં, તે સ્વરૂપ પર પાછું મેળવે છે જે લાગણી અને નીચલા મનને પોષે છે.

માણસમાં ઓળખની કટોકટી આત્માના પ્રકાશ માટે અહંકારના પ્રતિકારને અનુરૂપ છે. આ પત્રવ્યવહારમાં અહંકારના જીવનમાં આ પ્રતિકારના પ્રમાણમાં વેદનાનો સમાવેશ થાય છે. અને તમામ પ્રતિકાર નોંધાયેલ છે, જો કે તે અહંકાર દ્વારા મનોવૈજ્ઞાનિક અથવા પ્રતીકાત્મક અથવા દાર્શનિક રીતે જોવામાં આવે છે. કારણ કે આત્મા માટે, માણસમાં બધું જ ઊર્જા છે, પરંતુ માણસ માટે, બધું પ્રતીક છે. આ કારણે જ માણસને જોવાનું ખૂબ મુશ્કેલ લાગે છે, કારણ કે તે જે જોશે, એકવાર આ સ્વરૂપોથી મુક્ત થઈ જશે, તે સ્પંદન દ્વારા થશે, સ્વરૂપના પ્રતીક દ્વારા નહીં. તેથી જ એવું કહેવાય છે કે વાસ્તવિકને સ્વરૂપ દ્વારા સમજાતું નથી, પરંતુ સ્પંદન દ્વારા ઓળખવામાં આવે છે જે પોતાને વ્યક્ત કરવા માટે સ્વરૂપને ઉત્પન્ન કરે છે અને બનાવે છે.

ઓળખની સમસ્યા હંમેશા સિમ્બોલોજીના સરપ્લસને આમંત્રિત કરે છે, એટલે કે માણસમાં વ્યક્તિલક્ષી વિચાર સ્વરૂપો. આ સરપ્લસ, કોઈપણ સમયે, વિચાર-સ્વરૂપ પ્રતીક દ્વારા અહંકારનો સંપર્ક કરવા માટેના આત્માના પ્રયત્નો સાથે સુસંગત છે, કારણ કે તે અહંકારને મનની અંદર વિકસાવવાનું એકમાત્ર સાધન છે.

અહંકારને, ઊંડા કારણોને સમજ્યા વિના, સમજાય છે કે તે પોતાની જાતને પોતાની સાથે સ્થિત કરવા માંગે છે. પરંતુ તે હજુ પણ તેના વિચાર-સ્વરૂપનો, તેની લાગણીઓનો કેદી છે, તે પોતાની જાતને તેની ચળવળમાં, તેની ચળવળમાં માને છે! કહેવાનો અર્થ એ છે કે તેઓ માને છે કે આ સંશોધન પ્રક્રિયા તેમનામાંથી જ નીકળે છે. અને આ તેની એચિલીસ હીલ છે, કારણ કે અહંકાર સાચા અને ખોટાના ભ્રમમાં છે, સ્વતંત્ર ઈચ્છાના ભ્રમમાં છે.
જ્યારે આત્માની ઉર્જા ઘૂસી જાય છે અને ખોટી ઓળખના અવરોધને તોડી નાખે છે, ત્યારે અહંકારને સમજાય છે કે હવે મુદ્દો તેના માટે સાચો નથી, પરંતુ તેની વાસ્તવિક બુદ્ધિ સુધી પહોંચવાનો છે. પછી તે સમજવા લાગે છે. અને તે જે સમજે છે તે તે સમજી શકતો નથી જેઓ સમાન બુદ્ધિમાં નથી, તેમની સારી ઈચ્છા ગમે તે હોય. કારણ કે બધું પ્રતીકની બહાર છે, બધું **કંપનશીલ છે** .

જ્યારે અહંકાર અને આત્મા એકબીજા સાથે સમાયોજિત થાય છે ત્યારે ઓળખની સમસ્યા અકલ્પ્ય છે, કારણ કે અહંકાર હવે વાસ્તવિકતાના "આવરણ " *(કવર)* ને તેની બાજુથી ખેંચતો નથી, જ્યારે આત્મા બીજી બાજુ કામ કરે છે. બંને વચ્ચે પત્રવ્યવહાર છે, અને વ્યક્તિત્વ લાભાર્થી છે. કારણ કે વ્યક્તિત્વ હંમેશા આત્મા અને અહંકાર વચ્ચેના અંતરનો ભોગ બને છે.

જ્યાં સુધી માણસમાં ઓળખની સમસ્યા છે ત્યાં સુધી તે સુખી થઈ શકતો નથી. કારણ કે તેના જીવનમાં વિભાજન છે, ભલેને સપાટી પર તેનું ભૌતિક જીવન સારું ચાલતું હોય તેવું લાગે. તે ફક્ત પોતાની એકતાના પ્રમાણમાં જ ખરેખર સારી રીતે જઈ શકે છે.

આધુનિક માણસમાં ઓળખની કટોકટી ફક્ત તે જ લોકોને લાભદાયી અસર કરે છે જેમણે પહેલાથી જ તેમનામાં સંતુલનની મહાન ઈચ્છા જગાડવા માટે પૂરતા આંચકો સહન કર્યા છે. પરંતુ સંતુલન માટેની આ ઈચ્છા ત્યારે જ પૂર્ણપણે સાકાર થઈ શકે છે જ્યારે અહંકાર આત્માની સુક્ષ્મ શક્તિનો ઉપયોગ કરવા માટે તેના ત્રાસના સાધનોને બાજુ પર રાખે છે. માનવ જીવનના ક્ષેત્રમાં જ્યાં મહાન આધ્યાત્મિકતા છે, ઓળખની કટોકટી એટલી તીવ્ર હોઈ શકે છે, જો વધુ નહીં, તો જ્યાં વ્યક્તિને આ આંતરિક વસ્તુ પ્રત્યે અહંકારની આ મહાન સંવેદનશીલતાનો સામનો કરવો પડતો નથી જે તેને વધુને વધુ આધ્યાત્મિકતા તરફ અસ્પષ્ટપણે દબાણ કરે છે. વધુ, વધુ અને વધુ પછી માંગવામાં આવે છે અને આખરે વધુ અને વધુ અપૂર્ણ.

જેઓ માનવતાની આ શ્રેણીના છે તેઓએ જોવું જોઈએ કે તમામ સ્વરૂપો, ઉચ્ચતમ, સૌથી સુંદર પણ, આત્માના સાચા ચહેરાને ઢાંકી દે છે, કારણ કે આત્મા અહંકારના વિમાનનો નથી; તે અનંતપણે જુએ છે, અને જ્યારે અહંકાર સ્વરૂપ સાથે, આધ્યાત્મિક સ્વરૂપ સાથે પણ વધુ પડતો જોડાયેલો બની જાય છે, ત્યારે તે વૈશ્વિક ઊર્જામાં દખલ કરે છે જે આત્મામાંથી પસાર થવી જોઈએ અને આત્માના તમામ નીચલા સિદ્ધાંતોના સ્પંદન દરને વધારવો જોઈએ. 'માણસ, જેથી તે જીવનના માસ્ટર બની શકે છે. જ્યારે અતિશય (ઉચ્ચ માનસિક) માણસ જીવનનો માસ્ટર હોય છે, ત્યારે તેને હવે આધ્યાત્મિક રીતે આત્માના તળિયે ખેંચવાની જરૂર નથી, કારણ કે તે આત્મા છે, તેની ઊર્જા છે, જે તેની તરફ ઉતરે છે, અને તેની પ્રકાશની શક્તિ તેને પ્રસારિત કરે છે. .

માણસની આધ્યાત્મિક ઓળખ એ આત્માના ઉર્જા સ્વરૂપ દ્વારા તેની અંદરની હાજરી છે. પરંતુ આ ઊર્જામાં પરિવર્તનની શક્તિ નથી, જો કે તે વ્યક્તિત્વ પર પરિવર્તનની શક્તિ ધરાવે છે.

પરંતુ એકલા વ્યક્તિત્વનું પરિવર્તન પૂરતું નથી, કારણ કે તે માણસનું છેલ્લું પાસું છે. અને જ્યાં સુધી અહંકાર પણ આત્મા સાથે એકીકૃત ન થાય ત્યાં સુધી, આધ્યાત્મિક વ્યક્તિત્વ માણસને તેના નૈતિકતાના ઝડપી રૂપાંતરણમાં સરળતાથી દોરી શકે છે, એટલી હદે કે મન અને ભાવનાત્મક ભાવનામાં સંતુલનનો અભાવ, તેને દોરી શકે છે. આધ્યાત્મિકતા, ધાર્મિક કટ્ટરતાની તીવ્ર કટોકટી.

આમ, ઉગ્ર આધ્યાત્મિક માણસ પણ પોતાને અને સમાજને નુકસાન પહોંચાડી શકે છે. કારણ કે કટ્ટરતા એ આધ્યાત્મિક રોગ છે, અને જેઓ તેનાથી પીડાય છે તેઓ સરળતાથી, તેમના આધ્યાત્મિક સ્વરૂપના વિશિષ્ટ શોષણને કારણે, અન્ય લોકોમાં એક એવું આકર્ષણ પેદા કરી શકે છે જે તેમને મહાન આસ્તિક બનાવે છે, એટલે કે - સ્વરૂપને નવા ગુલામો કહે છે, કટ્ટરપંથી દ્વારા ઉછરેલા પગથિયાં પર જે ફક્ત આધ્યાત્મિક રીતે બીમાર જ સ્થાન પર રહી શકે છે, જો તેને તે લોકોની આધીન માન્યતા દ્વારા સહાયિત કરવામાં આવે જેઓ તેના જેવા અજ્ઞાન છે, પરંતુ બીમારીના આ સ્વરૂપ પ્રત્યે વધુ સંવેદનશીલ છે.

વધુ ને વધુ પુરુષો, કટ્ટરતાથી આધ્યાત્મિક બન્યા વિના, તેમની આધ્યાત્મિકતાથી ખૂબ પ્રભાવિત થાય છે અને તેની મર્યાદાને જાણતા નથી, એટલે કે સ્વરૂપની ભ્રમણા. વહેલા કે પછી તેઓ ભૂતકાળમાં નજર નાખે છે અને સમજે છે કે તેઓ તેમની આધ્યાત્મિકતાના ભ્રમનો ભોગ બન્યા છે. તેથી તેઓ પોતાને બીજા આધ્યાત્મિક સ્વરૂપમાં ફેંકી દે છે, અને આ સર્કસ ઘણા વર્ષો સુધી ચાલુ રહી શકે છે, જ્યાં સુધી, ભ્રમણાથી નારાજ થઈને, તેઓ કાયમ માટે તેમાંથી બહાર આવે છે, અને સમજે છે કે ચેતના સ્વરૂપની બહાર છે. તેમની પાસે સ્વરૂપની મર્યાદાઓથી આગળ વધવાની અને અંતે ઉચ્ચ મનના મહાન નિયમો શોધવાની તક છે.

આધ્યાત્મિક ઓળખની કટોકટી હવે તેમના માટે આ સમયે શક્ય નથી. કારણ કે તેઓ તેમના પોતાના અનુભવથી જાણે છે કે, દરેક વસ્તુ અહંકાર સામે આત્માના અનુભવને સેવા આપે છે, જ્યાં સુધી અહંકાર અનુભવની આવશ્યકતા છોડી દે ત્યાં સુધી તેનામાં રહેલી અધિક ચેતના (ઉચ્ચ મન)ને જાણવાની જરૂર છે.

આધ્યાત્મિક ઓળખનું સંકટ વધુને વધુ આધુનિક સમયનું સંકટ બની રહ્યું છે. કારણ કે માણસ હવે માત્ર ટેકનોલોજી અને વિજ્ઞાન પર જીવી શકશે નહીં. તેને તેની નજીક કંઈક બીજું જોઈએ છે, અને વિજ્ઞાન તેને આપી શકતું નથી. પરંતુ રૂઢિચુસ્ત ધર્મનું જૂનું સ્વરૂપ ન હતું. તેથી તે પોતાની જાતને અસંખ્ય આધ્યાત્મિક અથવા વિશિષ્ટ-આધ્યાત્મિક સાહસોમાં ફેંકી દે છે, તે જે શોધી રહ્યો છે તે શોધવાના, અથવા તે જે શોધવા માંગે છે તે શોધી રહ્યો છે, અને તે ચોક્કસ રીતે જાણતો નથી. તેથી, તેનો અનુભવ તેને તમામ સંપ્રદાયો, તમામ દાર્શનિક અથવા વિશિષ્ટ શાળાઓની મર્યાદામાં લાવે છે, અને અહીં ફરીથી તે શોધે છે, જો તે સરેરાશ કરતા વધુ બુદ્ધિશાળી હોય, તો ત્યાં મર્યાદાઓ છે જ્યાં તે જવાબો શોધવા માટે માનતો હતો.

આખરે તે પોતાની જાતને એકલો શોધે છે, અને તેની આધ્યાત્મિક ઓળખની કટોકટી વધુ ને વધુ અસહ્ય બની જાય છે. તે દિવસ સુધી જ્યારે તેને ખબર પડે છે કે તેનામાં બધું જ બુદ્ધિ, ઇચ્છા અને પ્રેમ છે, પરંતુ તે શોધનાર માણસની આંખોમાં છુપાયેલા અને ઢાંકેલા મિકેનિઝમને શોધવા માટે તે હજી સુધી તેમના કાયદાઓને પૂરતા જાણતા નથી. તેણે જોયું તો કેવું આશ્ચર્ય! જ્યારે તેને ખ્યાલ આવે છે કે તે તેના કટોકટી દરમિયાન જે શોધી રહ્યો હતો તે તેની અંદરની આત્માની એક પદ્ધતિ હતી જેણે તેને પોતાની જાતને, એટલે કે તેણીને જાગૃત કરવા માટે આગળ ધપાવવાનું કામ કર્યું હતું.
અને જ્યારે આ તબક્કો આખરે શરૂ થાય છે, ત્યારે માણસ, માણસનો અહંકાર, નિરાશાવાદી બને છે અને તેની અંદરની અતિશય બુદ્ધિ (ઉચ્ચ મન) ના સ્વભાવને સમજવાનું શરૂ કરે છે જે જાગૃત થાય છે, અને તેને તે બધા પુરુષોના ભ્રમને ઓળખવા માટે બનાવે છે જેઓ પોતાની જાતને બહાર શોધે છે. વિશ્વના શ્રેષ્ઠ ઇરાદાઓ, અને જેમને હજુ સુધી સમજાયું નથી કે આ આખી પ્રક્રિયા આત્માના અનુભવનો એક ભાગ છે જે અહંકારનો ઉપયોગ કરીને તેને તેની સાથે કંપનશીલ સંપર્કમાં આવવા માટે તૈયાર કરે છે.

માણસ હવે તેના અસ્તિત્વની વાસ્તવિકતા સાથે સંપર્કમાં નથી. અને સંપર્કનું આ નુકસાન વિશ્વમાં એટલું વ્યાપક છે કે આ પૃથ્વી પાગલ માણસોથી ભરેલા વહાણનું પ્રતિનિધિત્વ કરે છે જેઓ જાણતા નથી કે વહાણ ક્યાં જઈ રહ્યું છે. તેઓનું નેતૃત્વ અદ્રશ્ય દળો દ્વારા કરવામાં આવે છે, અને કોઈને પણ આ દળોની ઉત્પત્તિ અથવા તેમના ઇરાદા વિશે કોઈ ખ્યાલ નથી. માણસ ઘણી સદીઓ સુધી અદ્રશ્યથી અલગ રહ્યો કે તેણે વાસ્તવિકતાની કલ્પના સંપૂર્ણપણે ગુમાવી દીધી. અને ચેતનાની આ ખોટ એ જ કારણ છે કે જેની પાછળ તેની અસ્તિત્વની સમસ્યાની દીવાલ ઊભી થાય છે: ઓળખ. અને છતાં ઉકેલ તેની ખૂબ નજીક છે, અને તે જ સમયે ખૂબ દૂર છે. જો તે જાણતો હોય કે તે જે સાંભળવા માંગતો નથી તે કેવી રીતે સાંભળવું.

શબ્દોની લડાઈ અને વિચારોની લડાઈ તેણે બાકી રાખી છે. શું માણસ આત્મનિર્ભર બની શકે છે, જો તેને ખ્યાલ ન હોય કે તેનો એક ભાગ મહાન છે, જ્યારે બીજો તેની ઇન્દ્રિયો દ્વારા મર્યાદિત છે, અને તે બંને એક સાથે આવી શકે છે? જો માણસ એક દિવસ સમજી શકે કે તેની બહારની કોઈ વ્યક્તિ તેના માટે નથી કરી શકતી, અને તે ફક્ત તે પોતે જ પોતાના માટે કરી શકે છે… પરંતુ તે પોતાના માટે જીવતા ડરે છે, કારણ કે તેને ડર છે કે બીજા તેના વિશે શું કહેશે... તે જેવો ગરીબ છે!

પુરુષો એવા માણસો છે જેઓ ભ્રમ સામેની લડાઈમાં સતત હારી જાય છે, કારણ કે તેઓ જ તેને જીવંત અને શક્તિશાળી રાખે છે. દરેક વ્યક્તિને જે નુકસાન કરે છે તેનો નાશ કરવાનો ડર છે. એક વાસ્તવિક દુઃસ્વપ્ન! અને સૌથી ખરાબ હજુ આવવાનું બાકી છે! કારણ કે 20 મી સદીનો માણસ તારાઓ વચ્ચે ફરતા માણસો અને જેઓ અગાઉ તેના માટે દેવતા હતા તે તેની તરફ ઉતરતા જોશે.

વ્યક્તિગત ઓળખની સમસ્યા ગ્રહોના ધોરણે ચાલુ રહે છે. આ સમસ્યા નિમ્ન મન અને ઉચ્ચ મન વચ્ચેના જોડાણના અભાવને કારણે ઉદ્ભવે છે, તેની અસર વિશ્વ સ્તરે અને વ્યક્તિગત સ્તરે બંને પર અનુભવાય છે, કારણ કે માત્ર ઉચ્ચ મન જ માણસને તેના ગ્રહના મહાન રહસ્યો સમજાવી શકે છે. તેના પ્રાચીન દેવતાઓ. જ્યાં સુધી આ દેવતાઓ પ્રાચીન ઈતિહાસનો ભાગ છે ત્યાં સુધી માણસ તેમનાથી પરેશાન નથી. પરંતુ જ્યારે આ જ જીવો પાછા ફરે છે અને પોતાને આધુનિક પ્રકાશમાં ઓળખાવે છે, ત્યારે વૈશ્વિક સ્તરે આંચકો ફરી વળે છે, અને જે માણસે તેની વાસ્તવિક ઓળખ શોધી નથી તે પોતાની જાતને તેની ખોટી ઓળખ - અને તેણી શું વિચારે છે અને માને છે - અને ચક્રીય ઘટના.

જો તેનું મન અનુભવ માટે ખુલ્લું હોય અને તેને તેની અંદર વાસ્તવિક બુદ્ધિ પ્રાપ્ત થાય, તો તે ગ્રહ માટે સૌથી વધુ અવ્યવસ્થિત ઘટનાઓમાંની એક વિશે જરૂરી માહિતી કે જેને તે જાણતો નથી અને જાણતો નથી, તો માણસને ગ્રહોની ઓળખની કટોકટીનો અનુભવ થતો નથી, કારણ કે તેની પાસે છે. પહેલેથી જ પોતાની અંદરની વ્યક્તિગત ઓળખની કટોકટી ઉકેલી લીધી છે.

માનવતા ઇતિહાસ અને જીવનના એક વળાંક તરફ ઝડપથી આગળ વધી રહી હોવાથી, વ્યક્તિત્વ, એટલે કે માણસ અને બ્રહ્માંડ વચ્ચેનો વધુને વધુ સંપૂર્ણ સંબંધ સ્થાપિત થવો જોઈએ કારણ કે તે વાસ્તવિક વ્યક્તિત્વમાંથી છે જે માણસમાં જોવા મળે છે તે કંપન છે. તેની સાચી ઓળખ શોધી કાઢી છે. અને જ્યાં સુધી આ વાસ્તવિક ઓળખ સ્થિર ન થાય ત્યાં સુધી વ્યક્તિત્વ સંપૂર્ણ રીતે સિદ્ધ થતું નથી, અને વ્યક્તિ એવું ન કહી શકે કે માણસ " પરિપક્વ" છે , એટલે કે કોઈ પણ અંગત અથવા વિશ્વની ઘટનામાં ખલેલ પહોંચાડ્યા વિના સામનો કરવા સક્ષમ છે, કારણ કે તે પહેલાથી જ જાણે છે. તે અને તે તેનું કારણ જાણે છે.

જ્યારે આપણે સામાન્ય રીતે ઓળખની કટોકટી વિશે વાત કરીએ છીએ, ત્યારે આપણે તેના વિશે મનોવૈજ્ઞાનિક રીતે વાત કરીએ છીએ, તે અર્થમાં કે આપણે માણસ અને સમાજ વચ્ચેના સંબંધને વ્યાખ્યાયિત કરવાનો પ્રયાસ કરી રહ્યા છીએ. પરંતુ ઓળખની કટોકટી તેના કરતા ઘણી ઊંડી જાય છે. તે હવે સામાજિક માણસ નથી જે માપવાની લાકડી બની જાય છે, સામાન્યતા જે આપણે પ્રાપ્ત કરવી જોઈએ. તેનાથી વિપરિત, સામાન્યતા સ્થાનાંતરિત થવી જોઈએ, એટલે કે પોતે જ પુનઃસ્થાપિત થવી જોઈએ.

જ્યારે માણસને ખ્યાલ આવવા લાગે છે કે તેની વાસ્તવિક ઓળખ કૌંસમાં સામાન્ય માણસની સામાન્ય ઓળખથી ઉપર છે, ત્યારે તેને બે બાબતોનો અહેસાસ થાય છે. પ્રથમ, કે જે સામાન્ય માણસને ચિંતા કરે છે તે હવે તેને ચિંતા કરતું નથી; અને તે કે જે કંઈ પણ અસાધારણ ગ્રહને ધક્કો મારે છે, કૌશિક રીતે, તે સામાન્ય છે. પછી વાસ્તવિક ઓળખની ઘટના, આ પરિપ્રેક્ષ્યમાં જોવામાં આવે છે, તે વધુને વધુ મહત્વપૂર્ણ બને છે, કારણ કે તે નક્કી કરે છે કે કયો માણસ સામાન્ય અથવા બેભાન માણસની સામાન્ય નબળાઈઓને દૂર કરી શકે છે, અને વધુમાં, તે નક્કી કરે છે કે જે માણસ નથી કરતો તે વધુ સામાન્ય છે - તે કહેવાનો અર્થ એ છે કે, બેભાન અને પ્રમાણમાં સંતુલિત માણસની હદ સુધી - ગ્રહોના ક્રમના દબાણને ટેકો આપી શકે છે જે સામાન્ય અસ્તિત્વને અસ્વસ્થ કરે છે અને સંસ્કૃતિના પતનનું કારણ બને છે જે આવા માણસને જન્મ આપે છે.

એક માણસ કે જેણે તેની વાસ્તવિક ઓળખ શોધી કાઢી છે તે તમામ પ્રકારના મનોવૈજ્ઞાનિક અનુભવોથી ઉપર છે જે એક માણસને ખલેલ પહોંચાડે છે જે તેની સંસ્કૃતિનું ઉત્પાદન છે અને જે ફક્ત તેની સંસ્કૃતિના મૂલ્યો દ્વારા જીવે છે. કારણ કે વાસ્તવમાં, સંસ્કૃતિ એ ખૂબ જ પાતળો અને ખૂબ જ નાજુક કેનવાસ છે જ્યારે બાહ્ય ઘટનાઓ તેને ખલેલ પહોંચાડે છે, એટલે કે, તેને એવી વાસ્તવિકતાના સંબંધમાં પુનઃવ્યાખ્યાયિત કરવી કે જે તે જાણતી નથી, અથવા તે સંપૂર્ણપણે અજાણ છે. વણઉકેલાયેલી ઓળખની ઘટનાના માણસમાં આ ભય છે.

કારણ કે જો તે તેની વાસ્તવિક ઓળખ શોધી શકતો નથી, તો તે ભાવનાત્મક અને માનસિક રીતે સામાજિક મનોવિજ્ઞાનનો ગુલામ બનશે અને જ્યારે ચક્રના અંતની ઘટનાઓ તેના વિકાસના સામાન્ય માર્ગને અવરોધે છે ત્યારે તેની કુદરતી પ્રતિક્રિયાઓ હશે. સાર્વત્રિક સમજણની પદ્ધતિ અનુસાર અનુભવને જીવવા માટે સક્ષમ થવા માટે, તે અહીં છે કે માણસે સામાજિક-વ્યક્તિગત પ્રતિક્રિયાઓથી મુક્ત હોવું જોઈએ. માત્ર વાસ્તવિક ઓળખ વાસ્તવિક માણસ અને વાસ્તવિક બુદ્ધિ સાથે સુસંગત છે. ફક્ત વાસ્તવિક ઓળખ જ મુશ્કેલી વિના કોસ્મિક ઘટનાઓનું અર્થઘટન કરી શકે છે, એક બુદ્ધિ અનુસાર જે માણસની મર્યાદિત લાગણીઓથી અલગ છે.

માણસમાં ઓળખની કટોકટીની સમસ્યા એ સામાન્ય માનસિક સમસ્યા કરતાં વધુ જીવનની સમસ્યા છે. માણસ પોતાની શોધમાં જે મનોવૈજ્ઞાનિક વર્ગો સમજવા માંગે છે તે હવે તેમની સાચી ઓળખ શોધનારાઓને અનુરૂપ નથી, કારણ કે તેઓને જીવનમાં તેટલો રસ નથી જે તેઓ જ્યારે પોતાની સાથે સંઘર્ષ કરી રહ્યા હતા ત્યારે તેમને હતો. તેની વાસ્તવિક ઓળખ તેના અસ્તિત્વના દરેક ખૂણાને ભરીને, તે પોતાની જાતને એક એવા સ્વનો સામનો કરે છે જે તેના મનના અન્ય પરિમાણ, પરિમાણ અથવા ઊર્જાના પ્લેનમાં રહે છે જે અનુકરણ દ્વારા સંકળાયેલ નથી કારણ કે તે મનોવૈજ્ઞાનિક શ્રેણીઓથી સંપૂર્ણપણે સ્વતંત્ર છે. વાસ્તવિક ઓળખ વિના બેભાન માણસની ભાવનાત્મક અને માનસિક રચનાઓ.

ઓળખની કટોકટીની ઘટના માણસ માટે દુઃખ છે, કારણ કે તે પોતાની જાતમાં, પોતાની જાત સાથે, જે તે સતત શોધે છે તે ક્યારેય સંપૂર્ણ રીતે ખુશ થઈ શકતો નથી. તેના માટે, ખુશ રહેવું એ એક અનુભવ છે જે તે કાયમ માટે જીવવા માંગે છે. પરંતુ તેને ખ્યાલ નથી હોતો કે તે જેને " ખુશ" કહે છે તે બનવા માટે , તમારે તમારા વિશે સારું અનુભવવું પડશે, એટલે કે બહારની દુનિયા આ સંવાદિતાને ખલેલ પહોંચાડવા સક્ષમ ન હોય તો સંપૂર્ણ આંતરિક સંવાદિતા અનુભવવા માટે સક્ષમ બનો. તેને ખ્યાલ નથી હોતો કે જીવન પોતાનાથી અભેદ્ય છે જ્યાં સુધી તેની પાસે બેકડ્રોપને વીંધવાની આંતરિક શક્તિ નથી જે તેને તેનો રંગ આપે છે.

એક માણસ કે જેણે તેની વાસ્તવિક ઓળખ શોધી કાઢી છે તે હવે પહેલા જેવું જીવન જીવતો નથી. રંગો બદલાયા છે, જીવન હવે સમાન અપીલ નથી, તે દરેક સ્તરે અલગ છે. કારણ કે તે અન્ય પાછલા જીવનથી એ હકીકત દ્વારા અલગ પડે છે કે તે વાસ્તવિક વ્યક્તિ છે જે તેની શક્યતાઓ નક્કી કરે છે, તેના બદલે તે સંસ્કૃતિ દ્વારા તેના પર સ્પષ્ટપણે લાદવામાં આવે છે જેમાં તે મૂળ છે.

માણસનું જીવન જેણે તેની ઓળખ શોધી કાઢી છે તે એક સાતત્યનું પ્રતિનિધિત્વ કરે છે જે સમય જતાં ખોવાઈ જાય છે અને જેની હવે કોઈ મર્યાદા નથી, એટલે કે અંત. પહેલેથી જ, આ અનુભૂતિ જીવનના માર્ગ અને જીવનના સર્જનાત્મક માર્ગમાં દખલ કરે છે. જ્યાં સુધી માણસ ઓળખથી પીડાય છે, જ્યાં સુધી તેની અંદરની વાસ્તવિક બુદ્ધિ સાથે તેનો કોઈ સંપર્ક નથી, તે ફક્ત તેની જરૂરિયાતો પૂરી કરી શકે છે. જ્યારે તે પ્રકાશમાં હોય છે, ત્યારે તેણે હવે પોતાને ટેકો આપવો પડતો નથી, કારણ કે તે પહેલાથી જ જાણે છે, કંપન દ્વારા, તેના જીવનની રીત, અને આ જ્ઞાન તેને તેની જરૂરિયાતો માટે જરૂરી સર્જનાત્મક ઊર્જા ઉત્પન્ન કરવામાં સક્ષમ બનાવે છે. જીવન ટકાવી રાખવાની મનોવૈજ્ઞાનિક શ્રેણી માત્ર એક સર્જનાત્મક ઉર્જા માટે જગ્યા છોડવા માટે ક્ષીણ થઈ જાય છે જે માણસના તમામ સંસાધનોનો ઉપયોગ કરે છે અને તેને તેના સુખાકારીના નિકાલ પર મૂકે છે.

માણસને તેની ઓળખની સમસ્યાને દૂર કરવા માટે, તેની અંદર મનોવૈજ્ઞાનિક પ્લેનથી શુદ્ધ બુદ્ધિના પ્લેન પર મૂલ્યોનું વિસ્થાપન થવું જોઈએ. જ્યારે મનોવૈજ્ઞાનિક મૂલ્યો તેની કટોકટીમાં ફાળો આપે છે, કારણ કે તે તેની ઇન્દ્રિયો, તેની બુદ્ધિ સુધી મર્યાદિત છે જે સંવેદનાત્મક સામગ્રીનું અર્થઘટન કરે છે, તેને એક માપન સળિયાની જરૂર છે જે તેની બુદ્ધિની મંજૂરીને આધીન નથી.

તે અહીં છે કે તેનામાં પ્રથમ વખત એક પ્રકારનો વિરોધ ઉદ્ભવે છે જે તેનામાં ઘૂસી જાય છે અને જેને તે તેની હિલચાલમાં રોકી શકતો નથી. જ્યારે ચળવળ શરૂ થાય છે, ત્યારે તે આ બુદ્ધિનો પ્રકાશ છે જે તેના અહંકાર અને તેના ચિમેરથી સ્વતંત્ર છે. તે અહીં છે કે મૂલ્યોનું વિસ્થાપન અનુભવવાનું શરૂ થાય છે જે આંતરિક પીડામાં પરિણમે છે, જે જાગૃત માણસ દ્વારા જીવવું જોઈએ તે મુજબ પ્રકાશની બુદ્ધિને ભેદવા માટે પૂરતું છે.

અહંકારને ચોક્કસ સંતુલન જાળવવા દેવા માટે મૂલ્યોમાં પરિવર્તન ફક્ત ધીમે ધીમે કરવામાં આવે છે. પરંતુ સમય જતાં, એક નવું સંતુલન રચાય છે અને અહંકાર હવે સામાન્ય નથી, સામાજિક રીતે કહીએ તો; તે સભાન છે. કહેવાનો અર્થ એ છે કે, તે સ્વરૂપ અને ધોરણના ભ્રમ દ્વારા જુએ છે, અને તેના સૂક્ષ્મ શરીરના કંપનને વધારવા માટે, તેના વ્યક્તિત્વના સ્તરો અને તેની વાસ્તવિક ઓળખને વધારવા માટે તે વધુને વધુ વ્યક્તિગત બને છે.

મૂલ્યોનું વિસ્થાપન એ વાસ્તવમાં મૂલ્યોનું પતન છે, પરંતુ આપણે તેને "વિસ્થાપન" કહીએ છીએ, કારણ કે જે ફેરફારો થાય છે તે સ્પંદનશીલ બળને અનુરૂપ હોય છે જે જોવાની પદ્ધતિને પરિવર્તિત કરે છે, જેથી વિચારવાની પદ્ધતિ બુદ્ધિમત્તા સાથે સંતુલિત થઈ શકે. માણસમાં ઉચ્ચ કેન્દ્રનું. જ્યાં સુધી અહંકાર સ્પંદન દ્વારા આ પતનનો સાક્ષી ન હોય ત્યાં સુધી, તે વિચારોની શ્રેણીઓ, પ્રતીકોની ચર્ચા કરવાનું ચાલુ રાખે છે, જે તેની ખોટી ઓળખની દિવાલો બનાવે છે. પરંતુ જલદી આ દિવાલો નબળી પડવા લાગે છે, મૂલ્યોનું વિસ્થાપન ગહન પરિવર્તનને અનુરૂપ છે, જેને અહંકાર દ્વારા તર્કસંગત કરી શકાતું નથી. અને તેના દ્વારા તર્કસંગત બનવા માટે સક્ષમ ન હોવાથી, તે આખરે પ્રકાશથી ત્રાટકે છે, એટલે કે, તે આખરે તેની સાથે કાયમી અને વધતી જતી રીતે જોડાયેલ છે.

તેનું જીવન, પછી, ચક્ર દ્વારા પરિવર્તિત થાય છે અને ટૂંક સમયમાં, તે હવે તેને મર્યાદામાં નહીં, પરંતુ સંભવિતતામાં જીવે છે. તેણીની ઓળખ તેની વ્યક્તિલક્ષી ઇચ્છાઓના સંબંધમાં વ્યાખ્યાયિત કરવાને બદલે તેના સંબંધમાં વધુને વધુ વ્યાખ્યાયિત કરવામાં આવે છે. અને તે " વાસ્તવિક અને ઉદ્દેશ્ય સ્વ" નો અર્થ શું છે તે સમજવાનું શરૂ કરે છે.

જ્યારે તે વાસ્તવિક અને ઉદ્દેશ્ય સ્વની અનુભૂતિ કરે છે, ત્યારે તે ખૂબ જ સ્પષ્ટપણે જુએ છે કે આ સ્વ પોતે જ છે, ઉપરાંત તેની અંદર કંઈક બીજું છે જે તેને દેખાતું નથી, પરંતુ જે તે હાજર અનુભવે છે, ત્યાં કંઈક તેની અંદર જાય છે. કંઈક બુદ્ધિશાળી, કાયમી અને સતત હાજર. કંઈક કે જે તેની આંખોથી જુએ છે, અને વિશ્વને તે જેવું છે તેવું અર્થઘટન કરે છે, અને અહંકારે તેને પહેલાં જોયું હતું તેવું નથી.

આપણે હવે એમ નથી કહેતા કે આ માણસ " માનસિક" છે, આપણે કહીએ છીએ કે તે " સુપ્રામેન્ટલ (ઉચ્ચ માનસિક)" છે , એટલે કે તેને જાણવા માટે હવે વિચારવાની જરૂર નથી. ઓળખથી પીડાવું તે તેનાથી, તેના અનુભવથી એટલું દૂર છે કે જ્યારે તે તેના ભૂતકાળને પાછું જુએ છે ત્યારે તે આશ્ચર્યચકિત થાય છે, અને તે જુએ છે કે તે હવે શું છે અને તેની સાથે તેની તુલના કરે છે.

પ્રકરણ 2

ડાઉનવર્ડ ઈવોલ્યુશન અને અપવર્ડ ઈવોલ્યુશન *BdM-RG #62A (સંશોધિત)*

ઠીક છે, તેથી હું માણસની ઉત્ક્રાંતિને અલગ કરું છું, હું તેને નીચે તરફ વળાંક આપું છું અને ઉપરની તરફ વળાંક આપું છું. ? નીચે તરફના વળાંકને હું "આક્રમણ" કહું છું, ઉપરના વળાંકને હું ઉત્ક્રાંતિ કહું છું. અને આજે માણસ આ વળાંકોના મીટિંગ પોઈન્ટ પર છે. ચાલો તારીખ મૂકીએ: 1969 જો તમે ઇચ્છો. જો આપણે ઉત્ક્રાંતિને જોઈએ તો - ડાર્વિનના દૃષ્ટિકોણથી નહીં - પરંતુ એક ગુપ્ત દૃષ્ટિકોણથી, બીજા શબ્દોમાં કહીએ તો, માણસના આંતરિક સંશોધનો અનુસાર અને જો આપણે સમયની પાછળ જઈએ, તો આપણે ત્યાં બાર હજાર વર્ષ પહેલાંનું પતન શોધી શકીએ છીએ. એક મહાન સંસ્કૃતિ કે જેને એટલાન્ટિસનું નામ આપવામાં આવ્યું હતું.

તેથી તે સમયગાળો હતો જ્યારે માણસે તીવ્રપણે વિકસિત કર્યું હતું જેને અપાર્થિવ શરીર કહેવાય છે જે તેની ચેતનાનું એક પાસું છે, જે તેની ચેતનાનું એક સૂક્ષ્મ વાહન છે, જે મનો-ભાવનાત્મક છે તે તમામ સાથે સીધો સંબંધ ધરાવે છે. અને પછી આજ સુધી આ સંસ્કૃતિના વિનાશ પછી, માણસે તેની ચેતનાનો બીજો ભાગ વિકસાવ્યો, જેને ગુપ્ત રીતે નીચલી માનસિક ચેતનાનો વિકાસ કહી શકાય, જેણે બુદ્ધિના ખૂબ જ અદ્યતન વિકાસને જન્મ આપ્યો, જે આજે માણસ દ્વારા ઉપયોગમાં લેવાય છે. ભૌતિક વિશ્વને સમજવા માટે.

અને આ ગ્રહ પર 1969 થી, માણસની ચેતનામાં એક નવી ઘટના બની છે જેને ફ્યુઝનનું નામ આપી શકાય છે અથવા જેને પૃથ્વી પરની અધિક ચેતના (ઉચ્ચ મન) ના જાગૃતિનું નામ આપી શકાય છે. અને વિશ્વમાં એવા પુરુષો છે જેમણે નીચલા મનના સ્તરે કામ કરવાનું બંધ કરી દીધું છે, તેથી બુદ્ધિના, અને જેમણે ચેતનાનું બીજું સ્તર વિકસાવવાનું શરૂ કર્યું છે જેને સુપ્રામેન્ટલ ચેતના (ઉચ્ચ મન) કહેવામાં આવે છે. અને આ પુરુષોએ ફેકલ્ટીઓ વિકસાવી છે જે વિકાસની પ્રક્રિયામાં છે અને જે તેઓ પણ ઉત્ક્રાંતિના બીજા ચક્ર સાથે મેળ ખાશે, જેને કોઈ છઠ્ઠી મૂળ જાતિ કહી શકે છે.

ગૂઢ રીતે કહીએ તો, જ્યારે આપણે માણસના ઉત્ક્રાંતિ વિશે વાત કરીએ છીએ, ત્યારે આપણે એટલાન્ટિસ વિશે વાત કરી રહ્યા છીએ જે તેની પેટા-જાતિઓ સાથે ચોથી મૂળ-જાતિ હતી, ઈન્ડો-યુરોપિયન રેસ જેનો આપણે ભાગ છીએ, જે પાંચમી મૂળ-જાતિનો ભાગ છે. અને તેની પેટા રેસ. અને હવે એક નવી રુટ-રેસની દુનિયામાં શરૂઆત છે જે તેની પેટા-રેસ પણ આપશે. અને આખરે સાતમી રુટ-રેસ હશે જે માણસને ઉત્ક્રાંતિના એવા સ્તરે પહોંચવા માટે સક્ષમ બનાવશે કે જે તેના ભૌતિક શરીરના કાર્બનિક ઉપયોગની જરૂર નથી. પરંતુ અમે આ ક્ષણે તેની સાથે વ્યવહાર કરી રહ્યા નથી, તેથી અમે છઠ્ઠી મૂળ-જાતિ સાથે વ્યવહાર કરી રહ્યા છીએ જે ભૌતિક જાતિનું પ્રતિનિધિત્વ કરતી નથી, પરંતુ જે ભવિષ્યની માનવતાની નવી માનસિક ચેતનાના સંપૂર્ણ માનસિક પાસાને રજૂ કરે છે.

તે સ્પષ્ટ છે કે આ પ્લેન પર માણસની ઉત્ક્રાંતિને સમજવા માટે, વિપરીત વમળના બિંદુથી તેની અંતિમતા તરફ, જે આપણને મળેલી માહિતી અનુસાર કદાચ બે હજાર પાંચસો વર્ષ છે, તે સ્પષ્ટ છે કે માણસ પસાર થવાનો છે. ચેતનાના એકદમ અસાધારણ તબક્કાઓ દ્વારા, એટલે કે મેન ઓફ ધ ઈન્ડો-યુરોપિયન રેસની સરખામણીમાં મેન ઓફ એટલાન્ટિસ જેટલો મર્યાદિત હતો, તેટલો જ આજનો માણસ હવે પછીના માણસની સરખામણીમાં મર્યાદિત છે અને મર્યાદિત રહેશે. પૃથ્વી પર સુપ્રામેન્ટલ ચેતના (ઉચ્ચ મન) ની ઉત્ક્રાંતિ, જેની અરબિંદો દ્વારા આગાહી કરવામાં આવી હતી.

અધિક ચેતના (ઉચ્ચ મન) ના ઉત્ક્રાંતિમાં જે રસપ્રદ છે તે આ છે: તે એ છે કે આજે આપણે જેટલા માણસો, તર્કસંગત માનવો, કાર્ટેસિયન માનવો, પાંચમી મૂળ-જાતિના અત્યંત પ્રતિબિંબિત મનુષ્યો, તેટલું જ આપણી પાસે વલણ છે. માનવું કે આપણું મન આપણા અહંકાર દ્વારા સંચાલિત થાય છે, આવતીકાલે માણસ શોધશે કે માનવ મન અહંકાર દ્વારા સંચાલિત નથી, માનવ મન તેની મનોવૈજ્ઞાનિક વ્યાખ્યામાં છે, અહંકારની પ્રતિબિંબિત અભિવ્યક્તિ છે અને તેનો સ્ત્રોત છે. સમાંતર વિશ્વોમાં સ્થિત છે જેને ક્ષણ માટે "માનસિક વિશ્વ" કહી શકાય, પરંતુ જે પછીથી "સ્થાપત્ય વિશ્વ" તરીકે ઓળખાશે .

બીજા શબ્દોમાં, મારો કહેવાનો મતલબ એ છે કે માણસ તેના વિચારોના સ્ત્રોતને શોધવા માટે જેટલી મુશ્કેલી અથવા ક્ષમતા અથવા સ્વતંત્રતા લે છે, તેટલું વધુ તેના માટે સમાંતર વિશ્વો સાથે ટેલિસાયકિક સંચારમાં પ્રવેશવાનું શરૂ કરવાનું શક્ય બનશે. આખરે ઉત્ક્રાંતિના માર્ગમાં આવવા માટે, વિશ્વ સ્તર પર, જાતિના સાર્વત્રિક સ્તર પર, જીવનના રહસ્યોને તરત જ ડીકોડ કરવામાં સક્ષમ થવા માટે, પદાર્થના ક્ષેત્રમાં અને આત્માના અપાર્થિવ ક્ષેત્રમાં બંને કરતાં આત્માનું માનસિક ક્ષેત્ર. બીજા શબ્દોમાં કહીએ તો, મારો કહેવાનો મતલબ એ છે કે તે આવી પહોંચ્યો છે, માણસ, એક એવા તબક્કે જ્યાં આજે તે પોતાના માટે પૂરતી માનસિક ચેતનાની સ્થિતિમાં પહોંચવાનું શક્ય છે.

અને જ્યારે હું સ્વ-પર્યાપ્ત માનસિક જાગૃતિ કહું છું, ત્યારે મારો અર્થ સત્યના મનોવૈજ્ઞાનિક મૂલ્ય પર આધારિત માનસિક જાગૃતિ નથી. સત્ય એ એક શબ્દ છે, તે એક વ્યક્તિગત પ્રતીતિ છે અથવા સામાજિક પ્રતીતિ છે, અથવા સામૂહિક સમાજશાસ્ત્રીય પ્રતીતિ છે, જે વ્યક્તિ તરીકે વ્યક્તિ અથવા સમાજની સામૂહિકતા તરીકેની ભાવનાત્મક જરૂરિયાતોનો એક ભાગ છે, જે બાબતની દુનિયામાં પ્રભુત્વ સુનિશ્ચિત કરે છે.

પરંતુ માનવતાની ભાવિ ચેતનાના ઉત્ક્રાંતિના સંદર્ભમાં, સત્યની ઘટના અથવા તેના મનોવૈજ્ઞાનિક પ્રતિરૂપ, અથવા તેનું ભાવનાત્મક મૂલ્ય, આ સરળ કારણોસર સંપૂર્ણપણે નકામું હશે કે માણસ હવે ભાવનાત્મકતાનો ઉપયોગ કરી શકશે નહીં. તેના જ્ઞાનનું મનોવૈજ્ઞાનિક મૂલ્યાંકન. તેણે હવે તેના આત્મની માનસિક સુરક્ષાના વિકાસ માટે તેના અંતરાત્માની ભાવનાત્મકતાનો ઉપયોગ કરવો પડશે નહીં.
તેથી માનવ મનમાં એકદમ સ્વતંત્ર હશે કે તે માનસિક સ્તર પર કસરત કરી શકશે, અભિવ્યક્તિ, વિસ્તરણ અને વૈશ્વિક ચેતનાના અંતિમ અનંત થીમ્સની વ્યાખ્યા કે જે વિશ્વની તમામ જાતિઓનો ભાગ છે, જે ભાગ છે. બ્રહ્માંડની તમામ જાતિઓમાંથી, અને જે હકીકતમાં આત્માની અપરિવર્તનશીલ એકતાનો ભાગ છે, તેની સંપૂર્ણ વ્યાખ્યામાં, પ્રકાશના મૂળ સ્ત્રોત તરીકે અને બ્રહ્માંડમાં તેની હિલચાલ.

તેથી માનવતાના ઉત્ક્રાંતિમાં એક બિંદુ આવશે જ્યારે આખરે અહંકારે સ્વની ચેતના પર ખોવાયેલા સમયની ભરપાઈ કરી લીધી હશે, અને જ્યાં સ્વ આખરે તેની ચેતનામાં પરિચય કરીને તેની મનોવૈજ્ઞાનિક વ્યાખ્યાની સંભવિત મર્યાદા સુધી પહોંચી જશે. તેના શુદ્ધ મનની સર્જનાત્મક ક્ષમતા, એટલે કે તેના આત્માની.

અને આપણે પૃથ્વી પર, વિવિધ જાતિઓમાં, વિવિધ રાષ્ટ્રોમાં, જુદા જુદા સમયે, એવી વ્યક્તિઓ શોધીશું કે જેઓ ફ્યુઝનને જાણતા હશે, એટલે કે, જેઓ ત્વરિતમાં જ્ઞાનના સ્ત્રોતો તરફ ગુરુત્વાકર્ષણ કરવા સક્ષમ બનશે, જેથી વિશ્વ વિજ્ઞાન, ટેક્નોલોજી, ટેકનિક, દવા, મનોવિજ્ઞાન અથવા ઈતિહાસની દ્રષ્ટિએ, સંપૂર્ણપણે ઉથલાવી દેવામાં આવશે. શેના માટે ? કારણ કે માણસની ઉત્ક્રાંતિ પછી પ્રથમ વખત, દ્રવ્યમાં આત્માના અવતરણ પછી અને ભૌતિક સાથે આત્માના જોડાણ પછી પ્રથમ વખત, માણસે આખરે તેના સંપૂર્ણ જ્ઞાનને સહન કરવાની ક્ષમતા પ્રાપ્ત કરી હશે. .

હું જેને નિરપેક્ષ જ્ઞાન કહું છું તે માનવ મનની પોતાના પ્રકાશને સહન કરવા અને ગ્રહણ કરવાની ક્ષમતા છે. સંપૂર્ણ જ્ઞાન એ ફેકલ્ટી નથી. સંપૂર્ણ જ્ઞાન એ પૂર્વનિર્ધારણ નથી. સંપૂર્ણ જ્ઞાનની જરૂર નથી. સંપૂર્ણ જ્ઞાન એ સુધારાત્મક ઉત્ક્રાંતિનો અંત છે, એટલે કે, બ્રહ્માંડમાં પ્રકાશની પ્રવૃત્તિના મહાન ક્ષેત્રનો એક ભાગ છે અને જે તમામ ક્ષેત્રો, તમામ બુદ્ધિશાળી ઉદાહરણો, એટલે કે, બ્રહ્માંડની તમામ બુદ્ધિશાળી પ્રજાતિઓને એક પર મળવા માટે સક્ષમ બનાવે છે. ઉચ્ચ માનસિક પ્લેન, એટલે કે ઉત્ક્રાંતિ દરમિયાન, ઈથરિક બોડીના અનિવાર્ય પુનરુત્થાન માટે શરીરની સામગ્રીની અંતિમ અદ્રશ્યતા માટે પરવાનગી આપવા માટે પૂરતી શક્તિશાળી ઊર્જાના પ્લેન પર.

કહેવાનો અર્થ એ છે કે, માણસની ક્ષમતા આખરે જુદા જુદા સૂર્યો સાથેના ઊર્જાસભર ઘટકમાં પ્રવેશ કરે છે જે સાર્વત્રિક સજીવ બનાવે છે, અને જે તેનો આત્મા, તેનો પ્રકાશ અને તેનો પાયો છે, હલનચલન અને સમજણમાં. આજે આપણે જે અનંત છે. અણુ ચેતનાને બોલાવો! તેથી ઉત્ક્રાંતિ દરમિયાન એક એવો મુદ્દો આવશે જ્યાં માણસ વિચાર કર્યા વિના, વિચારવાની જરૂર વગર સક્ષમ હશે, માણસ આખરે પૃથ્વી પર આક્રમક પુરાતત્ત્વો અને વૈશ્વિક ચેતનાના ઉત્ક્રાંતિવાદીઓના માનસિક નિર્માણમાં સ્પષ્ટ રીતે હસ્તક્ષેપ કરી શકશે. . આનો અર્થ એ છે કે માણસને આખરે ખ્યાલ આવશે કે તે એકદમ બુદ્ધિશાળી છે.

માણસને ખ્યાલ આવશે કે બુદ્ધિ એ માત્ર શિક્ષણના સ્વરૂપની અભિવ્યક્તિ નથી, પરંતુ તે બુદ્ધિ એ સંપૂર્ણ રીતે કોઈપણ બાબતમાં કોઈપણ મનની મૂળભૂત લાક્ષણિકતા છે. ફક્ત આપણે જ આજે એવા તબક્કે છીએ જ્યાં એક અહંકાર તરીકે અથવા માનવ સ્વ તરીકે, આપણે સાર્વત્રિક પ્રતિબિંબ દ્વારા, એટલે કે, ઇતિહાસ દ્વારા અને માનવતાની સ્મૃતિ દ્વારા આપણા પર લાદવામાં આવેલી મર્યાદામાં રહેવાની ફરજ પડી છે.

અને માણસને હજી સુધી આપવામાં આવ્યું નથી - કારણ કે આ ક્ષેત્રમાં પૂરતું વિજ્ઞાન નથી - માણસને હજી સુધી તે જાણવાની અને સમજવાની ક્ષમતા આપવામાં આવી નથી કે તેનું માનસ કેવી રીતે કાર્ય કરે છે, તેનો અહંકાર કેવી રીતે કાર્ય કરે છે, તેનો અહંકાર કેવી રીતે કાર્ય કરે છે, અને ઇન્ટેલિજન્સ શબ્દનો અર્થ તેની સાર્વત્રિક વ્યાખ્યામાં શું થાય છે, જેથી માણસ આજે તેના અપાર્થિવ શરીર દ્વારા, એટલે કે તેની ઇન્દ્રિયો દ્વારા જ ફસાયો છે!

તે તેના મૂળભૂત અને સાર્વત્રિક જ્ઞાનને બદલવા માટે બંધાયેલો છે, ઉત્ક્રાંતિ દરમિયાન ઈતિહાસ અને વિષય દ્વારા કન્ડિશન્ડ કરેલું એક નાનું મર્યાદિત જ્ઞાન, કારણ કે વિજ્ઞાનના તમામ સિદ્ધાંતો હોવા જોઈએ, તે અર્થમાં નહીં કે આજે વિજ્ઞાન ઉપયોગી નથી, તેનાથી વિપરીત, તે ખૂબ જ ઉપયોગી છે, પરંતુ તે અર્થમાં કે વિજ્ઞાન આજે પણ તેની પોતાની નાબૂદી તરફ અનિવાર્ય મુસાફરી કરે છે. જેમ તમામ સભ્યતાઓ પોતાના નાબૂદી તરફ પોતાની અનિવાર્ય યાત્રા કરે છે.

પરંતુ જેમ કોઈ સંસ્કૃતિને તેની નાબૂદીની વાસ્તવિકતા ખૂબ જ મુશ્કેલ લાગે છે, તેમ વિજ્ઞાનને તેની પોતાની નાબૂદી પ્રાપ્ત કરવી મુશ્કેલ લાગશે. અને તે ખૂબ જ સામાન્ય છે. વિશ્વમાં પોતાના પતન અથવા પોતાના વિનાશને પ્રોત્સાહન આપવા માટે જે લોકો વિચારે છે અથવા જેઓ ચોક્કસ ચેતના ધરાવે છે તેમને કોઈ પૂછી શકતું નથી. માનવતાનો વિકાસ થવા દેવા માટે આપણે શું છીએ, આપણે શું કર્યું છે, આપણે શું કરી શકીએ છીએ તે વિશે જાગૃત થવા માટે આપણે બંધાયેલા છીએ.

પરંતુ વ્યક્તિ તરીકે - હું એક વ્યક્તિ તરીકે સ્પષ્ટપણે કહું છું - આખરે આપણે આપણા ગ્રહ પરના સાર્વત્રિક અને કોસ્મિક ઓર્ડરની પરિસ્થિતિઓનો સામનો કરવા માટે બંધાયેલા હોઈશું, આપણે એવા પરિમાણોનો સામનો કરવા માટે બંધાયેલા હોઈશું જેણે ભૂતકાળમાં અંધશ્રદ્ધાના મહાન આંદોલનો ઉભા કર્યા છે. દુનિયા માં; ચળવળો કે જે વિજ્ઞાનના ઉત્ક્રાંતિ સાથે મૃત્યુ પામ્યા હતા, અને ચળવળો કે જે પછી વિજ્ઞાન દ્વારા સ્પષ્ટપણે નકારી કાઢવામાં આવી હતી.

તેથી અમે સમય જતાં અમુક અનુભવોની સમીક્ષા કરવા અને તેને ફરીથી જીવંત કરવા માટે બંધાયેલા હોઈશું જેથી કરીને ખ્યાલ આવે કે બ્રહ્માંડ અમર્યાદિત છે. તે માનવ ચેતના અમર્યાદિત છે અને તે માણસ તેના આંતરિક ભાગમાં તેની ચેતના જેટલી શક્તિશાળી છે. આજે તે વિશ્વમાં ખૂબ જ મહત્વપૂર્ણ છે કે જ્યાં આપણે મનના પ્રવાહોના ટોળાના ક્રોસરોડ્સ પર રહેવા માટે મજબૂર છીએ જે, એકંદરે... અને જ્યારે હું એકંદરે કહું છું, હું ચોક્કસપણે યુનાઈટેડ સ્ટેટ્સ તરફ જોઈ રહ્યો છું જ્યાં આ વ્યક્તિત્વ સાથેના સંઘર્ષમાં સામૂહિક અનુભવ ધીમે ધીમે સામૂહિક મનોવિકૃતિનું નિર્માણ કરે છે.

ટેલિવિઝન દ્વારા અથવા અખબારો દ્વારા અથવા ફ્રી પ્રેસના વિવિધ સ્વરૂપો દ્વારા તેમની સંખ્યામાં વિસ્તૃત થયેલા વિચારોના પ્રવાહો દ્વારા માણસને વિશ્વમાં અનિશ્ચિતપણે બોમ્બમારો કરી શકાતો નથી. એક એવો સમય આવશે જ્યાં માણસ હવે આ માનસિક અને માનસિક તણાવને સહન કરી શકશે નહીં જે સત્ય અને અસત્ય વચ્ચેના વિવિધ મુકાબલોમાંથી ઉદ્ભવે છે. પૃથ્વી પર સુપ્રામેન્ટલ (ઉચ્ચ મન) ચેતનાના ઉત્ક્રાંતિમાં એક બિંદુ આવશે જ્યારે માણસને પોતાના સંબંધમાં વાસ્તવિકતાને વ્યાખ્યાયિત કરવાની ફરજ પાડવામાં આવશે. પરંતુ તે "એક પોતે" હશે જે સાર્વત્રિક હશે, તે "એક પોતે" નહીં હોય જે તેના પોતાના આત્માની રમતિયાળતા અથવા તેના પોતાના અહંકારની મિથ્યાભિમાન અથવા તેના પોતાના મારાની અસલામતી પર આધારિત હશે.

તેથી તે ક્ષણથી, માણસ માનવ ઘટના, સંસ્કૃતિને તેના તમામ પાસાઓમાં સમજવા માટે સક્ષમ થવાનું શરૂ કરશે. અને તે હવે મનોવૈજ્ઞાનિક રીતે શું થઈ રહ્યું છે અથવા વિશ્વમાં શું થશે તેનાથી " સ્ટફ્ડ" (દુરુપયોગ) થશે નહીં . માણસ મુક્ત થવાનું શરૂ કરશે. અને તે ક્ષણથી તે મુક્ત થવાનું શરૂ કરે છે, તે આખરે જીવનને તેની મૂળભૂત ગુણવત્તામાં સમજવાનું શરૂ કરશે. અને તે જેટલું વધુ વિકસિત થશે, તેટલું તે જીવનને સંપૂર્ણ, અવિભાજ્ય અને શીખેલી રીતે સમજશે, એક અર્થમાં જે આજે પાંચમી મૂળ જાતિની ચેતનાનો ભાગ નથી.

આટલી બધી શબ્દશઃ શા માટે? માણસને ધીમે ધીમે સમજવા માટે કે તે પોતાની જાતને આપી શકે છે, પોતાને બનાવી શકે છે તે સૌથી મોટી વફાદારી છે, તે પોતાની જાત પ્રત્યેની વફાદારી છે. આપણે એવી સદીમાં જીવીએ છીએ જ્યાં વ્યક્તિવાદ માટેનો પ્રેમ, ખાસ કરીને પશ્ચિમી વિશ્વમાં, ખૂબ જ આગળ વધ્યો છે. આપણે વધુ ને વધુ વ્યક્તિવાદી બની ગયા છીએ, પરંતુ વ્યક્તિવાદ, જો તે એક વલણ રહે છે, તો તે મૂળભૂત રીતે મનુષ્યની વાસ્તવિકતામાં એકીકૃત નથી. બીજા શબ્દોમાં કહીએ તો, લાલ પેન્ટી અને પીળા ચપ્પલ સાથે શેરીમાં ચાલવું અને ન્યૂ યોર્કના ટાઇમ્સ સ્ક્વેરમાં પ્રેમ કરવો એ વ્યક્તિવાદનું એક સ્વરૂપ છે. પરંતુ તે વિલક્ષણતા છે, તે માનવ ચેતનાના એસ્ટ્રાલાઈઝેશનનું એક સ્વરૂપ છે.

માણસે પોતાનું વ્યક્તિત્વ જાળવી રાખવાની, શબ્દના નક્કર અર્થમાં પોતાનું વ્યક્તિત્વ વ્યક્ત કરવાની, જનતાની સંવેદનાઓને ઠેસ પહોંચાડવાની કે તેના લોકોની સંવેદનશીલતાનો ભંગ કરવાની કે તેની વસ્તીની સંવેદનશીલતાને ઠેસ પહોંચાડવાની જરૂર નથી. તે એક ભ્રમણા છે! અને તે વીસમી સદીની લાક્ષણિક ફેશનનો એક ભાગ છે, છેવટે તે મામૂલી બની જાય છે, છેવટે તે મૂર્ખ પણ બની જાય છે, છેવટે તેમાં સૌંદર્ય શાસ્ત્રનો સંપૂર્ણ અભાવ છે. તેથી નવો માણસ, પૃથ્વી પર અતિશય (ઉચ્ચ માનસિક) ચેતનાની ઉત્ક્રાંતિ, ખરેખર, માણસને અત્યંત વ્યક્તિગત પરંતુ વ્યક્તિવાદી ચેતના વિકસાવવા દેશે.

માણસ વ્યક્તિગત હશે શા માટે? કારણ કે તેની ચેતનાની વાસ્તવિકતા તેના આત્માના સંમિશ્રણ પર આધારિત હશે અને પુરુષોની નજરમાં વિશ્વમાં પ્રક્ષેપિત કરવામાં આવશે નહીં, એક પ્રકારનું વિલક્ષણતા સાથે ચેનચાળાને પ્રગટ કરવા માટે. વાસ્તવિક બનવા માટે માણસે દુનિયાભરમાં ભટકવાની અને સીમાંત રહેવાની જરૂર નથી. ઊલટું. માણસ જેટલો સભાન હશે, તેટલો ઓછો તે સીમાંત હશે, તે વધુ વાસ્તવિક હશે અને તેની વાસ્તવિકતામાં તે વધુ અનામી હશે. કારણ કે માણસની વાસ્તવિકતા એ કંઈક છે જે તેની અને તેની વચ્ચે જાય છે અને તેની અને અન્ય વચ્ચે નહીં.

જો આપણે આપણા ગ્રહ પર મૂળ-જાતિના આવશ્યક ઉત્ક્રાંતિને જોઈએ, તો તે માનવ ઘટનાને થોડું સમજવા જેવું છે. અમે કોઓર્ડિનેટ્સ સ્થાપિત કરીએ છીએ, તે સંપૂર્ણ રીતે વ્યવહારિક છે, તે અનિવાર્ય ઘટનાઓને કાલક્રમિક સમજણનું માળખું આપવાનું છે! પરંતુ જો આપણે સભાન જાતિની વાત કરીએ, જો આપણે સભાન માનવતાની વાત કરીએ, તો આપણે સભાન પુરુષો અને વ્યક્તિઓ વિશે વાત કરવા માટે બંધાયેલા છીએ.

પૃથ્વી પર સુપ્રામેન્ટલ ચેતના (ઉચ્ચ મન) ની ઉત્ક્રાંતિ કોઈપણ સામૂહિકતાના ધોરણે ક્યારેય થશે નહીં. પૃથ્વી પર સુપ્રામેન્ટલ (ઉચ્ચ મન) ચેતનાની ઉત્ક્રાંતિ ક્યારેય સામૂહિક શક્તિની અભિવ્યક્તિ નહીં હોય. તે હંમેશા વિશ્વમાં વ્યક્તિઓ હશે જેઓ તેમની ચેતનામાં તે બિંદુ તરફ ધીમે ધીમે, વધુ અને વધુ ગુરુત્વાકર્ષણ કરશે જ્યાં તેઓ તેમના પોતાના સ્ત્રોત, તેમના આત્મા, તેમના ડબલ સાથે, જે પણ આપણે તેને કહીએ છીએ સાથે એકતા કરશે. આ વાસ્તવિકતા માટે જે માણસનો ભાગ છે.

પરંતુ આ દિશામાં મૂળભૂત ચળવળ આના પર આધારિત હશે: તે વિચારની ઘટનાની સમજ પર આધારિત હશે જે વિકાસ પછી ક્યારેય કરવામાં આવી નથી. તે કહેવું પૂરતું નથી: " મને લાગે છે, તેથી હું છું". ડેસકાર્ટેસ માટે એ કહેવું સારું હતું કે, "મને લાગે છે, તેથી હું છું," કારણ કે તે અનુભૂતિનો એક ભાગ હતો કે વિચારમાં પોતાની શક્તિ હોય છે જે વ્યક્તિના સ્તરે અનુભૂતિ થવી જોઈએ.

પરંતુ સર્જનાત્મક ચેતનાના સ્તર પર, તે બિંદુ આવશે જ્યારે માણસનો વિચાર સંપૂર્ણ રીતે, અભિન્ન રીતે પરિવર્તિત થશે. અને માણસ હવે ઉત્ક્રાંતિ દરમિયાન વિચારશે નહીં. તેનો વિચાર તેના ઉચ્ચ મનની રચનાત્મક અભિવ્યક્તિના મોડમાં રૂપાંતરિત થશે. અને તે મન સંપૂર્ણ બની જશે ટેલિસાયકિક બીજા શબ્દોમાં કહીએ તો, માણસ સાર્વત્રિક વિમાનો સાથે ત્વરિત સંચારનો અનુભવ કરશે અને સંદેશાવ્યવહારની આ પદ્ધતિ હવે પ્રતિબિંબિત રહેશે નહીં. જે ક્ષણે વિચાર માણસના મનમાં પ્રતિબિંબિત થવાનું બંધ કરે છે, વિચાર વ્યક્તિલક્ષી થવાનું બંધ કરે છે. આપણે હવે એમ કહી શકતા નથી કે માણસ વિચારે છે, આપણે કહીએ છીએ કે માણસ તેની પોતાની ચેતનાના સાર્વત્રિક વિમાનો સાથે વાતચીત કરે છે.

પરંતુ માણસે આને અભિન્ન રીતે સમજવા માટે, તેના માટે તે વિચારની અનુભૂતિ કરવી જરૂરી છે, જેમ આપણે આજે તેની કલ્પના કરીએ છીએ, જેમ આપણે તેને આજે જીવીએ છીએ, જેમ તે આપણા મનમાં સ્થિર છે, જેમ તે ઉત્પન્ન થાય છે અથવા અનુભવે છે. આપણે અચેતન અહંકાર તરીકે, આપણામાં ચોક્કસ અનુભૂતિ જાગૃત કરવી જોઈએ, તે અર્થમાં કે માણસે એ સમજવામાં સમર્થ થવું જોઈએ કે તેનો વિચાર પોતે જ તેને પોતાની વિરુદ્ધ વિભાજિત કરે છે. જ્યાં સુધી તે, આક્રમણ અને બેભાનતાના કારણોસર, તેને સાચા અને ખોટાના સારા કે અનિષ્ટની ધ્રુવીયતાને આધીન કરે છે.

ક્ષણથી જ્યારે માણસ તેના મનનું ધ્રુવીકરણ કરે છે, પછી ભલે તે નકારાત્મક અથવા સકારાત્મક સંકલન સ્થાપિત કરે, તેણે માત્ર ભૌતિક તળિયે અને વૈશ્વિક અને વૈશ્વિક સ્તરે પોતાની વચ્ચે વિભાજન બનાવ્યું છે. આ ખૂબ જ મહત્વપૂર્ણ છે! તે એટલું મહત્વનું છે કે તે આગામી ઉત્ક્રાંતિની મૂળભૂત ચાવી છે. ધ્રુવીયતાના સંબંધમાં આપણા વિચારોને હંમેશા જીવવા માટે જે આપણને પ્રેરિત કરે છે તે આપણા અહંકારની મૂળભૂત અસુરક્ષા છે. તે આપણી લાગણીઓની શક્તિશાળી અને વેમ્પિરિક ક્ષમતા છે. અહંકાર તરીકે અથવા અશિક્ષિત અથવા વધુ શિક્ષિત વ્યક્તિ તરીકે, આપણે જે જાણીએ છીએ તે સહન કરી શકતા નથી તે આપણી અસમર્થતા છે.

દુનિયામાં એવો કોઈ માણસ નથી જે કંઈક જાણતો ન હોય. બધા પુરુષો કંઈક જાણે છે પરંતુ વિશ્વવ્યાપી કોઈ સત્તા નથી, કોઈ સાંસ્કૃતિક વ્યાખ્યા નથી, વિશ્વમાં કોઈ સાંસ્કૃતિક સમર્થન નથી કે જે માણસને કંઈક જાણવાનું સમર્થન કરી શકે. એવી સંસ્થાઓ છે કે જેઓ આ જ્ઞાનને સ્થાપિત કરવા અને માણસના મનને તેની સાથે ગોઠવવા માટે પોતાને કંઈક જાણવાનો અધિકાર આપે છે. તેને આપણે વિવિધ સ્તરે વિજ્ઞાન કહીએ છીએ, તે સામાન્ય છે.

પરંતુ એવી કોઈ વિપરિત ચળવળ નથી કે જ્યાં વિશ્વની સંસ્થાઓ માણસને તેની સત્તા આપી શકે અથવા પાછી આપી શકે, એટલે કે તેને પોતાનું તે નાનું પરિમાણ પાછું આપો જે એક દિવસ ખૂબ મોટું બની શકે છે. અને તમે આધ્યાત્મિક ક્ષેત્રમાં, ધાર્મિક ક્ષેત્રમાં ખૂબ જ સરળ રીતે પરીક્ષા આપી શકો છો. એક દિવસ, જ્યારે માણસના કેન્દ્રો પૂરતા પ્રમાણમાં ખુલશે, ત્યારે તે વિજ્ઞાનના ક્ષેત્રમાં પણ તે જ કરી શકશે.

એક માણસ જે વિશ્વમાં છે અને જે ઉદાહરણ તરીકે, કોઈ મૌલવીને અથવા કોઈ ધર્મમાં કામ કરતા વ્યક્તિને મળવા જાય છે અને જે તેની સાથે ભગવાન વિશે વાત કરે છે, અને જે કહેશે: "સારું, સારું, ભગવાન એવી વસ્તુ છે, આવી વસ્તુ , આવી વસ્તુ" , કોઈ તેને કહેશે: “ પણ તમે કયા અધિકારથી ભગવાનની વાત કરો છો? તમે કયા અધિકારથી ભગવાનની વાત કરો છો...? અને જો માણસ ઓછો વિકસિત હોય અને તેના મનના સર્જનાત્મક પરિમાણનો એક ભાગ હોય તેવા અન્ય સ્વરૂપોને બહાર લાવવા અથવા ઉગાડવા માટે ખરેખર ભગવાનના સ્વરૂપને ખંડિત કરી શકે છે, તો તે ભગવાનના સંસ્થાકીયકરણ દ્વારા વધુ ભગાડવામાં આવશે. અદ્રશ્ય વિશ્વોની સમજ.

તેથી જ હું કહું છું કે માણસ વિશ્વના આધાર સાથે, પરમ ચેતના (ઉચ્ચ મન) માં, વિશ્વમાં પ્રવેશ કરી શકશે નહીં. માણસને અધિક (ઉચ્ચ મન) ચેતના હશે જ્યારે તેણે પોતાની જાતને દુન્યવી આધારની જરૂરિયાતમાંથી સંપૂર્ણપણે મુક્ત કરી દીધી છે, અને છેવટે તે જે જાણે છે તે સમજવા અને સહન કરવાનું ધીમે ધીમે શરૂ કરે છે. અને આ માટે શરત એ છે કે સાચા-ખોટાની ધ્રુવીયતાની જાળમાં ન ફસાય.

જો માણસ સાચા અને ખોટાની ધ્રુવીયતાની જાળમાં ફસાઈ જાય છે, તો તે તેના અંતરાત્માને ઉત્તેજિત કરે છે, તે તેના અહંકારને અસુરક્ષિત કરે છે, અને તે વાસ્તવિકતા પ્રત્યે આત્યંતિક વલણ વિકસાવશે. સાચું અને ખોટું એ જાણવાની માનસિક અસમર્થતાના માત્ર મનોવૈજ્ઞાનિક ઘટકોને રજૂ કરે છે! જ્યારે તમે સારી સ્ટીક ખાઓ છો, ત્યારે તમને આશ્ચર્ય નથી થતું કે તે વાસ્તવિક છે કે નકલી, ત્યાં કોઈ ધ્રુવીયતા નથી, તેથી જ તે સારું છે. પરંતુ જો તમે વિચારવાનું શરૂ કરો કે શું ત્યાં કીડા છે, ઓહ, તો તમારું પેટ જવાબ આપશે નહીં! અને તે જ્ઞાનના સ્તરે, જ્ઞાનના સ્તરે સમાન વસ્તુ છે.

જ્ઞાન એ નીચલા મન માટે છે જે ઉચ્ચ મન માટે જાણવું છે. જ્ઞાન એ અહંકારની જરૂરિયાતનો એક ભાગ છે જ્યારે જાણવું એ સ્વયંની વાસ્તવિકતાનો એક ભાગ છે. તેથી જાણવા અને જાણવા વચ્ચે કોઈ વિભાજન કે વિભાજન નથી. જ્ઞાન એ ચેતનાના એક સ્તરનો ભાગ છે અને જ્ઞાન એ બીજા સ્તરનો ભાગ છે.

જ્ઞાનના ક્ષેત્રમાં, આપણે અમુક વસ્તુઓ વિશે વાત કરીએ છીએ અને જ્ઞાનના ક્ષેત્રમાં આપણે અન્ય વસ્તુઓ વિશે વાત કરીએ છીએ. બંને મળી શકે છે, ભાઈચારો કરી શકે છે અને સાથે ખૂબ સારી રીતે રહી શકે છે. ચોથો માળ તેની ઉપરના પાંચમા માળ સાથે હંમેશા સારો હોય છે... અને માણસ એક બહુપરિમાણીય અસ્તિત્વ છે, પણ માણસ એક એવું અસ્તિત્વ પણ છે જે અનુભવી ચેતના ધરાવે છે અને જીવે છે. પૃથ્વી પર આપણી પાસે પ્રાયોગિક ચેતના છે. આપણામાં સર્જનાત્મક ચેતના નથી.

તમારા જીવન જુઓ! તમારું જીવન અનુભવ છે! જ્યારથી તમે દુનિયામાં પ્રવેશ કરો છો ત્યારથી તમારું જીવન સતત અનુભવ પર આધારિત છે, પરંતુ માણસ અનુભવ પર અનિશ્ચિત સમય સુધી જીવી શકતો નથી. એક દિવસ માણસે સર્જનાત્મક ચેતના સાથે જીવવું પડશે, તે સમયે જીવન જીવવા યોગ્ય છે, જીવન ખૂબ મોટું, ખૂબ વિશાળ બની જાય છે, તે સર્જનાત્મકતામાં શક્તિશાળી છે, અને માણસ આત્માના અનુભવને જીવવાનું બંધ કરે છે. પણ માણસ અનુભવ કેમ જીવે છે? કારણ કે તે શક્તિશાળી શક્તિઓ સાથે જોડાયેલ છે - જેને હું મેમરી કહું છું - જે હકીકતમાં તમે "આત્મા" કહો છો.

માણસ તેના આત્મા દ્વારા જીવતો નથી, તે આત્મા સાથે જોડાયેલ છે, તે આત્મા દ્વારા જીવે છે, તે સતત આત્મા દ્વારા વેમ્પાયરાઇઝ્ડ છે. જે લોકોએ પુનર્જન્મ વિશે સંશોધન કર્યું છે અથવા જે લોકોએ ચોક્કસ ભૂતકાળમાં પાછા ફરવાનું સંશોધન કર્યું છે તેઓએ ખૂબ જ સારી રીતે નક્કી કર્યું છે કે આજે અમુક લોકો અમુક બાબતોથી પીડાય છે, કારણ કે પાછલા જીવનમાં, તેઓ કારણથી પીડાતા હતા. આજે એવા લોકો છે કે જેઓ એલિવેટર (લિફ્ટ) માં પ્રવેશી શકતા નથી કારણ કે તેઓ ભૌતિક જીવન પહેલાથી આવતા આઘાતનો અનુભવ કરી રહ્યા છે, અથવા જેમને અગાઉની પરિસ્થિતિઓમાં ગૂંગળામણ થઈ છે, તેઓ સક્ષમ નથી... તેઓ ગૂંગળામણ અનુભવે છે. તેથી માણસ આત્માનો અનુભવ જીવે છે.

તે જીવે છે, તે તેની સ્મૃતિ સાથે જોડાયેલ છે, તેની અગાઉની ઉત્ક્રાંતિ ચળવળની ખૂબ જ વિશાળ અચેતન સ્મૃતિ જેટલી જ વિશાળ સ્મૃતિ છે જે તે આજે એક પ્રાયોગિક અસ્તિત્વ તરીકે જીવે છે. માણસ પૃથ્વી પરના અનુભવથી અનિશ્ચિતપણે જીવી શકતો નથી! તે તેમની યુનિવર્સલ ઇન્ટેલિજન્સનું અપમાન છે. તે માણસના સ્વભાવ સાથે તદ્દન અસંગત છે કે માણસ કહી શકતો નથી: " સારું, સારું, હું દસ વર્ષમાં આવું કરવા માંગુ છું, પાંચ વર્ષમાં હું આવું કરવા માંગુ છું", તે પ્રકૃતિ સાથે સંપૂર્ણપણે અસંગત છે. માણસ કે તે તેના ભવિષ્યને જાણતો નથી!

તે માણસના સ્વભાવ સાથે અસંગત છે કે તે તેના પહેલાંના માણસના સ્વભાવને જાણતો નથી. બીજા શબ્દોમાં કહીએ તો, તે માણસના આત્મા સાથે અસંગત છે કે માણસમાંનો આ આત્મા તર્કના આદેશો અનુસાર જીવવા માટે ફરજ પાડવામાં આવે છે, કારણ કે આજે ભૌતિક સ્તરે માણસ એ પેઢીનો ભાગ છે જેની ચેતના ઉતરી રહી છે. માણસની ચેતનાએ વંશમાંથી દ્રવ્યમાં પસાર થવી જોઈએ અને એથરિક તરફ અંતિમ બહાર નીકળવું જોઈએ, એટલે કે ગ્રહની વાસ્તવિકતાનો તે ભાગ જે આખરે વિશ્વ છે જેમાં માણસે કુદરતી રીતે તેની અમરતા જીવવી જોઈએ.

માણસ પદાર્થમાં આવીને મરવા માટે નથી બન્યો. જેને આપણે મૃત્યુ કહીએ છીએ, એટલે કે જેને આપણે માણસનું અથવા આત્માનું અપાર્થિવ સ્તર પર પાછા ફરવું કહીએ છીએ, તે માણસની અચેતનતાનો એક ભાગ છે. તે એ હકીકતનો એક ભાગ છે કે માણસ સાર્વત્રિક સર્કિટથી સંપૂર્ણપણે અલગ થઈ ગયો છે જે તેની પેઢીના સ્ત્રોત છે, જે તેની બુદ્ધિના સ્ત્રોત છે, જે તેના જીવનશક્તિનો સ્ત્રોત છે, જે તેના ગ્રહોના સ્વનો સ્ત્રોત છે! તેથી માણસે સ્ત્રોત તરફ પાછા ફરવું જોઈએ, પરંતુ માણસ આક્રમણના આધ્યાત્મિક, ઐતિહાસિક ભ્રમણા દ્વારા સ્ત્રોત તરફ પાછો ફરી શકતો નથી.

માણસ જૂના વિચારોનો ઉપયોગ કરીને તેના સ્ત્રોત પર પાછા ફરી શકશે નહીં જેણે તેને પદાર્થના કેદી બનવાની ફરજ પાડી. માણસ જૂના માધ્યમોનો ઉપયોગ કરીને તેના સ્ત્રોત તરફ પાછો ફરતો નથી જેણે તેને પ્રાયોગિક ચેતના સાથે બનાવ્યો હતો. માણસ વિશ્વાસ કરીને તેના સ્ત્રોત તરફ પાછો ફરશે નહીં.

માણસ તેના ઉત્ક્રાંતિ દરમિયાન ધીમે ધીમે વિકાસ કરીને તેના સ્ત્રોત પર પાછો ફરશે, તે જે જાણે છે તેને ટેકો આપવાની ક્ષમતા.

પરંતુ આજના વિશ્વમાં, આપણે એક પૌરાણિક કથા માટે, આપણા સ્વના મનોવૈજ્ઞાનિક વ્યવસ્થિતકરણ માટે વિનાશકારી છીએ. અમે એક મનોવૈજ્ઞાનિક માનસિક વલણની પકડ માટે વિનાશકારી છીએ જે તમામ માનવતાઓને અસર કરે છે: માન્યતા. માણસે શા માટે માનવું જરૂરી છે? કારણ કે તે જાણતો નથી! માણસે શા માટે માનવું જરૂરી છે? કારણ કે તે એક અનુભવી ચેતના છે, તેથી તેના મનમાં પ્રકાશ નથી. તે તેની થોડી ચેતનાની ખૂબ જ અંધારી ચળવળમાં રહે છે, તેથી તે પોતાને કંઈક મહત્વપૂર્ણ અને સંપૂર્ણ સાથે જોડવા માટે વિશ્વાસ કરવા માટે બંધાયેલો છે.

પણ અહંકારના મનોવૈજ્ઞાનિક કન્ડીશનીંગનો એક ભાગ છે તે પરમમાંની આ માન્યતા, આ નિરપેક્ષમાંની માન્યતા, તે કોના દ્વારા સ્થાપિત થઈ? તેની સ્થાપના મેન ઓફ ઈન્વોલ્યુશન દ્વારા કરવામાં આવી હતી. તમે સારી રીતે જાણો છો કે જો તમે દુનિયામાં જાઓ છો અને તમે કોઈને વાર્તા કહો છો, તો તમે જે વાર્તા કહેવા જઈ રહ્યા છો તે વાર્તા પ્રાપ્ત થાય છે અને બીજા દ્વારા કહેવામાં આવે છે ત્યારે તે સમાન રહેશે નહીં, જે તમે શરૂઆતમાં કહ્યું હતું. .

કલ્પના કરો કે કોઈ વ્યક્તિ વિશ્વમાં જાય છે અને આજે હું જે કહું છું તેનું પુનરાવર્તન કરવાનો પ્રયાસ કરે છે, એક દીક્ષા તરીકે, તમે કલ્પના કરી શકો છો કે તે આવતીકાલે કેવી રીતે બહાર આવશે! તેથી ભૂતકાળમાં એવા પુરુષો છે જેમણે વસ્તુઓ કરી હતી, ત્યાં એવા પહેલવાન હતા જેઓ માનવતાના ઉત્ક્રાંતિમાં મદદ કરવા માટે વિશ્વમાં આવ્યા હતા. પરંતુ આ જીવોએ શું કહ્યું અને તેઓએ કથિત રીતે જે કહ્યું તેના વિશે શું જાણ કરવામાં આવી તે બીજી બાબત છે.

અને હું તમને એક વાત સ્પષ્ટપણે કહી શકું છું - કારણ કે હું આ ઘટનાને વર્ષોથી જાણું છું - માણસ માટે સંપૂર્ણ રીતે જે કહ્યું છે તેનું પુનરાવર્તન કરવું સંપૂર્ણપણે અશક્ય છે. જ્યારે તમે આજે રાત્રે ઘરે આવો ત્યારે તે કરવાનો પ્રયાસ કરો! સંપૂર્ણ રીતે જે કહ્યું છે તેનું પુનરાવર્તન કરવું મનુષ્ય માટે અશક્ય છે. અને શા માટે હું તમને કહીશ. કારણ કે જે સંપૂર્ણ રીતે કહેવામાં આવ્યું છે - બીજા શબ્દોમાં કહીએ તો, જે અહંકારથી રંગીન નથી, શું એસ્ટ્રાલાઈઝ્ડ નથી, જે માણસની અચેતનતાનો ભાગ નથી, પરંતુ જે માણસની વૈશ્વિકતાનો ભાગ છે - તે અહંકાર તરફ નિર્દેશિત નથી. માણસ કે માણસના અહંકારને, કે માણસની બુદ્ધિને. તે તેના આત્મા તરફ નિર્દેશિત છે.

અને જો માણસ તેના આત્મામાં નથી, તો તમે કેવી રીતે અપેક્ષા કરો છો કે તે બીજા આત્માએ પહેલેથી જ કહ્યું છે તે સ્વીકારે? તે અશક્ય છે. તેથી તે ક્ષણે રંગ છે. અને આરંભના શબ્દોના રંગમાંથી જન્મ થયો જેને આપણે માનવતાના ઉત્ક્રાંતિ લાભ માટે ધર્મો કહીએ છીએ. અને હું સંમત છું અને હું ખૂબ જ ખુશ છું કે આ થઈ રહ્યું છે અને આ કરવામાં આવ્યું છે, કારણ કે તે જરૂરી છે. પરંતુ ઉત્ક્રાંતિ દરમિયાન એવો સમય આવશે જ્યારે માણસને તેના અંતરાત્માને તેના પોતાના જ્ઞાનની સંપૂર્ણતા આપવા માટે નૈતિક સમર્થનની જરૂર રહેશે નહીં. તે સુપ્રામેન્ટલ ચેતના (ઉચ્ચ મન) છે.

અને કારણ કે અમે ક્વિબેકર્સ સાથે વાત કરી રહ્યા છીએ, કારણ કે અમે એવા લોકો સાથે વાત કરી રહ્યા છીએ જેમને, ખૂબ જ સારા કારણોસર, આધ્યાત્મિક વિશ્વની ચોક્કસ નિકટતાનો અનુભવ કરવાની તક મળી છે જે ધર્મએ તેમને આપ્યું છે, આ અર્થમાં અમારી પાસે પહેલેથી જ પ્રગતિ છે. કે પહેલેથી જ, આપણે એવા માણસો છીએ જેઓ અદ્રશ્ય પ્રત્યે ચોક્કસ સંવેદનશીલતા ધરાવે છે.

પરંતુ ત્યાંથી આક્રમણના આધ્યાત્મિક માર્ગોનો ઉપયોગ કરીને ચેતનાની ઊંડી ગૂઢ શોધમાં પ્રવેશવાથી આપણને સીધા સ્વની ધ્રુવીયતા સુધી લઈ જશે. તે આપણને સારા અને ખરાબ, સાચા અને ખોટાના સંઘર્ષમાં લાવશે, અને તે આપણા માટે મનમાં ભારે દુઃખ પેદા કરશે.

તેથી જ હું કહું છું: સભાન માણસ, પૃથ્વી પર અધિક ચેતના (ઉચ્ચ મન) ની ઉત્ક્રાંતિ તે ક્ષણથી શરૂ થશે જ્યારે માણસ તેના વિચારોને સાચા અને બનાવટીને આધિન ન કરવાની જરૂરિયાતને પહેલેથી જ સમજી ગયો હશે. પરંતુ ધીમે ધીમે તેને જીવવાનું શીખવું અને જ્યાં સુધી આ વિચાર એક દિવસ સંપૂર્ણ ન થાય ત્યાં સુધી તેની ચળવળને ટેકો આપવો, એટલે કે તેના પોતાના પ્રકાશમાં સંપૂર્ણ રીતે કહેવું, સંપૂર્ણ રીતે વિધ્રુવીકરણ, જેથી આખરે તે અહંકાર, હું ... અહંકાર, આત્મા. અને આત્મા એકીકૃત છે અને માણસને વાસ્તવિક વ્યક્તિ બનાવે છે.

વાસ્તવિક અસ્તિત્વ શું છે? વાસ્તવિક અસ્તિત્વ એ વાસ્તવિક અસ્તિત્વ છે! તે એવો જીવ નથી કે જેને સત્યની જરૂર હોય, તે સત્યને ખાનાર વ્યક્તિ નથી. જો તમે સત્ય ખાશો, તો કાલે તમે અસત્ય ખાશો, કારણ કે એવા લોકો હશે જે તમને વાસ્તવિકતાના અનંતની સીમાઓ સુધી લઈ જશે. જો તમે સત્ય ખાશો, તો એક દિવસ તમારે ફરીથી આ પગલું ભરવું પડશે, કારણ કે એક જ વસ્તુ જે માણસને અનુકૂળ છે, જે તેના અંતરાત્માને અનુકૂળ છે, જે તેના આત્માને અનુકૂળ છે, જે તેના આત્માને અનુકૂળ છે, જે તેના અહંકારને અનુકૂળ છે, જે તેના અસ્તિત્વને અનુકૂળ છે. , શાંતિ છે.

પણ શાંતિ એટલે શું? શાંતિ એ શોધનું વિરામ છે. તમે કહેવા જઈ રહ્યા છો: " હા, પણ તમારે શોધવું પડશે" , હું કહું છું: હા, માણસ શોધે છે, તમે પોતે જ શોધી રહ્યા છો છતાં, બધા માણસો શોધી રહ્યા છે, પરંતુ ઉત્ક્રાંતિ દરમિયાન એક બિંદુ આવશે જ્યાં માણસ કરશે. હવે કોઈ શોધ રહેશે નહીં, માણસે હવે શોધ કરવી પડશે નહીં, અને માણસ જ્યારે આખરે જાણશે કે તે જાણે છે ત્યારે શોધ કરવાનું બંધ કરી દેશે.

અને ત્યાં તમે કહેવા જઈ રહ્યા છો: " હા, પરંતુ કોઈ કેવી રીતે જાણી શકે કે તે જાણે છે"... જ્યાં સુધી તમે તેને સહન કરવાની મંજૂરી આપો ત્યાં સુધી તમે તે જાણશો, જ્યાં સુધી તમારે શોધવા માટે કોઈને કૉલ કરવાની જરૂર નથી. જો તમે સાચા છો. અને પછી તમે કહેવા જઈ રહ્યા છો: " સારું હા, પણ જો આપણે સાચા હોઈએ અથવા જો આપણને લાગે કે આપણે સાચા છીએ, તો તે ખતરનાક છે". હું કહીશ: હા, કારણ કે જે માણસ સાચો બનવા માંગે છે તે એક માણસ છે જે પહેલેથી જ તેના કારણની શોધમાં છે!

પરંતુ શું તમારા જીવનમાં, તમારા રોજિંદા જીવનમાં, તમારા અંગત ખૂણામાં એવા અનુભવો નથી, શું તમારા જીવનમાં એવો સમય નથી કે જ્યારે તમે અનુભવી શકો કે તમે જે જાણો છો, તે જ છે? અને જ્યારે તે છે, તે છે!

તે તે છે" બીજા " તે તે છે" બીજા " તે તે છે" ઉમેરવાની ક્ષમતા ધરાવતા હશે , પરંતુ " આ તે છે" જે છે વાસ્તવિક, " આ તે છે" જે મનના અભિમાન પર બાંધવામાં આવશે નહીં, એક " આ તે છે" જે આધ્યાત્મિકતા અથવા તમારી આધ્યાત્મિકતાના ગૌરવ પર બાંધવામાં આવશે નહીં, "તે તે છે" જે વ્યક્તિગત હશે તમારા માટે, " તે તે છે" જે તમે મળો છો તે બધા પુરુષો સાથે સાર્વત્રિક હશે અને તેમના " તે તે છે" માં કોણ હશે , તે ક્ષણે તમે જાણશો કે તે છે !) (જો આ ફકરાનું ભાષાંતર કરી શકાતું નથી તો તેને દૂર કરો) .

اردو

برنارڈ ڈی مونٹریال کے ذریعہ 2 کانفرنسوں کا نقل اور ترجمہ۔



عارضی فارمیٹ

اس کتاب کا ترجمہ مصنوعی ذہانت سے کیا گیا ہے لیکن کسی شخص سے اس کی تصدیق نہیں کی گئی- اگر آپ اس کتاب کا جائزہ لے کر اپنا حصہ ڈالنا چاہتے ہیں تو براہ کرم ہم سے رابطہ کریں-

ہماری ویب سائٹ کا مرکزی صفحہ: http://diffusion-bdm-intl.com/

ہمارا ای میل: contact@diffusion-bdm-intl.com

مواد

پوری Diffusion BdM Intl ٹیم کی طرف سے مبارکباد-

پیئر ریوپل 18 اپریل 2023

باب 1

CP036 شناخت

دوسروں کے مقابلے میں خود کی شناخت ایک عالمگیر انسانی مسئلہ ہے- اور یہ مسئلہ اس وقت بڑھتا ہے جب انسان جدید معاشرے جیسے پیچیدہ معاشرے میں رہتا ہے- شناخت کا مسئلہ انا کی زندگی کا دکھ ہے، وہ مصائب جو اس عمر سے اس کا پیچھا کرتا ہے جب وہ خود کو دوسروں کے مقابلے میں دیکھتا ہے- لیکن شناخت کا مسئلہ ایک غلط مسئلہ ہے جو اس حقیقت سے پیدا ہوتا ہے کہ انا، اپنے آپ کو اپنے مطابق سمجھنے کے بجائے ، یعنی اپنے پیمانہ کے مطابق، اپنے آپ کو دوسرے انا کے مقابلے میں مسابقتی محسوس کرنے کی کوشش کرتی ہے - , اس کے طور پر ایک ہی مسئلہ سے.

جب کہ انا اپنے پھولوں کی تعریف کرنے کے لیے اپنی باڑ سے آگے دوسرے کے کھیت کی طرف دیکھتی ہے، وہ یہ نہیں دیکھ پاتی ہے کہ دوسرا بھی اپنے ساتھ ایسا ہی کر رہا ہے- آج انسان میں شناخت یا شناخت کا بحران اس قدر شدید ہے کہ اس سے خود اعتمادی ختم ہو جاتی ہے جو وقت کے ساتھ ساتھ ذاتی شعور کے مکمل نقصان میں تبدیل ہو جاتی ہے- خطرناک صورتحال، خاص طور پر اگر انا پہلے ہی کردار میں کمزور ہو اور عدم تحفظ کا شکار ہو-

شناخت کا مسئلہ، یعنی خود کو اپنے جیسا بلند نہ دیکھنے کی انا کی یہ خصوصیت، درحقیقت تخلیقیت کا مسئلہ ہے- لیکن جب انا تخلیقی ہوتی ہے تو شناخت کا مسئلہ اس طرح ختم نہیں ہوتا، کیونکہ انا اس وقت تک اپنے آپ سے مکمل طور پر مطمئن نہیں ہوتی جب تک کہ اسے اپنے ادنیٰ نفس کے وہم کا ادراک نہ ہو جائے- تاکہ ایک ادنیٰ درجہ کی انا کو ایک اعلیٰ درجہ کی انا کی طرح شناخت کا مسئلہ درپیش ہو، کیونکہ اس کے اور دوسرے کے درمیان موازنہ صرف پیمانے میں بدلے گا، لیکن ہمیشہ موجود رہے گا، کیونکہ انا ہمیشہ بہتری کی طاقت میں ہوتی ہے- اور اس بہتری کی کوئی انتہا نہیں ہے جو وہ اپنے لیے چاہتا ہے-

لیکن خود کی بہتری ایک ایسا کمبل ہے جس کے نیچے انا چھپ جاتی ہے تاکہ اپنے آپ کو خوشی سے جینے کی کوئی وجہ فراہم کی جا سکے- لیکن کیا وہ نہیں جانتا کہ تمام بہتری پہلے ہی خواہش کے جسم سے پیدا ہوتی ہے؟

شناخت کا مسئلہ انسان میں حقیقی ذہانت کے شعور کی عدم موجودگی سے پیدا ہوتا ہے- جب تک انسان اپنی عقل سے زندہ رہتا ہے، صرف حسی تجربے سے اس کی رائے کی تائید ہوتی ہے، اس کے لیے یہ مشکل ہوتا ہے کہ وہ اپنے خیال میں جو کچھ جانتا ہے یا سمجھتا ہے اسے غیر متعین ذہانت کی مطلق قدر کے ذریعے بدلنا مشکل ہے-

جب تک انسان زندگی میں اپنے آپ کو ظاہر کرنے کی خواہش رکھتا ہے، اپنی شناخت بنانے کے لیے، وہ اس خواہش کا شکار رہتا ہے- اگر وہ اپنی خواہش کو پورا کرنے میں کامیاب ہو جاتا ہے تو دوسرا اسے پیچھے دھکیل دے گا، وغیرہ- یہی وجہ ہے کہ انسان میں کسی بھی قسم کی شکست اس کے لیے شناخت کا بحران پیدا کرتی ہے، چاہے اس کی حیثیت کچھ بھی ہو، کیونکہ شناخت کا مسئلہ کامیابی کا مسئلہ نہیں، بلکہ ضمیر کا مسئلہ ہے، یعنی حقیقی ذہانت کا مسئلہ- .

وہ آدمی جو اپنی زندگی کے دوران یہ جان لیتا ہے کہ حقیقی ذہانت عقل پر غالب آ جاتی ہے، وہ پہلے ہی شناخت کے مسئلے سے کم شکار ہونا شروع کر دیتا ہے، حالانکہ وہ اب بھی حقیقی تخلیقی صلاحیتوں کی عدم موجودگی کا شکار ہو سکتا ہے، جتنا وہ محسوس کرتا ہے کہ وہ ظاہر کر سکتا ہے- جب اس کی شناخت اس کے مطابق زندگی گزارنے کے طریقے سے مطابقت رکھتی ہے تب ہی اسے احساس ہوگا کہ تخلیقی صلاحیتیں بے شمار شکلیں لے سکتی ہیں، اور یہ کہ ہر انسان کے پاس تخلیقی صلاحیتوں کی ایک شکل ہوتی ہے جو اس کے مطابق ہوتی ہے- اور اس شکل سے وہ اپنے مطلوبہ جسم اور اپنی تخلیقی ذہانت کے لحاظ سے کامل ہم آہنگی میں رہ سکتا ہے-

تخلیقی ہونے کا مطلب دنیا کو بدلنا نہیں ہے، بلکہ اپنے لیے کامل طریقے سے کرنا ہے، تاکہ اندرونی دنیا کو بیرونی بنایا جائے- دنیا اس طرح بدلتی ہے: ہمیشہ اندر سے باہر سے، کبھی مخالف سمت میں نہیں- اوور مائنڈ کو شناخت کے مسئلے کا احساس ہونے لگتا ہے- وہ دیکھتا ہے کہ جو ہے وہ اب بھی کسی حد تک وہی ہے جو وہ تھا- لیکن وہ یہ بھی دیکھتا ہے کہ جیسے جیسے اس کے جسم بدلتے ہیں، اس کا شعور بڑھتا جاتا ہے اور شناخت کا مسئلہ آہستہ آہستہ غائب ہو جاتا ہے، اس سطح پر جو پہلے لاشعوری انا تھی-

اوور مائنڈ ہونے میں شناخت کے مسئلے کا بتدریج خاتمہ بالآخر اسے اپنی زندگی جینے کی اجازت دیتا ہے جیسا کہ وہ واقعی اسے دیکھتا ہے، اور اپنے بارے میں بہتر سے بہتر ہوتا ہے- انسان میں ایسی کوئی چیز نہیں ہے جو شناخت کی تکلیف سے زیادہ مشکل ہو- کیونکہ وہ درحقیقت وہم کی شکلوں کا شکار ہے، یعنی اس وجہ سے کہ وہ شروع سے تخلیق کرتا ہے، قطعی طور پر اس حقیقت کی وجہ سے کہ وہ ذہین نہیں ہے، یعنی اپنے اندر موجود تخلیقی ذہانت سے آگاہ ہے-

شناخت کا ایک رخ بعض صورتوں میں شرم، بعض میں شرمندگی، اکثریت میں عدم تحفظ ہے- اچھے اخلاق کا آدمی کیوں شرم سے جیتا رہے گا جب اس کے ذہن میں صرف سماجی عکاسی ہی سماجی سوچ کے جال میں قید ہو؟ اسی شرمندگی کا بھی سچ ہے جو انا کی نااہلی سے فوراً چھٹکارا حاصل نہیں کر پاتی جو دوسرے سوچ رہے ہوں گے- اگر شرمندہ انا اس سے چھٹکارا حاصل کر لے جو دوسرے سوچ سکتے ہیں، تو اس کی شرمندگی ختم ہو جائے گی اور وہ اپنی اصل شناخت تک زیادہ تیزی سے رسائی حاصل کر سکے گا، یعنی یہ ذہنی کیفیت جو انسان کو اپنے آپ کو ہمیشہ اپنے دن کی روشنی میں دیکھتی ہے-

شناخت کا مسئلہ انسان میں مرکزیت کی عدم موجودگی سے پیدا ہوتا ہے- اور یہ عدم موجودگی عقل کی تسخیر قوت کو کم کر دیتی ہے، جو انسان کو اپنی عقل کا غلام بنا دیتی ہے، اپنے اس حصے کا جو نہ ذہن کے قوانین کو جانتا ہے اور نہ ہی دماغ کے میکانزم کو- اس لیے انسان، اپنے تجربے پر چھوڑ دیتا ہے، اس کی ذہانت میں روشنی کی کمی ہوتی ہے اور انسان کی فطرت کے بارے میں دوسروں کی رائے کو قبول کرنے پر مجبور ہوتا ہے-

اگر انسان اپنے بارے میں سوچتا ہے، تو یہ کیسے ممکن ہے کہ دوسرا انسان اسے روشن کر سکے، اگر یہ دوسرا انسان اس کے جیسا ہی حال ہو؟ لیکن انسان کو اس کا احساس نہیں ہوتا، اور اس کی شناخت کا مسئلہ واقعات کے ذریعے انا کے خلاف ڈالے جانے والے دباؤ کے مطابق بگڑتا چلا جاتا ہے-

ذہن میں موجود انا بلاشبہ اس کے سوچنے کے انداز میں پھنسی ہوئی ہے جو اس کی حقیقی ذہانت سے مطابقت نہیں رکھتی- اور سوچنے کا یہ طریقہ اس کی ذہانت کی اصلیت سے متصادم ہے، کیونکہ اگر وہ اپنی ذہانت کی حقیقت کو اپنے وجدان کے ذریعے سمجھ لیتا، مثال کے طور پر، وہ سب سے پہلے اس کی حقیقت کا انکار کرے گا، کیونکہ عقل کو وجدان پر یقین نہیں ہے- وہ اسے اپنے ایک غیر معقول حصے کے طور پر دیکھتا ہے- اور چونکہ عقل عقلی ہے یا قیاس عقلی ہے اس لیے اس کے خلاف کوئی بھی چیز ذہانت کو تسلیم کرنے کے لائق نہیں- اور پھر بھی، وجدان درحقیقت حقیقی ذہانت کا مظہر ہے، لیکن یہ مظہر اب بھی انا کے لیے بہت کمزور ہے کہ وہ اپنی اہمیت اور ذہانت کو سمجھ نہیں پاتا- اس کے بعد وہ اپنے استدلال میں پیچھے ہٹ جاتا ہے اور ذہن کے لطیف میکانزم کو دریافت کرنے کا موقع کھو دیتا ہے جو اس کی شناخت کے مسئلے پر روشنی ڈال سکتے ہیں-

لیکن شناخت کا مسئلہ انسان کے ساتھ اس وقت تک رہے گا جب تک کہ عقل نے اس کو جانے نہ دیا ہو اور انا نے اندرونی طور پر اپنی بات نہ سنی ہو- اگر انا اپنے اندر موجود حقیقی ذہانت کی نوعیت اور شکل سے حساس ہو جائے تو وہ آہستہ آہستہ اس ذہانت میں اپنا گھر بنا لیتی ہے- وقت گزرنے کے ساتھ، وہ وہاں زیادہ سے زیادہ باقاعدگی سے جاتا ہے، اور اس کی شناخت کا مسئلہ دور ہوتا جاتا ہے، کیونکہ اسے احساس ہوتا ہے کہ اس نے اپنے بارے میں جو کچھ سوچا تھا وہ اس کی حقیقی ذہانت کا محض ایک نفسیاتی اور ذہنی بگاڑ تھا، جو اس کے استدلال کی اونچی دیواروں سے آگے جانے کے قابل نہیں تھا-

ایک پیچیدہ معاشرے میں، جیسا کہ ہم جانتے ہیں، صرف انا کی اندرونی طاقت، اس کی حقیقی ذہانت، اسے رائے کی چھال سے اوپر اٹھا کر اس کی حقیقی شناخت کی چٹان پر کھڑا کر سکتی ہے- اور جتنا زیادہ معاشرہ بکھرتا جائے گا، اس کی روایتی اقدار اتنی ہی زوال پذیر ہوں گی، انا اتنی ہی تباہی کی طرف گامزن ہو رہی ہے، کیونکہ اس کے پاس جدید کے بڑھتے ہوئے حیران کن رجحان کے سامنے کھڑے ہونے کے لیے زندگی رسمی سماجی سہاروں کی ضرورت نہیں ہے-

لیکن انا ہمیشہ ان لوگوں کی بات سننے کے لیے تیار نہیں ہوتی جو اسے اپنے اسرار کو سمجھنے کے لیے ضروری کلیدیں دے سکیں- کیونکہ اس کی نفسیاتی خرابی اسے پہلے سے ہی ہر اس چیز پر سوال کرنے کی طرف لے جاتی ہے جو اس کے موضوعی سوچ کے مطابق نہیں ہے- یہی وجہ ہے کہ انا کو اس کے مزید دیکھنے سے انکار کے لیے بہت زیادہ قصوروار نہیں ٹھہرایا جا سکتا، لیکن اسے یہ احساس دلایا جا سکتا ہے کہ اگرچہ وہ آج مزید نہیں دیکھ سکتا، لیکن کل اس کے اندر توانائی کے داخل ہونے کے حساب سے اس کا نقطہ نظر وسیع ہو جائے گا-

کیونکہ درحقیقت یہ انا نہیں ہے جو اپنی کوششوں سے اپنی شناخت کی دیوار پر قابو پاتی ہے بلکہ وہ روح ہے جو اسے مصائب کے ذریعے لاتی ہے، یعنی اپنی روشنی کے داخل ہونے سے، اندراج کرنا، عقل سے باہر، کمپن- ذہانت کے. اور یہ کمپن جھٹکا اختتام کا آغاز بن جاتا ہے-

انا ہیں جو حقیقی کی طرف کھلتے ہیں، کیونکہ ایک قسم کی عاجزی ان کو پہلے ہی اپنی روشنی میں پیش کرتی ہے- دوسری طرف، اس روشنی، اس باریک دھاگے سے گزرنے کے لیے بہت فخریہ لوگ ہیں- اور یہ وہ انا ہے جو بڑے موڑ، بڑے دھچکے کا سب سے زیادہ شکار ہوتے ہیں جو انہیں دستک دیتے ہیں اور انہیں مزید حقیقت پسندانہ بناتے ہیں-

شناخت کے بحران کی نشاندہی انسان کی ناپختگی سے ہوتی ہے- حقیقی شناخت حقیقی پختگی کی نشوونما کو ظاہر کرتی ہے-

روح اپنے اعمال میں انا سے آزاد ہے، اور بعد میں اچھا کھیل ہے، جب تک کہ وہ اپنے آپ کو گھر میں طاقت کا احساس نہ دلائے- یہ وہ لمحہ ہے جو انا کو معلوم نہیں ہے- اور جب وہ ظاہر ہوتا ہے، تو اسے احساس ہوتا ہے کہ اس کی باطل، اس کا غرور، وہ اپنے آپ کے ساتھ، اپنے خیالات کے ساتھ، دباؤ میں انڈے کی طرح پھٹ جاتا ہے-

روح کی تکالیف کی اپنی وجوہات ہوتی ہیں جنہیں انا پہلے تو سمجھ نہیں پاتی، لیکن وہ جینے میں بھی مدد نہیں کر سکتی- یہ روح ہے جو کام کرتی ہے- اس کے لیے ایک مرحلے سے دوسرے مرحلے میں جانے کا وقت ہے- شناخت کا مسئلہ، جس کا اس نے آغاز میں تجربہ کیا تھا، خود کو نئے سرے سے بدلتا ہے، اور اس کا غرور بچوں کے کھیل کی طرح ٹوٹ جاتا ہے- خواہ انا زیادہ ہو یا کم، یہ سب عدم تحفظ پر اتر آتا ہے- اکثر کسی کا سامنا نام نہاد " ٹھوس"، "مضبوط" انا کا سامنا کرنا پڑتا ہے ، جن کے لیے حقیقت خالص فنتاسی ہے- یہی انا ہیں جو اپنی شناخت پر سب سے زیادہ اثر ڈالتے ہیں، جب روح دماغی اور جذباتی طور پر متحرک ہو جاتی ہے، زندگی کے واقعات کے دباؤ میں کہ انا مزید کنٹرول نہیں کر سکتی-

یہ وہیں ہے، ان مشکل تجربات کے دوران، انا خود کو اپنی کمزوری کی حقیقی روشنی میں دیکھنا شروع کر دیتی ہے- وہیں وہ دیکھتا ہے کہ اس کی جھوٹی شناخت کی حفاظت، جہاں اس کی عقل کا غرور غالب تھا، روشنی کے ہلنے والے دباؤ میں پھٹ جاتا ہے- پھر اس کے بارے میں کہا جاتا ہے کہ وہ بدل رہا ہے، کہ اب وہ پہلے جیسا نہیں رہا یا وہ تکلیف میں ہے- اور یہ صرف آغاز ہے کیونکہ جب روح جھوٹی شناخت کی دیواریں پھٹنے لگتی ہے تو وہ اپنا کام نہیں روکتی- کیونکہ وقت آ گیا ہے کہ انسان میں شعور، ذہانت اور سچی مرضی اور محبت کے نزول کا-

انا، جو اپنی جھوٹی شناخت سے مضبوط محسوس کرتی ہے، جب کمپن جھٹکا محسوس ہوتا ہے تو سرکنڈے کی طرح کمزور محسوس ہوتا ہے- اور یہ صرف بعد میں ہے کہ وہ اپنی قوتیں، روح کی قوتیں، نہ کہ اپنے خواہش کے جسم کی جھوٹی طاقت کو دوبارہ حاصل کرتا ہے، اس شکل پر جو جذبات اور نچلے ذہن کی پرورش کرتی ہے-

انسان میں شناخت کا بحران روح کی روشنی کے لیے انا کی مزاحمت کے مساوی ہے- اس خط و کتابت میں انا کی زندگی میں اس مزاحمت کے متناسب مصائب شامل ہیں- اور تمام مزاحمت رجسٹرڈ ہے، حالانکہ اسے نفسیاتی یا علامتی یا فلسفیانہ طور پر انا کے ذریعے سمجھا جاتا ہے- کیونکہ روح کے لیے انسان میں ہر چیز توانائی ہے لیکن انسان کے لیے ہر چیز علامت ہے- یہی وجہ ہے کہ انسان کو دیکھنا بہت مشکل ہوتا ہے، کیونکہ وہ جو کچھ دیکھے گا، ان شکلوں سے آزاد ہونے کے بعد، کمپن کے ذریعے ہو گا، شکل کی علامت کے ذریعے نہیں- اسی لیے کہا جاتا ہے کہ اصلیت کو شکل سے نہیں سمجھا جاتا بلکہ کمپن سے جانا جاتا ہے جو خود کو ظاہر کرنے کے لیے شکل کو جنم دیتا اور تخلیق کرتا ہے-

شناخت کا مسئلہ ہمیشہ علامتوں کے اضافی ہونے کا مطالبہ کرتا ہے، یعنی انسان میں موضوعی سوچ کی شکلوں کا- یہ فاضل، کسی بھی وقت، فکری شکل کی علامت کے ذریعے انا سے رابطہ کرنے کی روح کی کوشش کے ساتھ موافق ہے، کیونکہ ذہن کے اندر اسے انا تک پہنچانے کا یہی واحد ذریعہ ہے-

انا کو گہری وجوہات کو سمجھے بغیر احساس ہوتا ہے کہ وہ اپنے آپ کو اپنے آپ کے سامنے رکھنا چاہتا ہے- لیکن چونکہ وہ ابھی تک اپنے خیالات، اپنے جذبات کا قیدی ہے، وہ خود کو اپنی تحریک، اپنی تحریک میں یقین رکھتا ہے! کہنے کا مطلب یہ ہے کہ اس کا ماننا ہے کہ یہ تحقیقی عمل صرف اسی سے پھوٹتا ہے- اور یہ اس کی اچیلز ہیل ہے، کیونکہ انا صحیح اور غلط کے وہم میں ہے، آزاد مرضی کے وہم میں ہے-
جب روح کی توانائی گھس جاتی ہے اور جھوٹی شناخت کی رکاوٹ کو توڑ دیتی ہے، تو انا کو یہ احساس ہوتا ہے کہ اب اس کے لیے صحیح ہونا نہیں ہے، بلکہ اس کی حقیقی ذہانت تک رسائی ہے- پھر وہ سمجھنے لگتا ہے- اور جو کچھ وہ سمجھتا ہے وہ ان لوگوں کو نہیں سمجھتا جو ایک ہی ذہانت میں نہیں ہیں، چاہے ان کی اچھی مرضی ہو- کیونکہ ہر چیز علامت سے باہر ہے، ہر چیز **کمپن ہے** -

شناخت کا مسئلہ اس وقت ناقابل فہم ہے جب انا اور روح ایک دوسرے کے ساتھ مطابقت پیدا کر لیتے ہیں، کیونکہ انا اب حقیقت کے " " کو اپنی طرف سے نہیں کھینچتی ہے، جب کہ روح دوسری طرف کام کرتی ہے- دونوں کے درمیان خط و کتابت ہے اور شخصیت استفادہ کرنے والی ہے- کیونکہ شخصیت ہمیشہ روح اور انا کے درمیان خلیج کا شکار رہتی ہے-

جب تک انسان میں شناخت کا مسئلہ موجود ہے وہ خوش نہیں رہ سکتا- کیونکہ اس کی زندگی میں تقسیم ہے، چاہے سطح پر اس کی مادی زندگی اچھی طرح چل رہی ہو- یہ صرف اپنے آپ کے اتحاد کے تناسب میں واقعی اچھی طرح سے جا سکتا ہے.

جدید انسان میں شناخت کا بحران صرف ان لوگوں کو فائدہ مند طور پر متاثر کرتا ہے جو پہلے ہی کافی دھچکے کا شکار ہو چکے ہیں تاکہ ان میں توازن کی بڑی خواہش پیدا ہو سکے- لیکن توازن کی یہ خواہش تب ہی پوری طرح سے پوری ہو سکتی ہے جب انا روح کی عمدہ توانائی کو استعمال کرنے کے لیے اذیت کے اپنے آلات کو ایک طرف رکھ دے- انسانی زندگی کے دائرے میں جہاں عظیم روحانیت ہے، شناخت کا بحران اتنا ہی شدید ہوسکتا ہے، اگر نہیں تو اس سے زیادہ، جہاں انسان کو اس باطنی چیز کے لیے انا کی اس عظیم حساسیت کا سامنا نہیں کرنا پڑتا ہے جو اسے روحانیت کی طرف دھکیلتی ہے جو کہ تیزی سے بڑھ رہی ہے- زیادہ سے زیادہ، زیادہ سے زیادہ کی تلاش میں اور بالآخر زیادہ سے زیادہ نامکمل-

جو لوگ انسانیت کے اس زمرے کے ہیں انہیں یہ دیکھنا ہوگا کہ تمام شکلیں، حتیٰ کہ اعلیٰ ترین، سب سے خوبصورت، روح کے حقیقی چہرے پر پردہ ڈالیں، کیونکہ روح انا کے جہاز سے نہیں ہے- یہ لامحدود طور پر دیکھتا ہے، اور جب انا حد سے زیادہ شکل سے منسلک ہو جاتی ہے، یہاں تک کہ روحانی شکل بھی، یہ کائناتی توانائی میں مداخلت کرتی ہے جو روح کے اندر سے گزرتی ہے اور روح کے تمام ادنیٰ اصولوں کی کمپن کی شرح کو بڑھا دیتی ہے-'انسان، تاکہ وہ زندگی کا مالک بن سکتا ہے- جب سپرمینٹل (اعلیٰ ذہنی) انسان زندگی کا مالک ہوتا ہے، تو اسے روحانی طور پر روح کے جہاز کی طرف متوجہ ہونے کی ضرورت نہیں رہتی، کیونکہ یہ روح، اس کی توانائی ہے، جو اس کی طرف اترتی ہے، اور اس کو اپنی روشنی کی طاقت منتقل کرتی ہے- .

انسان کی روحانی شناخت روح کی توانائی کی شکل کے ذریعے اس کے اندر موجود ہے- لیکن اس توانائی میں تبدیلی کی طاقت نہیں ہے، حالانکہ یہ شخصیت پر تبدیلی کی طاقت رکھتی ہے-

لیکن صرف شخصیت کی تبدیلی کافی نہیں ہے، کیونکہ یہ انسان کا آخری پہلو ہے- اور جب تک انا بھی روح کے ساتھ متحد نہیں ہوتی ہے، روحانی شخصیت انسان کو آسانی سے اس کے اخلاق کی تیزی سے تبدیلی کی طرف لے جا سکتی ہے، اس حد تک کہ دماغ اور روح میں توازن کی کمی اسے اس طرف لے جا سکتی ہے- روحانیت، مذہبی جنونیت کا شدید بحران-

اس طرح شدید روحانی آدمی بھی اپنے آپ کو اور معاشرے کو نقصان پہنچا سکتا ہے- کیونکہ جنون ایک روحانی بیماری ہے، اور جو لوگ اس میں مبتلا ہیں، وہ اپنی روحانی شکل کے خاص استیصال کی وجہ سے آسانی سے دوسروں میں ایک ایسی کشش پیدا کر سکتے ہیں کہ وہ انہیں عظیم مومن بنا سکیں، یعنی نئے غلاموں کو شکل سے کہیں- جنونیت کے ذریعہ اس پیڈسٹل پر اٹھایا گیا جسے صرف روحانی طور پر بیمار ہی رکھ سکتا ہے، اگر اسے ان لوگوں کے فرمانبردار عقیدے سے مدد ملتی ہے جو اس کی طرح جاہل ہیں، لیکن بیماری کی اس شکل سے زیادہ بے حس ہیں-

زیادہ سے زیادہ مرد، جنونی طور پر روحانیت اختیار کیے بغیر، اپنی روحانیت سے بہت زیادہ متاثر ہو جاتے ہیں اور اس کی حدود کو نہیں جانتے، یعنی شکل کا وہم۔ جلد یا بدیر وہ ماضی میں جھانکتے ہیں اور سمجھتے ہیں کہ وہ اپنی روحانیت کے وہم کا شکار ہو چکے ہیں۔ تو وہ اپنے آپ کو ایک اور روحانی شکل میں پھینک دیتے ہیں، اور یہ سرکس کئی سالوں تک جاری رہ سکتا ہے، اس دن تک جب، وہم سے بیزار ہو کر، وہ ہمیشہ کے لیے اس سے باہر آجاتے ہیں، اور یہ محسوس کرتے ہیں کہ شعور شکل سے باہر ہے۔ ان کے پاس شکل کی حدود سے باہر جانے اور آخر میں اعلی دماغ کے عظیم قوانین کو دریافت کرنے کا موقع ہے.

روحانی شناخت کا بحران اب ان کے لیے اس وقت ممکن نہیں۔ کیونکہ وہ اپنے تجربے سے جانتے ہیں کہ ہر چیز انا کے خلاف روح کے تجربے کی خدمت کرتی ہے، اس دن تک جب انا تجربے کی ضرورت کو صرف اپنے اندر موجود اعلیٰ شعور (اعلیٰ دماغ) کو جاننے کے لیے چھوڑ دیتی ہے۔

روحانی شناخت کا بحران دور جدید کا بحران بنتا جا رہا ہے۔ کیونکہ انسان اب صرف ٹیکنالوجی اور سائنس پر نہیں رہ سکتا۔ اسے اپنے قریب کسی اور چیز کی ضرورت ہے، اور سائنس اسے نہیں دے سکتی۔ لیکن نہ ہی آرتھوڈوکس مذہب کی پرانی شکل تھی۔ اس لیے وہ اپنے آپ کو بے شمار روحانی یا باطنی روحانی مہم جوئیوں میں ڈال دیتا ہے، اس پختہ ارادے کے ساتھ کہ وہ کیا ڈھونڈ رہا ہے، یا جس چیز کو وہ ڈھونڈنا چاہتا ہے، اور یہ کہ وہ قطعی طور پر نہیں جانتا ہے۔ لہذا، اس کا تجربہ اسے تمام فرقوں، تمام فلسفیانہ یا باطنی مکاتب فکر کی قید میں لے آتا ہے، اور یہاں پھر اسے پتہ چلتا ہے، اگر وہ اوسط سے زیادہ ذہین ہے، کہ اس کی حدود ہیں جہاں وہ جوابات تلاش کرنے پر یقین رکھتا تھا۔

وہ آخر کار خود کو تنہا پاتا ہے، اور اس کی روحانی شناخت کا بحران زیادہ سے زیادہ ناقابل برداشت ہوتا جاتا ہے۔ اس دن تک جب اسے معلوم ہو جائے کہ اس میں سب کچھ ذہانت، ارادہ اور محبت ہے، لیکن یہ کہ وہ ابھی تک ان کے قوانین کو اتنا نہیں جانتا ہے کہ وہ تلاش کرنے والے کی آنکھوں میں چھپے اور پردے میں پڑے میکانزم کو دریافت کر سکے۔ اس نے کیا تعجب دیکھا! جب اسے احساس ہوتا ہے کہ وہ اپنے بحران کے دوران جس چیز کی تلاش کر رہا تھا وہ اس کے اندر کی روح کا ایک طریقہ کار تھا جس نے اسے اپنے آپ یعنی اس کی طرف بیدار کرنے کے لیے آگے بڑھایا۔

اور جب یہ مرحلہ آخرکار شروع ہو جاتا ہے، انسان، انسان کی انا، حواس باختہ ہو جاتی ہے اور اپنے اندر موجود اعلیٰ ذہانت (اعلیٰ دماغ) کی نوعیت کو سمجھنا شروع کر دیتی ہے جو بیدار ہوتی ہے، اور اسے ان تمام مردوں کے فریب کو پہچاننے پر مجبور کرتی ہے جو اپنے آپ کو باہر تلاش کرتے ہیں۔ دنیا کے بہترین ارادے، اور جنہوں نے ابھی تک یہ محسوس نہیں کیا کہ یہ سارا عمل روح کے تجربے کا حصہ ہے جو اسے اپنے ساتھ کمپن کے رابطے میں آنے کے لیے تیار کرنے کے لیے انا کا استعمال کرتی ہے۔

انسان کا اب اپنے وجود کی حقیقت سے کوئی واسطہ نہیں ہے۔ اور رابطہ کا یہ نقصان دنیا پر اتنا وسیع ہے کہ یہ زمین پاگلوں سے بھرے جہاز کی نمائندگی کرتی ہے جو نہیں جانتے کہ جہاز کہاں جا رہا ہے۔ ان کی قیادت نادیدہ قوتیں کر رہی ہیں اور کسی کو ان قوتوں کی اصلیت کا اندازہ نہیں ہے اور نہ ہی ان کے ارادوں کا۔ انسان اتنی صدیوں تک غیر مرئی سے الگ رہا کہ حقیقت کا تصور ہی کھو بیٹھا۔ اور شعور کا یہ نقصان ہی وہ وجہ ہے جس کے پیچھے اس کے وجودی مسئلے کی دیوار اٹھتی ہے: شناخت۔ اور ابھی تک حل اس کے بہت قریب ہے، اور ایک ہی وقت میں بہت دور ہے. کاش وہ جانتا ہو کہ وہ کس طرح سننا ہے جو وہ سننا نہیں چاہتا۔

لفظوں کی جنگ اور خیالات کی جنگ اس کے پاس رہ گئی ہے۔ انسان کیا خود کفیل ہو سکتا ہے، اگر اسے یہ احساس نہ ہو کہ اس کا ایک حصہ عظیم ہے، جبکہ دوسرا اس کے حواس سے محدود ہے، اور یہ کہ دونوں اکٹھے ہو سکتے ہیں؟ کاش انسان کو ایک دن یہ احساس ہو جائے کہ اس کے لیے خود سے باہر کوئی بھی اس کے لیے نہیں کر سکتا، اور یہ کہ صرف وہ خود ہی اپنے لیے کر سکتا ہے... لیکن وہ اپنے لیے جینے سے ڈرتا ہے، کیونکہ وہ ڈرتا ہے کہ دوسرے اس کے بارے میں کیا کہیں گے... وہ جتنا غریب ہے!

مرد وہ مخلوق ہیں جو وہم کے خلاف مسلسل جنگ ہارتے ہیں، کیونکہ وہی اسے زندہ اور طاقتور رکھتے ہیں- ہر کوئی اس بات سے ڈرتا ہے کہ ان کو کیا نقصان پہنچتا ہے- ایک حقیقی ڈراؤنا خواب! اور بدترین ابھی آنا ہے! کیونکہ XX ویں صدی کا انسان اپنی طرف ان مخلوقات کو اترتے ہوئے دیکھے گا جو ستاروں کے درمیان چلتے ہیں، اور جو پہلے اس کے لیے دیوتا تھے-

ذاتی شناخت کا مسئلہ سیاروں کے پیمانے پر جاری ہے- چونکہ یہ مسئلہ نچلے ذہن اور اعلیٰ دماغ کے درمیان تعلق کی کمی سے پیدا ہوتا ہے، اس لیے اس کا اثر عالمی سطح پر اور ذاتی سطح پر بھی محسوس ہوتا ہے، کیونکہ صرف اعلیٰ ذہن ہی انسان کو اپنے سیارے کے عظیم اسرار سمجھا سکتا ہے- اس کے قدیم دیوتا جب تک یہ دیوتا قدیم تاریخ کا حصہ ہیں، انسان ان سے پریشان نہیں ہوتا- لیکن جب وہی مخلوق واپس آتی ہے اور خود کو جدید روشنی میں ظاہر کرتی ہے، تو عالمی سطح پر ایک صدمہ گونجتا ہے، اور وہ آدمی جس نے اپنی اصلی شناخت نہیں دریافت کی وہ خود کو اپنی جھوٹی شناخت کے درمیان پھنسا پاتا ہے - اور وہ کیا سوچتی ہے اور کیا مانتی ہے - اور چکراتی رجحان.

اگر اس کا ذہن تجربے کے لیے کھلا ہو اور اسے اپنے اندر حقیقی ذہانت حاصل ہو، کسی سیارے کے لیے سب سے زیادہ پریشان کن مظاہر میں سے ایک کے بارے میں ضروری معلومات، جسے وہ نہیں جانتا اور نہ جانتا ہے، انسان کو سیاروں کی شناخت کے بحران کا سامنا نہیں ہوتا، کیونکہ اس کے پاس پہلے ہی اپنے اندر ذاتی شناخت کے بحران کو حل کر لیا ہے-

چونکہ انسانیت تاریخ اور زندگی کے ایک اہم موڑ کی طرف تیزی سے آگے بڑھ رہی ہے، انفرادیت، یعنی انسان اور کائنات کے درمیان تیزی سے کامل تعلق قائم کرنا ضروری ہے کیونکہ یہ حقیقی انفرادیت سے ہی وہ کمپن ہے جو انسان میں پائی جاتی ہے- اس نے اپنی اصلی شناخت دریافت کر لی ہے- اور جب تک اس حقیقی شناخت کو مستحکم نہیں کیا جاتا، انفرادیت مکمل طور پر پایہ تکمیل تک نہیں پہنچتی، اور کوئی یہ نہیں کہہ سکتا کہ انسان " بالغ" ہے ، یعنی کسی بھی ذاتی یا عالمی واقعے کا سامنا کیے بغیر پریشان ہوئے، کیونکہ وہ پہلے سے ہی جانتا ہے- اور وہ اس کی وجہ جانتا ہے-

جب ہم عام طور پر شناخت کے بحران کے بارے میں بات کرتے ہیں، تو ہم اس کے بارے میں ایک نفسیاتی انداز میں بات کر رہے ہیں، اس معنی میں کہ ہم انسان اور معاشرے کے درمیان تعلق کو بیان کرنے کی کوشش کر رہے ہیں- لیکن شناخت کا بحران اس سے کہیں زیادہ گہرا ہے- اب یہ سماجی آدمی نہیں ہے جو پیمائش کرنے والی چھڑی بن جاتا ہے، وہ معمول جو ہمیں حاصل کرنا چاہیے- اس کے برعکس، نارملٹی کو منتقل کیا جانا چاہیے، یعنی خود کو بحال کرنا-

جب انسان کو یہ احساس ہونے لگتا ہے کہ اس کی اصل شناخت قوسین میں عام آدمی کی عام شناخت سے اوپر ہے تو اسے دو چیزوں کا احساس ہوتا ہے- سب سے پہلے، یہ کہ جو چیز عام آدمی کو پریشان کرتی ہے وہ اب اسے پریشان نہیں کرتا- اور یہ کہ جو کچھ بھی ایک غیر معمولی سیارے کو جھٹکا دیتا ہے، قوسین کے لحاظ سے، عام ہے- اس کے بعد حقیقی شناخت کا واقعہ، اس نقطہ نظر سے دیکھا جاتا ہے، زیادہ سے زیادہ اہم ہوتا جاتا ہے، کیونکہ یہ طے کرتا ہے کہ کون سا انسان نارمل یا بے ہوش انسان کی عام کمزوریوں پر قابو پا سکتا ہے، اور مزید یہ کہ یہ طے کرتا ہے کہ جو آدمی نہیں کرتا وہ زیادہ نارمل ہے- کہنے کا مطلب یہ ہے کہ بے ہوش اور نسبتاً متوازن انسان کی حد تک - کسی سیارے کی ترتیب کے دباؤ کو سہارا دے سکتا ہے جس سے ایک عام وجود کو پریشان کرنے اور اس ثقافت کے خاتمے کا خطرہ ہے جو ایسے انسان کو جنم دیتا ہے-

ایک ایسا آدمی جس نے اپنی اصل شناخت دریافت کر لی ہے وہ ہر قسم کے نفسیاتی تجربات سے بالاتر ہے جو ایک ایسے آدمی کو پریشان کرنے کا خطرہ لاحق ہے جو بالکل سادہ طور پر اس کی ثقافت کی پیداوار ہے، اور جو صرف اپنی ثقافت کی اقدار کے مطابق زندگی گزارتا ہے- کیونکہ درحقیقت ثقافت ایک بہت ہی پتلا اور بہت نازک کینوس ہوتا ہے جب بیرونی واقعات اسے پریشان کرنے کے لیے آتے ہیں، یعنی اسے کسی ایسی حقیقت کے حوالے سے نئے سرے سے بیان کرنا جس کا اسے علم نہیں، یا یہ کہ وہ بالکل بے خبر ہے- یہ غیر حل شدہ شناخت کے رجحان کے انسان میں خطرہ ہے-

کیونکہ اگر وہ اپنی اصل شناخت کو دریافت نہیں کرتا ہے، تو وہ جذباتی اور ذہنی طور پر سماجی نفسیات کا غلام ہو جائے گا اور جب سائیکل کے اختتامی واقعات اس کی نشوونما کے معمول میں خلل ڈالتے ہیں تو اس کے فطری ردعمل- یہاں یہ ہے کہ انسان کو سماجی اور انفرادی ردعمل سے آزاد ہونا چاہیے، تاکہ تجربے کو آفاقی تفہیم کے انداز کے مطابق گزارنے کے قابل ہو- صرف حقیقی شناخت ہی حقیقی انسان اور حقیقی ذہانت سے مطابقت رکھتی ہے- صرف حقیقی شناخت ہی بغیر کسی مشکل کے کائناتی واقعات کی ترجمانی کر سکتی ہے، ایک ذہانت کے مطابق جو انسان کے محدود جذبات سے الگ ہے-

انسان میں شناخت کے بحران کا مسئلہ ایک سادہ نفسیاتی مسئلہ سے کہیں زیادہ زندگی کا مسئلہ ہے- انسان اپنی تلاش میں جن نفسیاتی زمروں کو سمجھنے کی کوشش کرتا ہے وہ اب ان لوگوں کے لیے مناسب نہیں ہے جو اپنی حقیقی شناخت دریافت کرتے ہیں، کیونکہ ان کی زندگی میں اب وہ دلچسپی نہیں رہی جو وہ اپنے آپ سے جدوجہد کرتے وقت رکھتے تھے- اس کی اصل شناخت اس کے وجود کے ہر کونے کو بھرنے کے بعد، وہ اپنے آپ کو ایک ایسے نفس سے دوچار پاتا ہے جو اس کے دماغ کے کسی اور جہت، طول و عرض یا توانائی کے جہاز میں موجود ہے جو تقلید کے ذریعے منسلک نہیں ہے کیونکہ وہ نفسیاتی زمروں سے مکمل طور پر آزاد ہے- حقیقی شناخت کے بغیر بے ہوش انسان کی جذباتی اور ذہنی ساخت-

شناخت کے بحران کا رجحان انسان کے لیے ایک تکلیف ہے، کیونکہ وہ اپنے آپ میں، اپنے ساتھ، جس چیز کی وہ مسلسل تلاش کرتا ہے، بالکل خوش نہیں ہو سکتا- اس کے لیے خوش رہنا ایک ایسا تجربہ ہے جو وہ مستقل طور پر رہنا چاہتا ہے- لیکن اسے اس بات کا احساس نہیں ہے کہ جسے وہ " خوش" کہتا ہے ، آپ کو اپنے بارے میں اچھا محسوس کرنا ہوگا، یعنی باہر کی دنیا اس ہم آہنگی کو خراب کرنے کے بغیر کامل اندرونی ہم آہنگی میں محسوس کرنے کے قابل ہو- اسے یہ احساس نہیں ہوتا کہ زندگی اپنے آپ سے الگ نہیں ہے جب تک کہ اس کے پاس اس پس منظر کو چھیدنے کی اندرونی طاقت نہ ہو جو اسے اس کا رنگ دیتا ہے-

ایک آدمی جس نے اپنی اصل شناخت دریافت کر لی ہے وہ اب وہ زندگی نہیں جیتا جو وہ پہلے گزارتا تھا- رنگ بدل گئے، زندگی اب ایک جیسی نہیں رہی، ہر سطح پر مختلف ہے- کیونکہ یہ دوسری پچھلی زندگی سے اس حقیقت سے ممتاز ہے کہ یہ حقیقی فرد ہے جو اس کے امکانات کا تعین کرتا ہے، بجائے اس کے کہ اس پر اس ثقافت کے ذریعے واضح طور پر مسلط کیا جائے جس میں وہ جڑا ہوا ہے-

اس انسان کی زندگی جس نے اپنی شناخت دریافت کر لی ہے وہ ایک تسلسل کی نمائندگی کرتی ہے جو وقت کے ساتھ ساتھ ختم ہو گیا ہے اور جس کی کوئی حد نہیں ہے، یعنی ختم ہونا- پہلے سے ہی، یہ احساس زندگی کے راستے اور زندگی کے تخلیقی انداز میں مداخلت کرتا ہے. جب تک انسان شناخت کا شکار ہے، جب تک اس کا اپنے اندر موجود حقیقی ذہانت سے کوئی رابطہ نہیں ہے، وہ صرف اپنی ضروریات پوری کر سکتا ہے- جب وہ روشنی میں ہوتا ہے، تو اسے اب خود کو سہارا نہیں دینا پڑتا، کیونکہ وہ پہلے سے ہی کمپن کے ذریعے، اپنی زندگی کے انداز کو جانتا ہے، اور یہ علم اسے اپنی ضروریات کے لیے ضروری تخلیقی توانائی پیدا کرنے کے قابل بناتا ہے- بقا کا نفسیاتی زمرہ صرف ایک تخلیقی توانائی کے لیے جگہ چھوڑتا ہے جو انسان کے تمام وسائل کو بروئے کار لاتی ہے اور انھیں اس کی فلاح و بہبود کے لیے رکھتی ہے-

انسان کو اپنی شناخت کے مسئلے پر قابو پانے کے لیے، اس کے اندر نفسیاتی سطح سے خالص ذہانت کے جہاز تک اقدار کی نقل مکانی ہونی چاہیے- جب کہ نفسیاتی اقدار اس کے بحران میں حصہ ڈالتی ہیں، کیونکہ وہ اس کے حواس تک محدود ہوتی ہیں، اس کی عقل تک جو حسی مواد کی ترجمانی کرتی ہے، اسے ایک پیمائشی چھڑی کی ضرورت ہوتی ہے جو اس کی عقل کی منظوری سے مشروط نہ ہو-

یہیں سے اس کے اندر پہلی بار ایک قسم کی مخالفت پیدا ہوتی ہے جو اس کے اندر گھس جاتی ہے اور جسے وہ اس کی حرکت میں روک نہیں سکتا- جب تحریک شروع کی جاتی ہے تو یہ اس ذہانت کی روشنی ہوتی سے آزاد ہوتی ہے- یہیں سے اقدار کی نقل مکانی محسوس ہونے لگتی ہے chimeras ہے جو اپنی انا اور اس کے جس کے نتیجے میں اندرونی تکلیف ہوتی ہے، جو روشنی کی ذہانت کو اس کے مطابق بنانے کے لیے کافی ہے جو بیدار ہونے والے انسان کو زندہ رہنا چاہیے-

اقدار میں تبدیلی صرف آہستہ آہستہ کی جاتی ہے، تاکہ انا کو ایک خاص توازن برقرار رکھنے کی اجازت دی جا سکے- لیکن وقت کے ساتھ ساتھ، ایک نیا توازن قائم ہوتا ہے اور انا اب عام نہیں رہی، سماجی طور پر- وہ ہوش میں ہے. کہنے کا مطلب یہ ہے کہ وہ شکل اور معمول کے وہم کے ذریعے دیکھتا ہے، اور اپنے لطیف جسموں، ان سطحوں پر جن پر اس کی انفرادیت کی بنیاد رکھی جائے گی، اور اس کی حقیقی شناخت کو بڑھانے کے لیے زیادہ سے زیادہ انفرادیت اختیار کرتا جاتا ہے-

اقدار کی نقل مکانی دراصل اقدار کا انہدام ہے، لیکن ہم اسے "بے گھری" کہتے ہیں، کیونکہ جو تبدیلیاں رونما ہوتی ہیں وہ ایک متحرک قوت سے مطابقت رکھتی ہیں جو دیکھنے کے انداز کو بدل دیتی ہے، تاکہ سوچ کا انداز ذہانت کے مطابق ہو سکے- انسان میں ایک اعلی مرکز کا- جب تک انا نے کمپن کے ذریعہ اس گرنے کا مشاہدہ نہیں کیا ہے، وہ خیالات کے زمرے، علامتوں کے بارے میں بحث کرتا رہتا ہے، جو اس کی غلط شناخت کی دیواریں بناتی ہیں- لیکن جیسے ہی یہ دیواریں کمزور ہونے لگتی ہیں، اقدار کی نقل مکانی ایک گہری تبدیلی کے مساوی ہوتی ہے، جسے انا کے ذریعے معقول نہیں بنایا جا سکتا- اور اس کی طرف سے عقلی ہونے کے قابل نہ ہونے کی وجہ سے وہ آخر کار روشنی سے ٹکرا جاتا ہے، یعنی وہ آخر کار اس سے مستقل اور بڑھتے ہوئے جڑ جاتا ہے-

اس کے بعد، اس کی زندگی سائیکل سے بدل جاتی ہے اور جلد ہی، وہ اب اسے حدود میں نہیں بلکہ صلاحیتوں میں گزارتا ہے- اس کی شناخت کی تعریف اس کے موضوعی خواہشات کے سلسلے میں ہونے کی بجائے اس کے تعلق سے ہوتی جارہی ہے- اور وہ یہ سمجھنے لگتا ہے کہ " حقیقی اور معروضی نفس" کا کیا مطلب ہے -

جب اسے حقیقی اور معروضی نفس کا ادراک ہوتا ہے تو وہ بہت واضح طور پر دیکھتا ہے کہ یہ نفس خود ہے اور اس کے علاوہ اس کے اندر ایک اور چیز ہے جو اسے نظر نہیں آتی، لیکن جسے وہ موجود محسوس کرتا ہے، وہاں کچھ اس کے اندر چلا جاتا ہے- کچھ ذہین، مستقل اور مسلسل موجود ہے- کوئی ایسی چیز جو اپنی آنکھوں سے دیکھتی ہے، اور دنیا کی اس طرح تشریح کرتی ہے جیسا کہ یہ ہے، نہ کہ انا نے اسے پہلے دیکھا تھا-

ہم اب یہ نہیں کہتے کہ یہ آدمی " ذہنی" ہے، ہم کہتے ہیں کہ وہ " سپرمینٹل (اعلیٰ ذہنی)" ہے ، یعنی یہ کہنا ہے کہ اسے جاننے کے لیے مزید سوچنے کی ضرورت نہیں ہے- شناخت کا شکار ہونا اس سے، اس کے تجربے سے اتنا دور ہے کہ جب وہ اپنے ماضی کی طرف پلٹ کر دیکھتا ہے، اور دیکھتا ہے کہ وہ اب کیا ہے اور اس کا موازنہ اس سے کرتا ہے جو وہ تھا-

باب 2

نیچے کی طرف ارتقاء اور اوپر کی طرف ارتقاء
BdM-RG #62A (ترمیم شدہ)

ٹھیک ہے، تو میں انسان کے ارتقاء کو الگ کرتا ہوں، میں اسے نیچے کی طرف منحنی اور اوپر کی طرف کریو دیتا ہوں- ? نیچے کی طرف منحنی خطوط کو میں "انووولیشن" کہتا ہوں، اوپر کی طرف کو میں ارتقاء کہتا ہوں- اور آج انسان ان منحنی خطوط کے میٹنگ پوائنٹ پر ہے- آئیے ایک تاریخ ڈالیں: 1969 اگر آپ چاہتے ہیں- اگر ہم ارتقاء کو دیکھیں - ڈارون کے نقطہ نظر سے نہیں - بلکہ ایک خفیہ نقطہ نظر سے، دوسرے لفظوں میں انسان کی اندرونی تحقیق کے مطابق اور اگر ہم وقت میں پیچھے جائیں تو ہم وہاں بارہ ہزار سال پہلے کے خاتمے کا پتہ لگا سکتے ہیں- ایک عظیم تہذیب جس کو اٹلانٹس کا نام دیا گیا تھا-

لہٰذا یہ وہ دور تھا جب انسان نے شدت سے اس چیز کو تیار کیا جسے astral جسم کہا جاتا ہے جو اس کے شعور کا ایک پہلو ہے، جو اس کے شعور کی ایک لطیف گاڑی ہے، جس کا براہ راست تعلق نفسیاتی جذبات سے ہے- اور پھر اس تہذیب کی تباہی کے بعد آج تک انسان نے اپنے شعور کا ایک اور حصہ تیار کیا جسے مخفی طور پر نچلے دماغی شعور کی نشوونما کہا جا سکتا ہے جس نے عقل کی بہت ترقی یافتہ ترقی کو جنم دیا جسے آج انسان استعمال کر رہا ہے- مادی دنیا کو سمجھنے کے لیے-

اور اس کرہ ارض پر 1969 سے انسان کے شعور میں ایک نیا واقعہ رونما ہوا ہے جسے فیوژن کا نام دیا جا سکتا ہے یا جسے زمین پر موجود بالا شعور (اعلیٰ دماغ) کی بیداری کا نام دیا جا سکتا ہے- اور دنیا میں ایسے مرد بھی ہیں جنہوں نے نچلے دماغ کی سطح پر کام کرنا چھوڑ دیا ہے، اس لیے عقل کی، اور جنہوں نے شعور کی ایک اور تہہ تیار کرنا شروع کر دی ہے جس کو سپرمینٹل شعور (اعلیٰ دماغ) کہا جاتا ہے- اور ان مردوں نے فیکلٹیز تیار کی ہیں جو ترقی کے عمل میں ہیں اور جو وہ بھی ارتقاء کے ایک اور چکر کے ساتھ موافق ہوں گے، جسے کوئی چھٹی جڑ کا نام دے سکتا ہے-

جادوئی طور پر، جب ہم انسان کے ارتقاء کے بارے میں بات کرتے ہیں، تو ہم اٹلانٹس کے بارے میں بات کر رہے ہیں جو اپنی ذیلی نسلوں کے ساتھ چوتھی جڑ کی دوڑ تھی، انڈو-یورپی نسلیں جن کے ہم حصہ ہیں، جو کہ پانچویں جڑ کی دوڑ کا حصہ ہیں- اور اس کی ذیلی نسلیں اور اب دنیا میں ایک نئی روٹ ریس کی شروعات ہے جو اپنی ذیلی نسلیں بھی دے گی- اور آخر کار ساتویں جڑ کی دوڑ ہوگی جو انسان کو ارتقاء کی اس سطح تک پہنچنے کے قابل بنائے گی جو اس کے مادی جسم کے نامیاتی استعمال کی ضرورت نہیں رہے گی- لیکن ہم اس وقت اس سے نمٹ نہیں رہے ہیں، اس لیے ہم چھٹی جڑ کی نسل سے نمٹ رہے ہیں جو کسی جسمانی نسل کی نمائندگی نہیں کرتی، بلکہ جو مستقبل کی انسانیت کے نئے ذہنی شعور کے خالصتاً نفسیاتی پہلو کی نمائندگی کرتی ہے-

ظاہر ہے کہ اس جہاز پر انسان کے ارتقاء کو سمجھنے کے لیے معکوس بھنور کے نقطے سے اس کے حتمی ہونے کی طرف، جو کہ ہمیں موصول ہونے والی معلومات کے مطابق شاید دو ہزار پانچ سو سال ہے، ظاہر ہے کہ انسان گزرنے والا ہے- شعور کے بالکل غیر معمولی مراحل سے گزر کر، یعنی اٹلانٹس کا مین آف دی انڈو-یورپی ریس کے مقابلے میں جتنا محدود تھا، آج کا انسان اتنا ہی محدود ہے اور اگلے انسان کے مقابلے میں محدود رہے گا- زمین پر سپرمینٹل شعور (اعلی دماغ) کا ارتقا، جس کی پیشین گوئی اروبندو نے کی تھی-

سپرمینٹل شعور (اعلیٰ دماغ) کے ارتقاء میں جو چیز دلچسپ ہے وہ یہ ہے کہ: وہ یہ ہے کہ آج جتنے ہم انسان ہیں، عقلی انسان، کارٹیسی انسان، پانچویں نسل کے انتہائی عکاس انسان، جتنا ہمارا رجحان ہے- یہ یقین کرنا کہ ہمارا دماغ ہماری انا سے چلتا ہے، جتنا کل انسان یہ دریافت کرے گا کہ انسانی ذہن انا سے نہیں چلتا، انسانی ذہن اپنی نفسیاتی تعریف میں ہے، انا کا عکاس اظہار، اور یہ کہ اس کا ماخذ ہے- متوازی دنیاوں میں واقع ہے جسے اس وقت "ذہنی دنیا" کہا جا سکتا ہے، لیکن جسے بعد میں "آرکیٹیکچرل دنیا" کہا جائے گا -

دوسرے لفظوں میں، میرا مطلب یہ ہے کہ انسان جتنا زیادہ پریشانی یا صلاحیت یا اپنی سوچ کے ماخذ کو دریافت کرنے کی آزادی حاصل کرے گا، اتنا ہی اس کے لیے متوازی دنیاؤں کے ساتھ ٹیلی سائک مواصلات میں داخل ہونا ممکن ہوگا- بالآخر ارتقاء کے دوراہے پر پہنچنا، عالمی سطح پر، نسل کی عالمگیر سطح پر، زندگی کے اسرار کو فوری طور پر بیان کرنے کے قابل ہونا، مادے کے دائرے میں اور روح کے نجومی دائرے میں- روح کے ذہنی دائرے. دوسرے لفظوں میں، میرا مطلب یہ ہے کہ وہ انسان، ایک ایسے مقام پر پہنچ گیا ہے جہاں آج اس کے لیے ذہنی شعور کی اس حالت تک پہنچنا ممکن ہے جو اپنے لیے کافی ہو-

اور جب میں خود کفیل ذہنی بیداری کہتا ہوں تو میرا مطلب سچائی کی نفسیاتی قدر پر مبنی ذہنی بیداری نہیں ہے- سچائی ایک اصطلاح ہے، یہ ایک ذاتی یقین یا سماجی یقین ہے، یا اجتماعی سماجی یقین ہے، جو انسان کی بحیثیت فرد یا اجتماعی طور پر سماج کی جذباتی ضروریات کا حصہ ہے، تاکہ مادے کی دنیا میں برتری کو یقینی بنایا جا سکے-

لیکن انسانیت کے مستقبل کے شعور کے ارتقاء کے لحاظ سے، سچائی یا اس کے نفسیاتی ہم منصب، یا اس کی جذباتی قدر، بالکل بیکار ہو گی، اس سادہ سی وجہ سے کہ انسان اب جذباتیت کو استعمال کرنے کے قابل نہیں رہے گا- اس کے علم کا نفسیاتی جائزہ- اسے اب اپنے نفس کی ذہنی سلامتی کی نشوونما کے لیے اپنے ضمیر کی جذباتیت کا استعمال نہیں کرنا پڑے گا-
تو انسان دماغ میں بالکل آزاد ہو جائے گا کہ وہ نفسیاتی جہاز پر ورزش کرنے کے قابل ہو جائے، اظہار، وضاحت اور عالمگیر شعور کے حتمی طور پر لامحدود موضوعات کی تعریف جو دنیا کی تمام نسلوں کا حصہ ہیں، جو حصہ ہیں- کائنات میں تمام نسلوں میں سے، اور جو حقیقت میں روح کی غیر متغیر اتحاد کا حصہ ہیں، اس کی مطلق تعریف میں، روشنی کے اصل ماخذ اور کائنات میں اس کی حرکت کے طور پر-

تو انسانیت کے ارتقاء میں ایک ایسا موڑ آئے گا جب آخرکار انا نے نفس کے شعور پر کھوئے ہوئے وقت کو پورا کر لیا ہو گا، اور جہاں نفس بالآخر اپنے شعور میں داخل ہو کر اپنی نفسیاتی تعریف کی ممکنہ حدوں کو پہنچ چکا ہو گا- اس کے خالص دماغ کی تخلیقی صلاحیت، یعنی اس کی روح کی-

اور ہم زمین پر، مختلف نسلوں میں، مختلف قوموں میں، مختلف اوقات میں، ایسے افراد کو دریافت کریں گے جو فیوژن کو جانتے ہوں گے، یعنی جو فوری طور پر اس قابل ہو جائیں گے کہ وہ علم کے اس قدر عظیم ذرائع کی طرف متوجہ ہو سکیں، کہ دنیا کی سائنس، ٹیکنالوجی، تکنیک، طب، نفسیات یا تاریخ کے لحاظ سے، مکمل طور پر ختم ہو جائے گی- کس لیے؟ کیونکہ انسان کے ارتقاء کے بعد پہلی بار، مادے میں روح کے نزول کے بعد پہلی بار اور مادّے کے ساتھ روح کے اتحاد کے بعد پہلی بار، انسان آخرکار اس کے مطلق علم کو برداشت کرنے کی صلاحیت حاصل کر چکا ہوگا- .

جسے میں مطلق علم کہتا ہوں وہ انسانی ذہن کی صلاحیت ہے کہ وہ اپنی روشنی کو برداشت اور جذب کر سکتا ہے- مطلق علم فیکلٹی نہیں ہے- مطلق علم تقدیر نہیں ہے- مطلق علم کی ضرورت نہیں ہے- مطلق علم ایک اصلاحی ارتقائی انجام ہے، یعنی کائنات میں روشنی کی سرگرمی کے عظیم میدان کا ایک حصہ اور جو تمام دائروں، تمام ذہین مثالوں، یعنی کائنات کی تمام ذہین انواع کو بتانے کے لیے کہ اعلیٰ ذہنی طیارہ، یعنی توانائی کے جہاز پر اتنا طاقتور جو کہ ممکنہ طور پر ارتقاء کے دوران جسمانی مادّے کا غائب ہو جانا ایتھرک جسم کے ناگزیر قیامت کے لیے ممکن ہو سکتا ہے-

کہنے کا مطلب یہ ہے کہ انسان میں آخر کار مختلف سورجوں کے ساتھ ایک توانائی بخش جزو میں داخل ہونے کی صلاحیت ہے جو عالمگیر جاندار بناتے ہیں، اور جو اس کی روح، اس کی روشنی اور اس کی بنیاد ہیں، حرکت اور سمجھ میں- جوہری شعور کو کال کریں! لہذا ارتقاء کے دوران ایک ایسا مقام آئے گا جہاں انسان بغیر سوچے سمجھے، سوچنے کی ضرورت کے بغیر اس قابل ہو جائے گا کہ انسان آخر کار زمین پر ارتقائی آثار قدیمہ اور آفاقی شعور کے ارتقاء کی ذہنی تعمیر میں ایک واضح انداز میں مداخلت کر سکے گا- . اس کا مطلب یہ ہے کہ انسان کو بالآخر یہ احساس ہو جائے گا کہ وہ بالکل ذہین ہستی ہے-

انسان کو یہ احساس ہو جائے گا کہ ذہانت محض تعلیم کی ایک شکل کا اظہار نہیں ہے، بلکہ یہ کہ ذہانت قطعی طور پر کسی بھی معاملے میں کسی بھی ذہن کی بنیادی خصوصیت ہے- صرف ہم آج ایک ایسے موڑ پر ہیں جہاں ایک انا یا انسانی نفس کے طور پر، ہم ان حدود کے اندر رہنے پر مجبور ہیں جو ہم پر آفاقی عکاسی، یعنی تاریخ اور انسانیت کی یاد سے مسلط کی گئی ہیں-

اور انسان کو ابھی تک نہیں دیا گیا ہے - کیونکہ اس میدان میں کافی سائنس نہیں ہے - انسان کو ابھی تک یہ جاننے اور سمجھنے کی صلاحیت نہیں دی گئی ہے کہ اس کی نفسیات کیسے کام کرتی ہے، اس کی انا کیسے کام کرتی ہے، اس کی انا کیسے کام کرتی ہے، اور انٹیلی جنس کی اصطلاح کا اس کی آفاقی تعریف میں کیا مطلب ہے، اس لیے کہ آج انسان اپنے نجومی جسم میں پھنس گیا ہے، یعنی اپنے حواس سے!

وہ اپنے بنیادی اور آفاقی علم کی جگہ لینے کا پابند ہے، ایک چھوٹا سا محدود علم جو تاریخ اور مضمون سے مشروط ہے ارتقاء کے دوران نظر ثانی کی جائے، جیسا کہ سائنس کے تمام نظریات کو ہونا پڑے گا، نہ کہ اس لحاظ سے کہ آج سائنس مفید نہیں ہے- اس کے برعکس یہ بہت مفید ہے، لیکن اس لحاظ سے کہ آج سائنس بھی اپنے خاتمے کی طرف اپنا ناگزیر سفر طے کرتی ہے- جس طرح تمام تہذیبیں اپنے اپنے خاتمے کی طرف اپنا ناگزیر سفر طے کرتی ہیں-

لیکن جس طرح ایک تہذیب کو اپنی نابودی کی حقیقت بہت مشکل لگتی ہے، اسی طرح سائنس کو اپنے خاتمے کی حقیقت کو حاصل کرنا مشکل ہوگا- اور یہ بہت عام بات ہے- کوئی سوچنے والے یا ایسے مخلوقات سے نہیں پوچھ سکتا جو دنیا میں اپنے زوال یا اپنی فنا کو فروغ دینے کے لیے ایک خاص شعور رکھتے ہوں- ہم اس بات سے آگاہ ہونے کے پابند ہیں کہ ہم کیا ہیں، ہم نے کیا کیا ہے، ہم کیا کر سکتے ہیں، ارتقاء کے لیے، انسانیت کو ترقی کی اجازت دینے کے لیے-

لیکن بحیثیت فرد - میں بحیثیت فرد واضح طور پر کہہ رہا ہوں - آخر کار ہم اپنے سیارے پر ایک آفاقی اور کائناتی ترتیب کے حالات کا سامنا کرنے کے پابند ہوں گے، ہم ان جہتوں کا سامنا کرنے کے پابند ہوں گے جو ماضی میں توہم پرستی کی عظیم تحریکیں اٹھا چکے ہیں- دنیا میں؛ وہ تحریکیں جو سائنس کے ارتقاء کے ساتھ ختم ہو گئیں، اور وہ تحریکیں جنہیں پھر سائنس نے واضح طور پر مسترد کر دیا-

لہٰذا ہم وقت کے ساتھ ساتھ کچھ تجربات کا جائزہ لینے اور دوبارہ زندہ کرنے کے پابند ہوں گے تاکہ یہ محسوس کیا جا سکے کہ کائنات لامحدود ہے- انسانی شعور لامحدود ہے اور انسان اپنے باطن میں اتنا ہی طاقتور ہے جتنا اس کا شعور ہو سکتا ہے- یہ آج ایک ایسی دنیا میں بہت اہم ہے جہاں ہم ذہن کے بہت سارے دھاروں کے سنگم پر رہنے پر مجبور ہیں جو کہ مجموعی طور پر... اور جب میں مجموعی طور پر کہتا ہوں تو میں یقینی طور پر امریکہ کی طرف دیکھ رہا ہوں جہاں یہ انفرادیت کے ساتھ اس کے تصادم میں اجتماعی تجربہ آہستہ آہستہ ایک اجتماعی نفسیات کو جنم دیتا ہے-

انسان پر دنیا میں خیالات کے دھارے سے غیر معینہ مدت تک بمباری نہیں کی جا سکتی جو ٹیلی ویژن یا اخبارات یا آزاد صحافت کی مختلف شکلوں سے اپنی تعداد میں اضافہ کر رہے ہیں- ایک وقت ایسا آئے گا کہ انسان اس نفسیاتی اور نفسیاتی تناؤ کو مزید برداشت نہیں کر سکے گا جو سچ اور جھوٹ کے مختلف تصادم سے پیدا ہوتا ہے- زمین پر بالادست (اعلیٰ دماغ) شعور کے ارتقاء میں ایک ایسا موڑ آئے گا جب انسان اپنے تعلق سے حقیقت کی وضاحت کرنے پر مجبور ہو جائے گا- لیکن یہ "ایک خود" ہوگا جو عالمگیر ہوگا، یہ "خود ایک" نہیں ہوگا جو اس کی اپنی روح کی چنچل پن یا اس کی اپنی انا کی باطل، یا اس کی اپنی میری عدم تحفظ پر مبنی ہوگا-

تو اسی لمحے سے انسان انسانی رجحان، تہذیب کو اس کے تمام پہلوؤں سے سمجھنے کے قابل ہو جائے گا- اور وہ اب نفسیاتی طور پر جو کچھ ہو رہا ہے یا جو کچھ دنیا میں ہونے والا ہے اس سے " بھرا ہوا" نہیں رہے گا - انسان آزاد ہونے لگے گا- اور جس لمحے سے وہ آزاد ہونا شروع کرے گا، آخر کار وہ زندگی کو اس کے بنیادی معیار میں سمجھنا شروع کر دے گا- اور جتنا وہ ترقی کرے گا، اتنا ہی زیادہ وہ زندگی کو ایک مکمل، اٹوٹ اور سیکھے ہوئے طریقے سے سمجھے گا، اس لحاظ سے جو آج پانچویں جڑ کی نسل کے شعور کا حصہ نہیں ہے-

یہ سب لفاظی کیوں؟ انسان کو آہستہ آہستہ یہ سمجھنے کے لیے لانا کہ سب سے بڑی وفاداری جو وہ خود کو دے سکتا ہے، خود کو تخلیق کر سکتا ہے، وہ اپنے آپ سے وفاداری ہے- ہم ایک ایسی صدی میں رہتے ہیں جہاں انفرادیت کی محبت، خاص طور پر مغربی دنیا میں، بہت ترقی یافتہ ہے- ہم زیادہ سے زیادہ انفرادیت پسند ہوتے گئے ہیں، لیکن انفرادیت، اگر یہ ایک رویہ ہے، بنیادی طور پر انسانوں کی حقیقت میں شامل نہیں ہے- دوسرے لفظوں میں، سرخ پینٹی اور پیلی چپل کے ساتھ سڑک پر چلنا اور نیویارک میں نیویارک کے ٹائمز اسکوائر میں محبت کرنا، انفرادیت کی ایک شکل ہے- لیکن یہ سنکی ہے، یہ انسانی شعور کی نجکاری کی ایک شکل ہے-

انسان کو اپنی انفرادیت کو برقرار رکھنے، اصطلاح کے ٹھوس معنوں میں اپنی انفرادیت کا اظہار کرنے، عوام کی حساسیت کو جھنجھوڑنے یا اپنے لوگوں کی حساسیت کو جھنجھوڑ دینے یا اپنی آبادی کی حساسیت کو جھنجھوڑنے کی ضرورت نہیں ہے- یہ ایک وہم ہے! اور یہ بیسویں صدی کے خصوصیت کے فیشن کا حصہ ہے، آخر کار یہ عام بن جاتا ہے، آخر کار یہ احمقانہ بھی ہو جاتا ہے، آخر کار اس میں جمالیات کی بالکل کمی ہے- لہٰذا نیا انسان، زمین پر بالادست (اعلیٰ ذہنی) شعور کا ارتقا، درحقیقت، انسان کو ایک انتہائی انفرادی لیکن انفرادی شعور کو فروغ دینے کی اجازت دے گا-

انسان انفرادی کیوں ہوگا؟ کیونکہ اس کے شعور کی حقیقت اس کی روح کے امتزاج پر مبنی ہو گی اور مردوں کی نظروں میں دنیا میں پیش نہیں کی جائے گی، تاکہ سنکی کے ساتھ چھیڑ چھاڑ کی ایک قسم کو ظاہر کیا جا سکے- ایک آدمی کو حقیقی ہونے کے لیے دنیا بھر میں گھومنے اور معمولی ہونے کی ضرورت نہیں ہے- اس کے برعکس- انسان جتنا زیادہ باشعور ہوگا، اتنا ہی کم ہوگا، اتنا ہی حقیقی ہوگا اور اپنی حقیقت میں اتنا ہی گمنام ہوگا- کیونکہ انسان کی حقیقت ایک ایسی چیز ہے جو اس کے اور اس کے درمیان جاتی ہے نہ کہ اس کے اور دوسروں کے درمیان-

اگر ہم اپنے سیارے پر جڑوں کی نسل کے ضروری ارتقاء کو دیکھیں تو یہ انسانی رجحان کو تھوڑا سا سمجھنا ہے- یہ کہ ہم نقاط قائم کرتے ہیں، یہ خالصتاً عملی ہے، یہ خالصتاً ناگزیر واقعات کو تاریخی فہم کا فریم ورک دینا ہے! لیکن اگر ہم ایک باشعور نسل کی بات کریں، اگر ہم ایک باشعور انسانیت کی بات کریں تو ہم باشعور مردوں اور افراد کی بات کرنے کے پابند ہیں-

زمین پر بالا شعور (اعلیٰ ذہن) کا ارتقاء کسی اجتماعیت کے پیمانے پر کبھی نہیں ہوگا- زمین پر بالادست (اعلی دماغ) شعور کا ارتقا کبھی بھی اجتماعی قوت کا اظہار نہیں ہوگا- دنیا میں ہمیشہ ایسے افراد ہوں گے جو اپنے شعور میں اس مقام کی طرف آہستہ آہستہ، زیادہ سے زیادہ کشش اختیار کریں گے جہاں وہ اپنے ماخذ، اپنی روح، اپنے دوہرے کے ساتھ متحد ہوں گے، جو بھی ہم اسے کہیں گے- اس حقیقت کی طرف- انسان کا حصہ ہے.

لیکن اس سمت میں بنیادی تحریک اس پر مبنی ہوگی: یہ فکر کے رجحان کی تفہیم پر مبنی ہوگی جو انحراف کے بعد کبھی نہیں ہوئی ہے- یہ کہنا کافی نہیں ہے: " میں سوچتا ہوں، اس لیے میں ہوں"- ڈیکارٹس کے لیے یہ کہنا اچھا تھا ، "میں سوچتا ہوں، اس لیے میں ہوں،" کیونکہ یہ اس احساس کا حصہ تھا کہ سوچ اپنے آپ میں ایک طاقت رکھتی ہے جسے فرد کی سطح پر محسوس کیا جانا چاہیے-

لیکن تخلیقی شعور کی سطح پر، وہ نقطہ آئے گا جب انسان کی سوچ مکمل طور پر، مکمل طور پر منتقل ہو جائے گی. اور انسان ارتقاء کے دوران مزید نہیں سوچے گا- اس کی سوچ اس کے اعلیٰ ذہن کے تخلیقی اظہار کے انداز میں بدل جائے گی- اور وہ دماغ بالکل بن جائے گا- ٹیلی نفسیاتی دوسرے لفظوں میں، انسان عالمی طیاروں کے ساتھ فوری رابطے کا تجربہ کرے گا اور مواصلات کا یہ طریقہ اب عکاس نہیں رہے گا- جس لمحے سوچ انسان کے ذہن میں منعکس ہونا بند ہو جاتی ہے، سوچ موضوعی ہونا چھوڑ دیتی ہے- ہم اب یہ نہیں کہہ سکتے کہ انسان سوچتا ہے، ہم کہتے ہیں کہ انسان اپنے شعور کے آفاقی طیاروں سے بات کرتا ہے-

لیکن انسان کے لیے اس بات کو ایک اٹوٹ طریقے سے سمجھنے کے لیے، اس کے لیے ضروری ہو گا کہ وہ اس سوچ کو سمجھے، جیسا کہ ہم اسے آج تصور کر رہے ہیں، جیسا کہ ہم اسے آج جی رہے ہیں، جیسا کہ یہ ہمارے ذہن میں قائم ہے، جیسا کہ اسے پیدا یا محسوس کیا گیا ہے- ہمیں لاشعوری انا کے طور پر، ہم میں ایک خاص احساس بیدار کرنا چاہیے، اس معنی میں کہ انسان کو یہ احساس کرنے کے قابل ہونا چاہیے کہ اس کی سوچ خود اسے اپنے خلاف تقسیم کرتی ہے- صرف اس حد تک جہاں تک وہ، مبہم اور بے شعوری کی وجہ سے، اسے اچھے یا برے، سچ اور جھوٹ کی قطبیت کے تابع کرتا ہے-

اس لمحے سے جب انسان اپنے ذہن کو پولرائز کرتا ہے، خواہ وہ منفی یا مثبت نقاط قائم کرتا ہے، اس نے صرف مادی سطح پر اپنے اور کائناتی اور عالمگیر سطح پر اپنے درمیان تقسیم پیدا کی ہے- یہ بہت اہم ہے! یہ اتنا اہم ہے کہ یہ اگلے ارتقاء کی بنیادی کلید ہے- جو چیز ہمیں قطبیت کے سلسلے میں اپنی سوچ کو ہمیشہ زندہ کرنے کا رجحان دیتی ہے وہ ہماری انا کا بنیادی عدم تحفظ ہے- یہ ہمارے جذبات کی طاقتور اور ویمپیرک صلاحیت ہے- یہ ایک انا کے طور پر یا ایک غیر تعلیم یافتہ یا زیادہ تعلیم یافتہ فرد کی حیثیت سے ہماری نااہلی ہے، جو ہم جانتے ہیں اسے برداشت نہ کر پانا-

دنیا میں کوئی آدمی ایسا نہیں جو کچھ نہ جانتا ہو- تمام مرد کچھ نہ کچھ جانتے ہیں لیکن دنیا بھر میں کوئی اتھارٹی نہیں ہے، کوئی ثقافتی تعریف نہیں ہے، دنیا میں کوئی ایسی ثقافتی حمایت نہیں ہے جو انسان کو کچھ جاننے میں مدد دے سکے- ایسے ادارے ہیں جو اپنے آپ کو کچھ جاننے کا حق دیتے ہیں تاکہ اس علم کو قائم کیا جا سکے اور انسان کے ذہن کو اس سے ہم آہنگ کیا جا سکے- اسے ہم مختلف سطحوں پر سائنس کہتے ہیں، یہ معمول کی بات ہے-

لیکن اس کے برعکس کوئی ایسی تحریک نہیں ہے جہاں دنیا کے ادارے انسان کو اس کا اختیار دے سکیں یا واپس کر سکیں، یعنی اسے اپنی ذات کی وہ چھوٹی جہت واپس کر دیں جو ایک دن بہت بڑی ہو سکتی ہے، یعنی اس کی اپنی روشنی- اور آپ روحانی میدان میں، مذہبی دائرے میں بہت آسان طریقے سے امتحان دے سکتے ہیں- ایک دن جب انسان کے مراکز کافی کھل جائیں گے تو وہ سائنس کے میدان میں بھی ایسا ہی کر سکے گا-

ایک آدمی جو دنیا میں ہے اور جو مثال کے طور پر کسی مولوی یا کسی ایسے شخص سے ملنے جاتا ہے جو دین میں کام کرتا ہے اور جو اس سے خدا کے بارے میں بات کرتا ہے، اور جو کہتا ہے: "اچھا، ٹھیک ہے، خدا ایسی چیز ہے، فلاں چیز ، فلاں چیز" ، کوئی اس سے کہے گا: " لیکن تم کس حق سے خدا کی بات کرتے ہو؟ تم کس حق سے خدا کی بات کرتے ہو...؟ اور اگر انسان کم ترقی یافتہ ہے اور حقیقت میں خدا کی شکل کو ٹکڑے ٹکڑے کر کے دوسری شکلیں نکال سکتا ہے جو اس کے ذہن کی تخلیقی جہت کا حصہ ہیں، تو وہ خدا کے ادارہ سازی سے اور بھی زیادہ پسپا ہو گا- پوشیدہ جہانوں کی تفہیم-

اس لیے میں کہتا ہوں کہ انسان دنیا کے سہارے سے، ایک اعلیٰ شعور (اعلیٰ دماغ) میں، دنیا میں داخل نہیں ہو سکے گا- جب انسان دنیاوی سہارے کی ضرورت سے مکمل طور پر آزاد ہو جائے گا، اور آخر کار آہستہ آہستہ اس کا ادراک اور برداشت کرنا شروع کر دے گا جو وہ جانتا ہے- اور اس کے لیے شرط یہ ہے کہ سچ اور جھوٹ کی قطبیت کے جال میں نہ پھنسیں-

اگر انسان سچ اور جھوٹ کی قطبیت کے جال میں پھنس جاتا ہے تو وہ اپنے ضمیر کو جوش دیتا ہے، وہ اپنی انا کو غیر محفوظ کر لیتا ہے، اور وہ حقیقت کی طرف انتہائی رویہ اختیار کر لیتا ہے- سچ اور جھوٹ صرف ذہنی معذوری کے نفسیاتی اجزاء کی نمائندگی کرتے ہیں! جب آپ ایک اچھا سٹیک کھاتے ہیں، تو آپ کو حیرت نہیں ہوتی کہ یہ اصلی ہے یا جعلی، اس میں کوئی قطبیت نہیں ہے، اسی لیے یہ اچھا ہے- لیکن اگر آپ سوچنے لگیں کہ کیا وہاں کیڑے موجود ہیں، اوہ، تو آپ کا معدہ جواب نہیں دے گا! اور یہ علم کی سطح پر، علم کی سطح پر ایک ہی چیز ہے-

نچلے دماغ کے لیے علم وہی ہے جو اعلیٰ دماغ کے لیے جاننا ہے- علم انا کی ضرورت کا حصہ ہے جبکہ جاننا نفس کی حقیقت کا حصہ ہے- اس لیے جاننے اور جاننے کے درمیان کوئی تقسیم یا جدائی نہیں ہے- علم شعور کی ایک سطح کا حصہ ہے اور علم دوسری سطح کا حصہ ہے-

علم کے دائرے میں ہم کچھ چیزوں کے بارے میں بات کرتے ہیں اور علم کے دائرے میں ہم دوسری چیزوں کے بارے میں بات کرتے ہیں- دونوں مل سکتے ہیں، ایک دوسرے کے ساتھ بھائی چارہ کر سکتے ہیں اور ایک ساتھ بہت اچھے رہ سکتے ہیں- چوتھی منزل اس کے اوپر پانچویں منزل کے ساتھ ہمیشہ اچھی ہوتی ہے... اور انسان ایک کثیر جہتی وجود ہے، لیکن انسان ایک ایسا وجود بھی ہے جو تجرباتی شعور رکھتا ہے اور رہتا ہے- ہمارے پاس زمین پر تجرباتی شعور ہے- ہم میں تخلیقی شعور نہیں ہے-

اپنی زندگی کو دیکھو! آپ کی زندگی تجربہ ہے! جس لمحے سے آپ دنیا میں داخل ہوتے ہیں، آپ کی زندگی مسلسل تجربے سے عبارت ہے، لیکن انسان غیر معینہ مدت تک تجربے پر زندہ نہیں رہ سکتا- ایک دن انسان کو تخلیقی شعور کے ساتھ جینا پڑے گا، اس وقت زندگی جینے کے لائق ہوتی ہے، زندگی بہت بڑی، بہت وسیع ہو جاتی ہے، یہ تخلیقی صلاحیتوں میں طاقتور ہوتی ہے، اور انسان روح کے تجربے کو جینا چھوڑ دیتا ہے- لیکن انسان تجربہ کیوں جیتا ہے؟ کیونکہ یہ طاقتور قوتوں سے جڑی ہوئی ہے - جسے میں میموری کہتا ہوں - جو درحقیقت آپ کو "روح" کہتے ہیں-

انسان اپنی روح سے زندہ نہیں رہتا، وہ روح سے جڑا ہوتا ہے، وہ روح سے رہتا ہے، وہ مسلسل روح سے ویمپائرائز ہوتا ہے- جن لوگوں نے دوبارہ جنم لینے کے بارے میں تحقیق کی ہے یا جن لوگوں نے کسی خاص ماضی میں وجود میں واپس آنے پر تحقیق کی ہے، انہوں نے بہت اچھی طرح سے اس بات کا تعین کیا ہے کہ آج کچھ لوگ بعض چیزوں میں مبتلا ہیں، کیونکہ پچھلی زندگی میں، وہ اس وجہ سے دوچار تھے- آج ایسے لوگ ہیں جو لفٹ (لفٹ) میں داخل نہیں ہو پا رہے ہیں کیونکہ وہ مادی زندگی سے پہلے آنے والے صدمات کا سامنا کر رہے ہیں، یا جن کا پچھلے حالات میں دم گھٹ گیا ہے، وہ اس قابل نہیں ہیں... وہ دم گھٹ رہے ہیں- تو انسان روح کے تجربے میں رہتا ہے-

وہ زندہ ہے، وہ اپنی یادداشت سے جڑا ہوا ہے، جتنی اس کی سابقہ ارتقائی تحریک کی بہت وسیع لاشعوری یادداشت اتنی ہی وسیع یادداشت ہے جو وہ آج ایک تجرباتی وجود کے طور پر جی رہا ہے- انسان زمین پر تجربے سے غیر معینہ مدت تک زندہ نہیں رہ سکتا! یہ ان کی یونیورسل انٹیلی جنس کی توہین ہے- یہ انسان کی فطرت کے ساتھ قطعی طور پر مطابقت نہیں رکھتا کہ انسان یہ نہیں کہہ سکتا: " اچھا، ٹھیک ہے، میں دس سال میں ایسا کام کرنا چاہتا ہوں، پانچ سالوں میں میں فلاں کام کرنا چاہتا ہوں"، یہ فطرت کی فطرت سے قطعی طور پر مطابقت نہیں رکھتا- انسان کہ وہ اپنے مستقبل کو نہیں جانتا!

یہ انسان کی فطرت سے مطابقت نہیں رکھتا کہ وہ اپنے سے پہلے انسان کی فطرت کو نہیں جانتا- دوسرے لفظوں میں یہ روحِ انسانی کے ساتھ مطابقت نہیں رکھتی کہ انسان میں یہ روح عقل کے احکام کے مطابق زندگی گزارنے پر مجبور ہے، کیونکہ انسان آج مادی سطح پر ایک ایسی نسل کا حصہ ہے جس کا شعور اتر رہا ہے- انسان کے شعور کو نزول سے مادّہ کی طرف منتقل ہو کر ایتھرک کی طرف حتمی اخراج کی طرف جانا چاہیے، یعنی کرۂ ارض کی حقیقت کا وہ حصہ جو بالآخر دنیا ہے جس میں انسان کو فطری طور پر اپنی لافانی زندگی گزارنی چاہیے-

انسان مادے میں آکر مرنے کے لیے نہیں بنایا گیا ہے- جسے ہم موت کہتے ہیں، یعنی جسے ہم انسان کی واپسی کہتے ہیں یا روح کی خلا میں واپسی کہتے ہیں، وہ انسان کے لاشعور کا حصہ ہے- یہ اس حقیقت کا حصہ ہے کہ انسان ان آفاقی سرکٹس سے بالکل کٹ گیا ہے جو اس کی نسل کا ماخذ ہیں، جو اس کی ذہانت کا سرچشمہ ہیں، جو اس کی حیاتیات کا سرچشمہ ہیں، جو اس کے سیاروں کی خودی کا منبع ہیں! اس لیے انسان کو ماخذ کی طرف لوٹنا چاہیے، لیکن انسان تصرف کے روحانی، تاریخی وہموں کے ذریعے ماخذ کی طرف واپس نہیں آ سکتا-

انسان ان پرانے خیالات کو استعمال کر کے اپنے ماخذ کی طرف واپس نہیں جا سکے گا جنھوں نے اسے مادے کا قیدی بننے پر مجبور کیا- انسان پرانے ذرائع کو استعمال کرکے اپنے ماخذ کی طرف لوٹنے والا نہیں ہے جس نے اسے تجرباتی شعور کے ساتھ وجود بنایا- انسان ایمان لا کر اپنے ماخذ کی طرف نہیں لوٹے گا-

انسان اپنے ارتقاء کے دوران بتدریج ترقی کر کے اپنے ماخذ کی طرف لوٹ جائے گا، جو وہ جانتا ہے اس کی حمایت کرنے کی صلاحیت-

لیکن آج کی دنیا میں، ہم ایک افسانوی کہانی، اپنے نفس کی نفسیاتی نظام سازی کے لیے برباد ہیں- ہم ایک نفسیاتی ذہنی رویہ کی گرفت میں ہیں جو تمام انسانیت کو متاثر کرتا ہے: عقیدہ- انسان کو یقین کرنے کی کیا ضرورت ہے؟ کیونکہ وہ نہیں جانتا! انسان کو یقین کرنے کی کیا ضرورت ہے؟ کیونکہ وہ ایک تجرباتی شعور ہے، اس لیے اس کے ذہن میں روشنی نہیں ہے- وہ اپنے چھوٹے سے شعور کی انتہائی تاریک حرکت میں رہتا ہے، اس لیے وہ اپنے آپ کو اہم اور مطلق چیز سے منسلک کرنے کے لیے یقین کرنے کا پابند ہے-

لیکن یہ عقیدہ مطلق جو انا کی نفسیاتی حالت کا حصہ ہے، یہ عقیدہ مطلق، یہ کس نے قائم کیا؟ اسے مین آف انوولیشن نے قائم کیا تھا- آپ اچھی طرح جانتے ہیں کہ اگر آپ دنیا میں جاتے ہیں اور آپ کسی کو کوئی کہانی سناتے ہیں، کہ جو کہانی آپ سنانے جا رہے ہیں، وہ اب پہلے جیسی نہیں رہے گی، جب وہ موصول ہو جائے گی اور دوسرے کو سنائی جائے گی، جو آپ نے پہلے کہی تھی- .

تصور کریں کہ کوئی شخص دنیا میں جاتا ہے اور جو کچھ میں آج کہہ رہا ہوں اسے دہرانے کی کوشش کرتا ہے، ایک ابتدائی کے طور پر، آپ تصور کر سکتے ہیں کہ یہ کل کیسے سامنے آئے گا! پس ماضی میں ایسے مرد بھی ہیں جنہوں نے کام کیا، ایسے لوگ بھی تھے جو انسانیت کے ارتقاء میں مدد کے لیے دنیا میں آئے- لیکن ان مخلوقات نے کیا کہا اور جو کچھ انہوں نے مبینہ طور پر کہا اس کے بارے میں کیا خبر دی گئی یہ الگ بات ہے-

اور میں آپ کو ایک بات واضح طور پر بتا سکتا ہوں - کیوں کہ میں اس رجحان کو برسوں سے جانتا ہوں - یہ بالکل ناممکن ہے کہ ایک آدمی کے لیے بالکل ٹھیک کہی گئی بات کو دہرایا جائے- آج رات گھر پہنچنے پر اسے کرنے کی کوشش کریں! جو کچھ کہا گیا ہے اسے دہرانا انسان کے لیے ناممکن ہے- اور میں آپ کو بتاؤں گا کیوں- کیونکہ جو بالکل ٹھیک کہا جاتا ہے - دوسرے لفظوں میں وہ چیز جو انا سے رنگین نہیں ہوتی، جو نجومی نہیں ہوتی، جو انسان کے لاشعور کا حصہ نہیں ہوتی، لیکن جو چیز انسان کی کائنات کا حصہ ہوتی ہے - اس کا رخ انا کی طرف نہیں ہوتا- انسان یا انسان کی انا، یا انسان کی عقل کو- یہ اس کی روح کی طرف ہدایت کی گئی ہے-

اور اگر انسان اپنی روح میں نہیں ہے تو آپ اس سے کیسے توقع کرتے ہیں کہ وہ جو کچھ اور روح پہلے ہی کے الفاظ کی رنگینی سے Initiates کہہ چکا ہے اسے لے لے گا؟ یہ ناممکن ہے. تو اس وقت رنگ بھر رہا ہے- اور پیدا ہوئے جنہیں ہم انسانیت کے ارتقائی فائدے کے لیے مذاہب کہتے ہیں- اور میں اتفاق کرتا ہوں اور میں بہت خوش ہوں کہ یہ ہو رہا ہے اور یہ کیا گیا ہے، کیونکہ یہ ضروری ہے- لیکن ارتقاء کے دوران ایک ایسا وقت آئے گا جب انسان کو اپنے ضمیر کو اپنے علم کی تکمیل کے لیے اخلاقی سہارے کی ضرورت نہیں رہے گی- یہ سپرمینٹل شعور (اعلیٰ دماغ) ہے-

اور چونکہ ہم کیوبیکرز سے بات کر رہے ہیں، چونکہ ہم ایک ایسے لوگوں سے بات کر رہے ہیں جنہیں، بہت اچھی وجوہات کی بنا پر، روحانی دنیا سے ایک خاص قربت کا تجربہ کرنے کا موقع ملا ہے جو مذہب نے انہیں دیا ہے، اس لحاظ سے ہمارے پاس پہلے سے ہی ترقی ہے- کہ پہلے سے ہی، ہم وہ مخلوق ہیں جو پہلے سے ہی پوشیدہ کے لیے ایک خاص حساسیت رکھتے ہیں-

لیکن وہاں سے داخل ہونے کے روحانی راستوں کو استعمال کرتے ہوئے شعور کی گہری خفیہ تلاش میں داخل ہونا ہمیں براہ راست نفس کی قطبیت تک لے جائے گا- یہ ہمیں اچھائی اور برائی، سچ اور جھوٹ کی کشمکش میں لے آئے گا، اور یہ ہمارے ذہنوں میں بڑی تکلیف پیدا کرے گا-

اسی لیے میں کہتا ہوں: ہوش مند انسان، زمین پر اعلیٰ شعور (اعلیٰ دماغ) کا ارتقا اسی لمحے سے شروع ہو جائے گا جب انسان پہلے ہی اس ضرورت کو سمجھ چکا ہو گا کہ وہ اپنی سوچ کو سچ اور جعلی کے تابع نہ کرے- لیکن آہستہ آہستہ اس کو جینا سیکھنا اور اس کی تحریک کی حمایت کرنا یہاں تک کہ یہ سوچ ایک دن کامل ہو جائے، یعنی مکمل طور پر اپنی روشنی میں، مکمل طور پر غیر قطبی، تاکہ آخر کار وہ انا، میں... انا، روح- اور روح متحد ہو کر انسان کو ایک حقیقی وجود بناتی ہے-

ایک حقیقی وجود کیا ہے؟ ایک حقیقی وجود ایک حقیقی وجود ہے! وہ ایسا وجود نہیں ہے جسے سچائی کی ضرورت ہو، وہ ایسا ہستی نہیں ہے جو سچ کو کھاتا ہے- اگر تم سچ کھاؤ گے تو کل تم جھوٹ کو کھاؤ گے، کیونکہ ایسے لوگ ہوں گے جو تمہیں حقیقت کی لامحدودیت کی قید میں لے جائیں گے- اگر آپ سچ کھاتے ہیں تو ایک دن آپ کو یہ قدم پھر سے اٹھانا پڑے گا، کیونکہ انسان کو وہی چیز ملتی ہے جو اس کے ضمیر کے مطابق ہوتی ہے، جو اس کی روح کے مطابق ہوتی ہے، جو اس کی روح کے مطابق ہوتی ہے، جو اس کی انا کے مطابق ہوتی ہے، جو اس کے وجود کے مطابق ہوتی ہے- ، امن ہے.

لیکن امن کیا ہے؟ امن روکنا ہے، تلاش کا روک ہے- آپ کہیں گے: " ہاں، لیکن آپ کو تلاش کرنا پڑے گا" ، میں کہتا ہوں: ہاں، انسان تلاش کر رہا ہے، آپ کے باوجود آپ ڈھونڈ رہے ہیں، تمام انسان تلاش کر رہے ہیں، لیکن ارتقاء کے دوران ایک ایسا مقام آئے گا جہاں انسان تلاش کرے گا- مزید تلاش نہیں ہوگی، انسان کو مزید تلاش نہیں کرنا پڑے گی، اور انسان تلاش کرنا چھوڑ دے گا جب اسے آخرکار معلوم ہو جائے گا کہ وہ جانتا ہے-

اور وہاں آپ کہنے جا رہے ہیں: " ہاں، لیکن کوئی کیسے جان سکتا ہے کہ کوئی جانتا ہے"... جب تک آپ اسے برداشت کرنے دیں گے، آپ کو یہ معلوم ہو جائے گا، جہاں تک آپ کو معلوم کرنے کے لیے کسی کو فون کرنے کی ضرورت نہیں پڑے گی- اگر آپ صحیح ہیں. اور پھر آپ یہ کہنے جا رہے ہیں: " ٹھیک ہے، لیکن اگر ہم صحیح ہیں یا اگر ہمیں لگتا ہے کہ ہم صحیح ہیں، تو یہ خطرناک ہے"- میں کہوں گا: جی ہاں، کیونکہ ایک آدمی جو صحیح ہونے کی کوشش کرتا ہے وہ آدمی ہے جو پہلے سے ہی اپنی وجہ کی تلاش میں ہے!

لیکن کیا آپ کی زندگی میں، آپ کی روزمرہ کی زندگی میں، آپ کے ذاتی کونے میں ایسے تجربات نہیں ہیں، کیا آپ کی زندگی میں ایسے مواقع نہیں ہیں جب آپ محسوس کر سکیں کہ جو آپ جانتے ہیں، کیا وہی ہے؟ اور جب یہ ہے، بس!

یہ ہے" کو دوسرے میں " وہ وہ ہے" کو دوسرے " یہ وہ ہے" میں شامل کرنے کی صلاحیت رکھتے ہیں ، لیکن ایک " یہ وہ ہے" جو ہے حقیقی، ایک " یہ وہی ہے" جو دماغ کے غرور پر نہیں بنایا جائے گا، ایک " یہ وہی ہے" جو روحانیت یا آپ کی روحانیت کے فخر پر نہیں بنایا جائے گا، ایک " یہ ہے" جو ذاتی ہو گا- آپ کے لیے، ایک " یہ وہ ہے" جو ان تمام مردوں کے ساتھ عالمگیر ہو گا جن سے آپ ملتے ہیں اور جو ان کے " وہ ہے وہ" میں ہوں گے ، اس وقت آپ کو معلوم ہو جائے گا کہ یہ ہے !) (اگر اس کا ترجمہ نہیں کیا جا سکتا تو اس پیراگراف کو ختم کر دیں) .

नेपाली

बर्नार्ड डे मोन्ट्रियल द्वारा 2 सम्मेलन को ट्रान्सक्रिप्शन र अनुवाद।



अस्थायी ढाँचा

यो पुस्तक आर्टिफिसियल इन्टेलिजेन्स द्वारा अनुवाद गरिएको हो तर एक व्यक्ति द्वारा प्रमाणित गरिएको छैन। यदि तपाईं यो पुस्तक समीक्षा गरेर योगदान गर्न चाहनुहुन्छ भने, कृपया हामीलाई सम्पर्क गर्नुहोस्।

हाम्रो वेबसाइटको मुख्य पृष्ठ: http://diffusion-bdm-intl.com/

हाम्रो इमेल: contact@diffusion-bdm-intl.com

सामग्री

सम्पुर्ण डिफ्युजन BdM Intl टिम बाट शुभकामना।

Pierre Riopel अप्रिल 18, 2023

अध्याय १

पहिचान *CP036*

अरूको तुलनामा आत्म-पहिचान एक विश्वव्यापी मानव समस्या हो। र यो समस्या तब बढ्छ जब मानिस आधुनिक समाज जस्तो जटिल समाजमा बस्छ। पहिचानको समस्या भनेको अहंकारको जीवनको पीडा हो, जसले आफूलाई अरूको तुलनामा देख्दा उमेरदेखि नै उसलाई पछ्याउँछ। तर पहिचानको समस्या एउटा झूटो समस्या हो जुन यस तथ्यबाट उत्पन्न हुन्छ कि अहंकारले आफैलाई आफैं अनुसार महसुस गर्नुको सट्टा आफ्नो मापन अनुसार भन्न खोज्छ, आफूलाई अन्य अहंकारहरू विरुद्ध प्रतिस्पर्धात्मक रूपमा महसुस गर्न खोज्छ । , उनी जस्तै समस्याबाट।

जब अहंकारले आफ्नो फूलको प्रशंसा गर्नको लागि आफ्नो बार भन्दा बाहिर अर्कोको खेतमा हेर्छ, यो देख्न असफल हुन्छ कि अर्कोले आफैलाई पनि त्यस्तै गरिरहेको छ। आज मानिसमा पहिचान, वा पहिचान संकट यति तीव्र छ कि यसले आत्म-विश्वासको हानि निम्त्याउँछ जुन समयको साथ व्यक्तिगत चेतनाको पूर्ण हानिमा पतन हुन्छ। खतरनाक अवस्था, विशेष गरी यदि अहंकार पहिले नै चरित्रमा कमजोर छ र असुरक्षाको खतरा छ।

पहिचानको समस्या, अर्थात् आफूलाई आफू जत्तिकै उच्च नदेखिने अहंकारको विशेषता भन्नु वास्तवमा सिर्जनात्मकताको समस्या हो । तर जब अहंकार सृजनात्मक हुन्छ, पहिचानको समस्या यसरी हट्दैन, किनकि अहंकारले आफ्नो तल्लो आत्मको भ्रम नबुझेसम्म आफैंमा पूर्ण रूपमा सन्तुष्ट हुँदैन। ताकि एक कम-स्थिति अहंकारले उच्च-स्थिति अहंकारको रूपमा समान पहिचान समस्या अनुभव गर्नेछ, किनभने उहाँ र अर्को बीचको तुलना मापनमा मात्र परिवर्तन हुनेछ, तर सधैं अवस्थित रहनेछ, किनभने अहंकार सधैं सुधार शक्तिमा हुन्छ। र उसले आफ्नो लागि खोजेको सुधारको कुनै अन्त छैन।

तर आत्म-सुधार एक कम्बल हो जुन अहंकारले आफैलाई खुशीसँग बाँच्ने कारण दिनको लागि लुकाउँछ। तर के उसलाई थाहा छैन कि सबै सुधार पहिले नै इच्छा शरीर द्वारा उत्पन्न हुन्छ?

पहिचानको समस्या मानिसमा वास्तविक बुद्धिको चेतनाको अभावबाट आउँछ। जबसम्म मानिस आफ्नो बुद्धिद्वारा जीवित रहन्छ, उसको विचारमा संवेदनात्मक अनुभवले मात्र समर्थन गरिन्छ, उसलाई आफूले जान्ने वा बुझेको कुरालाई अनिर्धारित बुद्धिको निरपेक्ष मूल्यद्वारा प्रतिस्थापन गर्न गाह्रो हुन्छ।

जबसम्म मानिस जीवनमा आफूलाई प्रकट गर्न चाहन्छ, आफ्नो छाप बनाउनको लागि, उसले यो इच्छाबाट पीडित हुन्छ। यदि उसले आफ्नो इच्छा पूरा गर्न व्यवस्थित गर्यो भने, अर्कोले उसलाई पछाडि धकेल्नेछ, र यस्तै। यसैले, मानिसमा, कुनै पनि प्रकारको हारले उसको लागि कुनै पनि पहिचान संकट बनाउँछ, चाहे उसको स्थिति जस्तोसुकै होस्, किनकि पहिचानको समस्या सफलताको समस्या होइन, तर विवेकको समस्या हो। , अर्थात् वास्तविक बुद्धिको समस्या भन्नु हो ।

आफ्नो जीवनकालमा जो मानिसले थाहा पाउँछ कि वास्तविक बौद्धिकताले बुद्धिलाई ओभरहेड्ग गर्छ, पहिले नै पहिचानको समस्याबाट कम पीडित हुन थाल्छ, यद्यपि उसले अझै पनि वास्तविक रचनात्मकताको अभावबाट पीडित हुन सक्छ, आफूले प्रकट गर्न सक्ने जस्तो महसुस गर्छ। जब उसको पहिचानले उसलाई उपयुक्त जीवन शैलीसँग मेल खान्छ तब मात्र उसले महसुस गर्नेछ कि रचनात्मकताले असंख्य रूपहरू लिन सक्छ, र प्रत्येक मानिससँग उसलाई उपयुक्त हुने रचनात्मकताको रूप हुन्छ। र यस रूपबाट उसले आफ्नो इच्छा शरीर र आफ्नो रचनात्मक बुद्धिको सन्दर्भमा पूर्ण सद्भावमा बाँच्न सक्छ।

सृजनात्मक हुनुको अर्थ संसारलाई परिवर्तन गर्नु होइन, तर आफ्नो लागि उत्तम तरिकाले गर्नु हो, ताकि भित्री संसारलाई बाहिरी बनाइयोस्। संसार यसरी परिवर्तन हुन्छ: सधैं भित्रबाट, कहिल्यै विपरीत दिशामा। ओभरमाइन्डले पहिचानको समस्या महसुस गर्न थाल्छ। उसले देख्छ कि ऊ जे छ त्यो अझै पनि केही हदसम्म छ। तर उसले यो पनि देख्छ कि जसरी उसको शरीर परिवर्तन हुन्छ, उसको चेतना बढ्दै जान्छ र पहिचानको समस्या बिस्तारै हराउँदै जान्छ, पहिलेको अचेतन अहंकारको सतहमा।

ओभरमाइन्डमा पहिचानको समस्याको क्रमशः उन्मूलनले अन्ततः उसलाई आफ्नो जीवनलाई वास्तवमै देखेको रूपमा बाँच्न, र आफ्नो बारेमा राम्रो र राम्रो हुन अनुमति दिन्छ। मानिसमा पहिचानको पीडा जत्तिकै कठिन केही छैन। किनभने ऊ वास्तवमा भ्रामक रूपहरूबाट ग्रस्त छ, अर्थात् उसले स्क्रयाचबाट सिर्जना गरेको कारणले गर्दा, वास्तवमा ऊ बुद्धिमान नभएको कारणले गर्दा, अर्थात् उहाँमा रहेको सृजनात्मक बुद्धिप्रति सचेत हुनु हो।

पहिचानको एउटा पक्ष कतिपय अवस्थामा शर्म, अरूमा अप्ठ्यारो, अधिकांशमा असुरक्षा हो। सामाजिक चिन्तनको जालमा कैद भएको सामाजिक प्रतिबिम्ब मात्रै हुँदा असल नैतिकता भएको मानिस किन लाजमा बाँच्ने ? अरूले के सोचिरहेको हुन सक्छ तुरुन्तै छुटकारा पाउन अहंकारको असक्षमताबाट आउने अप्ठ्यारोमा पनि त्यस्तै हुन्छ। यदि लज्जित अहंकारले अरूले सोच्न सक्ने कुराबाट मुक्त भयो भने, उसको लज्जा हट्नेछ र उसले छिटो आफ्नो वास्तविक पहिचानमा पहुँच गर्न सक्छ, अर्थात्, यो मनको अवस्था जसले मानिसलाई सधैं आफ्नो दिनको उज्यालोमा देख्छ।

पहिचानको समस्या मानिसमा केन्द्रितताको अभावबाट उत्पन्न हुन्छ। र यो अनुपस्थितिले बुद्धिको प्रवेश गर्ने शक्तिलाई घटाउँछ, जसले मानिसलाई आफ्नो बुद्धिको दास बनाउँछ, आफैंको त्यो भागको जसलाई दिमागको नियम वा दिमागको तंत्र थाहा छैन। जसले गर्दा मानिस, आफ्नो अनुभवमा छाडेर, आफ्नो बुद्धिमा प्रकाशको अभाव हुन्छ र मानिसको प्रकृतिको बारेमा अरूको विचार स्वीकार गर्न बाध्य हुन्छ।

यदि मानिसले आफ्नो बारेमा आश्चर्यचकित गर्छ भने, यदि यो अर्को मानिस उसको जस्तै स्थितिमा छ भने अर्को मानिसले उसलाई कसरी ज्ञान दिन सम्भव छ? तर मानिसले यो महसुस गर्दैन, र घटनाहरूद्वारा अहंकार विरुद्ध लगाएको दबाब अनुसार उसको पहिचानको समस्या बिग्रन्छ।

मनमा रहेको अहंकार निस्सन्देह यसको सोच्ने तरिकामा फसेको छ जुन यसको वास्तविक बुद्धिमा समायोजित हुँदैन। र यो सोच्ने तरिका उसको बौद्धिकताको वास्तविकताको विरोधाभास हो, किनकि यदि उसले आफ्नो बौद्धिकताको वास्तविकता आफ्नो अन्तर्ज्ञान मार्फत बुझ्यो भने, उदाहरणका लागि, उसले यसको वास्तविकतालाई अस्वीकार गर्ने पहिलो व्यक्ति हुनेछ, किनकि बुद्धिको अन्तर्ज्ञानमा विश्वास छैन, उसले यसलाई आफैंको तर्कहीन भागको रूपमा हेर्छ। र बुद्धि तर्कसंगत वा कथित तर्कसंगत भएकोले, यसको विपरित कुनै पनि कुरालाई बुद्धिको रूपमा मान्यता दिन लायक छैन। र अझै, अन्तर्ज्ञान वास्तवमा वास्तविक बुद्धि को एक अभिव्यक्ति हो, तर यो अभिव्यक्ति अझै पनि अहंकार को लागी यसको महत्व र बुद्धि बुझ्न सक्षम हुन धेरै कमजोर छ। त्यसपछि ऊ आफ्नो तर्कमा फर्कन्छ र आफ्नो पहिचानको समस्यामा प्रकाश पार्न सक्ने दिमागको सूक्ष्म संयन्त्रहरू पत्ता लगाउने अवसर गुमाउँछ।

तर पहिचानको समस्या मानिसमा रहिरहन्छ, जबसम्म बुद्धिले नछोड्छ र अहंकारले आफ्नो कुरा सुन्दैन, आन्तरिक रूपमा। यदि अहंकार आफ्नो भित्रको वास्तविक बुद्धिको प्रकृति र रूपको लागि संवेदनशील छ भने, यो बिस्तारै समायोजित हुन्छ र त्यो बुद्धिमा आफ्नो घर बनाउँछ। समय बित्दै जाँदा, ऊ त्यहाँ नियमित रूपमा जान्छ, र उसको पहिचान समस्या हट्दै जान्छ, किनकि उसले आफूलाई सोचेको सबै उसको वास्तविक बुद्धिको मनोवैज्ञानिक र मानसिक विकृति मात्र थियो, आफ्नो तर्कको उच्च पर्खालहरू पार गर्न असक्षम थियो।

एउटा जटिल समाजमा, जसरी हामी जान्दछौं, केवल अहंकारको भित्री शक्ति, यसको वास्तविक बुद्धिले यसलाई विचारको छाल माथि उठाउन सक्छ र यसको वास्तविक पहिचानको चट्टानमा स्थापित गर्न सक्छ। र जति धेरै समाज विघटन हुँदै जान्छ, यसको परम्परागत मूल्य मान्यताहरू जति क्षतविक्षत हुँदै जान्छ, उति नै अहंकार विनाशको बाटोमा जान्छ, किनकि आधुनिकताको बढ्दो छक्कलाग्दो घटनाको सामना गर्दै उसँग उभिने औपचारिक सामाजिक मचान छैन। जीवन।

तर अहंकार सँधै ती व्यक्तिहरूको कुरा सुन्न तयार हुँदैन जसले यसलाई आफ्नै रहस्य बुझ्नको लागि आवश्यक कुञ्जीहरू दिन सक्छ। किनभने उसको मनोवैज्ञानिक विकृतिले उसलाई पहिले नै सबै कुरामा प्रश्न गर्न पुर्‍याउँछ जुन उसको व्यक्तिपरक सोचाइसँग मेल खाँदैन। यसकारण अहंकारलाई उसले अगाडि देख्न अस्वीकार गरेकोमा धेरै दोष दिन सकिँदैन, तर आज उसले अगाडि देख्न नसके पनि भोलि उसमा ऊर्जाको प्रवेशको मात्रा अनुसार यसको दृष्टि फराकिलो हुन्छ भन्ने महसुस गर्न सकिन्छ।

किनभने वास्तवमा अहंकारले आफ्नै प्रयासले आफ्नो पहिचानको पर्खाललाई जित्न सक्दैन, तर दुःखद्वारा ल्याउने आत्मा हो, अर्थात् यसको प्रकाशको प्रवेशद्वारा, दर्ता गर्न, बुद्धिभन्दा परको कम्पन हो। बुद्धि को। र यो कम्पनात्मक झटका अन्त्यको सुरुवात हुन्छ।

त्यहाँ कम घमण्डी अहंकारहरू छन् जसले वास्तविकतामा खुल्छन्, किनभने एक प्रकारको नम्रताले उनीहरूलाई पहिले नै उनीहरूको आफ्नै प्रकाशमा पुर्‍याउँछ। अर्कोतर्फ, यो उज्यालो, यो राम्रो धागो पार गर्नमा अहंकारहरू पनि छन्। र यो ती अहंकारहरू हुन् जुन ठूला मोडहरू, ठूला असफलताहरू जसले तिनीहरूलाई बाहिर निकाल्छ र तिनीहरूलाई अझ यथार्थवादी बनाउँदछ।

पहिचान संकट मानिसको अपरिपक्कता संग पहिचान गरिएको छ। साँचो पहिचानले वास्तविक परिपक्कताको विकास देखाउँछ।

आत्मा आफ्नो कार्यमा अहंकारबाट स्वतन्त्र छ, र पछिको राम्रो खेल छ, जबसम्म यो घरमा बलियो महसुस गर्दैन। यो क्षण हो कि अहंकारले थाहा छैन। र जब उसले देखाउँछ, उसले महसुस गर्छ कि उसको घमण्ड, उसको गर्व, आफूसँग भएको मोह, आफ्ना विचारहरू, दबाबमा अण्डा जस्तै फुट्छ।

आत्माको पीडाको आफ्नै कारणहरू छन् जुन अहंकारले सुरुमा बुझ्न सक्दैन, तर यसले पनि बाँच्न मद्दत गर्न सक्दैन। काम गर्ने आत्मा हो। यो उनको लागि एक चरणबाट अर्को चरणमा सर्ने समय हो। पहिचानको समस्या, जुन उसले सुरुमा अनुभव गर्यो, आफैलाई पुन: स्थापित गर्दछ, र उनको गर्व बच्चाको खेल जस्तै पतन हुन्छ। अहंकार बढी होस् वा कम गर्व होस्, यो सबै असुरक्षामा आउँछ। अक्सर एक तथाकथित " ठोस", "बलियो" अहंकारको सामना गर्दछ , जसको लागि वास्तविक शुद्ध काल्पनिक हो; यी अहंकारहरूले उनीहरूको पहिचानमा सबैभन्दा बढी प्रभाव पार्छ, जब आत्माले मानसिक र भावनात्मक कम्पन गर्छ, जीवन घटनाहरूको दबाबमा जुन अहंकारले अब नियन्त्रण गर्न सक्दैन।

त्यहाँ, यी कठिन अनुभवहरूको समयमा, अहंकारले आफूलाई आफ्नो कमजोरीको वास्तविक प्रकाशमा देख्न थाल्छ। त्यहाँ उसले देख्छ कि उसको गलत पहिचानको सुरक्षा, जहाँ उसको बुद्धिको घमण्ड प्रबल थियो, प्रकाशको कम्पनकारी दबाबमा फुटेको छ। तब उसको बारेमा भनिन्छ कि ऊ परिवर्तन हुँदैछ, ऊ अब उस्तै छैन वा उसले पीडा भोगिरहेको छ। र यो केवल शुरुवात हो, किनकि जब आत्माले झुटो पहिचानको पर्खाल फाट्न थाल्छ, उसले आफ्नो काम रोक्दैन। किनकि मानिसमा चेतना, बुद्धि र साँचो इच्छा र प्रेमको अवतरणको समय आएको छ।

आफ्नो झूटो पहिचानबाट बलियो महसुस गर्ने अहंकार, कम्पन झटका महसुस हुँदा नर्कट जस्तै कमजोर महसुस गर्दछ। र यो पछि मात्र हो कि उसले आफ्नो शक्तिहरू, आत्माको शक्तिहरू, र आफ्नो इच्छा शरीरको झूटो शक्ति होइन, भावना र तल्लो दिमागलाई पोषण गर्ने स्वरूपमा पुन: प्राप्त गर्दछ।

मानिसमा पहिचान संकट आत्माको प्रकाशको लागि अहंकारको प्रतिरोधसँग मेल खान्छ। यो पत्राचारले अहंकारको जीवनमा यस प्रतिरोधको समानुपातिक पीडा समावेश गर्दछ। र सबै प्रतिरोध दर्ता गरिएको छ, यद्यपि यो मनोवैज्ञानिक वा प्रतीकात्मक वा दार्शनिक रूपमा अहंकार द्वारा बुझिएको छ। किनभने आत्माको लागि, मानिसमा सबै चीज ऊर्जा हो, तर मानिसको लागि, सबै प्रतीक हो। यही कारणले मानिसलाई हेर्न धेरै गाह्रो हुन्छ, किनकि उसले यी रूपहरूबाट मुक्त भएपछि के देख्नेछ, त्यो कम्पन मार्फत हुनेछ, रूपको प्रतीकबाट होइन। यसैले यो भनिन्छ कि वास्तविक रूपले बुझ्दैन, तर कम्पनद्वारा चिनिन्छ जसले आफैलाई व्यक्त गर्नको लागि रूपलाई उत्पन्न गर्दछ र सिर्जना गर्दछ।

पहिचानको समस्याले जहिले पनि प्रतीकविज्ञानको अधिशेषलाई आह्वान गर्छ, त्यो भनेको मानिसमा व्यक्तिपरक विचार-रूपहरू भन्नु हो। यो अधिशेष, कुनै पनि समयमा, विचार-स्वरूप प्रतीक मार्फत अहंकारलाई सम्पर्क गर्ने आत्माको प्रयाससँग मेल खान्छ, किनकि यो मन भित्र अहंकारमा विकसित गर्ने एकमात्र माध्यम हो।

अहंले गहिरो कारणहरू नबुझेको महसुस गर्छ, कि यसले आफैंमा आफूलाई भेट्न खोज्छ। तर उहाँ अझै पनि आफ्नो विचार-रूप, आफ्ना भावनाहरूको बन्दी हुनुहुन्छ, उहाँ आफ्नो आन्दोलनमा, आफ्नो आन्दोलनमा आफूलाई विश्वास गर्नुहुन्छ! अर्थात् यो अनुसन्धान प्रक्रिया आफूबाट मात्रै निस्कन्छ भन्ने उनको विश्वास छ । र यो यसको Achilles 'हिल हो, किनभने अहंकार सही र गलतको भ्रममा हुन्छ, स्वतन्त्र इच्छाको भ्रममा हुन्छ।
जब आत्माको ऊर्जा घुस्छ र गलत पहिचानको अवरोधलाई तोड्छ, तब अहंकारले बुझ्छ कि अब उसको लागि सही हुनको लागि बिन्दु होइन, तर उसको वास्तविक बुद्धिमा पहुँच छ। त्यसपछि उसले बुझ्न थाल्छ। र उसले जे बुझ्छ उही बुद्धिमा नभएकाहरूले बुझ्दैनन्, तिनीहरूको राम्रो इच्छा जस्तोसुकै होस्। किनकि सबै कुरा प्रतीक बाहिर छ, सबै कुरा **कम्पनशील छ** ।

आवरण" *(आवरण)* तान्दैन , जबकि आत्माले अर्कोमा काम गर्दछ। दुई बीच पत्राचार छ, र व्यक्तित्व लाभार्थी छ। किनभने व्यक्तित्व सधैं आत्मा र अहंकार बीचको खाडलको शिकार हुन्छ।

जबसम्म मानिसमा पहिचानको समस्या रहन्छ, तबसम्म ऊ खुसी हुन सक्दैन। किनकि उसको जीवनमा विभाजन छ, सतहमा उसको भौतिक जीवन राम्रो चलिरहेको जस्तो लागे पनि। यो केवल आफैंको एकताको अनुपातमा राम्रोसँग जान सक्छ।

आधुनिक मानिसमा पहिचान संकटले उनीहरूलाई सन्तुलनको लागि ठूलो चाहना जगाउनको लागि पहिले नै पर्याप्त अवरोधहरू भोगेकाहरूलाई मात्र लाभदायक रूपमा असर गर्छ। तर सन्तुलनको यो चाहना तब मात्र पूर्ण रूपमा साकार हुन सक्छ जब अहंकारले आत्माको राम्रो उर्जालाई हेरफेर गर्नको लागि यातनाका साधनहरू अलग गरेको हुन्छ। मानव जीवनको क्षेत्रमा जहाँ ठूलो आध्यात्मिकता छ, पहिचान संकट जति तीव्र हुन सक्छ, यदि त्यो भन्दा बढी होइन, जहाँ व्यक्तिले यो भित्री चीजको लागि अहंकारको यो ठूलो संवेदनशीलता सामना गर्दैन जसले उसलाई बढ्दो अध्यात्मतर्फ अकल्पनीय रूपमा धकेल्छ। ठूलो, अधिक र अधिक पछि खोजिएको र अन्ततः अधिक र अधिक अपूर्ण।

मानवताको यस वर्गका मानिसहरूले सबै रूपहरू, उच्चतम, सबैभन्दा सुन्दर पनि, आत्माको वास्तविक अनुहारलाई ढाक्छ, किनभने आत्मा अहंकारको विमान होइन; यसले असीमित रूपमा देख्छ, र जब अहं रूपसँग अति नै संलग्न हुन्छ, अध्यात्मिक रूप पनि, यसले ब्रह्माण्डीय ऊर्जामा हस्तक्षेप गर्दछ जुन आत्माको माध्यमबाट जानु पर्छ र आत्माको सबै तल्लो सिद्धान्तहरूको कम्पन दर बढाउनुपर्छ। 'मानिस, ताकि उसले जीवनको मालिक बन्न सक्छ। जब सुप्रिमेन्टल (उच्च मानसिक) मानिस जीवनको मालिक हुन्छ, उसलाई अब आत्मिक रूपमा आत्माको समतलमा तान्नु आवश्यक पर्दैन, किनकि यो आत्मा हो, उसको उर्जा हो, जुन उसको तर्फ ओर्लन्छ, र उसलाई उसको प्रकाशको शक्ति हस्तान्तरण गर्दछ। ।

मानिसको आध्यात्मिक पहिचान आत्माको ऊर्जा रूप मार्फत उहाँ भित्रको उपस्थिति हो। तर यो ऊर्जामा परिवर्तनको शक्ति छैन, यद्यपि यसमा व्यक्तित्वमा रूपान्तरणको शक्ति छ।

तर व्यक्तित्वको रूपान्तरण मात्र पर्याप्त छैन, किनकि यो मानिसको अन्तिम पक्ष हो। र जबसम्म आत्मासँग अहंकार पनि एकताबद्ध हुँदैन, आध्यात्मिक व्यक्तित्वले मानिसलाई सजिलैसँग उसको नैतिकताको द्रुत रूपान्तरणमा लैजान सक्छ, यति हदसम्म कि मन र भावनात्मक भावनामा सन्तुलनको कमीले उसलाई नेतृत्व गर्न सक्छ। आध्यात्मिकता, धार्मिक कट्टरताको तीव्र संकट।

यसरी, उग्र आध्यात्मिक मानिसले पनि आफ्नो र समाजलाई हानि गर्न सक्छ। किनकि कट्टरता एक आध्यात्मिक रोग हो, र यसबाट पीडितहरूले सजिलैसँग, आध्यात्मिक स्वरूपको विशेष शोषणको कारणले, अरूमा ठूलो आस्थावान बनाउनको लागि पर्याप्त बलियो आकर्षण सिर्जना गर्न सक्छन्, अर्थात्, नयाँ दासहरू भनौं, कट्टरताद्वारा उभिएको पेडस्टलमा जुन केवल आध्यात्मिक रूपमा बिरामीले मात्र राख्न सक्छ, यदि उसलाई उहाँ जस्तो अज्ञानी, तर रोगको यस रूपप्रति बढी असंवेदनशील व्यक्तिहरूको अधीनतापूर्ण विश्वासले सहयोग गरेको छ।

अधिक र अधिक पुरुषहरू, कट्टर आध्यात्मिक नभई, तिनीहरूको आध्यात्मिकताबाट धेरै प्रभावित हुन्छन् र यसको सीमाहरू, अर्थात्, रूपको भ्रमहरू जान्दैनन्। ढिलो वा ढिलो तिनीहरूले विगतमा हेर्छन् र महसुस गर्छन् कि तिनीहरू आफ्नो आध्यात्मिकताको भ्रमको शिकार भएका छन्। त्यसोभए तिनीहरूले आफूलाई अर्को आध्यात्मिक रूपमा फ्याँक्छन्, र यो सर्कस धेरै वर्षसम्म जारी रहन्छ, त्यो दिन सम्म, जबसम्म, भ्रमबाट घृणित भएर, तिनीहरू सदाको लागि यसबाट बाहिर निस्कन्छन्, र चेतना रूप भन्दा बाहिरको महसुस गर्छन्। यिनीहरूसँग रूपको सीमाभन्दा बाहिर जाने र अन्तमा उच्च मनको महान नियमहरू पत्ता लगाउने अवसर छ।

आध्यात्मिक पहिचानको संकट यस समयमा उनीहरूका लागि सम्भव छैन। किनभने उनीहरूलाई थाहा छ, आफ्नो अनुभवबाट, कि सबै कुराले अहंकारको विरुद्धमा आत्माको अनुभवलाई सेवा गर्दछ, त्यो दिनसम्म जब अहंकारले आफूमा रहेको परम चेतना (उच्च मन) जान्नको लागि अनुभवको आवश्यकता छोड्दैन।

आध्यात्मिक पहिचानको संकट आधुनिक समयको संकट बन्दै गइरहेको छ । किनभने मानिस अब प्रविधि र विज्ञानमा मात्र बाँच्न सक्दैन। उसलाई आफ्नो नजिकको अर्को चीज चाहिन्छ, र विज्ञानले उसलाई दिन सक्दैन। तर न त अर्थोडक्स धर्मको पुरानो रूप थियो। त्यसैले उसले आफूलाई के खोजिरहेको छ, वा आफूले खोजेको कुरा खोज्दैछ, र उसलाई ठ्याक्कै थाहा छैन भन्ने दृढ उद्देश्यका साथ असंख्य आध्यात्मिक वा गूढ-आध्यात्मिक साहसिक कार्यहरूमा फ्याँकिन्छ। त्यसोभए, उसको अनुभवले उसलाई सबै सम्प्रदायहरू, सबै दार्शनिक वा गूढ विद्यालयहरूको सीमिततामा ल्याउँछ, र यहाँ फेरि उसले पत्ता लगायो, यदि ऊ औसत भन्दा बढी बुद्धिमानी छ भने, त्यहाँ सीमाहरू छन् जहाँ उसले जवाफ खोज्न विश्वास गर्यो।

उसले अन्ततः आफूलाई एक्लो पाउँछ, र उसको आध्यात्मिक पहिचानको संकट झन्-झन् असहनीय हुँदै जान्छ। त्यो दिन सम्म जब उसले थाहा पाउँछ कि उसमा सबै कुरा बुद्धि, इच्छा र प्रेम छ, तर उसले खोज्ने मानिसको आँखामा लुकेको र पर्दा पत्ता लगाउनको लागि उनीहरूको कानूनको पर्याप्त जानकारी छैन। उसले कस्तो अचम्म देख्यो! जब उसले थाहा पाउँछ कि उसले आफ्नो संकटको समयमा के खोजिरहेको थियो त्यो उसको भित्रको आत्माको एक संयन्त्र मात्र हो जसले उसलाई आफैंमा, अर्थात् उसलाई ब्यूँझाउन अगाडि बढाएको थियो।

र जब यो चरण अन्ततः सुरु हुन्छ, मानिस, मानिसको अहंकार, अध्यात्मिक बनाउँछ र ऊ भित्रको सुप्रिमन्टल बुद्धिमत्ता (उच्च मन) को प्रकृति बुझ्न थाल्छ जुन जागृत हुन्छ, र उसलाई सबै मानिसहरूको भ्रमको पहिचान गराउँदछ जसले आफैलाई बाहिर खोज्छ। संसारमा सबै भन्दा राम्रो मनसायहरू, र जसलाई अझै थाहा छैन कि यो सम्पूर्ण प्रक्रिया आत्माको अनुभवको एक हिस्सा हो जसले अहंकारलाई उसको साथ कम्पन सम्पर्कमा आउन तयार गर्न प्रयोग गर्दछ।

मानिस अब आफ्नो अस्तित्वको वास्तविकतासँग सम्पर्कमा छैन। र यो सम्पर्कको हानि विश्वमा यति व्यापक छ कि यो पृथ्वीले पागलहरूले भरिएको जहाजलाई प्रतिनिधित्व गर्दछ जसलाई जहाज कहाँ जाँदैछ भनेर थाहा छैन। तिनीहरू अदृश्य शक्तिहरूको नेतृत्वमा छन्, र कसैलाई यी शक्तिहरूको उत्पत्तिको बारेमा कुनै विचार छैन, न त तिनीहरूको मनसाय। मानिस अदृश्यबाट यति धेरै शताब्दीयौंसम्म अलग भयो कि उसले वास्तविकताको धारणालाई पूर्णतया हराएको थियो। र यो चेतनाको हानि उसको अस्तित्वको समस्याको पर्खाल उठ्ने कारण हो: पहिचान। र अझै पनि समाधान उहाँको नजिक छ, र एकै समयमा धेरै टाढा। यदि उसले सुन्न नचाहेको कुरा कसरी सुन्न जान्थ्यो।

शब्दको लडाइ र विचारको लडाइ मात्र उसले छोडेको छ । के मानिस आत्मनिर्भर हुन सक्छ, यदि उसलाई थाहा छैन कि आफ्नो भाग महान छ, जबकि अर्को आफ्नो इन्द्रिय द्वारा सीमित छ, र दुई एक साथ आउन सक्छ? यदि मानिसले एक दिन यो महसुस गर्न सक्छ कि उसको लागि आफु बाहिर कोही पनि छैन, र त्यो केवल आफ्नो लागि मात्र गर्न सक्छ ... तर ऊ आफ्नो लागि बाँच्न डराउँछ, किनकी उसलाई डर लाग्छ अरूले उसको बारेमा के भन्लान्... ऊ जस्तो गरिब छ!

पुरुषहरू ती प्राणीहरू हुन् जसले भ्रमको विरुद्धको लडाइमा निरन्तर हार्छन्, किनभने तिनीहरूले यसलाई जीवित र शक्तिशाली राख्छन्। आफूलाई हानि पुर्‍याउने कुरालाई नष्ट गर्न सबैलाई डर छ। एक वास्तविक दुःस्वप्न! र सबैभन्दा खराब आउन बाँकी छ! किनभने XXth शताब्दीको मानिसले ताराहरू बीचमा घुम्ने प्राणीहरू उहाँतिर ओर्लिरहेको देख्नेछ, र जो पहिले उहाँका लागि देवताहरू थिए।

व्यक्तिगत पहिचानको समस्या ग्रहको स्तरमा जारी छ। यो समस्या तल्लो दिमाग र उच्च दिमाग बीचको सम्बन्धको अभावबाट उत्पन्न भएकोले, यसको प्रभाव विश्व स्तर र व्यक्तिगत स्तरमा महसुस हुन्छ, किनभने उच्च दिमागले मात्र मानिसलाई आफ्नो ग्रहको महान रहस्यहरू व्याख्या गर्न सक्छ। यसको पुरातन देवताहरू। जबसम्म यी देवताहरू पुरातन इतिहासको अंश हुन्, मानिसहरू तिनीहरूबाट परेशान हुँदैनन्। तर जब यी उही प्राणीहरू फर्किन्छन् र आफूलाई आधुनिक प्रकाशमा चिनिन्छन्, विश्वव्यापी स्तरमा झड्का फेरि उठ्छ, र आफ्नो वास्तविक पहिचान पत्ता लगाउन नसक्ने मानिसले आफूलाई आफ्नो झुटो पहिचान - र उसले के सोच्छ र विश्वास गर्छ - बीचमा फसेको छ। चक्रीय घटना।

यदि उसको दिमाग अनुभवको लागि खुला छ र उसले आफू भित्र वास्तविक बुद्धि प्राप्त गर्छ भने, उसलाई थाहा नभएको र थाहा नभएको ग्रहको लागि सबैभन्दा त्रासदायक घटनाहरू मध्ये एकको बारेमा आवश्यक जानकारी प्राप्त हुन्छ, मानिसले ग्रह पहिचान संकट अनुभव गर्दैन, किनकि उसले पहिले नै आफ्नो भित्र व्यक्तिगत पहिचान संकट समाधान।

मानवता इतिहास र जीवनको एक मोड तर्फ द्रुत गतिमा अगाडि बढिरहेको हुनाले, व्यक्तित्व, अर्थात् मानिस र ब्रह्माण्ड बीचको बढ्दो सिद्धिको सम्बन्धलाई स्थापित गर्नुपर्दछ किनभने यो वास्तविक व्यक्तित्वबाट भएको कम्पन हो जुन मानिसमा भेटिन्छ। आफ्नो वास्तविक पहिचान प्रकट गरेको छ। र जबसम्म यो वास्तविक पहिचान स्थिर हुँदैन, व्यक्तित्व पूर्णतया सिद्ध हुँदैन, र मानिस " परिपक्क" हो भन्न सक्दैन , अर्थात् कुनै पनि व्यक्तिगत वा संसारको घटनामा विचलित नभई सामना गर्न सक्षम छ, किनभने उसलाई पहिले नै थाहा छ। र उसलाई यसको कारण थाहा छ।

जब हामी सामान्य रूपमा पहिचान संकटको बारेमा कुरा गर्छौं, हामी यसको बारेमा मनोवैज्ञानिक रूपमा कुरा गरिरहेका छौं, यो अर्थमा कि हामी मानिस र समाज बीचको सम्बन्धलाई परिभाषित गर्न खोजिरहेका छौं। तर पहिचान संकट त्यो भन्दा धेरै गहिरो जान्छ। यो अब सामाजिक मानिस होइन जो मापनको छडी बन्छ, सामान्यता जुन हामीले हासिल गर्नुपर्छ। यसको विपरित, सामान्यतालाई स्थानान्तरण गरिनु पर्छ, अर्थात् आफैंलाई पुन: प्राप्ति भन्नु हो।

जब मानिसले महसुस गर्न थाल्छ कि उसको वास्तविक पहिचान कोष्ठकमा सामान्य मानिसको सामान्य पहिचान भन्दा माथि छ, उसले दुईवटा कुरा महसुस गर्छ। पहिलो, सामान्य मानिसलाई चिन्ता गर्ने कुराले अब उसलाई चिन्ता गर्दैन; र जुनसुकै सामान्य ग्रहलाई धड्काउँछ, प्यारेन्टेटिक रूपमा, सामान्य हो। त्यसपछि वास्तविक पहिचानको घटना, यस परिप्रेक्ष्यबाट हेर्दा, झन् धेरै महत्त्वपूर्ण हुँदै जान्छ, किनभने यसले निर्धारण गर्दछ कि कुन मानिसले सामान्य वा अचेतन मानिसको सामान्य कमजोरीहरूलाई जित्न सक्छ, र थप रूपमा, यो निर्धारण गर्दछ कि जो मानिस सामान्य छैन - त्यो। भन्नको लागि, अचेतन र तुलनात्मक रूपमा सन्तुलित मानिसको हदसम्म - ग्रहीय क्रमको दबाबलाई समर्थन गर्न सक्छ जसले सामान्य प्राणीलाई अप्ठ्यारो पार्ने र त्यस्तो मानिसलाई जन्म दिने संस्कृतिको पतन निम्त्याउने खतरा हुन्छ।

आफ्नो वास्तविक पहिचान पत्ता लगाउने मानिस निर्विवाद रूपमा सबै प्रकारका मनोवैज्ञानिक अनुभवहरू भन्दा माथि छ जसले आफ्नो संस्कृतिको उपज हो र जो केवल आफ्नो संस्कृतिको मूल्यमान्यतामा बाँच्ने मानिसलाई विचलित पार्न सक्छ। किनभने वास्तवमा, संस्कृति एक धेरै पातलो र धेरै कमजोर क्यानभास हो जब बाह्य घटनाहरूले यसलाई बाधा पुर्‍याउँछ, अर्थात्, यसलाई थाहा नभएको वा पूर्णतया अनजान भएको वास्तविकताको सम्बन्धमा यसलाई पुन: परिभाषित गर्न। यो अनसुलझे पहिचानको घटनाको म्यानमा खतरा हो।

किनभने यदि उसले आफ्नो वास्तविक पहिचान पत्ता लगाउन सकेन भने, ऊ भावनात्मक र मानसिक रूपमा सामाजिक मनोविज्ञानको दास हुनेछ र चक्रको अन्त्यका घटनाहरूले उसको विकासको सामान्य मार्गमा बाधा पुऱ्याउँदा उसको प्राकृतिक प्रतिक्रियाहरू। यो यहाँ छ कि मानिस सामाजिक-व्यक्तिगत प्रतिक्रियाहरूबाट मुक्त हुनुपर्दछ, विश्वव्यापी समझको मोड अनुसार अनुभव बाँच्न सक्षम हुनको लागि। वास्तविक पहिचान मात्र वास्तविक मानिस र वास्तविक बुद्धिसँग मेल खान्छ। केवल वास्तविक पहिचानले कठिनाई बिना ब्रह्माण्ड घटनाहरूको व्याख्या गर्न सक्छ, एक बुद्धि अनुसार जुन मानिसको सीमित भावनाहरूबाट अलग छ।

मानिसमा पहिचान संकटको समस्या सामान्य मनोवैज्ञानिक समस्या भन्दा धेरै जीवनको समस्या हो। मानिसले आफ्नो खोजीमा बुझ्न खोज्ने मनोवैज्ञानिक कोटिहरू अब आफ्नो वास्तविक पहिचान पत्ता लगाउनेहरूलाई उपयुक्त हुँदैन, किनभने तिनीहरूसँग जीवनमा उस्तै रुचि छैन जुन उनीहरूले आफूसँग संघर्ष गर्दा थियो। उसको वास्तविक पहिचानले उसको अस्तित्वको हरेक कुनामा भरिएको छ, उसले आफूलाई आफ्नो दिमागको अर्को आयाम, आयाम वा उर्जाको विमानमा राखिएको आत्मसँग सामना गरेको भेट्टाउँछ जुन अनुकरणले मिल्दैन किनभने ऊ मनोवैज्ञानिक वर्गहरूबाट पूर्ण रूपमा स्वतन्त्र छ। वास्तविक पहिचान बिना अचेतन मानिसको भावनात्मक र मानसिक संरचना।

पहिचान संकटको घटना मानिसको लागि पीडा हो, किनकि ऊ आफूमा, आफूसँग, आफूले निरन्तर खोजेको कुरामा कहिल्यै पूर्ण रूपमा खुसी हुन सक्दैन। उसको लागि, खुशी हुनु एक अनुभव हो जुन ऊ स्थायी रूपमा बाँच्न चाहन्छ। तर उसले यो बुझ्दैन कि उसले " खुसी" भनी बोलेको हुनको लागि , तपाईंले आफ्नो बारेमा राम्रो महसुस गर्नुपर्दछ, अर्थात् बाहिरी संसारले यस सद्भावलाई बाधा पुऱ्याउन सक्षम नहुने पूर्ण आन्तरिक सद्भावमा महसुस गर्न सक्षम हुनुपर्दछ। उसले यो महसुस गर्दैन कि जीवन आफैंबाट अविभाज्य छ जबसम्म उसमा पृष्ठभूमिलाई छेड्ने आन्तरिक शक्ति छैन जसले यसलाई यसको रंग दिन्छ।

एक मानिस जसले आफ्नो वास्तविक पहिचान पत्ता लगाएको छ उसले पहिले जस्तो जीवन बाँचिरहेको छैन। रंगहरू फेरिएका छन्, जीवन अब उस्तै आकर्षक छैन, यो हरेक तहमा फरक छ। किनभने यो अन्य अघिल्लो जीवनबाट अलग गरिएको छ कि यो वास्तविक व्यक्ति हो जसले यसको सम्भावनाहरू निर्धारण गर्दछ, पछिल्लालाई उसमा जरा गाडिएको संस्कृतिले स्पष्ट रूपमा लादिएको सट्टा।

आफ्नो पहिचान पत्ता लगाउने मानिसको जीवनले निरन्तरतालाई प्रतिनिधित्व गर्दछ जुन समयले हराएको छ र जसको अब कुनै सीमा छैन, अर्थात् अन्त्य भन्नु हो। पहिले नै, यो अनुभूति जीवनको मार्ग र जीवनको रचनात्मक तरिकामा हस्तक्षेप गर्दछ। जबसम्म मानिस पहिचानबाट पीडित छ, जबसम्म उसको भित्रको वास्तविक बुद्धिसँग कुनै सम्पर्क छैन, उसले केवल आफ्ना आवश्यकताहरू पूरा गर्न सक्छ। जब ऊ उज्यालोमा हुन्छ, उसले अब आफूलाई समर्थन गर्नु पर्दैन, किनकि उसलाई पहिले नै थाहा छ, कम्पनद्वारा, आफ्नो जीवनको मोड, र यो ज्ञानले उसलाई आफ्नो आवश्यकताको लागि आवश्यक रचनात्मक ऊर्जा उत्पन्न गर्न सक्षम बनाउँछ। बाँच्नको मनोवैज्ञानिक वर्ग केवल एक रचनात्मक उर्जाको लागि ठाउँ छोड्नको लागि हराउँछ जसले मानिसका सबै स्रोतहरू प्रयोग गर्दछ र तिनीहरूलाई उसको कल्याणको निपटानमा राख्छ।

मानिसले आफ्नो पहिचानको समस्यालाई पार गर्नको लागि, उसको भित्र मनोवैज्ञानिक स्तरबाट शुद्ध बुद्धिको विमानमा मूल्यहरूको विस्थापन हुनुपर्दछ। जबकि मनोवैज्ञानिक मूल्यहरूले उसको संकटमा योगदान पुऱ्याउँछ, किनकि तिनीहरू उसको इन्द्रियहरूमा सीमित छन्, उसको बुद्धिमा जसले संवेदी सामग्रीको व्याख्या गर्दछ, उसलाई एक नाप्ने छडी चाहिन्छ जुन उसको बुद्धिको अनुमोदनको अधीनमा हुँदैन।

यहाँ छ कि उसमा पहिलो पटक एक प्रकारको विरोध उत्पन्न हुन्छ जुन उसमा प्रवेश गर्छ र जसलाई उसले रोक्न सक्दैन। जब आन्दोलन सुरु हुन्छ, यो बुद्धिको ज्योति हो जुन आफ्नो अहंकार र यसको चिमेराबाट स्वतन्त्र हुन्छ। यो यहाँ छ कि मूल्यहरु को विस्थापन महसुस गर्न थाल्छ जसको परिणाम भित्री पीडा हुन्छ, जो ब्यूँझने मानिस द्वारा बाँच्नु पर्छ अनुसार प्रकाश को बुद्धि को प्रवेश गर्न को लागी पर्याप्त छ।

मानहरूमा परिवर्तन मात्र बिस्तारै गरिन्छ, अहंकारलाई निश्चित सन्तुलन कायम राख्न अनुमति दिनको लागि। तर समयको साथ, नयाँ सन्तुलन बनाइन्छ र अहंकार अब सामान्य छैन, सामाजिक रूपमा बोल्दै; उहाँ सचेत हुनुहुन्छ। अर्थात्, उसले रूप र आदर्शको भ्रमबाट देख्छ, र आफ्नो सूक्ष्म शरीरको कम्पन, उसको व्यक्तित्व आधारित हुने स्तरहरू र उसको वास्तविक पहिचान बढाउनको लागि अधिक र अधिक व्यक्तिगत बन्न जान्छ।

मूल्यहरूको विस्थापन वास्तवमा मूल्यहरूको पतन हो, तर हामी यसलाई "विस्थापन" भन्छौं, किनभने परिवर्तनहरू भाइब्रेटरी बलसँग मिल्दोजुल्दो हुन्छन् जसले हेर्ने मोडलाई परिवर्तन गर्दछ, जसले गर्दा सोच्ने मोडले बुद्धिमा समायोजन गर्न सक्छ। मानिस मा एक उच्च केन्द्र को। जबसम्म अहंकारले कम्पनद्वारा यो पतन देखेको छैन, तबसम्म यसले विचारहरू, प्रतीकहरूको वर्गहरू छलफल गरिरहन्छ, जसले यसको गलत पहिचानको पर्खालहरू गठन गर्दछ। तर यी पर्खालहरू कमजोर हुन थालेपछि, मूल्यहरूको विस्थापनले गहिरो परिवर्तनसँग मेल खान्छ, जुन अहंकारद्वारा तर्कसंगत हुन सक्दैन। र उहाँद्वारा तर्कसंगत हुन सक्षम नहुँदा, उहाँ अन्ततः प्रकाशले प्रहार गर्नुभयो, अर्थात्, उहाँ अन्ततः स्थायी र बढ्दो तरिकामा जोडिएको छ।

उसको जीवन, त्यसपछि, चक्र द्वारा रूपान्तरण हुन्छ र चाँडै, ऊ अब यसलाई सीमामा होइन, तर सम्भावनाहरूमा बाँच्दछ। उनको पहिचानलाई उनको व्यक्तिपरक इच्छाहरूको सम्बन्धमा परिभाषित गर्नुको सट्टा उनको सम्बन्धमा बढ्दो रूपमा परिभाषित गरिएको छ। र उसले " वास्तविक र वस्तुनिष्ठ आत्म" को अर्थ के हो भनेर बुझ्न थाल्छ।

जब उसले वास्तविक र वस्तुनिष्ठ आत्मको अनुभूति गर्छ, उसले स्पष्ट रूपमा देख्छ कि यो आत्म आफै हो, साथै उसले आफू भित्रको अर्को कुरा देख्छ जुन उसले देख्दैन, तर जुन उसले वर्तमान महसुस गर्दछ, त्यहाँ उसमा केही न केही जान्छ। केहि बुद्धिमान, स्थायी र निरन्तर उपस्थित। केहि जसले आफ्नो आँखाले हेर्छ, र संसारलाई जस्तै व्याख्या गर्दछ, र अहंकारले यसलाई पहिले देखेको जस्तो होइन।

" मानसिक" हो भन्दैनौं , हामी भन्छौं कि उहाँ " सुपरमेन्टल (उच्च मानसिक) हुनुहुन्छ" अर्थात् उसले जान्नको लागि अब सोच्न आवश्यक छैन। पहिचानको पीडा उहाँबाट यति टाढा छ, उसको अनुभवबाट, कि जब उसले आफ्नो विगतलाई फर्केर हेर्छ, र आफू अहिले के छ भनी देख्छ र आफू के थियो त्योसँग तुलना गर्दा ऊ छक्क पर्छ।

अध्याय २

डाउनवर्ड इभोलुसन र अपवर्ड इभोलुसन *BdM-RG #62A* (परिमार्जित)

ठीक छ, त्यसैले म मानिसको विकासलाई अलग गर्छु, म उसलाई तलको वक्र र माथिको वक्र ठीक दिन्छु। ? डाउनवर्ड कर्भलाई म "इन्भोल्युसन" भन्छु, माथिको वक्रलाई म इभोलुसन भन्छु। र आज मानिस यी वक्रहरूको मिलन बिन्दुमा छ। यदि तपाइँ चाहनुहुन्छ भने मिति राखौं: 1969। यदि हामीले विकासलाई हेर्ने हो भने - डार्विनवादी दृष्टिकोणबाट होइन - तर एक गुप्त दृष्टिकोणबाट, अर्को शब्दमा मानिसको भित्री अनुसन्धान अनुसार र यदि हामी समय मा फर्केर गयौं भने, हामी त्यहाँ बाह्र हजार वर्ष पहिलेको पतन पत्ता लगाउन सक्छौं। एक महान सभ्यता को जसलाई एटलान्टिस को नाम दिइएको थियो।

त्यसैले यो एक समय थियो जब मानिसले तीव्रताका साथ सूक्ष्म शरीर भनिन्छ जुन उसको चेतनाको एक पक्ष हो, जुन उसको चेतनाको एक सूक्ष्म वाहन हो, जुन मनोवैज्ञानिक भावनात्मक सबैसँग प्रत्यक्ष रूपमा सम्बन्धित छ। र त्यसपछि यो सभ्यताको विनाश पछि आजसम्म, मानिसले आफ्नो चेतनाको अर्को भागको विकास गर्यो, जसलाई गुप्त रूपमा निम्न मानसिक चेतनाको विकास भन्न सकिन्छ, जसले बुद्धिको धेरै उन्नत विकासलाई जन्म दियो, जुन आज मानिसले प्रयोग गर्दछ। भौतिक संसार बुझ्न।

र यस ग्रहमा 1969 देखि, मानव चेतनामा एक नयाँ घटना भएको छ जसलाई फ्युजनको नाम दिन सकिन्छ वा जसलाई पृथ्वीमा परापरात्मक चेतना (उच्च मन) को जागरणको नाम दिन सकिन्छ। र संसारमा यस्ता पुरुषहरू छन् जसले तल्लो दिमागको स्तरमा काम गर्न बन्द गरिसकेका छन्, त्यसैले बुद्धिको, र जसले चेतनाको अर्को तहको विकास गर्न थालेका छन् जसलाई सुप्रिमेन्टल चेतना (उच्च मन) भनिन्छ। र यी पुरुषहरूले संकायहरू विकास गरेका छन् जुन विकासको प्रक्रियामा छन् र जुन तिनीहरूले पनि विकासको अर्को चक्रसँग मेल खानेछन्, जसलाई छैठौं मूल-दौड भन्न सकिन्छ।

गुप्त रूपमा भन्नुपर्दा, जब हामी मानिसको विकासको बारेमा कुरा गर्छौं, हामी एटलान्टिसको बारेमा कुरा गर्दैछौं जुन यसको उप-दौडहरूको साथ चौथो रूट-दौड थियो, इन्डो-युरोपियन दौडहरू जसको हामी भाग हौं, जुन पाँचौं रूट-दौडको भाग हो। र यसको उप-दौडहरू। र अब संसारमा नयाँ रूट-दौडको सुरुवात छ जसले यसको उप-दौड पनि दिनेछ। र अन्ततः त्यहाँ सातौं जरा-दौड हुनेछ जसले मानिसलाई आफ्नो भौतिक शरीरको जैविक प्रयोगको आवश्यकता नपर्ने पर्याप्त रूपमा उन्नत विकासको स्तरमा पुग्न सक्षम बनाउँछ। तर हामी अहिले यससँग व्यवहार गरिरहेका छैनौं, त्यसैले हामी छैठौं मूल-दौडसँग व्यवहार गर्दैछौं जसले शारीरिक जातिलाई प्रतिनिधित्व गर्दैन, तर जसले भविष्यको मानवताको नयाँ मानसिक चेतनाको विशुद्ध मनोवैज्ञानिक पक्षलाई प्रतिनिधित्व गर्दछ।

यो स्पष्ट छ कि यस विमानमा मानिसको विकासलाई बुझ्नको लागि, उल्टो भर्टेक्सको बिन्दुबाट यसको अन्तिमता तर्फ, जुन हामीले प्राप्त गरेको जानकारी अनुसार सायद दुई हजार पाँच सय वर्ष छ, यो स्पष्ट छ कि मानिसले पार गर्न लागेको छ। चेतनाको बिल्कुल असाधारण चरणहरू मार्फत, अर्थात् म्यान अफ द इन्डो-युरोपियन रेसको तुलनामा म्यान अफ एटलान्टिस जति सीमित थियो, आजको म्यान अफ द म्यान अफ द अर्कोको तुलनामा सीमित छ र सीमित हुनेछ। अरविन्दोद्वारा भविष्यवाणी गरिएको पृथ्वीमा अतिपरम चेतना (उच्च मन) को विकास ।

सुप्रिमेन्टल चेतना (उच्च मन) को विकासमा चाखलाग्दो कुरा के छ: यो हो कि आज जति हामी मानव, तर्कसंगत मानव, कार्टेसियन मानव, पाँचौं मूल-जातिका धेरै प्रतिबिम्बित मानवहरू, जति हाम्रो प्रवृत्ति छ। हाम्रो दिमाग हाम्रो अहंकार द्वारा शासित छ भन्ने विश्वास गर्न, भोलि मानिसले पत्ता लगाउनेछ कि मानव मन अहंकार द्वारा शासित छैन, कि मानव दिमाग यसको मनोवैज्ञानिक परिभाषा मा छ, अहंकार को प्रतिबिम्बित अभिव्यक्ति, र यसको स्रोत हो। समानान्तर संसारहरूमा अवस्थित छ जुन क्षणको लागि "मानसिक संसार" भन्न सकिन्छ, तर जुन पछि "वास्तुकला संसार" भनिनेछ ।

अर्को शब्दमा, मेरो मतलब यो हो कि मानिसले जति धेरै समस्या वा क्षमता वा आफ्नो विचारको स्रोत पत्ता लगाउन स्वतन्त्रता लिन्छ, उति नै समानान्तर संसारहरूसँग टेलिसाइकिक संचारमा प्रवेश गर्न सुरु गर्न सम्भव हुनेछ। अन्ततः विकासको क्रममा पुग्न, विश्व स्तरमा, दौडको विश्वव्यापी स्तरमा, जीवनको रहस्यहरू तुरुन्तै डिकोड गर्न सक्षम हुन, दुबै पदार्थको दायरामा र आत्माको सूक्ष्म क्षेत्रमा भन्दा। आत्माको मानसिक क्षेत्र। अर्को शब्दमा भन्नुपर्दा, मेरो मतलब के हो भने, उहाँ आइपुग्नु भएको छ, मानिस, यस्तो बिन्दुमा जहाँ आज उसको लागि पर्याप्त मानसिक चेतनाको स्थितिमा पुग्न सम्भव छ।

र जब म आत्म-पर्याप्त मानसिक जागरूकता भन्छु, मेरो मतलब सत्यको मनोवैज्ञानिक मूल्यमा आधारित मानसिक जागरूकता होइन। सत्य एक शब्द हो, यो एक व्यक्तिगत विश्वास वा एक सामाजिक विश्वास, वा एक सामूहिक समाजशास्त्रीय विश्वास हो, जुन व्यक्ति को रूप मा मान्छे को भावनात्मक आवश्यकताहरु को भाग हो वा एक सामूहिक को रूप मा समाज को दुनिया मा प्रभुत्व को सुनिश्चित करने को लागी।

तर मानवताको भावी चेतनाको विकासको सन्दर्भमा, सत्यको घटना वा यसको मनोवैज्ञानिक समकक्ष, वा यसको भावनात्मक मूल्य, मानिसले अब आफ्नो विवेकको भावनात्मकता प्रयोग गर्न सक्षम नहुने साधारण कारणको लागि बिल्कुल बेकार हुनेछ। उनको ज्ञानको मनोवैज्ञानिक मूल्याङ्कन। उसले अब आफ्नो आत्मको मानसिक सुरक्षाको विकासको लागि आफ्नो अन्तस्करणको भावनात्मकता प्रयोग गर्नु पर्दैन।
त्यसैले मानिस मानसिक विमानमा व्यायाम गर्न सक्षम हुन दिमागमा पूर्ण रूपमा स्वतन्त्र हुनेछ, अभिव्यक्ति, विस्तार र विश्वव्यापी चेतनाको अन्ततः अनन्त विषयवस्तुहरूको परिभाषा जुन संसारका सबै जातिहरूको भाग हो। ब्रह्माण्डका सबै जातिहरू, र जुन वास्तवमा आत्माको अपरिवर्तनीय एकताको अंश हो, यसको पूर्ण परिभाषामा, प्रकाशको मूल स्रोत र ब्रह्माण्डमा यसको आन्दोलनको रूपमा।

त्यसोभए मानवताको विकासमा एक बिन्दु आउनेछ जब अन्ततः अहंकारले आत्मको चेतनामा हराएको समयको लागि बनाइनेछ, र जहाँ आत्म अन्ततः आफ्नो चेतनामा परिचय गरेर यसको मनोवैज्ञानिक परिभाषाको सम्भावित सीमामा पुग्नेछ। उसको शुद्ध दिमागको रचनात्मक क्षमता, त्यो उसको आत्माको हो।

र हामी पृथ्वीमा, विभिन्न जातिहरूमा, विभिन्न राष्ट्रहरूमा, विभिन्न समयमा, फ्युजनलाई थाहा पाउने व्यक्तिहरू, अर्थात्, जसले ज्ञानको स्रोतहरू तर्फ तत्काल गुरुत्वाकर्षण गर्न सक्षम हुनेछन् भनेर पत्ता लगाउनेछौं। विश्व विज्ञान, प्रविधि, प्राविधिक, चिकित्सा, मनोविज्ञान वा इतिहासको सन्दर्भमा, पूर्ण रूपमा परास्त हुनेछ। के को लागि ? किनभने मानिसको विकास पछि पहिलो पटक, आत्माको पदार्थमा अवतरण भएदेखि पहिलो पटक र भौतिकसँग आत्माको गठबन्धन पछि पहिलो पटक, मानिसले अन्ततः यसको पूर्ण ज्ञान बोक्ने क्षमता प्राप्त गरेको छ। ।

जसलाई म निरपेक्ष ज्ञान भन्छु त्यो भनेको मानव मनको आफ्नै प्रकाशलाई वहन गर्न र ग्रहण गर्न सक्ने क्षमता हो। पूर्ण ज्ञान एक संकाय होइन। पूर्ण ज्ञान पूर्वनिर्धारित होइन। पूर्ण ज्ञान आवश्यक छैन। निरपेक्ष ज्ञान एक सुधारात्मक विकासवादी अन्त्य हो, त्यो ब्रह्माण्डमा प्रकाशको गतिविधिको ठूलो क्षेत्रको अंश हो र जसले सबै क्षेत्रहरू, सबै बौद्धिक उदाहरणहरूलाई सक्षम बनाउँछ, अर्थात् - ब्रह्माण्डका सबै बौद्धिक प्रजातिहरूलाई भेट्नको लागि बताउन। उच्च मानसिक समतल, अर्थात् विकासको क्रममा सम्भवतः अनुमति दिन पर्याप्त शक्तिशाली ऊर्जाको विमानमा भन्नु हो, इथरिक शरीरको अपरिहार्य पुनरुत्थानको लागि शरीरको सामग्रीको अन्ततः गायब हुनु।

अर्थात्, मानिसमा अन्ततः विभिन्न सूर्यहरू सहितको ऊर्जावान घटकमा प्रवेश गर्ने क्षमता जसले विश्वव्यापी जीवहरू बनाउँछ, र जुन यसको आत्मा, यसको ज्योति र यसको जग हो, चलन र समझमा। परमाणु चेतनालाई कल गर्नुहोस्! त्यसोभए विकासको क्रममा त्यहाँ एक बिन्दु आउनेछ जहाँ मानिसले सोच्न नपरोकन सक्षम हुनेछ, बिना सोच्न आवश्यक छ, मानिस अन्ततः अन्तर्वार्तात्मक आर्किटेपहरू र पृथ्वीमा विश्वव्यापी चेतनाको विकासवादीहरूको मानसिक निर्माणमा स्पष्ट रूपमा हस्तक्षेप गर्न सक्षम हुनेछ। । यसको मतलब यो हो कि मानिसले अन्ततः यो महसुस गर्नेछ कि ऊ पूर्ण रूपमा एक बुद्धिमान प्राणी हो।

मानिसले बुझ्नेछ कि बुद्धिमत्ता भनेको शिक्षाको एक प्रकारको अभिव्यक्ति मात्र होइन, तर बुद्धि भनेको कुनै पनि कुरामा कुनै पनि दिमागको आधारभूत विशेषता हो। केवल हामी आज यस्तो बिन्दुमा छौं जहाँ अहंकारको रूपमा वा मानव आत्मको रूपमा, हामी विश्वव्यापी प्रतिबिम्ब, अर्थात्, इतिहास र मानवताको सम्झनाले हामीमाथि थोपेको सीमाभित्र बाँच्न बाध्य छौं।

र मानिसलाई अझै दिइएको छैन - किनभने यस क्षेत्रमा पर्याप्त विज्ञान छैन - मानिसलाई अझै पनि जान्न र बुझ्ने क्षमता दिइएको छैन कसरी उसको मानसिकताले काम गर्छ, उसको अहंकारले कसरी काम गर्छ, उसको अहंकारले कसरी काम गर्छ, र यसको विश्वव्यापी परिभाषामा बुद्धिमत्ता शब्दको अर्थ के हो, जसले गर्दा आज मानिस आफ्नो सूक्ष्म शरीरमा फसेको छ, अर्थात् उसको इन्द्रियद्वारा भन्न सकिन्छ!

उहाँ आफ्नो मौलिक र विश्वव्यापी ज्ञानको लागि प्रतिस्थापन गर्न बाध्य हुनुहुन्छ, इतिहास र विषयवस्तुले परिमार्जन गर्नको लागि एक सानो सीमित ज्ञानलाई परिमार्जन गर्नको लागि, किनकि विज्ञानका सबै सिद्धान्तहरू हुनुपर्दछ, आजको विज्ञान उपयोगी छैन भन्ने अर्थमा होइन। यसको विपरीत यो धेरै उपयोगी छ, तर यो अर्थमा कि आज विज्ञानले पनि आफ्नै उन्मूलन तर्फ आफ्नो अपरिहार्य यात्रा गर्दछ। जसरी सबै सभ्यताहरूले आफ्नै उन्मूलन तर्फ आफ्नो अपरिहार्य यात्रा गर्छन्।

तर जसरी सभ्यताले आफ्नो उन्मूलनको वास्तविकतालाई धेरै गाह्रो पाउँछ, त्यसरी नै विज्ञानलाई आफ्नै उन्मूलन प्राप्त गर्न गाह्रो हुन्छ। र यो धेरै सामान्य छ। सोच्ने प्राणी वा निश्चित चेतना भएका प्राणीहरूलाई संसारमा आफ्नो पतन वा आफ्नै विनाशको लागि कसैले सोध्न सक्दैन। हामी के हौं, हामीले के गरेका छौं, हामीले के गर्न सक्छौं, विकास गर्न, मानवतालाई विकास गर्न अनुमति दिनको लागि हामी सचेत हुन बाध्य छौं।

तर व्यक्तिको रूपमा - म व्यक्तिको रूपमा स्पष्ट रूपमा भन्दैछु - हामी अन्ततः हाम्रो ग्रहमा विश्वव्यापी र ब्रह्माण्डीय व्यवस्थाको परिस्थितिहरूको सामना गर्न बाध्य हुनेछौं, हामी आयामहरूको सामना गर्न बाध्य हुनेछौं जसले विगतमा अन्धविश्वासको ठूलो आन्दोलनहरू खडा गरेको छ। संसारमा; आन्दोलनहरू जुन विज्ञानको विकाससँगै मरेका थिए, र आन्दोलनहरू जसलाई विज्ञानले स्पष्ट रूपमा अस्वीकार गरेको थियो।

त्यसैले ब्रह्माण्ड असीमित छ भनेर बुझ्नको लागि हामी समयको साथ समीक्षा गर्न र निश्चित अनुभवहरू पुन: प्राप्त गर्न बाध्य हुनेछौं। त्यो मानव चेतना असीमित छ र त्यो मानिस आफ्नो भित्रीतामा उसको चेतना जत्तिकै शक्तिशाली छ। आजको संसारमा यो धेरै महत्त्वपूर्ण छ जहाँ हामी मनको धेरै प्रवाहहरूको चौराहेमा बाँच्न बाध्य छौं जुन, समग्र रूपमा... र जब म समग्र रूपमा भन्छु, म निश्चित रूपमा संयुक्त राज्य अमेरिकालाई हेर्दै छु जहाँ यो व्यक्तित्वसँगको टकरावमा सामूहिक अनुभवले बिस्तारै सामूहिक मनोविकृति सिर्जना गर्छ।

टेलिभिजन वा पत्रपत्रिकाहरू वा स्वतन्त्र प्रेसका विभिन्न रूपहरूद्वारा तिनीहरूको संख्यामा विस्तारित विचारहरूको धाराहरूद्वारा मानिसलाई विश्वमा अनिश्चित रूपमा बमबारी गर्न सकिँदैन। सत्य र असत्यबीचको विभिन्न टकरावबाट उत्पन्न हुने यो मानसिक र मनोवैज्ञानिक तनावलाई मानिसले सहन सक्ने अवस्था आउनेछ। पृथ्वीमा अतिवादी (उच्च मन) चेतनाको विकासमा एक बिन्दु आउनेछ जब मानिस आफैंको सम्बन्धमा वास्तविकता परिभाषित गर्न बाध्य हुनेछ। तर यो "स्वयं" हुनेछ जुन विश्वव्यापी हुनेछ, यो "स्वयं" हुनेछैन जुन आफ्नै आत्माको चंचलता वा आफ्नै अहंकारको व्यर्थता, वा आफ्नै मेरो असुरक्षामा आधारित हुनेछ।

त्यसोभए त्यस क्षणबाट, मानिसले मानव घटना, सभ्यतालाई यसको सबै पक्षहरूमा बुझ्न सक्षम हुनेछ। र ऊ अब के भइरहेको छ वा संसारमा के हुनेछ द्वारा मनोवैज्ञानिक रूपमा " भरिएको" (दुर्व्यवहार) हुनेछैन । मानिस स्वतन्त्र हुन थाल्छ। र जुन क्षणदेखि उसले स्वतन्त्र हुन थाल्छ, उसले अन्ततः जीवनलाई यसको आधारभूत गुणमा बुझ्न थाल्छ। र उसले जति धेरै विकास गर्छ, त्यति नै उसले जीवनलाई पूर्ण, अभिन्न र सिकेको तरिकामा बुझ्नेछ, जुन आज पाँचौं मूल-दौडको चेतनाको हिस्सा होइन।

किन यो सब शब्दावली? आफूलाई दिन सक्ने सबैभन्दा ठूलो निष्ठा भनेको आफैलाई सृजना गर्नु हो भन्ने कुरा बुझ्नको लागि मानिसलाई थोरै-थोरै ल्याउनु हो। हामी एक शताब्दीमा बाँचिरहेका छौं जहाँ व्यक्तिवादको लागि प्रेम, विशेष गरी पश्चिमी संसारमा, धेरै उन्नत छ। हामी अधिक र अधिक व्यक्तिवादी बनेका छौं, तर व्यक्तिवाद, यदि यो एक मनोवृत्ति हो भने, मौलिक रूपमा मानव जातिको वास्तविकतामा एकीकृत छैन। अर्को शब्दमा, रातो प्यान्टी र पहेंलो चप्पल लगाएर सडकमा हिंड्नु र न्यूयोर्कको टाइम्स स्क्वायरमा प्रेम गर्नु व्यक्तिवादको एक रूप हो। तर यो विलक्षणता हो, यो मानव चेतना को astralization को रूप हो।

मानिसले आफ्नो व्यक्तित्व कायम राख्न, शब्दको ठोस अर्थमा आफ्नो व्यक्तित्व अभिव्यक्त गर्न, जनताको संवेदनशीलतालाई बेवास्ता गर्न वा आफ्ना जनताको संवेदनशीलतालाई बेवास्ता गर्न वा आफ्नो जनसंख्याको संवेदनशीलतालाई बेवास्ता गर्न आवश्यक छैन। यो एक भ्रम हो! र यो बीसौं शताब्दीको विशेषता फेसनको भाग हो, अन्ततः यो साधारण बन्छ, अन्ततः यो मूर्ख पनि हुन्छ, अन्ततः यो बिल्कुल सौंदर्यशास्त्र को कमी छ। त्यसोभए नयाँ मानिस, पृथ्वीमा अतिवादी (उच्च मानसिक) चेतनाको विकासले, वास्तवमा, मानिसलाई अत्यन्त व्यक्तिगत तर व्यक्तिवादी चेतनाको विकास गर्न अनुमति दिनेछ।

मान्छे व्यक्तिकरण किन हुन्छ ? किनभने उहाँको चेतनाको वास्तविकता उहाँको आत्माको संलयनमा आधारित हुनेछ र मानिसहरूको आँखामा संसारमा प्रक्षेपित गरिएको छैन, विलक्षणताको साथ एक प्रकारको इश्कबाजी प्रकट गर्न। वास्तविक हुनको लागि मानिसलाई संसारभर घुम्न र सीमान्त हुनु आवश्यक छैन। उल्टो। मानिस जति धेरै सचेत हुन्छ, उ त्यति नै कम सीमान्त हुन्छ, ऊ त्यति नै वास्तविक हुन्छ र ऊ आफ्नो वास्तविकतामा उति धेरै गुमनाम हुन्छ। किनकी मानिसको वास्तविकता त्यो हो जुन उसको र उसको बीचमा जान्छ न कि उसको र अरूको बीचमा।

यदि हामीले हाम्रो ग्रहमा जरा-दौडको आवश्यक विकासलाई हेर्छौं भने, यो मानव घटनालाई थोरै बुझ्नको लागि हो। हामी समन्वयहरू स्थापना गर्छौं, यो विशुद्ध रूपमा व्यावहारिक छ, यो विशुद्ध रूपमा अपरिहार्य घटनाहरूलाई कालानुक्रमिक समझको रूपरेखा दिनको लागि हो! तर यदि हामी सचेत जातिको कुरा गर्छौं, यदि हामी सचेत मानवताको कुरा गर्छौं भने, हामी सचेत पुरुष र व्यक्तिहरूको कुरा गर्न बाध्य छौं।

पृथ्वीमा अतिवादी चेतना (उच्च मन) को विकास कुनै पनि सामूहिकताको मापनमा कहिल्यै हुनेछैन। पृथ्वीमा अतिवादी (उच्च मन) चेतनाको विकास कहिले पनि सामूहिक शक्तिको अभिव्यक्ति हुनेछैन। यो संसारमा सँधै व्यक्तिहरू हुनेछन् जो आफ्नो चेतनाको त्यो बिन्दुमा बिस्तारै, अधिक र अधिक, गुरुत्वाकर्षण गर्नेछन् जहाँ तिनीहरू आफ्नै स्रोत, तिनीहरूको आत्मा, तिनीहरूको दोहोरो, जुनसुकै रूपमा हामी यसलाई भन्न सक्छौं। यो वास्तविकतामा। मानिसको अंश हो।

तर यस दिशामा मौलिक आन्दोलन यसैमा आधारित हुनेछ: यो विचारको घटनाको बुझाइमा आधारित हुनेछ जुन विकास पछि कहिल्यै भएको छैन। यो भन्न पर्याप्त छैन: " म सोच्छु, त्यसैले म छु"। डेकार्टेसको लागि "म सोच्छु, त्यसैले म हुँ" भन्नु राम्रो थियो किनभने यो अनुभूतिको अंश थियो कि विचारमा आफैंमा एक शक्ति हुन्छ जुन व्यक्तिको स्तरमा महसुस गर्नुपर्दछ।

तर सृजनात्मक चेतनाको स्तरमा, बिन्दु तब आउनेछ जब मानिसको विचार पूर्ण रूपमा, अभिन्न रूपान्तरण हुनेछ। र मानिसले अब विकासको समयमा सोच्ने छैन। उसको विचार उसको उच्च मनको रचनात्मक अभिव्यक्तिको मोडमा रूपान्तरण हुनेछ। अनि त्यो मन पूर्ण रूपमा बन्छ टेलिसाइकिक। अर्को शब्दमा भन्नुपर्दा, मानिसले विश्वव्यापी विमानहरूसँग तत्काल सञ्चारको अनुभव गर्नेछ र सञ्चारको यो मोड अब प्रतिबिम्बित हुनेछैन। मानिसको मनमा विचार प्रतिबिम्बित हुन छोड्ने क्षण, विचार व्यक्तिपरक हुन बन्द हुन्छ। हामी अब भन्न सक्दैनौं कि मानिसले सोच्दछ, हामी भन्छौं कि मानिसले आफ्नै चेतनाको विश्वव्यापी विमानहरूसँग सञ्चार गर्दछ।

तर मानिसले यसलाई अभिन्न रूपमा बुझ्नको लागि, उसले त्यो विचारलाई महसुस गर्न आवश्यक छ, जसरी हामी यसलाई आजको कल्पना गर्छौं, जसरी आज हामी यसलाई बाँचिरहेका छौं, जसरी यो हाम्रो दिमागमा स्थिर छ, जसरी यो उत्पादित वा अनुभव गरिएको छ। हामी अचेतन अहंकारको रूपमा, हामीमा एक निश्चित अनुभूति जगाउनुपर्छ, यस अर्थमा कि मानिसले महसुस गर्न सक्षम हुनुपर्दछ कि उसको विचार आफैंमा उसलाई आफ्नै विरुद्ध विभाजित गर्दछ। जहाँसम्म उसले हस्तक्षेप र अचेतनाको कारणले उसलाई असल वा नराम्रो, सत्य र असत्यको ध्रुवताको अधीनमा राख्छ।

मानिसले आफ्नो दिमागलाई ध्रुवीकरण गर्ने क्षणदेखि, चाहे उसले नकारात्मक वा सकारात्मक समन्वयहरू स्थापित गर्यो, उसले भर्खर भौतिक सतहमा र आफूलाई ब्रह्माण्ड र विश्वव्यापी समतलमा विभाजन गरेको छ। यो धेरै महत्त्वपूर्ण छ! यो यति महत्त्वपूर्ण छ कि यो अर्को विकासको लागि आधारभूत कुञ्जी हो। के कुराले हामीलाई सधैं ध्रुवताको सम्बन्धमा हाम्रो विचार बाँच्न बाध्य बनाउँछ त्यो हाम्रो अहंकारको आधारभूत असुरक्षा हो। यो हाम्रो भावनाहरूको शक्तिशाली र पिशाच क्षमता हो। अहंको रूपमा वा अशिक्षित वा अति शिक्षित व्यक्तिको रूपमा, हामीले थाहा पाएको कुरा सहन नसक्ने हाम्रो असक्षमता हो।

संसारमा केहि थाहा नभएको मान्छे छैन। सबै पुरुषहरूलाई केहि थाहा छ तर त्यहाँ कुनै विश्वव्यापी अधिकार छैन, त्यहाँ कुनै सांस्कृतिक परिभाषा छैन, संसारमा त्यहाँ कुनै सांस्कृतिक समर्थन छैन जसले मानिसलाई केहि जान्ने समर्थन गर्न सक्छ। यस ज्ञानलाई स्थापित गर्न र मानिसको दिमागलाई त्यससँग सर्त गर्न आफैलाई केहि जान्नको अधिकार दिने संस्थाहरू छन्। यसलाई हामीले विभिन्न तहमा विज्ञान भन्छौं, यो सामान्य हो।

तर त्यहाँ कुनै विपरित आन्दोलन छैन जहाँ संसारका संस्थाहरूले मानिसलाई उसको अधिकार दिन वा फिर्ता दिन सक्छन्, अर्थात् उसलाई आफ्नो सानो आयाम फिर्ता दिनुहोस् जुन एक दिन धेरै ठूलो बन्न सक्छ। र तपाईले परीक्षा धेरै सरल तरिकाले आध्यात्मिक क्षेत्रमा, धार्मिक क्षेत्रमा लिन सक्नुहुन्छ। एक दिन, जब मानिसका केन्द्रहरू पर्याप्त रूपमा खुला हुन्छन्, उसले विज्ञानको क्षेत्रमा पनि गर्न सक्षम हुनेछ।

एक मानिस जो संसारमा छ र जो, उदाहरणका लागि, एक धर्मगुरु वा धर्ममा काम गर्ने कसैलाई भेट्न जान्छ र जसले उहाँसँग भगवानको बारेमा कुरा गर्छ, र जसले यसो भन्यो: "ठीक छ, भगवान यस्तो चीज हो, यस्तो कुरा , यस्तो कुरा" , कसैले उसलाई भन्थे: " तर तिमीले कुन अधिकारले भगवानको कुरा गर्छौ? तिमी कुन हकले भगवानको कुरा गर्छौ"...? र यदि मानिस कम विकसित छ र उसको दिमागको सृजनात्मक आयामको अंश हो भने अन्य रूपहरू बाहिर ल्याउन वा वसन्त गर्नको लागि वास्तवमा ईश्वरको रूपलाई टुक्राटुक्रा पार्न सक्छ, उसलाई परमेश्वरको संस्थागतीकरणले अझ बढी विचलित गर्नेछ। अदृश्य संसारहरूको बुझाइ।

त्यसैले म भन्छु कि मनुष्य संसारको सहारा लिएर परापरात्मक चेतना (उच्च मन)मा संसारमा प्रवेश गर्न सक्दैन। जब उसले सांसारिक सहयोगको आवश्यकताबाट आफूलाई पूर्णतया मुक्त गरिसकेपछि, र अन्तमा उसले के थाहा पाएको महसुस गर्न र सहन गर्न थाल्छ तब मानिसमा अतिपरम (उच्च मन) चेतना हुन्छ। र यसका लागि सर्त सत्य र असत्यको ध्रुवताको जालमा नफस्नु हो।

यदि मानिस साँचो र असत्यको ध्रुवताको पासोमा पर्यो भने, उसले आफ्नो विवेकलाई उत्तेजित गर्छ, उसले आफ्नो अहंकारलाई असुरक्षित बनाउँछ, र उसले वास्तविकताप्रति चरम मनोवृत्ति विकास गर्दछ। साँचो र झूटोले जान्न नसक्ने मानसिक असक्षमताको मनोवैज्ञानिक घटक मात्र प्रतिनिधित्व गर्दछ! जब तपाइँ राम्रो स्टेक खानुहुन्छ, तपाइँ आश्चर्यचकित हुनुहुन्न कि यो वास्तविक हो वा यदि यो नक्कली हो, त्यहाँ कुनै ध्रुवता छैन, त्यसैले यो राम्रो छ। तर यदि तपाईं त्यहाँ कीरा छ कि भनेर सोच्न थाल्नुभयो भने, ओह, तब तपाईंको पेटले प्रतिक्रिया दिनेछैन! र यो ज्ञानको स्तरमा, ज्ञानको स्तरमा एउटै कुरा हो।

ज्ञान तल्लो दिमागको लागि हो जुन ज्ञान उच्च दिमागको लागि हो। ज्ञान अहंकारको आवश्यकताको अंश हो जबकि जान्नु आत्मको वास्तविकताको अंश हो। त्यसैले जान्ने र जान्ने बीचमा कुनै विभाजन वा विभाजन छैन। ज्ञान चेतनाको एक स्तरको अंश हो र ज्ञान अर्को स्तरको अंश हो।

ज्ञानको क्षेत्रमा हामी केहि चीजहरूको बारेमा कुरा गर्छौं र ज्ञानको क्षेत्रमा हामी अन्य चीजहरूको बारेमा कुरा गर्छौं। दुई जना भेट्न सक्छन्, सँगै भाइचारा गर्न सक्छन् र धेरै राम्रोसँग सँगै हुन सक्छन्। चौथो तल्ला माथिको पाँचौं तल्लाको साथ सधैं राम्रो हुन्छ ... र मानिस एक बहुआयामिक प्राणी हो, तर मानिस पनि एक प्रायोगिक चेतना भएको र बाँच्ने प्राणी हो। हामीसँग पृथ्वीमा प्रयोगात्मक चेतना छ। हामीमा रचनात्मक चेतना छैन ।

आफ्नो जीवन हेर! तपाईको जीवन अनुभव हो! संसारमा प्रवेश गर्ने क्षणदेखि तपाईको जीवन निरन्तर अनुभवमा भर परेको छ, तर मानिस अनिश्चित कालसम्म अनुभवमा बाँच्न सक्दैन। एक दिन मानिसले सृजनात्मक चेतनाका साथ बाँच्नु पर्छ, त्यसबेला जीवन बाँच्न सार्थक हुन्छ, जीवन धेरै ठूलो हुन्छ, धेरै विशाल हुन्छ, यो सृजनात्मकतामा शक्तिशाली हुन्छ, र मानिसले आत्मा अनुभव बाँच्न छोड्छ। तर मानिसले अनुभव किन बाँच्छ? किनभने यो शक्तिशाली शक्तिहरूसँग जोडिएको छ - जसलाई म स्मृति भन्छु - जुन वास्तवमा तपाईले "आत्मा" भन्नुहुन्छ।

मानिस आफ्नो आत्माद्वारा बाँच्दैन, ऊ आत्मासँग जोडिएको हुन्छ, ऊ आत्माद्वारा बाँच्दछ, उसलाई आत्माद्वारा निरन्तर पिशाच गरिन्छ। पुनर्जन्मको खोजी गरेका व्यक्तिहरू वा कुनै निश्चित विगतमा फर्किने अनुसन्धान गरेका व्यक्तिहरूले आज निश्चित व्यक्तिहरू केही चीजहरूबाट पीडित छन् भन्ने कुरा राम्ररी निर्धारण गरेका छन्, किनभने अघिल्लो जीवनमा उनीहरू कारणबाट पीडित थिए। भौतिक जीवनको अगाडिबाट आएका आघातहरू भोगिरहेका वा विगतको परिस्थितिमा निसास्सिएर बसेका कारणले लिफ्ट (लिफ्ट) भित्र पस्न नसक्ने व्यक्तिहरू छन्, तिनीहरू सक्षम छैनन्... तिनीहरू निसास्सिरहेका छन्। त्यसैले मानिस आत्माको अनुभवमा बाँच्दछ।

उहाँ जीवित हुनुहुन्छ, उहाँ आफ्नो स्मृतिमा संलग्न हुनुहुन्छ, उहाँको अघिल्लो विकासवादी आन्दोलनको धेरै विशाल अचेतन स्मृति जत्तिकै धेरै विशाल स्मृति जुन उहाँ आज एक प्रयोगात्मक प्राणीको रूपमा जिउनुहुन्छ। मानिस पृथ्वीमा अनुभवबाट अनिश्चित कालसम्म बाँच्न सक्दैन! यो उनको विश्वव्यापी बुद्धिमत्ताको अपमान हो। यो मानिसको प्रकृतिसँग बिल्कुल असंगत छ कि मानिसले भन्न सक्दैन: " ठीक छ, दस वर्षमा म यस्तो काम गर्न चाहन्छु, पाँच वर्षमा म यस्तो काम गर्न चाहन्छु", यो प्रकृतिसँग बिल्कुल असंगत छ। मानिस जसलाई आफ्नो भविष्य थाहा छैन!

यो मानिसको स्वभाव संग असंबद्ध छ कि उसले आफ्नो अगाडि मानिस को प्रकृति थाहा छैन। अर्को शब्दमा भन्नुपर्दा, यो मानिसको आत्मासँग असंगत छ कि मानिसमा रहेको यो आत्मा तर्कको निर्देशन अनुसार बाँच्न बाध्य छ, किनकि भौतिक विमानमा मानिस आज एक पुस्ताको भाग हो जसको चेतना अवतरण भइरहेको छ। मानिसको चेतना वंशबाट पदार्थमा एथरिक तर्फ अन्ततः बाहिर निस्कनु पर्छ, अर्थात् ग्रहको वास्तविकताको त्यो अंश हो जुन अन्ततः संसार हो जसमा मानिसले स्वाभाविक रूपमा आफ्नो अमरता बाँच्नुपर्दछ।

मानिस पदार्थमा आएर मर्नको लागि बनेको होइन। जसलाई हामी मृत्यु भन्दछौँ, अर्थात् जसलाई हामी मानिसको वा आत्माको सूक्ष्म सतहमा फर्कन भन्छौँ, त्यो मानिसको अचेतनाको अंश हो। यो तथ्यको अंश हो कि मानिस विश्वव्यापी सर्किटहरूबाट पूर्णतया काटिएको छ जुन उसको पुस्ताको स्रोत हो, जुन उसको बुद्धिको स्रोत हो, जुन उसको जीवन शक्तिको स्रोत हो, जुन उसको ग्रहको आत्मको स्रोत हो! त्यसैले मानिस स्रोतमा फर्कनु पर्छ, तर मानिसले आत्मिक, ऐतिहासिक भ्रमको माध्यमबाट स्रोतमा फर्कन सक्दैन।

पुराना विचारहरू प्रयोग गरेर मानिस आफ्नो स्रोतमा फर्कन सक्षम हुनेछैन जसले उसलाई पदार्थको कैदी बन्न बाध्य तुल्यायो। प्रयोगात्मक चेतना भएको प्राणी बनाएको पुरानो माध्यम प्रयोग गरेर मानिस आफ्नो स्रोतमा फर्किने छैन। मानिस विश्वास गरेर आफ्नो स्रोतमा फर्कने छैन।

मानिस आफ्नो विकासको क्रममा बिस्तारै विकास गरेर आफ्नो स्रोतमा फर्कनेछ, उसलाई थाहा छ त्यसलाई समर्थन गर्ने क्षमता।

तर आजको संसारमा, हामी एक पौराणिक कथामा, हाम्रो आत्मको मनोवैज्ञानिक व्यवस्थितीकरणको लागि बर्बाद भएका छौं। हामी सबै मानवतालाई असर गर्ने मनोवैज्ञानिक मानसिक मनोवृत्तिको चपेटामा परेका छौं: विश्वास। मानिसले किन विश्वास गर्नुपर्छ? किनकी उसलाई थाहा छैन ! मानिसले किन विश्वास गर्नुपर्छ? किनभने उहाँ एक अनुभवात्मक चेतना हुनुहुन्छ, त्यसैले उहाँको दिमागमा प्रकाश छैन। उहाँ आफ्नो सानो चेतनाको धेरै अँध्यारो आन्दोलनमा बस्नु हुन्छ, त्यसैले उहाँ आफैलाई महत्त्वपूर्ण र निरपेक्ष कुरामा संलग्न गर्न विश्वास गर्न बाध्य हुनुहुन्छ।

तर अहंको मनोवैज्ञानिक कन्डिसनिङको अंश हो परममाको यो विश्वास, यो परम विश्वास कसले स्थापित गरेको हो ? यो Involution को मानिस द्वारा स्थापित भएको थियो। तपाईलाई राम्ररी थाहा छ कि यदि तपाई संसारमा बाहिर जानुभयो र तपाईले कसैलाई कथा सुनाउनुभयो भने, तपाईले बताउनुभएको कथा अब उस्तै हुनेछैन जब यो प्राप्त हुन्छ र अर्कोले सुनाउँछ, तपाईले सुरुमा भनेको भन्दा। ।

कल्पना गर्नुहोस् कि कसैले संसारमा बाहिर जान्छ र मैले आज भनेको कुरा दोहोर्याउने प्रयास गर्दछ, एक प्रारम्भको रूपमा, तपाईं कल्पना गर्न सक्नुहुन्छ कि यो भोलि कसरी बाहिर आउनेछ! त्यसोभए त्यहाँ विगतमा पुरुषहरू छन् जसले कामहरू गरे, त्यहाँ प्रारम्भिकहरू थिए जो मानवताको विकासलाई मद्दत गर्न संसारमा आए। तर यी प्राणीहरूले के भने र उनीहरूले कथित रूपमा के भनेका थिए भन्ने कुरा अर्को कुरा हो।

र म तपाईंलाई एउटा कुरा भन्न सक्छु - किनकि मैले घटनालाई वर्षौंदेखि थाहा पाएको छु - एक व्यक्तिको लागि पूर्ण रूपमा भनिएको कुरालाई पूर्ण रूपमा दोहोर्याउन असम्भव छ। आज राती घर पुग्दा यो गर्ने प्रयास गर्नुहोस्! मानिसको लागि पूर्ण रूपमा भनिएको कुरा दोहोर्याउन असम्भव छ। र म तपाईंलाई किन बताउँछु। किनभने के पूर्ण रूपमा भनिएको छ - अर्को शब्दमा के अहंले रंगीन छैन, के ज्योतिषीकृत छैन, के मानवको अचेतनताको अंश होइन, तर के मानवको ब्रह्माण्डको अंश हो - यो अहंकारको लागि निर्देशित गरिएको छैन। मानिस वा मानिसको अहंकारलाई, वा मानिसको बुद्धिमा। यो उहाँको आत्मामा निर्देशित छ।

र यदि मानिस आफ्नो आत्मामा छैन भने, अर्को आत्माले पहिले नै भन्नुभएको कुरालाई कसरी लिने आशा गर्नुहुन्छ? यो असम्भव छ। त्यसैले त्यो क्षणमा रङ छ। र प्रारम्भिक शब्दहरूको रंगबाट जन्मेका थिए जसलाई हामी मानवताको विकासवादी फाइदाको लागि धर्महरू भन्छौं। र म सहमत छु र म धेरै खुसी छु कि यो भइरहेको छ र यो गरिएको छ, किनकि यो आवश्यक छ। तर विकासको क्रममा एक समय आउनेछ जब मानिसलाई आफ्नो अन्तस्करणलाई आफ्नै ज्ञानको पूर्णता दिनको लागि नैतिक समर्थनको आवश्यकता पर्दैन। त्यो परम चेतना (उच्च मन) हो।

र जब हामी क्युबेकर्ससँग कुरा गर्दैछौं, हामी एक व्यक्तिसँग कुरा गर्दैछौं जसले, धेरै राम्रो कारणहरूका लागि, धर्मले उनीहरूलाई दिएको आध्यात्मिक संसारसँग निश्चित निकटता अनुभव गर्ने मौका पाएको छ, यस अर्थमा हामीसँग पहिले नै प्रगति छ। कि पहिले देखि नै, हामी पहिले देखि नै अदृश्य प्रति एक निश्चित संवेदनशीलता छ।

तर त्यहाँबाट चेतनाको गहिरो जादुई खोजमा प्रवेश गर्न सम्मको आध्यात्मिक मार्गहरू प्रयोग गरेर हामीलाई सीधै आत्मको ध्रुवतामा लैजान्छ। यसले हामीलाई असल र खराब, सत्य र असत्यको द्वन्द्वमा पुर्‍याउनेछ र यसले हाम्रो मनमा ठूलो पीडा सिर्जना गर्नेछ।

यसैले म भन्छु: चेतन मानव, पृथ्वीमा परम चेतना (उच्च मन) को विकास त्यस क्षणबाट सुरु हुनेछ जब मानिसले आफ्नो विचारलाई सत्य र नक्कलीको अधीनमा नराख्ने आवश्यकता बुझेको हुन्छ। तर बिस्तारै यसलाई बाँच्न सिक्नु र यो विचार एक दिन सिद्ध नहुन्जेल यसको आन्दोलनलाई समर्थन गर्न, अर्थात् पूर्ण रूपमा आफ्नै प्रकाशमा भन्नु हो, पूर्ण रूपमा अध्रुवीकृत, ताकि अन्तमा उसले अहंकार, म ... अहंकार, आत्मा। र आत्मा एकताबद्ध हुन्छ र मानिसलाई वास्तविक प्राणी बनाउँछ।

वास्तविक प्राणी के हो? एक वास्तविक अस्तित्व एक वास्तविक प्राणी हो! ऊ सत्य चाहिने प्राणी होइन, सत्य खाने प्राणी होइन। यदि तिमीले सत्य खायौ भने भोलि तिमीले झूट खानेछौ, किनकी तिमीलाई वास्तविकताको अनन्तताको सिमामा अझ अगाडि लैजाने मान्छे हुनेछन्। यदि तिमीले सत्य खायौ भने, एक दिन तिमीले फेरि यो कदम चाल्नु पर्छ, किनकी मानिसलाई मिल्ने, उसको विवेकलाई मिल्ने, उसको आत्मालाई मिल्ने, उसको आत्मालाई मिल्ने, उसको अहंकारलाई मिल्ने, उसको अस्तित्वलाई मिल्ने कुरा मात्रै हो। , शान्ति छ।

तर शान्ति भनेको के हो? शान्ति भनेको खोजको विराम हो। तपाईं भन्न जाँदै हुनुहुन्छ: " हो, तर तपाईंले खोज्नु पर्छ" , म भन्छु: हो, मानिसले खोजिरहेको छ, तपाईं आफैंलाई खोज्दै हुनुहुन्छ, सबै मानिसहरूले खोजिरहेका छन्, तर विकासको क्रममा त्यहाँ एक बिन्दु आउनेछ जहाँ मानिसले खोज्नेछ। अब कुनै खोजी हुनेछैन, मानिसले अब खोजी गर्नु पर्दैन, र मानिसले खोज्न बन्द गर्नेछ जब उसले अन्ततः उसलाई थाहा छ भनेर थाहा पाउँछ।

र त्यहाँ तपाईं भन्न जाँदै हुनुहुन्छ: " हो, तर कसैलाई थाहा छ भनेर कसरी थाहा पाउन सक्छ"... तपाईंले यो थाहा पाउनुहुनेछ जबसम्म तपाईं आफैले यसलाई सहन अनुमति दिनुहुन्छ, जहाँसम्म तपाईंले पत्ता लगाउन कसैलाई फोन गर्नु आवश्यक पर्दैन। यदि तपाईं सहि हुनुहुन्छ भने। र त्यसपछि तपाईं भन्न जाँदै हुनुहुन्छ: " ठीक छ, तर यदि हामी सही छौं वा यदि हामीलाई लाग्छ कि हामी सही छौं भने, यो खतरनाक छ"। म भन्छु: हो, किनभने सही हुन खोज्ने मानिस पहिले नै आफ्नो कारणको खोजीमा रहेको मानिस हो!

तर के तपाइँको जीवनमा, तपाइँको दैनिक जीवनमा, तपाइँको व्यक्तिगत कुनामा, तपाइँको जीवनमा त्यस्तो समय छैन जब तपाइँ महसुस गर्न सक्नुहुन्छ कि तपाइँ के थाहा छ, के यो हो? र जब यो छ, त्यो हो!

त्यो हो" अर्को " त्यो त्यो" मा अर्को " त्यो हो" थप्न सक्ने क्षमता हुन्छ , तर " यो हो" जुन हो । वास्तविक, एक " यही हो" जुन दिमागको घमण्डमा बनाइनेछैन, एक " यही हो" जुन आध्यात्मिकता वा तपाईको आध्यात्मिकताको गर्वमा निर्माण हुँदैन, एक " यही हो" जुन व्यक्तिगत हुनेछ। तपाईलाई, एक " त्यो हो" जुन तपाईले भेट्नुहुने सबै पुरुषहरूसँग सार्वभौमिक हुनेछ र तिनीहरूको " त्यही हो" मा हुनेछ , त्यो क्षणमा तपाईले थाहा पाउनुहुनेछ कि यो हो !) (यदि अनुवाद गर्न सकिँदैन भने यो अनुच्छेद हटाउनुहोस्) ।

සිංහල

බර්නාඩ් ද මොන්ට්රියල් විසින් සම්මන්ත්රණ 2 ක් පිටපත් කිරීම සහ පරිවර්තනය කිරීම.



තාවකාලික ආකෘතිය

මෙම පොත කෘතිම බුද්ධිය මගින් පරිවර්තනය කර ඇති නමුත් පුද්ගලයෙකු විසින් සත් යාපනය කර නොමැත. ඔබ මෙම පොත සමාලෝචනය කිරීමෙන් දායක වීමට කැමති නම්, කරුණාකර අප හා සම්බන්ධ වන්න.

අපගේ වෙබ් අඩවියේ ප්රධාන පිටුව: http://diffusion-bdm-intl.com/

අපගේ විද්යුත් තැපෑල: contact@diffusion-bdm-intl.com

අන්තර්ගතය

සමස්ත විසරණ BdM Intl කණ්ඩායමෙන් සුභ පැතුම්.

Pierre Riopel 2023 අප්රේල් 18

1 වන පරිච්ඡේදය

IDENTITY CP036

අන් අයට වඩා ස්වයං අනන්‍යතාවය විශ්වීය මානව ගැටලුවකි. තවද මිනිසා නූතන සමාජය වැනි සංකීර්ණ සමාජයක ජීවත් වන විට මෙම ගැටලුව වැඩි වේ. අනන් යතාවයේ ප්‍රශ්නය නම් තමා අන් අය හා සසඳන විට තමා දකින වයසේ සිට ඔහු පසුපස එන මමත්වයේ දුක්ඛිත ජීවිතයයි. නමුත් අනන්‍යතාවය පිළිබඳ ගැටලුව පැන නගින ව්‍යාජ ගැටලුවක් වන්නේ මමත්වය, තමාට අනුව, එනම් තමාගේ මිම්ම අනුව තමාව අවබෝධ කර ගැනීම වෙනුවට, දුක් විඳින අනෙකුත් මමත්වයන්ට එරෙහිව තරඟකාරී ලෙස තමා අවබෝධ කර ගැනීමට උත්සාහ කිරීමයි . , ඔහු හා සමාන ගැටලුවකින්.

මමත්වය තම මල් අගය කිරීමට තම වැටෙන් ඔබ්බට අනෙකාගේ කෙත දෙස බලද්දී, අනෙකා තමාටම එයම කරන බව දැකීමට අසමත් වේ. අද මිනිසා තුළ පවතින අනන් යතාවය හෙවත් අනන්‍යතා අර්බුදය කෙතරම් උග්‍ර වී ඇත්ද යත්, එය ආත්ම විශ්වාසය නැති වී යන අතර එය කාලයාගේ ඇවෑමෙන් පුද්ගල විඥානය සම්පූර්ණයෙන්ම නැති වී යයි. භයානක තත්වයක්, විශේෂයෙන්ම මමත්වය දැනටමත් දුර්වල චරිතයක් සහ අනාරක්ෂිත භාවයට ගොදුරු වේ.

අනන්‍යතාවයේ ගැටලුව, එනම් තමා තරම් උසස් යැයි නොපෙනීමේ මමත්වයේ මෙම ලක්ෂණය ඇත්ත වශයෙන්ම නිර්මාණශීලීත්වයේ ගැටලුවකි. නමුත් මමත්වය නිර්මාණශීලී වන විට, අනන්‍යතාවය පිළිබඳ ගැටළුව එයින් ඉවත් නොවේ, මන්ද යත්, ඔහුගේ පහත් ආත්මයේ මිත්‍යාව අවබෝධ කර ගන්නා තෙක් මමත්වය කිසි විටෙකත් තමා ගැනම සම්පූර්ණයෙන් තෘප්තිමත් නොවේ. එබැවින් පහත් තත්ත්වයේ ඊගෝව උසස් තත්ත්වයේ ඊගෝවකට සමාන අනන්‍යතා ගැටලුවක් අත්විඳිනු ඇත, මන්ද ඔහු සහ තවත් අයෙකු අතර සංසන්දනය පරිමාණයෙන් පමණක් වෙනස් වන නමුත් සෑම විටම පවතිනු ඇත, මන්ද මමත්වය සැමවිටම වැඩිදියුණු කිරීමේ බලයෙන් පවතින බැවිනි. එමෙන්ම ඔහු තමාට අවශ්‍ය දියුණුවෙහි කෙළවරක් නැත.

නමුත් ස්වයං දියුණුව යනු ඔබට සතුටින් ජීවත් වීමට යම් හේතුවක් ලබා දීම සඳහා ඊගෝව යට සඟවා ගන්නා බ්ලැන්කට්ටුවකි. නමුත් සියලු දියුණුව දැනටමත් ආශාව ශරීරයක් විසින් ජනනය කර ඇති බව ඔහු නොදන්නේද?

අනන්‍යතාව පිළිබඳ ගැටලුව ඇතිවන්නේ මිනිසා තුළ සැබෑ බුද්ධිය පිළිබඳ සවිඥානකත්වයක් නොමැතිකමෙනි. මිනිසා තම බුද්ධියෙන් ජීවත් වන තාක් කල්, ඔහු තම මතයට සහාය වන්නේ ඉන්ද්‍රිය අත්දැකීම් වලින් පමණි, ඔහු දන්නා හෝ තේරුම් ගන්නා බව ඔහු සිතන දේ අවිනිශ්චිත බුද්ධියේ පරම වටිනාකමකින් ආදේශ කිරීම ඔහුට අපහසුය.

මිනිසා තම ජීවිතය තුළ පෙනී සිටීමට කැමති තාක් කල්, ඔහුගේ සලකුණ තැබීම සඳහා, ඔහු මෙම ආශාවෙන් පීඩා විඳිති. ඔහු තම ආශාව සාක්ෂාත් කර ගැනීමට සමත් වුවහොත්, තවත් අයෙකු ඔහුව පිටුපසට තල්ලු කරනු ඇත, යනාදිය. මේ නිසා මිනිසා තුළ ඕනෑම ආකාරයක පරාජයක් ඔහුට ඕනෑම අනන්‍යතා අර්බුදයක්, ඔහුගේ තරාතිරම කුමක් වුවත්, අනන්‍යතාවයේ ගැටලුව සාර්ථකත්වයේ ප්‍රශ්නයක් නොව හෘද සාක්ෂියේ ගැටලුවක් වන බැවිනි. .

සැබෑ බුද්ධිය බුද්ධිය යටපත් කරන බව තම ජීවිත කාලය තුළ සොයා ගන්නා මිනිසා දැනටමත් අනන්‍යතා ගැටලුවෙන් අඩුවෙන් දුක් විඳීමට පටන් ගනී, නමුත් ඔහුට තවමත් සැබෑ නිර්මාණශීලීත්වය නොමැතිකමෙන් පීඩා විඳින්නට හැකි වුවද, ඔහුට ප්‍රකාශ කළ හැකි යැයි හැඟෙන දෙයට සමාන වේ. නිර්මාණශීලීත්වයට විවිධාකාර ස්වරූප ගත හැකි බවත්, සෑම මිනිසෙකුටම තමාට ගැලපෙන, මානසිකව ගැලපෙන ආකාරයේ නිර්මාණශීලීත්වයක් ඇති බවත්, ඔහුගේ අනන්‍යතාවය ඔහුට ගැලපෙන ජීවන රටාවට අනුකූල වන විට පමණක් ඔහුට වැටහෙනු ඇත. මෙම ආකෘතියෙන් ඔහුට ඔහුගේ ආශාව ශරීරය සහ ඔහුගේ නිර්මාණාත්මක බුද්ධිය අනුව පරිපූර්ණ එකඟතාවයකින් ජීවත් විය හැකිය.

නිර්මාණශීලී වීම යන්නෙන් අදහස් කරන්නේ ලෝකය වෙනස් කිරීම නොව, අභ්‍යන්තර ලෝකය බාහිරකරණය වන පරිදි තමාටම පරිපූර්ණ ලෙස කිරීම ය. ලෝකය වෙනස් වන ආකාරය මෙයයි: සෑම විටම ඇතුළත සිට පිටත, කිසි විටෙකත් ප්‍රතිවිරුද්ධ දිශාවට නොවේ. අධි මනස අනන්‍යතාවයේ ගැටලුව අවබෝධ කර ගැනීමට පටන් ගනී. ඔහු දකින්නේ ඔහු තවමත් යම්තාක් දුරට ඔහු සිටි දෙයම බවයි. එහෙත්, ඔහුගේ ශරීර වෙනස් වන විට, ඔහුගේ විඥානය වර්ධනය වන බවත්, කලින් අවිඥානික මමත්වයේ මතුපිටින් අනන්‍යතා ගැටලුව සෙමෙන් පහව යන බවත් ඔහු දකී.

අධි මානසිකත්වය තුළ අනන්‍යතා ගැටලුව ක්‍රමානුකූලව තුරන් කිරීම අවසානයේ ඔහුට ඔහුගේ ජීවිතය සැබවින්ම පෙනෙන පරිදි ජීවත් වීමටත්, තමා ගැන වඩා හොඳ හා වඩා හොඳ වීමටත් ඉඩ සලසයි. අනන්‍යතාවයෙන් පෙළීම තරම් අපහසු දෙයක් මිනිසා තුළ නැත. මක්නිසාද යත්, ඔහු සැබවින්ම මායාවන්ගෙන් පෙළෙන බැවිනි, එනම් ඔහු මුල සිටම නිර්මාණය කරන හේතු නිසා, හරියටම ඔහු බුද්ධිමත් නොවීම නිසා, එනම් ඔහු තුළ ඇති නිර්මාණාත්මක බුද්ධිය පිළිබඳ සවිඥානකත්වය නිසාය.

අනන්‍යතාවයේ එක් පැත්තක් සමහර අවස්ථාවලදී ලැජ්ජාව, තවත් සමහරුන් තුළ අපහසුතාව, බහුතරයකගේ අනාරක්ෂිත බව. සමාජ චින්තනයේ දැල් තුළ සිරවී ඇති තම මනසේ සමාජ ප්‍රතිබිම්බය පමණක් වන විට යහපත් සදාචාරයක් ඇති මිනිසෙකු ලැජ්ජාවෙන් ජීවත් වන්නේ ඇයි? අන් අය සිතන දේ වහාම ඉවත් කිරීමට මමත්වයේ නොහැකියාව නිසා ඇතිවන ලැජ්ජාව ද එසේමය. ලැජ්ජාවට පත් මමත්වය අන් අයට සිතිය හැකි දේ ඉවත් කළහොත්, ඔහුගේ ලැජ්ජාව පහව යනු ඇත, ඔහුට ඔහුගේ සැබෑ අනන්‍යතාවයට ඉක්මනින් ප්‍රවේශ විය හැකිය, එනම්, මිනිසෙකුට සෑම විටම තමාගේම දවසේ ආලෝකයෙන් තමාව දැකීමට සලස්වන මෙම මානසික තත්වය.

අනන්‍යතාව පිළිබඳ ගැටලුව ඇතිවන්නේ මිනිසා තුළ කේන්ද්‍රස්ථානයක් නොමැතිකමෙනි. මෙම නොපැමිණීම බුද්ධියේ විනිවිද යාමේ බලය අඩු කරයි, එය මිනිසා ඔහුගේ බුද්ධියේ වහලෙකු බවට පත් කරයි, මනසෙහි නීති හෝ මනසේ යාන්ත්‍රණයන් නොදන්නා ඔහුගේ කොටස. එබැවින් මිනිසා, ඔහුගේ අත්දැකීමට ඉතිරිව ඇති අතර, ඔහුගේ බුද්ධියේ ආලෝකය නොමැති අතර මිනිසාගේ ස්වභාවය පිළිබඳ අන් අයගේ මතය පිළිගැනීමට බල කෙරෙයි.

මිනිසා තමා ගැනම කල්පනා කරන්නේ නම්, මේ අනෙක් මිනිසා ඔහු හා සමාන තත්වයක සිටී නම්, වෙනත් මිනිසෙකුට ඔහුව අවබෝධ කර ගත හැක්කේ කෙසේද? නමුත් මිනිසා මෙය වටහා නොගන්නා අතර, සිදුවීම් මගින් මමත්වයට එරෙහිව එල්ල කරන පීඩනය අනුව ඔහුගේ අනන්‍යතාවය පිළිබඳ ගැටළුව නරක අතට හැරේ.

සිතේ ඇති මමත්වය එහි සැබෑ බුද්ධියට නොගැලපෙන චින්තන ක්‍රමයට හසු වී ඇති බවට සැකයක් නැත. තවද මෙම සිතීමේ ක්‍රමය ඔහුගේ බුද්ධියේ යථාර්ථයට පටහැනි වේ, මන්ද ඔහු තම බුද්ධියේ යථාර්ථය ඔහුගේ බුද්ධිය තුළින් වටහා ගත්තේ නම්, උදාහරණයක් ලෙස, එහි යථාර්ථය ප්‍රතික්ෂේප කරන පළමු පුද්ගලයා ඔහු වනු ඇත, මන්ද බුද්ධියට බුද්ධිය කෙරෙහි විශ්වාසයක් නොමැති බැවිනි. ඔහු එය තමාගේ අතාර්කික කොටසක් ලෙස දකියි. බුද්ධිය තාර්කික හෝ තර්කානුකූල යැයි කියනු ලබන බැවින්, එයට විරුද්ධ කිසිවක් බුද්ධිය ලෙස හඳුනා ගැනීම වටී නැත. එහෙත්, බුද්ධිය ඇත්ත වශයෙන්ම සැබෑ බුද්ධියේ ප්‍රකාශනයකි, නමුත් මෙම ප්‍රකාශනය තවමත් මමත්වයට එහි වැදගත්කම සහ බුද්ධිය ග්‍රහණය කර ගැනීමට නොහැකි තරම් දුර්වල ය. ඉන්පසු ඔහු තම තර්කයට ඉවත් වන අතර ඔහුගේ අනන්‍යතාවය පිළිබඳ ගැටලුවට ආලෝකය විහිදුවන මනසෙහි සියුම් යාන්ත්‍රණයන් සොයා ගැනීමේ අවස්ථාව අහිමි වේ.

නමුත් බුද්ධිය අත් නොහරින තාක් සහ මමත්වය අභ්‍යන්තරව තමාට ඇහුම්කන් නොදෙන තාක් කල් අනන්‍යතා ගැටලුව මිනිසා සමඟ පැවතිය යුතුය. මමත්වය තමා තුළ ඇති සැබෑ බුද්ධියේ ස්වභාවය සහ ස්වරූපය ගැන සංවේදී වුවහොත්, එය ක්‍රමයෙන් සකස් වී එම බුද්ධිය තුළ වැඩි වැඩියෙන් තම නිවස බවට පත් කරයි. කාලයාගේ ඇවෑමෙන්, ඔහු වැඩි වැඩියෙන් එහි යන අතර, ඔහුගේ අනන්‍යතා ගැටළුව පහව යන්නේ, ඔහු තමා ගැන සිතූ සියල්ල ඔහුගේ තර්කයේ උස් බිත්තිවලින් ඔබ්බට යාමට නොහැකි ඔහුගේ සැබෑ බුද්ධියේ මනෝවිද්‍යාත්මක හා මානසික විකෘතියක් පමණක් බව ඔහුට වැටහෙන බැවිනි.

සංකීර්ණ සමාජයක් තුළ, අප දන්නා පරිදි, මමත්වයේ අභ්‍යන්තර ශක්තියට, එහි සැබෑ බුද්ධියට පමණක් එය මත පොත්තට ඉහළින් ඔසවා එහි සැබෑ අනන්‍යතාවයේ පර්වතය මත තැබිය හැකිය. එමෙන්ම සමාජය බිඳවැටෙන තරමට, එහි සාම්ප්‍රදායික සාරධර්ම බිඳවැටෙන තරමට, මමත්වය විනාශය කරා ගමන් කරයි, මක්නිසාද යත් නූතනයේ වඩ වඩාත් ව්‍යාකූල වන සංසිද්ධිය හමුවේ නැගී සිටීමට විධිමත් සමාජ පලංචියක් එයට තවදුරටත් නොමැති බැවිනි. ජීවිතය.

නමුත් තමාගේම අභිරහස තේරුම් ගැනීමට අත්‍යවශ්‍ය යතුරු ලබා දිය හැකි අයට සවන් දීමට මමත්වය සැමවිටම සූදානම් නැත. මන්දයත් ඔහුගේ මනෝවිද්‍යාත්මක විකෘතිය දැනටමත් ඔහුගේ ආත්මීය චින්තනයට නොගැලපෙන සෑම දෙයක්ම ප්‍රශ්න කිරීමට ඔහුව යොමු කරයි. මේ නිසා මමත්වය තව දුරටත් දැකීමට ප්‍රතික්ෂේප කිරීම ගැන ඕනෑවට වඩා දොස් පැවරිය නොහැක, නමුත් අද එය තවදුරටත් දැකිය නොහැකි වුවද, හෙට එහි දර්ශනය ඔහු තුළට විනිවිද යන ප්‍රමාණයට අනුව එහි දැක්ම පුළුල් වන බව වටහා ගත හැකිය.

මක්නිසාද යත්, ඇත්ත වශයෙන්ම, එය ස්වකීය උත්සාහයෙන් ජය ගන්නා මමත්වය නොව, එය දුක් විඳීමෙන් ගෙන එන ආත්මය, එනම් එහි ආලෝකය විනිවිද යාමෙන්, බුද්ධියෙන් ඔබ්බට, කම්පනය ලියාපදිංචි කිරීම ය. බුද්ධියෙන්. තවද මෙම කම්පන කම්පනය අවසානයෙහි ආරම්භය බවට පත්වේ.

යම් ආකාරයක නිහතමානීකමක් දැනටමත් ඔවුන්ගේම ආලෝකයට ඔවුන්ව නැඹුරු කර ඇති නිසා, සැබෑ දේට විවෘත වන ආඩම්බර ඊගෝ අඩුය . අනෙක් අතට, මෙම ආලෝකය, මෙම සියුම් නූල් හරහා ගමන් කිරීමට නොහැකි තරම් ආඩම්බරයක් ඇත. ඒ වගේම විශාල හැරීම්වලට, විශාල පසුබෑම්වලට වැඩිපුරම ගොදුරු වන්නේ එම මමත්වයයි.

අනන්‍යතා අර්බුදය හඳුනාගනු ලබන්නේ මිනිසාගේ නොමේරූ බව සමඟ ය. සැබෑ අනන්‍යතාවය සැබෑ පරිණතභාවයේ වර්ධනය පෙන්නුම් කරයි.

ආත්මය එහි ක්‍රියාවන්හි මමත්වයෙන් ස්වායත්ත වන අතර, දෙවැන්නාට හොඳ ක් රීඩාවක් ඇත, එය නිවසේ බලගතු බවක් දැනෙන්නේ නැති තාක් කල්. මමත්වය නොදන්නේ මේ මොහොතයි. ඔහු පෙනී සිටින විට, ඔහුගේ නිහතමානීකම, ඔහුගේ ආඩම්බරය, තමා කෙරෙහි ඔහු තුළ ඇති ආශාව, ඔහුගේ අදහස්, පීඩනය යටතේ බිත්තරයක් මෙන් පුපුරා යන බව ඔහුට වැටහේ.

ආත්මයේ දුක් වේදනාවලට එහි හේතු ඇත, එය මමත්වයට මුලින් තේරුම් ගත නොහැකි නමුත් එයට ජීවත් වීමට උදව් කළ නොහැක. ක්‍රියා කරන්නේ ආත්මයයි. ඔහු එක් අදියරකින් තවත් අදියරකට ගමන් කිරීමට කාලයයි. ඔහු මුලදී අත්විඳින ලද අනන්‍යතාවයේ ගැටලුව යළිත් දිශානතියට පත් වන අතර ඔහුගේ ආඩම්බරය ළමා සෙල්ලමක් මෙන් කඩා වැටේ. මමත්වය වැඩි හෝ අඩු ආඩම්බරයක් හෝ වේවා, ඒ සියල්ල අනාරක්ෂිතභාවයට පැමිණේ. බොහෝ විට කෙනෙකුට ඊනියා " ඝන", "ශක්තිමත්" ඊගෝ මුණගැසෙනවා , ඔවුන් සඳහා සැබෑ නිර්මල ෆැන්ටසිය; ආත්මය මානසික සහ චිත්තවේගීය කම්පනය කරන විට, ආත්මාර්ථකාමීත්වයට තවදුරටත් පාලනය කළ නොහැකි ජීවන සිදුවීම්වල පීඩනය යටතේ ඔවුන්ගේ අනන්‍යතාවයට වඩාත්ම බලපාන්නේ මෙම ඊගෝ ය.

මෙම දුෂ්කර අත්දැකීම් අතරතුර, මමත්වය එහි දුර්වලතාවයේ සැබෑ ආලෝකයෙන් තමා දැකීමට පටන් ගනී. තම බුද්ධියේ උඩඟුකම පැවති තම ව්‍යාජ අනන්‍යතාවයේ ආරක්ෂාව ආලෝකයේ කම්පන පීඩනය යටතේ පුපුරා යන බව ඔහු දකින්නේ එහිදීය. එවිට ඔහු වෙනස් වන බවත්, ඔහු තවදුරටත් සමාන නොවන බවත්, ඔහු දුක් විඳින බවත් ඔහු ගැන කියනු ලැබේ. මෙය ආරම්භය පමණි, මන්ද ආත්මය ව්‍යාජ අනන් යතාවයේ බිත්ති පුපුරා යාමට පටන් ගත් විට, එය එහි කාර්යය නතර නොකරයි. මක්නිසාද යත්, විඥානය මිනිසා, බුද්ධිය සහ සැබෑ කැමැත්ත සහ ආදරය තුළට බැසීමට කාලය පැමිණ තිබේ.

ව්‍යාජ අනන්‍යතාවයෙන් ශක්තිමත්ව දැනෙන මමත්වය කම්පන කම්පනය දැනෙන විට බට දණ්ඩක් මෙන් දුර්වල බවක් දැනේ. හැඟීම් සහ පහළ මනස පෝෂණය කරන ස්වරූපය මත ඔහුගේ ආශාවන් ශරීරයේ ව්‍යාජ බලය නොව ආත්මයේ බලවේගයන් ඔහු නැවත ලබා ගන්නේ පසුවය.

මිනිසා තුළ අනන්‍යතා අර්බුදය ආත්මයේ ආලෝකයට ඊගෝගේ ප්‍රතිරෝධයට අනුරූප වේ. මෙම ලිපි හුවමාරුව මෙම ප්‍රතිරෝධයට සමානුපාතිකව දුක් විඳීමේ ඊගෝගේ ජීවිතයට සම්බන්ධ වේ. මනෝවිද්‍යාත්මකව හෝ සංකේතාත්මකව හෝ දාර්ශනිකව ඊගෝ විසින් සංජානනය කළද, සියලු ප්‍රතිරෝධයන් ලියාපදිංචි වී ඇත. මක්නිසාද යත් ආත්මය සඳහා, සෑම දෙයක්ම මිනිසා තුළ ශක්තිය වන නමුත් මිනිසා සඳහා සියල්ල සංකේතයකි. මිනිසාට දැකීම එතරම් අපහසු වන්නේ එබැවිනි, මක්නිසාද යත්, මෙම ආකෘතිවලින් නිදහස් වූ පසු, ඔහු දකින දේ, ස්වරූපයේ සංකේතය හරහා නොව කම්පනය හරහා සිදුවනු ඇත. තථාගතය රූපයෙන් නොවැටහෙන බවත්, ප්‍රකාශ කිරීම සඳහා රූපය උපදවන සහ නිර්මාණය කරන කම්පනයෙන් දන්නා බවත් මේ නිසා ය.

අනන්‍යතාවය පිළිබඳ ගැටලුව සෑම විටම සංකේතවාදයේ අතිරික්තයක් කැඳවයි, එනම් මිනිසා තුළ ආත්මීය චින්තන ආකෘති ගැන ය. මෙම අතිරික්තය, ඕනෑම අවස්ථාවක, සිතුවිලි-රූප සංකේතය හරහා මමත්වය සම්බන්ධ කර ගැනීමට ආත්මය දරන උත්සාහය සමඟ සමපාත වේ, මන්ද එය මනස තුළ ඇති මමත්වයට පරිණාමය කිරීමේ එකම මාධ්‍යය එයයි.

ගැඹුරු හේතු තේරුම් නොගෙන මමත්වය අවබෝධ කර ගන්නේ එය තමාටම පෙනෙන පරිදි ස්ථානගත කිරීමට උත්සාහ කරන බවයි. නමුත් ඔහු තවමත් ඔහුගේ සිතුවිලි-ආකෘතිවල, ඔහුගේ හැඟීම්වල සිරකරුවෙකු බැවින්, ඔහු තම චලනය, ඔහුගේ චලනය විශ්වාස කරයි! එනම්, මෙම පර්යේෂණ ක්‍රියාවලිය ඔහුගෙන් පමණක් නිකුත් වන බව ඔහු විශ්වාස කරයි. තවද මෙය එහි අචිලස් විලුඹයි, මන්ද මමත්වය හරි වැරැද්ද පිළිබඳ මායාවේ, නිදහස් කැමැත්තේ මායාවේ ය.
ආත්මයේ ශක්තිය විනිවිද ගොස් ව්‍යාජ අනන්‍යතාවයේ බාධකය බිඳ දැමූ විට, ඊගෝ තේරුම් ගන්නේ කාරණය තවදුරටත් ඔහු නිවැරදි වීමට නොව ඔහුගේ සැබෑ බුද්ධියට ප්‍රවේශය ඇති බවයි. එවිට ඔහු තේරුම් ගැනීමට පටන් ගනී. එමෙන්ම තමාට වැටහෙන දේ එම බුද්ධියේම නැති අයට ඔවුන්ගේ හොඳ හිත කුමක් වුවත් නොතේරේ. සෑම දෙයක්ම සංකේතයෙන් පිටත නිසා, සියල්ල **කම්පනය වේ** .

මමත්වය සහ ආත්මය එකිනෙකාට හැඩගැසෙන විට අනන්‍යතාවය පිළිබඳ ගැටළුව සිතාගත නොහැකිය, මන්දයත් මමත්වය යථාර්ථයේ " ආවරණය" *(ආවරණය) එහි පැත්තෙන් ඇද නොගන්නා අතර ආත්මය අනෙක් පැත්තෙන් ක්‍රියා කරන බැවිනි.* දෙදෙනා අතර ලිපි හුවමාරුවක් ඇති අතර පෞරුෂය ප්‍රතිලාභියා වේ. මක්නිසාද යත් පෞරුෂය සැමවිටම ආත්මය සහ මමත්වය අතර පරතරයට ගොදුරු වන බැවිනි.

අනන්‍යතාව පිළිබඳ ගැටලුව මිනිසා තුළ පවතින තාක් ඔහුට සතුටු විය නොහැක. මක්නිසාද යත්, ඔහුගේ භෞතික ජීවිතය මතුපිටින් හොඳින් සිදුවන බවක් පෙනුනද, ඔහුගේ ජීවිතයේ බෙදීම් ඇති බැවිනි. එය සැබවින්ම හොඳින් යා හැක්කේ තමාගේ සමගියට සමානුපාතිකව පමණි.

නූතන මිනිසා තුළ පවතින අනන්‍යතා අර්බුදය වාසිදායක ලෙස බලපාන්නේ සමතුලිතතාවය සඳහා විශාල ආශාවක් ඔවුන් තුළ ඇති කිරීමට දැනටමත් ප්‍රමාණවත් පසුබෑමකට ලක්ව ඇති අයට පමණි. නමුත් සමතුලිතතාවය සඳහා මෙම ආශාව සම්පූර්ණයෙන් සාක්ෂාත් කරගත හැක්කේ ආත්මයේ සියුම් ශක්තිය හැසිරවීම සඳහා ඊගෝ වධහිංසා කිරීමේ උපකරණ පසෙකට දැමූ විට පමණි. මහත් ආධ්‍යාත්මිකත්වයක් පවතින මිනිස් ජීවිතයේ විෂය පථය තුළ අනන්‍යතා අර්බුදය තීව්‍ර විය හැකිය, එසේ නොවේ නම්, වැඩි වැඩියෙන් අධ්‍යාත්මිකත්වය කරා ඔහුව නොවැළැක්විය හැකි ලෙස තල්ලු කරන මෙම අභ්‍යන්තර දෙයට මමත්වයේ මෙම විශාල සංවේදීතාවය හමු නොවන තැනට වඩා වැඩි නොවේ. විශාල, වැඩි වැඩියෙන් සොයන සහ අවසානයේ වඩ වඩාත් අසම්පූර්ණයි.

මෙම මනුෂ්‍යත්වයේ ගණයට අයත් අය සියලු ආකාර, ඉහළම, ලස්සනම පවා ආත්මයේ සැබෑ මුහුණ වසාගෙන සිටින බව දැකිය යුතුය, මන්ද ආත්මය මමත්වයේ තලයට අයත් නොවන බැවිනි. එය අසීමිත ලෙස දකින අතර, ආත්මික ස්වරූපයට පවා මමත්වය අධික ලෙස බැඳී ඇති විට, එය ආත්මය හරහා ගමන් කළ යුතු විශ්ව ශක්තියට බාධා කරන අතර ආත්මයේ සියලු පහළ මූලධර්මවල කම්පන වේගය වැඩි කරයි. 'මිනිසා, එසේ ඔහු ජීවිතයේ ස්වාමියා විය හැකිය. අතිමහත් (උසස් මානසික) මිනිසා ජීවිතයේ ප්‍රධානියා වන විට, ඔහු තවදුරටත් ආත්මයේ තලයට අධ්‍යාත්මිකව ඇදී යා යුතු නැත, මන්ද එය ආත්මය, ඔහුගේ ශක්තිය, ඔහු දෙසට බැස, ඔහුගේ ආලෝකයේ බලය ඔහුට සම්ප්‍රේෂණය කරයි. .

මිනිසාගේ අධ්‍යාත්මික අනන්‍යතාවය ආත්මයේ ශක්ති ස්වරූපය හරහා ඔහු තුළ සිටීමකි. නමුත් මෙම ශක්තියට පෞරුෂයට වඩා පරිවර්තනය කිරීමේ බලය තිබුණද, පරිවර්තනය කිරීමේ බලයක් නොමැත.

නමුත් පෞරුෂය පරිවර්තනය කිරීම පමණක් ප්‍රමාණවත් නොවේ, මන්ද එය මිනිසාගේ අවසාන අංගය වේ. ආත්මීය පෞරුෂය ආත්මය සමඟ ඒකාබද්ධ නොවන තාක් කල්, අධ්‍යාත්මික පෞරුෂය මිනිසාව ඔහුගේ සදාචාරයේ වේගවත් පරිවර්තනයකට පහසුවෙන් යොමු කළ හැකිය, මනසෙහි සහ ආත්මයේ චිත්තවේගීය සමතුලිතතාවයේ කිසියම් අඩුවක් ඔහුව ගෙන යා හැකිය. අධ්‍යාත්මිකත්වයේ උග්‍ර අර්බුදය, ආගමික උමතුව.

මේ අනුව, දැඩි අධ්‍යාත්මික මිනිසාට පවා තමාට සහ සමාජයට හානි කළ හැකිය. මක්නිසාද උමතුව යනු අධ්‍යාත්මික රෝගයක් වන අතර, එයින් පීඩා විඳින අයට පහසුවෙන්ම, ඔවුන්ගේ අධ්‍යාත්මික ස්වරූපය විශේෂ සූරාකෑම නිසා, අන් අය තුළ ඔවුන්ව ශ්‍රේෂ්ඨ ඇදහිලිවන්තයන් බවට පත් කිරීමට තරම් ශක්තිමත් ආකර්ෂණයක් ඇති කළ හැකිය, එනම්, ස්වරූපයට නව වහලුන් කියන්න. ඔහු වැනි නූගත්, නමුත් මෙම රෝගී ස්වරූපයට වඩා සංවේදී නොවන අයගේ යටහත් පහත් විශ්වාසය ඔහුට උපකාර කරන්නේ නම්, අධ්‍යාත්මික වශයෙන් රෝගීන්ට පමණක් තබා ගත හැකි පදික වේදිකාව මත උන්මත්තකත්වය විසින් මතු කරනු ලැබේ.

වැඩි වැඩියෙන් මිනිසුන්, උමතු අධ්‍යාත්මික බවට පත් නොවී, ඔවුන්ගේ අධි යාත්මිකත්වය ගැන ඕනෑවට වඩා පැහැදී එහි සීමාවන්, එනම් රූපයේ මායාවන් නොදනී. වැඩි කල් යන්නට මත්තෙන් ඔවුන් අතීතය දෙස බලන අතර ඔවුන් ඔවුන්ගේ අධ්‍යාත්මික මායාවට ගොදුරු වී ඇති බව වටහා ගනී. එබැවින් ඔවුන් වෙනත් අධි යාත්මික ස්වරූපයකට විසිවී යන අතර, මෙම සර්කස් වසර ගණනාවක් පැවතිය හැකිය, මායාවෙන් පිළිකුල් වූ ඔවුන් එයින් සදහටම එළියට පැමිණ විඥ්ඥාණය රූපයෙන් ඔබ්බට බව වටහා ගන්නා දිනය දක්වා. මේවාට ආකෘතියේ සීමාවෙන් ඔබ්බට ගොස් අවසානයේ උසස් මනසෙහි මහා නීති සොයා ගැනීමට අවස්ථාව තිබේ.

අධ්‍යාත්මික අනන්‍යතාවයේ අර්බුදය මේ මොහොතේ ඔවුන්ට තවදුරටත් කළ නොහැක්කකි. මක්නිසාද යත්, ඔහුගේම අත්දැකීමෙන්, සෑම දෙයක්ම මමත්වයට එරෙහිව ආත්මයේ අත්දැකීමට සේවය කරන බව ඔවුන් දන්නා බැවිනි, ඔහු තුළ ඇති අධි මානසිකත්වය (උසස් මනස) පමණක් දැන ගැනීමට මම අත්දැකීමේ අවශ් යතාවයෙන් ඉවත් වන දිනය දක්වා.

අධ්‍යාත්මික අනන්‍යතාවයේ අර්බුදය වඩ වඩාත් නූතන යුගයේ අර්බුදය බවට පත්වෙමින් තිබේ. මන්ද මිනිසාට තවදුරටත් තාක්ෂණය සහ විද්‍යාව මත පමණක් ජීවත් විය නොහැකි බැවිනි. ඔහුට තවත් ඔහුට සමීප දෙයක් අවශ්‍ය වන අතර විද් යාවට එය ඔහුට දිය නොහැක. නමුත් ඕතඩොක්ස් ආගමේ පැරණි ස්වරූපයද නැත. එබැවින් ඔහු තමා සොයන දේ සොයා ගැනීමට හෝ තමාට සොයා ගැනීමට අවශ්‍ය දේ සොයන ස්ථිර චේතනාවෙන් සහ ඔහු නිශ්චිතව නොදන්නා අධ්‍යාත්මික හෝ ගුප්ත-අධ්‍යාත්මික වික්‍රමාන්විතයන් රාශියකට හිස ඔසවයි. එබැවින්, ඔහුගේ අත්දැකීම් ඔහුව සියලු නිකායන්හි, සියලු දාර්ශනික හෝ ගුප්ත පාසල්වල සීමාවන්ට ගෙන එන අතර, මෙහිදී නැවතත් ඔහු සොයා ගනී, ඔහු සාමාන්‍යයට වඩා බුද්ධිමත් නම්, පිළිතුරු සොයා ගැනීමට ඔහු විශ්වාස කළ සීමාවන් ඇති බව.

අවසානයේ ඔහු තනිව සිටින අතර ඔහුගේ අධ්‍යාත්මික අනන්‍යතාවයේ අර්බුදය වඩ වඩාත් දරාගත නොහැකි වේ. ඔහු තුළ ඇති සෑම දෙයක්ම බුද්ධිය, කැමැත්ත සහ ආදරය බව ඔහු සොයා ගන්නා දිනය දක්වා, නමුත් සොයන මිනිසාගේ දෑස් තුළ සැඟවී ඇති සහ වැසී ඇති යාන්ත්‍රණය සොයා ගැනීමට ඔහු තවමත් ඔවුන්ගේ නීති ප් රමාණවත් නොවන බව. ඔහු දුටුවේ මොනතරම් පුදුමයක්ද! ඔහුගේ අර්බුදය තුළ ඔහු සොයන්නේ තමා තුළම ආත්මයේ යාන්ත්‍රණයක් පමණක් බව ඔහුට වැටහෙන විට, ඔහු තමා වෙත, එනම් ඇය වෙත අවදි වීමට ඔහුව ඉදිරියට ගෙන යාමට සේවය කළේය.

මෙම අදියර අවසානයේ ආරම්භ වූ විට, මිනිසා, මිනිසාගේ මමත්වය, ආත්මාර්ථකාමී වී, ඔහු තුළ ඇති අධි බුද්ධියේ (උසස් මනසේ) ස්වභාවය අවබෝධ කර ගැනීමට පටන් ගනී, එය අවදි වන අතර, තමාගෙන් පිටත සොයන සියලු මිනිසුන්ගේ මිත්‍යාව හඳුනා ගැනීමට ඔහුට සලස්වයි. ලෝකයේ හොඳම අභිප්‍රායයන් වන අතර, මෙම සමස්ත ක් රියාවලියම ආත්මයේ අත්දැකීමේ කොටසක් බව තවමත් වටහාගෙන නොමැති අතර, ඇය සමඟ කම්පන සම්බන්ධතා ඇති කර ගැනීමට මමත්වය භාවිතා කරයි.

මිනිසා තවදුරටත් ඔහුගේ පැවැත්මේ යථාර්ථය සමඟ සම්බන්ධ නොවේ. මෙම සම්බන්ධතා නැතිවීම ලොව පුරා කොතරම් පුළුල්ද යත්, මෙම පෘථිවිය නැව යන්නේ කොතැනට දැයි නොදන්නා පිස්සු මිනිසුන්ගෙන් පිරුණු නැවක් නියෝජනය කරයි. ඔවුන් මෙහෙයවනු ලබන්නේ අදෘශ්‍යමාන බලවේග විසින් වන අතර, මෙම බලවේගවල මූලාරම්භය හෝ ඔවුන්ගේ අභිප්‍රායන් පිළිබඳව කිසිවෙකුට කිසිදු අදහසක් නැත. මිනිසා සියවස් ගණනාවක් තිස්සේ අදෘශ්‍යමාන දෙයින් වෙන්ව සිටි අතර ඔහුට යථාර්ථය පිළිබඳ සංකල්පය සම්පූර්ණයෙන්ම අහිමි විය. මෙම සිහිය නැතිවීම ඔහුගේ පැවැත්මේ ගැටලුවේ බිත්තිය නැඟීමට හේතුවයි: අනන්‍යතාවය. එහෙත් විසඳුම ඔහුට ඉතා සමීප වන අතර ඒ සමගම බොහෝ දුරස් වේ. ඔහු ඇසීමට අකමැති දේට සවන් දීමට ඔහු දැන සිටියේ නම් පමණි.

ඔහුට ඉතිරිව ඇත්තේ වාග් සංග්‍රාමයයි, අදහස් සංග්‍රාමයයි. තමන්ගෙන් කොටසක් ශ්‍රේෂ්ඨ බවත්, තවත් කොටසක් තම ඉන්ද්‍රියයන් විසින් සීමා කර ඇති බවත්, ඒ දෙක එකට එකතු විය හැකි බවත් අවබෝධ කර නොගන්නේ නම්, කුමන මිනිසාට ස්වයංපෝෂිත විය හැකිද? තමාට පිටතින් කිසිවකුට තමා වෙනුවෙන් කළ නොහැකි බවත්, තමාට පමණක් කළ හැකි බවත් මිනිසාට කවදා හෝ අවබෝධ කරගත හැකි නම්... නමුත් ඔහු තමා වෙනුවෙන් ජීවත් වීමට බිය වන්නේ අන් අය තමා ගැන කුමක් කියනු ඇතැයි ඔහු බිය වන බැවිනි. ඔහු දුප්පත් ය!

මිනිසුන් යනු මායාවට එරෙහි සටනින් නිරන්තරයෙන් පරාජයට පත්වන ජීවීන් වන අතර, එය ජීවමානව හා බලවත්ව තබා ගන්නේ ඔවුන් බැවිනි. සෑම කෙනෙකුම තමන්ට හානි කරන දේ විනාශ කිරීමට බිය වෙති. සැබෑ බියකරු සිහිනයක්! නරකම දේ තවම පැමිණ නැත! මක්නිසාද යත්, XX වන සියවසේ මිනිසා තරු අතර ගමන් කරන සහ කලින් ඔහුට දෙවිවරුන් වූ ජීවීන් ඔහු දෙසට බැස යන බව දකිනු ඇත.

පුද්ගල අනන්‍යතාවය පිළිබඳ ගැටළුව ග්‍රහලෝක පරිමාණයෙන් දිගටම පවතී. මෙම ප් රශ්නය පැන නගින්නේ යටි සිත සහ උසස් මනස අතර සම්බන්ධයක් නොමැතිකම නිසා, එහි බලපෑම ලෝක මට්ටමට මෙන්ම පුද්ගලික මට්ටමට ද දැනේ, මන්ද මිනිසාට ඔහුගේ ග්‍රහලෝකයේ මහා අභිරහස් පැහැදිලි කළ හැක්කේ ඉහළ මනසට පමණි. එහි පැරණි දෙවිවරුන්. මෙම දෙවිවරුන් පුරාණ ඉතිහාසයේ කොටසක් වන තාක් මිනිසා ඔවුන්ගෙන් කරදර වන්නේ නැත. නමුත් මෙම ජීවීන්ම නැවත පැමිණ නවීන ආලෝකයකින් තමන්ව ප්‍රසිද්ධියට පත් කරන විට, ගෝලීය පරිමාණයේ කම්පනය දෝංකාර දෙයි, සහ ඔහුගේ සැබෑ අනන්‍යතාවය සොයා නොගත් මිනිසා ඔහුගේ ව්‍යාජ අනන්‍යතාවය - සහ ඇය සිතන සහ විශ්වාස කරන දේ - අතර සිරවී සිටින බව සොයා ගනී. චක්‍රීය සංසිද්ධිය.

ඔහුගේ මනස අත්දැකීමට විවෘත නම් සහ ඔහු තුළ සැබෑ බුද්ධිය ඔහුට ලැබෙන්නේ නම්, ඔහු නොදන්නා සහ නොදන්නා ග්‍රහලෝකයකට වඩාත් කරදරකාරී සංසිද්ධියක් පිළිබඳ අවශ්‍ය තොරතුරු, මිනිසාට ග්‍රහලෝක අනන්‍යතා අර්බුදයක් අත්විඳිය නොහැක, මන්ද ඔහු සතුව ඇති බැවිනි. දැනටමත් ඔහු තුළ ඇති පුද්ගලික අනන්‍යතා අර්බුදය විසඳා ඇත.

මනුෂ්‍යත්වය ඉතිහාසයේ සහ ජීවිතයේ හැරවුම් ලක්ෂ්‍යයක් කරා වේගයෙන් ඉදිරියට යමින් සිටින බැවින්, මිනිසා සහ විශ්වය අතර වඩ වඩාත් පරිපූර්ණ වූ සම්බන්ධය පෞරුෂය, ස්ථාපිත කළ යුත්තේ මිනිසා තුළ ඇති කම්පනය සැබෑ පුද්ගලභාවයෙන් වන බැවිනි. ඔහුගේ සැබෑ අනන්‍යතාවය ප්‍රකාශ කරන බව සොයාගෙන ඇත. මෙම සැබෑ අනන්‍යතාවය ස්ථාවර නොවන තාක් කල්, පෞද්ගලිකත්වය සම්පූර්ණයෙන් ඉටු නොවන අතර, මිනිසා " පරිණත" යැයි කෙනෙකුට පැවසිය නොහැක , එනම් ඕනෑම පුද්ගලික හෝ ලෝක සිදුවීමකට බාධාවකින් තොරව මුහුණ දිය හැකි බව ඔහු දැනටමත් දන්නා බැවිනි. එය සහ එයට හේතුව ඔහු දනී.

අපි පොදුවේ අනන්‍යතා අර්බුදය ගැන කතා කරන විට, අපි ඒ ගැන කතා කරන්නේ මනෝවිද්‍යාත්මක ආකාරයකින්, අප උත්සාහ කරන්නේ මිනිසා සහ සමාජය අතර ඇති සම්බන්ධය නිර්වචනය කිරීමට ය. නමුත් අනන්‍යතා අර්බුදය ඊට වඩා බොහෝ ගැඹුරුයි. තව දුරටත් මිණුම් දණ්ඩ බවට පත්වන්නේ සමාජ මිනිසා නොවේ, අප සාක්ෂාත් කර ගත යුතු සාමාන්‍යය. ඊට පටහැනිව, සාමාන්‍යභාවය මාරු කළ යුතුය, එනම් ප්‍රතිස්ථාපන vis-à-vis ම ය.

වරහන් තුළ ඇති සාමාන්‍ය මිනිසාගේ සාමාන්‍ය අනන්‍යතාවයට වඩා ඔහුගේ සැබෑ අනන්‍යතාවය පවතින බව මිනිසා වටහා ගැනීමට පටන් ගත් විට, ඔහු කරුණු දෙකක් අවබෝධ කර ගනී. පළමුව, සාමාන්‍ය මිනිසා කනස්සල්ලට පත්වන දෙය තවදුරටත් ඔහුට කරදර නොකරන බව; උපසාමාන්‍ය ග්‍රහලෝකයකට බාධා කරන ඕනෑම දෙයක්, වරහන් අනුව සාමාන්‍ය බව. එවිට මෙම දෘෂ්ටිකෝණයෙන් දකින සැබෑ අනන් යතාවයේ සංසිද්ධිය වඩ වඩාත් වැදගත් වන්නේ, එය සාමාන්‍ය හෝ සිහිසුන් මිනිසාගේ සාමාන්‍ය දුර්වලතා ජයගත හැක්කේ කුමන මිනිසාටද යන්න තීරණය කරන නිසාත්, එපමනක් නොව, එසේ නොවන මිනිසා වඩාත් සාමාන්‍ය බව තීරණය කරන නිසාත් ය. එනම්, අවිඥානික හා සාපේක්ෂ සමතුලිත මිනිසාගේ ප්‍රමාණයට - සාමාන්‍ය ජීවියෙකු අවුල් කිරීමට සහ එවැනි මිනිසෙකු බිහි කරන සංස්කෘතියක බිඳවැටීමට අවදානමක් ඇති ග්‍රහලෝක අනුපිළිවෙලක පීඩනයන්ට සහාය විය හැකිය.

තම සැබෑ අනන්‍යතාවය සොයාගත් මිනිසෙක්, සිය සංස්කෘතියේ නිපැයුමක් වන, තම සංස්කෘතියේ සාරධර්ම අනුව පමණක් ජීවත් වන මිනිසෙකුට බාධාවක් විය හැකි මානසික අත්දැකීම් සියල්ලටම වඩා අවිවාදිත ය. මක්නිසාද යත්, ඇත්ත වශයෙන්ම, සංස්කෘතියක් යනු බාහිර සිදුවීම් බාධා කිරීමට පැමිණෙන විට, එනම් එය නොදන්නා, හෝ සම්පූර්ණයෙන්ම නොදන්නා යථාර්ථයට සාපේක්ෂව එය නැවත අර්ථ දැක්වීමට ඉතා සිහින් සහ ඉතා බිඳෙන සුළු කැන්වසයකි. නොවිසඳුණු අනන්‍යතාවයේ සංසිද්ධියේ මිනිසා තුළ ඇති අනතුර මෙයයි.

මක්නිසාද යත්, ඔහු තම සැබෑ අනන්‍යතාවය සොයා නොගන්නේ නම්, ඔහු චිත්තවේගීයව හා මානසිකව සමාජ මනෝවිද්‍යාවේ වහලෙකු වන අතර චක්‍රයේ අවසාන සිදුවීම් ඔහුගේ සාමාන්‍ය වර්ධනයට බාධා කරන විට ඔහුගේ ස්වාභාවික ප් රතික්‍රියා කරයි. විශ්වීය අවබෝධයේ විධික්‍රමයකට අනුව අත්දැකීම විඳීමට නම් මිනිසා සමාජ පුද්ගල ප්‍රතික්‍රියාවලින් නිදහස් විය යුත්තේ මෙහිදීය. සැබෑ මිනිසා සහ සැබෑ බුද්ධිය සමඟ අනුරූප වන්නේ සැබෑ අනන්‍යතාවය පමණි. මිනිසාගේ සීමාකාරී චිත්තවේගයන්ගෙන් වෙන් වූ බුද්ධියකට අනුව, විශ්වීය සිදුවීම් අපහසුවකින් තොරව විග්‍රහ කළ හැක්කේ සැබෑ අනන්‍යතාවයට පමණි.

මිනිසා තුළ අනන්‍යතා අර්බුදයේ ගැටලුව සරල මනෝවිද්‍යාත්මක ගැටලුවකට වඩා ජීවිතයේ ගැටලුවකි. මිනිසා තමා ගැන සොයා තේරුම් ගැනීමට උත්සාහ කරන මනෝවිද්‍යාත්මක ප්‍රවර්ග ඔවුන්ගේ සැබෑ අනන්‍යතාවය සොයා ගන්නා අයට තවදුරටත් නොගැලපේ, මන්ද ඔවුන් තමා සමඟ අරගල කරන විට ඔවුන් තුළ තිබූ ජීවිතය පිළිබඳ උනන්දුව තවදුරටත් ඔවුන්ට නොමැති බැවිනි. ඔහුගේ සැබෑ අනන් යතාවය ඔහුගේ පැවැත්මේ සෑම අස්සක් මුල්ලක් නෑරම පිරී ඇති අතර, ඔහු විසින් නිර්මාණය කරන ලද මනෝවිද්‍යාත්මක ප්‍රවර්ගවලින් සම්පූර්ණයෙන්ම ස්වාධීන බැවින් අනුකරණයෙන් ඇසුරු කළ නොහැකි ඔහුගේ මනස, මානය හෝ ශක්ති තලයේ වෙනත් මානයක සිරවී සිටින ආත්මයකට ඔහු මුහුණ දී සිටී. සැබෑ අනන්‍යතාවයකින් තොරව අවිඥානක මිනිසාගේ චිත්තවේගීය හා මානසික ව්‍යුහයන්.

අනන්‍යතා අර්බුදයේ සංසිද්ධිය මිනිසාට වේදනාවකි, මන්ද ඔහුට කිසි විටෙකත් තමා තුළම, තමා සමඟම, ඔහු නිරන්තරයෙන් සොයන දේ ගැන පූර්ණ ලෙස සතුටු විය නොහැකි බැවිනි. ඔහුට සතුටින් සිටීම ඔහුට ස්ථිරව ජීවත් වීමට අවශ්‍ය අත්දැකීමකි. නමුත් ඔහු " සතුට" ලෙස හඳුන්වන දෙයට ඔබ ගැන හොඳ හැඟීමක් ඇති විය යුතු බව ඔහුට වැටහෙන්නේ නැත, එනම් බාහිර ලෝකයට මෙම සංහිඳියාවට බාධාවක් නොවන පරිදි පරිපූර්ණ අභ්‍යන්තර සමගියකින් සිටිය හැකි බවයි . ජීවිතයට එහි වර්ණය ලබා දෙන පසුබිම සිදුරු කිරීමට අභ්‍යන්තර බලය ඇති තෙක් ජීවිතය තමාගෙන් වෙන් කොට හඳුනාගත නොහැකි බව ඔහුට වැටහෙන්නේ නැත.

තම සැබෑ අනන්‍යතාවය සොයාගත් මිනිසෙක් ඔහු පෙර ජීවත් වූ ජීවිතයම තවදුරටත් ගත නොකරයි. වර්ණ වෙනස් වී ඇත, ජීවිතය තවදුරටත් එකම ආකර්ෂණයක් නැත, එය සෑම මට්ටමකින්ම වෙනස් වේ. මක්නිසාද යත්, එය අනෙක් පෙර ජීවිතයෙන් වෙන්කර හඳුනාගත හැක්කේ එහි ශක්‍යතාවන් තීරණය කරන්නේ සැබෑ පුද්ගලයා වන බැවිනි, දෙවැන්න ඔහු මුල් බැස ඇති සංස්කෘතිය විසින් නිශ්චිතවම ඔහු මත පැටවීම වෙනුවට.

තම අනන්‍යතාවය සොයාගත් මිනිසාගේ ජීවිතය නිරූපණය කරන්නේ කාලයත් සමඟ නැති වී යන සහ තවදුරටත් සීමාවක් නොමැති, එනම් අවසානයක් පැවසීමයි. දැනටමත්, මෙම අවබෝධය ජීවන මාර්ගයට සහ නිර්මාණාත්මක ජීවන රටාවට මැදිහත් වේ. මිනිසා අනන්‍යතාවයෙන් පෙළෙන තාක්, ඔහු තුළ ඇති සැබෑ බුද්ධිය සමඟ සම්බන්ධයක් නොමැති තාක්, ඔහුට කළ හැක්කේ ඔහුගේ අවශ්‍යතා සපුරාලීම පමණි. ඔහු ආලෝකයේ සිටින විට, ඔහුට තවදුරටත් සහාය වීමට අවශ්‍ය නැත, මක්නිසාද යත්, කම්පනය මගින් ඔහුගේ ජීවන රටාව ඔහු දැනටමත් දන්නා අතර, මෙම දැනුම ඔහුගේ අවශ්‍යතා සඳහා අවශ්‍ය නිර්මාණාත්මක ශක්තිය උත්පාදනය කිරීමට ඔහුට හැකියාව ලබා දෙයි. පැවැත්මේ මනෝවිද්‍යාත්මක කාණ්ඩය මැකී යන්නේ මිනිසාගේ සියලු සම්පත් යොදවා ඒවා ඔහුගේ යහපැවැත්ම සඳහා තබන නිර්මාණාත්මක ශක්තියකට පමණි.

මිනිසාට තම අනන්‍යතා ගැටලුව ජය ගැනීමට නම්, ඔහු තුළ මනෝවිද්‍යාත්මක තලයේ සිට පිරිසිදු බුද්ධියේ තලයට වටිනාකම් විස්ථාපනයක් සිදු විය යුතුය. මනෝවිද්‍යාත්මක වටිනාකම් ඔහුගේ අර්බුදයට දායක වන අතර, ඒවා ඔහුගේ ඉන්ද්‍රියයන්ට, ඉන්ද්‍රිය ද් රව්‍ය අර්ථකථනය කරන ඔහුගේ බුද්ධියට සීමා වී ඇති නිසා, ඔහුට ඔහුගේ බුද්ධියේ අනුමැතියට යටත් නොවන මිනුම් දණ්ඩක් අවශ්‍ය වේ.

තමා තුළට විනිවිද යන දෙයකට සහ එහි චලනයෙන් වැළැක්විය නොහැකි දෙයකට ඔහු තුළ ප්‍රථම වරට විරෝධයක් මතුවන්නේ මෙහිදීය. චලනය ආරම්භ කරන විට, එය එහි මමත්වය සහ එහි වයිමරාස් වලින් ස්වාධීන වූ මෙම බුද්ධියේ ආලෝකය වේ. පිබිදෙන මිනිසා විසින් ජීවත් විය යුතු දේ අනුව ආලෝකයේ බුද්ධිය විනිවිද යාමට ප් රමාණවත් වන අභ්‍යන්තර දුක් වේදනා ඇති කරන සාරධර්මවල විස්ථාපනය දැනෙන්නට පටන් ගන්නේ මෙහිදීය.

අගයන් මාරු කිරීම සිදු කරනු ලබන්නේ ක්‍රමානුකූලව, මමත්වයට යම් සමතුලිතතාවයක් පවත්වා ගැනීමට ඉඩ දීම සඳහා ය. නමුත් කාලයත් සමඟම, නව සමතුලිතතාවයක් ඇති වන අතර මමත්වය තවදුරටත් සාමාන්‍ය දෙයක් නොවේ, සමාජීය වශයෙන්; ඔහු සිහියෙන් සිටී. එනම්, ඔහු ස්වරූපය සහ සම්මතය යන මායාව තුළින් දකින අතර, ඔහුගේ සියුම් ශරීරවල කම්පනය, ඔහුගේ පෞද්ගලිකත්වය පදනම් වන මට්ටම් සහ ඔහුගේ සැබෑ අනන්‍යතාවය ඉහළ නැංවීම සඳහා වඩ වඩාත් පුද්ගලීකරණය වේ.

සාරධර්ම විස්ථාපනය ඇත්ත වශයෙන්ම වටිනාකම් බිඳවැටීමකි, නමුත් අපි එය "විස්ථාපනය" ලෙස හඳුන්වමු, මන්ද සිදුවන වෙනස්කම් දකින ආකාරය පරිවර්තනය කරන කම්පන බලයකට අනුරූප වන බැවින් සිතීමේ මාදිලිය බුද්ධියට අනුවර්තනය විය හැකිය. මිනිසා තුළ ඉහළ මධ්‍යස්ථානයක. කම්පනයෙන් මෙම බිඳවැටීම මමත්වය නොදකින තාක් කල්, එය එහි ව්‍යාජ අනන්‍යතාවයේ බිත්ති සෑදෙන සිතුවිලි, සංකේත කාණ්ඩ ගැන සාකච්ඡා කරයි. නමුත් මෙම බිත්ති දුර්වල වීමට පටන් ගත් වහාම, සාරධර්මවල විස්ථාපනය මමත්වය විසින් තාර්කික කළ නොහැකි ගැඹුරු වෙනසකට අනුරූප වේ. තවද ඔහු විසින් තාර්කික කර ගැනීමට නොහැකිව, අවසානයේ ඔහු ආලෝකයට හසු වේ, එනම්, ඔහු අවසානයේ ස්ථිර හා වර්ධනය වන ආකාරයෙන් එයට සම්බන්ධ වේ.

එවිට ඔහුගේ ජීවිතය චක්‍රයෙන් පරිවර්තනය වන අතර ඉක්මනින්ම ඔහු එය තවදුරටත් සීමාවන් තුළ නොව විභවයන් තුළ ජීවත් වේ. ඇයගේ ආත්මීය ආශාවන් සම්බන්ධයෙන් නිර්වචනය කරනු වෙනුවට ඇයගේ අනන්‍යතාවය ඇය සම්බන්ධයෙන් වඩ වඩාත් නිර්වචනය වේ. ඔහු " සැබෑ සහ වෛෂයික ආත්මය" යන්නෙන් අදහස් කරන්නේ කුමක්දැයි වටහා ගැනීමට පටන් ගනී.

ඔහු සැබෑ සහ පරමාර්ථ ආත්මභාවය අවබෝධ කරගත් විට, ඔහු ඉතා පැහැදිලිව දකියි, මේ මමම තමා බවත්, තමා තුළම තමා තුළ තමා නොදකින, නමුත් තමාට පවතින බව හැඟෙන දෙයක්, එහිදී ඔහු තුළට යමක් ඇතුල් වන බවත්. බුද්ධිමත්, ස්ථිර සහ නිරන්තරයෙන් පවතින දෙයක්. ඇසින් බලන, ලෝකය පවතින ආකාරයට විග්‍රහ කරන දෙයක් මිස මමත්වය පෙර දුටු ආකාරයට නොවේ.

“ මානසික” යැයි නොකියමු , අපි ඔහු “ අධික (ඉහළ මානසික)” යැයි කියමු , එනම් ඔහු දැන ගැනීමට තවදුරටත් සිතීමට අවශ්‍ය නොවන බවයි. අනන්‍යතාවයෙන් දුක් විඳීම ඔහුගෙන් බොහෝ දුරස් වී ඇත, ඔහුගේ අත්දැකීම් වලින්, ඔහු තම අතීතය දෙස ආපසු හැරී බලන විට ඔහු පුදුමයට පත් වේ, ඔහු දැන් සිටින දේ දැක එය ඔහු සිටි දෙයට සංසන්දනය කරයි. .

2 වන පරිච්ඡේදය

පහළ පරිණාමය සහ ඉහළ පරිණාමය BdM-RG #62A (වෙනස් කළ)

හරි, එහෙනම් මම මිනිසාගේ පරිණාමය වෙන් කරනවා, මම ඔහුට පහළට චක්‍රයක් සහ ඉහළට යන චක්‍රයක් දෙනවා OK. ? මම "ආක්‍රමණය" ලෙස හඳුන්වන පහළ චක්‍රය, ඉහළට යන චක්‍රය මම පරිණාමය ලෙස හඳුන්වමි. අද මිනිසා සිටින්නේ මෙම චක්‍ර හමුවන ස්ථානයේය. ඔබට අවශ්‍ය නම් 1969 දිනයක් දෙමු. අපි පරිණාමය දෙස බැලුවහොත් - ඩාවින්වාදී දෘෂ්ටි කෝණයකින් නොව - ගුප්ත දෘෂ්ටි කෝණයකින්, වෙනත් වචන වලින් මිනිසාගේ අභ්‍යන්තර පර්යේෂණ අනුව සහ අප අතීතයට ගියහොත්, අපට වසර දොළොස් දහසකට පෙර බිඳවැටීම එහි ස්ථානගත කළ හැකිය. ඇට්ලන්ටිස් යන නම ලබා දුන් මහා ශිෂ්ටාචාරයක.

එබැවින් මිනිසා තම විඥානයේ අංගයක් වන, ඔහුගේ විඥානයේ සියුම් වාහකයක් වන, මනෝ චිත්තවේගීය සියල්ලට සෘජුවම සම්බන්ධ වන තාරකා ශරීරය ලෙස හඳුන්වන දේ තීව්‍ර ලෙස වර්ධනය කළ කාල පරිච්ඡේදයකි. ඉන්පසු අද දක්වාම මේ ශිෂ්ටාචාරය විනාශ වී ගිය පසු අද දක්වා මිනිසා තම විඤ්ඤාණයේ තවත් කොටසක් වර්ධනය කර ගත් අතර එය අද මිනිසා විසින් භාවිතා කරන බුද්ධියේ ඉතා දියුණු වර්ධනයක් ඇති කළ පහළ මානසික විඤ්ඤාණයේ වර්ධනය ලෙස ගුප්ත ලෙස හැඳින්විය හැකිය. ද්‍රව්‍යමය ලෝකය තේරුම් ගැනීමට.

තවද 1969 සිට මෙම ග්‍රහලෝකයේ මිනිසාගේ විඤ්ඤාණය තුළ නව සංසිද්ධියක් ඇති වී තිබේ, එය විලයනය යන නම දිය හැකි හෝ පෘථිවියේ අධිවිඥානය (උසස් මනස) පිබිදීමේ නම ලබා දිය හැකිය. එමෙන්ම පහළ මනසේ, එබැවින් බුද්ධියේ මට්ටමින් ක්‍රියා කිරීම නවත්වා, අධි මානසික (උසස් මනස) නමින් හැඳින්වෙන තවත් විඥාන ස්ථරයක් වර්ධනය කිරීමට පටන් ගත් මිනිසුන් ලෝකයේ සිටිති. තවද මෙම මිනිසුන් විසින් සංවර්ධන ක්‍රියාවලියක පවතින පීඨයන් වර්ධනය කර ඇති අතර ඒවා ද වෙනත් පරිණාම චක්‍රයක් සමඟ සමපාත වනු ඇත, එය කෙනෙකුට හයවන මූල-ජාතිය ලෙස හැඳින්විය හැකිය.

අද්භූත ලෙස කතා කරන විට, අපි මිනිසාගේ පරිණාමය ගැන කතා කරන විට, අපි කතා කරන්නේ ඇට්ලන්ටිස් ගැන කතා කරන්නේ එහි උප-ජාතීන් සමඟින් හතරවන මූල-වර්ගය වූ ඇට්ලන්ටිස්, පස්වන මූල-ජාතියේ කොටසක් වන අප කොටසක් වන ඉන්දු-යුරෝපීය ජාතීන් ගැන ය. සහ එහි උප වර්ග. තවද එහි උප-ජාති ද ලබා දෙන නව මූල-ජාතියක ආරම්භය දැන් ලෝකයේ පවතී. තවද අවසානයේ හත්වන මූල-ජාතියක් ඇති වනු ඇත, එමගින් මිනිසාට තම ද්‍රව්‍යමය ශරීරයේ කාබනික භාවිතය තවදුරටත් අවශ්‍ය නොවන පරිදි ප්‍රමාණවත් තරම් දියුණු පරිණාමයේ මට්ටමකට ළඟා වීමට හැකි වේ. නමුත් අපි මේ මොහොතේ මේ සමඟ ගනුදෙනු නොකරමු, එබැවින් අපි භෞතික ජාතියක් නියෝජනය නොකරන නමුත් අනාගත මනුෂ්‍යත්වයේ නව මානසික විඥානයේ තනිකරම මනෝවිද්‍යාත්මක අංගයක් නියෝජනය කරන හයවන මූල-ජාතිය සමඟ කටයුතු කරන්නෙමු.

අපට ලැබෙන තොරතුරු අනුව වසර දෙදහස් පන්සියයක් පමණ වන එහි අවසානය දක්වා ආපසු හැරවූ සුළියේ සිට මේ තලයේ මිනිසාගේ පරිණාමය තේරුම් ගැනීමට නම් මිනිසා පසුකර යන බව පැහැදිලිය. විඥානයේ පරම අසාමාන්‍ය අවධීන් හරහා, එනම් ඉන්දු-යුරෝපීය ජාතීන්ට අයත් මිනිසාට සාපේක්ෂව ඇට්ලන්ටිස්හි මිනිසා සීමා වූ තරමටම, වර්තමාන මිනිසා සීමිත වන අතර ඊළඟ මිනිසාට සාපේක්ෂව සීමා වනු ඇත Aurobindo විසින් පුරෝකථනය කරන ලද පෘථිවිය මත අධි මානසික (උසස් මනස) පරිණාමය වීම .

අතිමහත් විඤ්ඤාණයේ (උසස් මනසේ) පරිණාමයේ සිත්ගන්නා කරුණ නම් මෙයයි: අද අප මිනිසුන්, තාර්කික මිනිසුන්, කාටිසියානු මිනිසුන්, පස්වන මූල-ජාතියේ ඉතා පරාවර්තක මිනිසුන් මෙන්, අපට ප්‍රවණතාවක් ඇති තරමට එයයි. අපගේ මනස අපගේ මමත්වයෙන් පාලනය වන බව විශ්වාස කිරීම, මිනිස් මනස මමත්වයෙන් පාලනය නොවන බවත්, මිනිස් මනස එහි මනෝවිද්‍යාත්මක නිර්වචනය තුළ බවත්, මමත්වයේ පරාවර්තක ප්‍රකාශනය බවත්, එහි මූලාශ්‍රය බවත්, හෙට මිනිසා සොයා ගනු ඇත. මේ මොහොතේ "මානසික ලෝකය" ලෙස හැඳින්විය හැකි සමාන්තර ලෝකවල පිහිටා ඇත, නමුත් පසුව එය "වාස්තුවිද්‍යාත්මක ලෝකය" ලෙස හැඳින්වේ .

වෙනත් වචන වලින් කිවහොත්, මා අදහස් කරන්නේ මිනිසා තම චින්තනයේ මූලාශ්‍රය සොයා ගැනීමට කරදරයක් හෝ හැකියාවක් හෝ නිදහසක් ගන්නා තරමට, ඔහුට සමාන්තර ලෝකයන් සමඟ දුරස්ථ මනෝචිකිත්සක සන්නිවේදනයට පිවිසීමට හැකි වනු ඇති බවයි. අවසානයේදී පරිණාමයේ ගමන් මගට, ලෝක මට්ටමින්, තරඟයේ විශ්වීය මට්ටමට පැමිණීමට, පදාර්ථ ක්ෂේත්‍රයේ සහ ආත්මයේ තාරකා ක්ෂේත්‍රයට වඩා ජීවයේ අභිරහස් ක්ෂණිකව විකේතනය කිරීමට හැකි වීම ආත්මයේ මානසික ක්ෂේත්‍රය. තව විදියකට කියනවා නම්, මම අදහස් කරන්නේ, මිනිහා, අද ඔහුට තමාටම ප්‍රමාණවත් මානසික විඤ්ඤාණ තත්ත්වයකට පැමිණීමට හැකි මට්ටමකට පැමිණ ඇති බවයි.

ඒ වගේම මම ස්වයංපෝෂිත මානසික දැනුවත්භාවය කියන විට, මම අදහස් කරන්නේ සත්‍යයේ මනෝවිද්‍යාත්මක වටිනාකම මත පදනම් වූ මානසික දැනුවත්භාවය නොවේ. සත්‍යය යනු පදාර්ථය, එය පුද්ගලික විශ්වාසයක් හෝ සමාජ විශ්වාසයක් හෝ සාමූහික සමාජ විද්‍යාත්මක විශ්වාසයක් වන අතර එය පුද්ගලයෙකු ලෙස මිනිසාගේ හෝ සමාජයේ සාමූහිකත්වයේ චිත්තවේගීය අවශ්‍යතාවල කොටසක් වන අතර එය පදාර්ථ ලෝකයේ ප්‍රමුඛතාවය සහතික කරයි.

නමුත් මානව වර්ගයාගේ අනාගත විඥානයේ පරිණාමය අනුව, සත්‍යයේ සංසිද්ධිය හෝ එහි මනෝවිද්‍යාත්මක සහකරු හෝ එහි චිත්තවේගීය වටිනාකම, මිනිසාට තවදුරටත් තම හෘද සාක්ෂියේ චිත්තවේගීයභාවය භාවිතා කිරීමට නොහැකි වනු ඇත යන සරල හේතුව නිසා සම්පූර්ණයෙන්ම නිෂ්ඵල වනු ඇත. ඔහුගේ දැනුම පිළිබඳ මනෝවිද්‍යාත්මක ඇගයීම. ඔහුට තවදුරටත් තම හෘද සාක්ෂියේ චිත්තවේගීය බව තම ආත්මභාවයේ මානසික ආරක්ෂාව වර්ධනය කිරීම සඳහා භාවිතා කිරීමට සිදු නොවනු ඇත.
එබැවින් ලෝකයේ සියලුම ජාතීන්ට අයත් කොටස් වන විශ්වීය විඥ්ඥාණයේ අවසාන වශයෙන් අනන්ත තේමාවල ප්‍රකාශනය, විස්තාරණය සහ නිර්වචනය අධ්‍යාත්මික තලය මත ව්‍යායාම කිරීමට මිනිසාට මනසින් නිරපේක්ෂ නිදහස් වනු ඇත. විශ්වයේ ඇති සියලුම වර්ගවල, සහ ඇත්ත වශයෙන්ම ආත්මයේ නොවෙනස්වන එකමුතුවේ කොටසක් වන, එහි නිරපේක්ෂ නිර්වචනය අනුව, ආලෝකයේ මුල් මූලාශ්‍රය සහ විශ්වය තුළ එහි චලනය ලෙස.

එබැවින් මනුෂ්‍යත්වයේ පරිණාමයේ ලක්ෂ්‍යයක් පැමිණෙනු ඇත, අවසානයේදී මමත්වය ස්වයං විඥානය මත නැතිවූ කාලය ගොඩනගා ගන්නා අතර, ආත්මය අවසානයේ එහි මනෝවිද්‍යාත්මක නිර්වචනයේ විය හැකි සීමාවන් කරා ළඟා වනු ඇත. ඔහුගේ පිරිසිදු මනසේ, එනම් ඔහුගේ ආත්මයේ නිර්මාණාත්මක හැකියාව.

ඒ වගේම අපි පෘථිවියේ, විවිධ ජාතීන් තුළ, විවිධ ජාතීන් තුළ, විවිධ කාලවලදී, විලයනය දන්නා පුද්ගලයන්, එනම්, මෙතරම් විශාල දැනුම් මූලාශ්‍ර වෙත ක්ෂණිකව ගුරුත්වාකර්ෂණය කිරීමට හැකි වන්නේ කවුරුන්ද යන්න සොයා ගනු ඇත. තාක් ෂණය, තාක්ෂණය, වෛද්‍ය විද්‍යාව, මනෝවිද්‍යාව හෝ ඉතිහාසය අනුව ලෝක විද්‍යාව මුළුමනින්ම පෙරලා දමනු ඇත. කුමක් සඳහා ද ? මක්නිසාද යත් මිනිසාගේ පරිණාමයෙන් පසු ප්‍රථම වතාවට, ආත්මය ද්‍රව්‍යයට බැසීමෙන් පසු ප්‍රථම වතාවට සහ ආත්මය ද්‍රව්‍ය සමඟ බැඳීමෙන් පසු පළමු වතාවට, මිනිසා අවසානයේ එහි නිරපේක්ෂ දැනුම දරා ගැනීමේ හැකියාව ලබා ගනු ඇත. .

මම නිරපේක්ෂ දැනුම ලෙස හඳුන්වන්නේ මිනිස් මනසට තමන්ගේම ආලෝකය දරා ගැනීමට සහ අවශෝෂණය කර ගැනීමට හැකි වීමයි. නිරපේක්ෂ දැනුම පීඨයක් නොවේ. නිරපේක්ෂ දැනුම යනු පූර්ව නිශ්චය කිරීමක් නොවේ. නිරපේක්ෂ දැනුම අවශ්‍ය නොවේ. නිරපේක්ෂ දැනුම යනු නිවැරදි කිරීමේ පරිණාමීය අවසානයකි, එනම්, විශ්වයේ ආලෝකයේ ක්‍රියාකාරීත්වයේ මහා ක්ෂේත්‍රයේ කොටසක් වන අතර එය සියලු ක්ෂේත්‍ර, සියලු බුද්ධිමත් අවස්ථා, එනම් - විශ්වයේ සියලුම බුද්ධිමත් විශේෂයන්ට හමුවීමට පැවසීමට ඉඩ සලසයි. උසස් මානසික තලය, එනම් පරිණාමය අතරතුර ඉඩ දීමට තරම් බලවත් ශක්ති තලයක් මත, ඊතරික් ශරීරයේ නොවැළැක්විය හැකි පුනර්ජීවනය සඳහා ශරීරයේ ද්‍රව්‍ය අවසානයේ අතුරුදහන් වීම.

එනම්, විශ්වීය ජීවියා සෑදෙන විවිධ සූර්යයන් සමඟ, එහි ආත්මය, ආලෝකය සහ පදනම යන චලන සහ අවබෝධය යන විවිධ සූර්යයන් සමඟ ශක්තිජනක සංඝටකයකට අවසානයේ ඇතුල් වීමට මිනිසා තුළ ඇති හැකියාව අද අප තුළ ඇති අනන්තය. පරමාණුක විඥානය අමතන්න! එබැවින් පරිණාමය අතරතුර මිනිසාට සිතීමට අවශ්‍ය නොවී, සිතීමට අවශ්‍ය නොවී, පෘථිවිය මත විශ්වීය විඥානයේ ආක් රමණශීලී පුරාවිද්‍යා සහ පරිණාමිකයන්ගේ මානසික ගොඩනැගීමට අවසාන වශයෙන් වර්ගීකරණ ආකාරයකින් මැදිහත් වීමට මිනිසාට හැකි වනු ඇත. . මෙයින් අදහස් කරන්නේ මිනිසා අවසානයේ තමා නිරපේක්ෂ බුද්ධිමත් ජීවියෙකු බව වටහා ගන්නා බවයි.

බුද්ධිය යනු හුදෙක් අධ්‍යාපන ක්‍රමයක ප්‍රකාශනයක් නොවන බවත්, බුද්ධිය නිරපේක්ෂ ආකාරයකින් ඕනෑම මනසක ඕනෑම කාරණයකදී මූලික ලක්ෂණයක් බවත් මිනිසාට වැටහෙනු ඇත. විශ්වීය පරාවර්තනයෙන් එනම් ඉතිහාසයෙන් සහ මනුෂ් යත්වයේ මතකයෙන් අප මත පනවා ඇති සීමාවන් තුළ ඊගෝ ලෙස හෝ මනුෂ්‍ය ආත්මයක් ලෙස ජීවත් වීමට අපට බල කෙරෙන ස්ථානයක අද සිටින්නේ අප පමණි.

මිනිසාට තවමත් ලබා දී නොමැත - මෙම ක්ෂේත්‍රයේ ප්‍රමාණවත් විද්‍යාවක් නොමැති නිසා - මිනිසාට ඔහුගේ මනෝභාවය ක්‍රියා කරන්නේ කෙසේද, ඔහුගේ මමත්වය ක් රියා කරන්නේ කෙසේද, ඔහුගේ මමත්වය ක්‍රියා කරන්නේ කෙසේද යන්න දැන ගැනීමට සහ තේරුම් ගැනීමට හැකියාව තවමත් ලබා දී නොමැත. බුද්ධිය යන පදය එහි විශ්වීය නිර්වචනය තුළ අදහස් කරන්නේ කුමක්ද, එබැවින් මිනිසා අද ඔහුගේ තාරකා ශරීරයට හසු වී ඇත, එනම් ඔහුගේ ඉන්ද්‍රියයන් විසින් කියනු ලැබේ!

විද්‍යාවේ සියලු න්‍යායන් විය යුත්තේ අද විද්‍යාව ප්‍රයෝජනවත් නොවේය යන අර්ථයෙන් නොව පරිණාමයේදී ඉතිහාසය සහ විෂය මගින් සංශෝධනය කළ යුතු කුඩා සීමිත දැනුමක් වන ඔහුගේ මූලික හා විශ්වීය දැනුම වෙනුවට ආදේශ කිරීමට ඔහු බැඳී සිටී. ඊට පටහැනිව එය ඉතා ප්‍රයෝජනවත් වේ, නමුත් අද විද්‍යාව ද එහි නොවැළැක්විය හැකි ගමනක් යන්නේ තමන්ගේම අහෝසි කිරීම කරා යන අර්ථයෙනි. සියලුම ශිෂ්ටාචාරයන් තමන්ගේම අහෝසි කිරීම කරා නොවැළැක්විය හැකි ගමනක් ගනින්නාක් මෙන්.

නමුත් ශිෂ්ටාචාරයක් තම අහෝසි කිරීමේ යථාර්ථය ඉතා දුෂ්කර ලෙස සලකනවා සේම, විද්‍යාවට තමන්ගේම අහෝසි කිරීම සාක්ෂාත් කර ගැනීම දුෂ්කර වනු ඇත. ඒ වගේම ඒක හරිම සාමාන්‍ය දෙයක්. තමාගේ පරිහානිය හෝ විනාශය ලොවට ප් රවර්ධනය කරන ලෙස සිතන හෝ යම් සිහිකල්පනාවක් ඇති ජීවීන්ගෙන් ඉල්ලා සිටිය නොහැක. පරිණාමය වීමට, මනුෂ්‍යත්වයට පරිණාමය වීමට ඉඩ දීම සඳහා අප කුමක්ද, අප කර ඇති දේ, අපට කළ හැකි දේ පිළිබඳව දැනුවත් වීමට අපි බැඳී සිටිමු.

නමුත් පුද්ගලයන් වශයෙන් - තනි පුද්ගලයන් වශයෙන් මම පැහැදිලිවම කියමි - අවසානයේදී අපගේ ග්‍රහලෝකයේ විශ්වීය හා විශ්වීය අනුපිළිවෙලකට මුහුණ දීමට අපි බැඳී සිටිමු, අතීතයේ මිථ්‍යා විශ්වාසවල විශාල චලනයන් ඇති කළ මානයන්ට මුහුණ දීමට අපි බැඳී සිටිමු. ලොවෙහි; විද්‍යාවේ පරිණාමයත් සමග අභාවයට ගිය ව් යාපාර සහ විද්‍යාව විසින් තරයේ ප්‍රතික්ෂේප කරන ලද ව්‍යාපාර.

එබැවින් විශ්වය අසීමිත බව අවබෝධ කර ගැනීම සඳහා යම් යම් අත්දැකීම් සමාලෝචනය කිරීමට සහ නැවත ලබා ගැනීමට කාලයත් සමඟ අපි බැඳී සිටිමු. මිනිස් විඥානය අසීමිත බවත්, මිනිසා ඔහුගේ අභ්‍යන්තරය තුළ ඔහුගේ විඥානය හැකි තරම් බලවත් බවත්ය. සමස්තයක් වශයෙන් ගත් කල, මනසේ ධාරා රාශියක සන්ධිස්ථානයක ජීවත් වීමට අපට බල කෙරෙන ලෝකයක එය අද ඉතා වැදගත් ය ... සමස්තයක් ලෙස මම පවසන විට, මම නිසැකවම බලන්නේ මෙය කොතැනද යන්නයි. සාමූහික අත්දැකීම් පෞද්ගලිකත්වය සමඟ ගැටීම සෙමෙන් සාමූහික මනෝ ව්‍යාධියක් ඇති කිරීමට නැඹුරු වේ.

රූපවාහිනියෙන් හෝ පුවත්පත්වලින් හෝ නිදහස් මාධ්‍යයේ විවිධ ස්වරූපවලින් ඔවුන්ගේ සංඛ්‍යාවෙන් විස්තාරණය කරන ලද අදහස් ප්‍රවාහයන් මගින් මිනිසාට දින නියමයක් නොමැතිව ලෝකය තුළ බෝම්බ හෙලිය නොහැක. සත්‍යය සහ බොරුව අතර ඇති විවිධ ගැටීම් නිසා ඇතිවන මේ මානසික සහ මානසික ආතතිය මිනිසාට තවදුරටත් දරාගත නොහැකි තත්ත්වයක් උදාවනු ඇත. මිනිසාට තමාට සාපේක්ෂව යථාර්ථය නිර්වචනය කිරීමට බල කෙරෙන විට පෘථිවියේ අධි මානසික (උසස් මනස) විඥානයේ පරිණාමයේ ලක්ෂ්‍යයක් පැමිණෙනු ඇත. නමුත් එය විශ්වීය වනු ඇති "එකම" වනු ඇත, එය තමාගේම ආත්මයේ සෙල්ලක්කාර බව හෝ තමාගේම මමත්වයේ නිෂ්ඵලකම හෝ තමාගේම මගේ අනාරක්ෂිත බව මත පදනම් වූ "එකක්" නොවේ.

ඉතින් ඒ මොහොතේ සිට මිනිසාට මානව සංසිද්ධිය, ශිෂ්ටාචාරය එහි සෑම අංශයකින්ම තේරුම් ගැනීමට හැකි වනු ඇත. එමෙන්ම ඔහු තවදුරටත් ලෝකයේ සිදුවෙමින් පවතින දේ හෝ සිදුවනු ඇති දේ මගින් මනෝවිද්‍යාත්මකව " *පුරවා*" (*අපයෝජනයට*) ලක් නොවනු ඇත . මිනිසා නිදහස් වීමට පටන් ගනී. ඔහු නිදහස් වීමට පටන් ගත් මොහොතේ සිට, ඔහු අවසානයේ ජීවිතය එහි මූලික ගුණාංගයෙන් තේරුම් ගැනීමට පටන් ගනී. ඔහු වැඩි වැඩියෙන් පරිණාමය වන තරමට, ඔහු නිරපේක්ෂ, අනුකලනය සහ උගත් ආකාරයකින් ජීවිතය අවබෝධ කර ගනු ඇත, එය අද පස්වන මූල-ජාතියේ විඥානයේ කොටසක් නොවේ.

ඇයි මේ හැම වචනයක්ම? මිනිසාට තමාටම දිය හැකි, තමාව නිර්මාණය කළ හැකි ලොකුම විශ්වාසවන්තකම තමාට විශ්වාසවන්ත බව තේරුම් ගැනීමට මිනිසාට ටිකෙන් ටික ගෙන ඒම. අප ජීවත් වන්නේ විශේෂයෙන් බටහිර ලෝකයේ පුද්ගලවාදයට ඇති ආදරය ඉතා දියුණු වූ සියවසක ය. අපි වැඩි වැඩියෙන් පුද්ගලවාදීන් බවට පත් වී ඇත, නමුත් පුද්ගලවාදය, එය ආකල්පයක් ලෙස පවතී නම්, මූලික වශයෙන් මිනිසුන්ගේ යථාර්ථයට ඒකාබද්ධ නොවේ. වෙනත් වචන වලින් කිවහොත්, රතු පැන්ටියක් සහ කහ පැහැති සෙරෙප්පුවක් රැගෙන පාරේ ඇවිදීම සහ නිව් යෝර්ක් හි නිව් යෝර්ක් හි ටයිම්ස් චතුරශ්‍රයේ ආදරය කිරීම පුද්ගලවාදයකි. නමුත් එය විකේන්ද්‍රියයි, එය මිනිස් විඥානයේ තාරකාකරණයේ ආකාරයකි.

මිනිසාට තම පෞද්ගලිකත්වය පවත්වා ගැනීමට, පදයේ සංයුක්ත අර්ථයෙන් තම පෞද්ගලිකත්වය ප්‍රකාශ කිරීමට, මහජනතාවගේ සංවේදීතාවන් උල්ලංඝණය කිරීමට හෝ තම ජනතාවගේ සංවේදීතාවන් උල්ලංඝණය කිරීමට හෝ තම ජනගහනයේ සංවේදීතාවන් නොසලකා හැරීමට අවශ්‍ය නොවේ. එය මායාවක්! එය විසිවන සියවසේ ලාක්ෂණික විලාසිතාවන්ගේ කොටසකි, අවසානයේ එය අශෝභන බවට පත්වේ, අවසානයේ එය මෝඩයෙකු බවට පත් වේ, අවසානයේ එය සෞන්දර්යය නැති තරම්ය. එබැවින් නව මිනිසා, පෘථිවිය මත අධි මානසික (උසස් මානසික) විඥානයේ පරිණාමය, ඇත්ත වශයෙන්ම, මිනිසාට අතිශයින්ම පුද්ගලීකරණය වූ නමුත් පුද්ගලවාදී නොවන විඥානයක් වර්ධනය කිරීමට ඉඩ සලසයි.

මිනිසා පුද්ගලීකරණය වන්නේ ඇයි? මක්නිසාද යත් ඔහුගේ විඥානයේ යථාර්ථය පදනම් වන්නේ ඔහුගේ ආත්මයේ විලයනය මත වන අතර මිනිසුන්ගේ ඇස් හමුවේ ලෝකයට ප්‍රක්ෂේපණය නොකෙරෙන අතර, විකේන්ද්‍රියත්වය සමඟ යම් ආකාරයක ආලවන්ත හැඟීම් පැමක් හෙළි කරයි. මිනිසෙකුට සැබෑ වීමට ලොව පුරා සැරිසැරීමට හා ආන්තික වීමට අවශ්‍ය නොවේ. ඊට ප්‍රතිවිරුද්ධව. මිනිසා වඩාත් සවිඥානක වන තරමට, ඔහු ආන්තික වීම අඩු වනු ඇත, ඔහු වඩාත් සැබෑ වනු ඇත සහ ඔහුගේ යථාර්ථය තුළ ඔහු වඩාත් නිර්නාමික වනු ඇත. මක්නිසාද යත් මිනිසාගේ යථාර්ථය ඔහු සහ ඔහු අතර යන දෙයක් මිස ඔහු සහ අන් අය අතර නොවේ.

අපගේ ග්‍රහලෝකයේ මූල-ජාතියක අවශ්‍ය පරිණාමය දෙස බැලුවහොත්, එය මිනිස් සංසිද්ධිය ටිකක් තේරුම් ගැනීමට ය. අපි ඛණ්ඩාංක ස්ථාපිත කරන බව, එය සම්පූර්ණයෙන්ම ප්‍රායෝගිකයි, එය සම්පූර්ණයෙන්ම නොවැළැක්විය හැකි සිදුවීම් සඳහා කාලානුක්‍රමික අවබෝධය රාමුවක් ලබා දීමයි! නමුත් අපි සවිඥානික ජාතියක් ගැන කතා කරනවා නම්, සවිඥ්ඥාණික මනුෂ්‍යත්වයක් ගැන කතා කරනවා නම්, සවිඥානික මිනිසුන් සහ පුද්ගලයන් ගැන කතා කිරීමට අපි බැඳී සිටිමු.

පෘථිවියේ අධිවිඥානයේ (උසස් මනසේ) පරිණාමය කිසි විටෙකත් කිසිදු සාමූහිකත්වයක පරිමාණයෙන් සිදු නොවේ. පෘථිවියේ අධි මානසික (උසස් මනස) විඥානයේ පරිණාමය කිසි විටෙකත් සාමූහික බලවේගයක ප්‍රකාශනයක් නොවනු ඇත. සෑම විටම ලෝකයේ සිටින පුද්ගලයන් වනුයේ ටිකෙන් ටික, වැඩි වැඩියෙන්, ඔවුන්ගේ විඥානයේ එම ලක්ෂ්‍යය වෙත ආකර්ෂණය වන අතර එහිදී ඔවුන් තමන්ගේම මූලාශ්‍රය, ඔවුන්ගේ ආත්මය, ඔවුන්ගේ ද්විත්වය, අප එය හැඳින්විය හැකි මෙම යථාර්ථයට එක්සත් වනු ඇත. මිනිසාගේ කොටසකි.

නමුත් මෙම දිශාවේ මූලික චලනය මෙය මත පදනම් වනු ඇත: එය බලය බෙදීමෙන් පසු කිසි දිනෙක සිදු නොකළ චින්තනයේ සංසිද්ධිය පිළිබඳ අවබෝධය මත පදනම් වනු ඇත. " *මම හිතන්නේ, ඒ නිසා මම"* *යනුවෙන්* පැවසීම ප්‍රමාණවත් නොවේ . “*මම හිතන්නේ, එබැවින් මම වෙමි*’ යනුවෙන් පැවසීම ඩෙකාර්ට්ට හොඳ වූයේ පුද්ගලයාගේ මට්ටමින් අවබෝධ කර ගත යුතු බලයක් චින්තනය තුළම ඇති බව අවබෝධ කර ගැනීමේ කොටසක් වූ බැවිනි.

නමුත් නිර්මාණාත්මක විඥානයේ මට්ටමින්, මිනිසා පිළිබඳ සිතුවිල්ල සම්පූර්ණයෙන්ම, සමෝධානික ලෙස පරිවර්තනය වන විට කාරණය පැමිණේ. පරිණාමයේදී මිනිසා තවදුරටත් සිතන්නේ නැත. ඔහුගේ චින්තනය ඔහුගේ උසස් මනසෙහි නිර්මාණාත්මක ප්‍රකාශන ක්‍රමයක් බවට පරිවර්තනය වනු ඇත. ඒ සිත සම්පූර්ණයෙන් ම බවට පත් වෙයි telepsychic. වෙනත් වචන වලින් කිවහොත්, මිනිසා විශ්ව තලයන් සමඟ ක්ෂණික සන්නිවේදනය අත්විඳිනු ඇති අතර මෙම සන්නිවේදන ක්‍රමය තවදුරටත් පරාවර්තනය නොවනු ඇත. සිතුවිල්ල මිනිසාගේ මනසේ පිළිබිඹු වීම නවත්වන මොහොතේ, චින්තනය ආත්මීය වීම නවතියි. මිනිසා සිතන බව අපට තවදුරටත් පැවසිය නොහැක, මිනිසා ඔහුගේම විඥානයේ විශ්ව තල සමඟ සන්නිවේදනය කරන බව අපි කියමු.

නමුත් මිනිසාට මෙය සමෝධානික ආකාරයකින් අවබෝධ කර ගැනීමට නම්, එම සිතුවිල්ල අද අප පිළිසිඳ ගන්නා විට, අද අප එය ජීවත් වන විට, එය අපගේ මනසෙහි ස්ථිරව ඇති පරිදි, එය නිපදවන හෝ වටහා ගන්නා ලෙස ඔහුට අවබෝධ කර ගැනීම අවශ්‍ය වනු ඇත. අවිඥානික මමත්වය ලෙස අප තුළ යම් අවබෝධයක් අවදි කළ යුතුය, එනම් මිනිසාට තම සිතුවිල්ල තුළම තමාට එරෙහිව ඔහුව බෙදන බව අවබෝධ කර ගැනීමට හැකි විය යුතුය. ඔහු ආක්‍රමණයේ සහ සිහිසුන්භාවයේ හේතූන් මත ඔහුව හොඳ හෝ නරක, සත්‍ය සහ අසත්‍ය යන ධ්‍රැවීයතාවට යටත් කරන තාක් දුරට පමණි.

මිනිසා තම මනස ධ්‍රැවීකරණය කරන මොහොතේ සිට, ඔහු සෘණ හෝ ධනාත්මක ඛණ්ඩාංක ස්ථාපිත කළත්, ඔහු ද්‍රව්‍යමය තලය මත සහ විශ්වීය හා විශ්වීය තලය මත තමා අතර භේදය නිර්මාණය කර ඇත. මෙය ඉතා වැදගත් වේ! එය කෙතරම් වැදගත් ද යත් එය ඊළඟ පරිණාමයේ මූලික යතුර වේ. ධ්‍රැවීයතාවකට සම්බන්ධව අපගේ සිතුවිලි සැමවිටම ජීවත් වීමට අප පෙළඹෙන්නේ අපගේ මමත්වයේ මූලික අනාරක්ෂිත භාවයයි. එය අපගේ හැඟීම්වල බලවත් හා පිසාච හැකියාවයි. අප දන්නා දේ දරා ගැනීමට නොහැකි වීම මමත්වය හෝ දුර්වල උගත් හෝ අධික ලෙස අධ්‍යාපනය ලැබූ පුද්ගලයෙකු ලෙස අපගේ නොහැකියාවයි.

යමක් නොදන්නා මිනිසෙක් ලොව නැත. සියලුම මිනිසුන් යමක් දන්නා නමුත් ලෝක ව්‍යාප්ත අධිකාරියක් නොමැත, සංස්කෘතික නිර්වචනයක් නොමැත, යමක් දැන ගැනීමට මිනිසෙකුට සහාය විය හැකි සංස්කෘතික ආධාරකයක් ලෝකයේ නොමැත. මෙම දැනුම ඇති කර ගැනීමටත් මිනිසාගේ මනස ඒ සමඟම සකස් කිරීමටත් යමක් දැන ගැනීමේ අයිතිය තමන්ටම ලබා දෙන ආයතන තිබේ. ඒක අපි විද්‍යාව කියලා විවිධ මට්ටම්වලින් හඳුන්වනවා, ඒක සාමාන්‍ය දෙයක්.

නමුත් ලෝකයේ ආයතනවලට මිනිසාට ඔහුගේ අධිකාරිය ලබා දිය හැකි හෝ ආපසු ලබා දිය හැකි ප්‍රතිවිරුද්ධ චලනයක් නොමැත, එනම් යම් දිනක ඉතා විශාල විය හැකි තමාගේම කුඩා මානය ඔහුට ආපසු ලබා දෙන්න. , ඔහුගේම ආලෝකය. තවද ඔබට අධ්‍යාත්මික ක්ෂේත්‍රය තුළ, ආගමික ක්ෂේත්‍රය තුළ ඉතා සරල ආකාරයකින් පරීක්ෂණයට මුහුණ දිය හැකිය. යම් දිනක මිනිසාගේ මධ්‍යස්ථාන ප්‍රමාණවත් ලෙස විවෘත වූ විට ඔහුට විද්‍යා ක්ෂේත්‍රය තුළ ද එසේ කිරීමට හැකි වනු ඇත.

ලෝකයේ සිටින මිනිසෙක්, නිදසුනක් වශයෙන්, පූජකයෙකු හෝ ආගමේ වැඩ කරන කෙනෙකු හමුවීමට ගොස් දෙවියන් වහන්සේ ගැන ඔහුට කතා කරන, ඔහු මෙසේ කියනු ඇත: "හොඳයි, හොඳයි, දෙවියන් වහන්සේ එවැනි දෙයක්, එවැනි දෙයක් , *එවැනි දෙයක්* " , යමෙක් ඔහුට කියනු ඇත: " *නමුත් ඔබ දෙවියන් වහන්සේ ගැන කතා කරන්නේ කුමන අයිතියකින්ද? ඔබ දෙවියන් වහන්සේ ගැන කතා කරන්නේ කුමන අයිතියකින්ද?* මිනිසා අඩු පරිණාමය වී ඇත්නම් සහ ඔහුගේ මනසෙහි නිර්මාණාත්මක මානයෙහි කොටසක් වන වෙනත් ස්වරූප පිටතට ගෙන ඒමට හෝ මතු කිරීමට දෙවියන් වහන්සේගේ ස්වරූපය සැබවින්ම බණ්ඩනය කළ හැකි නම්, දෙවියන්ගේ ආයතනිකකරණයෙන් ඔහු ඊටත් වඩා ප්‍රතික්ෂේප කරනු ඇත. නොපෙනෙන ලෝක පිළිබඳ අවබෝධය.

ඉතින් ඒ නිසා තමයි මම කියන්නේ මිනිසාට ලෝකයාගේ සහයෝගය ඇතිව, අධි විඤ්ඤාණයක (උසස් මනසකින්) ලෝකයට ඇතුල් වෙන්න බැරි වෙනවා කියලා. ලෞකික ආධාරක අවශ්‍යතාවයෙන් සම්පූර්ණයෙන් මිදී, අවසානයේ සෙමෙන් තමා දන්නා දේ අවබෝධ කර ගැනීමට සහ දරා ගැනීමට පටන් ගන්නා විට මිනිසාට අධි මානසික (උසස් මනස) විඥානයක් ලැබෙනු ඇත. තවද මේ සඳහා කොන්දේසිය වන්නේ සත්‍ය සහ අසත්‍ය යන ධ්‍රැවීයතාවේ උගුලට හසු නොවීමයි.

මිනිසා සත්‍ය සහ අසත්‍ය ධ්‍රැවීයතාවේ උගුලට හසු වුවහොත්, ඔහු තම හෘදය සාක්ෂිය උද්දීපනය කරයි, ඔහු තම මමත්වය අනාරක්ෂිත කරයි, ඔහු යථාර්ථය කෙරෙහි ආන්තික ආකල්ප වර්ධනය කරයි. සත්‍ය සහ අසත්‍යය නියෝජනය කරන්නේ දැන ගැනීමට ඇති මානසික නොහැකියාවේ මනෝවිද්‍යාත්මක සංරචක පමණි! හොඳ ස්ටීක් එකක් කනකොට ඒක ඇත්තද බොරුද කියල හිතන්නෙ නෑ, ධ්‍රැවීයතාවක් නෑ, ඒකයි හොඳ. නමුත් එහි පණුවන් සිටීදැයි ඔබ කල්පනා කිරීමට පටන් ගත්තොත්, ඔහ්, එවිට ඔබේ බඩ ප්‍රතිචාර නොදක්වයි! ඒවගේම දැනුමේ මට්ටමින්, දැනුම් මට්ටමින් ඒකම තමයි.

දැනුම පහළ මනසට වන අතර, උසස් මනසට දැන ගැනීමයි. දැනුම මමත්වයේ අවශ්‍යතාවයේ කොටසක් වන අතර දැන ගැනීම ආත්ම යථාර්ථයේ කොටසකි. ඒ නිසා දැන ගැනීම සහ දැන ගැනීම අතර භේදයක් හෝ වෙන්වීමක් නැත. දැනුම එක් විඥානයක කොටසක් වන අතර දැනුම තවත් මට්ටමක කොටසකි.

දැනුම් ක්ෂේත්‍රය තුළ අපි යම් යම් දේවල් ගැන කතා කරන අතර දැනුම් ක්ෂේත්‍රය තුළ වෙනත් දේවල් ගැන කතා කරනවා. දෙදෙනාට මුණගැසීමට, සහෝදරත්වයට සහ ඉතා හොඳින් එකට සිටිය හැකිය. සිව්වන මහල ඊට ඉහළින් පස්වන මහල සමඟ සෑම විටම හොඳයි ... තවද මිනිසා බහුමාන ජීවියෙකි, නමුත් මිනිසා යනු අත්දැකීම් විඥානයක් ඇති සහ ජීවත් වන ජීවියෙකි. අපට පෘථිවිය මත පර්යේෂණාත්මක විඥානයක් ඇත. අපට නිර්මාණාත්මක විඥානයක් නැත.

ඔබේ ජීවිතය දෙස බලන්න! ඔබේ ජීවිතය අත්දැකීමක්! ඔබ ලෝකයට ඇතුළු වූ මොහොතේ සිට, ඔබේ ජීවිතය නිරන්තරයෙන් අත්දැකීම් මත රඳා පවතී, නමුත් මිනිසාට සදාකාලික අත්දැකීම් මත ජීවත් විය නොහැක. යම් දිනක මිනිසාට නිර්මාණාත්මක සවිඥානකත්වයෙන් ජීවත් වීමට සිදුවනු ඇත, එම අවස්ථාවේ දී ජීවිතය ජීවත් වීමට වටිනවා, ජීවිතය ඉතා විශාල වේ, ඉතා විශාල වේ, එය නිර්මාණශීලීත්වයේ බලවත් වේ, සහ මිනිසා ජීවත්වන ආත්ම අත්දැකීම නවත්වයි. නමුත් මිනිසා අත්දැකීමෙන් ජීවත් වන්නේ ඇයි? මන්ද එය බලගතු බලවේග සමඟ බැඳී ඇති බැවිනි - මම මතකය ලෙස හඳුන්වන - ඇත්ත වශයෙන්ම ඔබ "ආත්මය" ලෙස හඳුන්වන දේ වේ.

මිනිසා ජීවත් වන්නේ ඔහුගේ ආත්මයෙන් නොවේ, ඔහු ආත්මයට බැඳී ඇත, ඔහු ආත්මයෙන් ජීවත් වේ, ඔහු ආත්මයෙන් නිරන්තරයෙන් පිසාච වේ. පුනරුත්පත්තිය ගැන පර්යේෂණ කළ අය *හෝ* යම් අතීතයක නැවත භවයකට පැමිණීම ගැන පර්යේෂණ කළ අය ඉතා හොඳින් තීරණය කර තිබෙනවා අද ඇතැම් පුද්ගලයන් යම් යම් දේවලින් පීඩා විඳින්නේ පෙර භවයක හේතුව නිසා දුක් වින්ද නිසා. ද්‍රව්‍යමය ජීවිතයට පෙර ඇති වූ කම්පනයන් අත්විඳින නිසා හෝ පෙර තත්ත්වයේදී හුස්ම හිර වූ නිසා හෝ සෝපානයකට (ලිෆ්ට්) ඇතුළු වීමට නොහැකි අය අද සිටිති, ඔවුන්ට හැකියාවක් නැත. එබැවින් මිනිසා ආත්මයේ අත්දැකීම ජීවත් වේ.

ඔහු ජීවත් වන්නේ, ඔහු තම මතකයට බැඳී ඇත, ඔහුගේ පෙර පරිණාමීය ව්‍යාපාරයේ විශාල අවිඥානක මතකය තරමටම, ඔහු පර්යේෂණාත්මක ජීවියෙකු ලෙස අද ජීවත් වන අතිවිශාල මතකය ද වේ. පෘථිවියේ අත්දැකීම් වලින් මිනිසාට සදාකාලිකව ජීවත් විය නොහැක! එය ඔහුගේ විශ්ව බුද්ධියට කරන අපහාසයකි. මිනිසාට කිව නොහැකි බව මිනිසාගේ ස්වභාවය සමඟ කිසිසේත්ම නොගැලපේ: " *හොඳයි, හොඳයි, මට අවුරුදු දහයකින් මට එවැනි දෙයක් කිරීමට අවශ්‍යයි, අවුරුදු පහකින් මට එවැනි දෙයක් කිරීමට අවශ්‍යයි*', එය ස්වභාවය සමඟ කිසිසේත්ම නොගැලපේ. ඔහු තම අනාගතය නොදන්නා බව මිනිසා!

තමාට පෙර මිනිසාගේ ස්වභාවය නොදැන සිටීම මිනිසාගේ ස්වභාවය සමඟ නොගැලපේ. වෙනත් වචන වලින් කිවහොත්, මිනිසා තුළ ඇති මෙම ආත්මයට හේතුවේ නියමයන්ට අනුව ජීවත් වීමට බල කෙරෙන බව මිනිසාගේ ආත්මය සමඟ සම කළ නොහැකි ය, මන්ද අද ද්‍රව්‍යමය තලයේ සිටින මිනිසා විඥානය පහළ වන පරම්පරාවක කොටසකි. මිනිසාගේ විඥානය පදාර්ථයට බැසීමේ සිට ඊතරික් දෙසට අවසානයේ පිටවීම දෙසට ගමන් කළ යුතුය, එනම් මිනිසා ස්වභාවිකවම ඔහුගේ අමරණීයත්වය ජීවත් විය යුතු අවසානයේ ලෝකය වන ග්‍රහලෝකයේ යථාර්ථයේ කොටසකි.

මිනිසා සෑදී ඇත්තේ පදාර්ථයට පැමිණ මිය යාමට නොවේ. අප මරණය ලෙස හඳුන්වන දෙය, එනම් මිනිසා හෝ ආත්මය තාරකා තලයට නැවත පැමිණීම ලෙස හඳුන්වන දෙය මිනිසාගේ සිහිසුන්භාවයේ කොටසකි. මිනිසා තම පරම්පරාවේ මූලාශ්‍රය වන, ඔහුගේ බුද්ධියේ ප්‍රභවය වන, ඔහුගේ ජීව ශක්තියේ උල්පත වන, ඔහුගේ ග්‍රහලෝකයේ උල්පත වන විශ්වීය පරිපථවලින් සම්පූර්ණයෙන්ම කපා හැර ඇති කාරණයේ කොටසකි! එබැවින් මිනිසා මූලාශ්‍රය වෙත ආපසු යා යුතුය, නමුත් ආක්‍රමණයේ අධ්‍යාත්මික, ඓතිහාසික මිත්‍යාවන් හරහා මිනිසාට මූලාශ්‍රය වෙත ආපසු යා නොහැක.

පදාර්ථයේ සිරකරුවෙකු වීමට ඔහුට බල කළ පැරණි අදහස් භාවිතා කිරීමෙන් මිනිසාට ඔහුගේ මූලාශ්‍රය වෙත ආපසු යාමට නොහැකි වනු ඇත. මිනිසා පර්යේෂණාත්මක විඥානයක් ඇති ජීවියෙකු බවට පත් කළ පැරණි උපක්‍රම භාවිතා කරමින් තම මූලාශ් රය වෙත ආපසු යාමට යන්නේ නැත. මිනිසා විශ්වාස කිරීමෙන් ඔහුගේ මූලාශ්‍රය වෙත ආපසු නොයනු ඇත.

මිනිසා ඔහුගේ පරිණාමය තුළ ක්‍රමයෙන් වර්ධනය වෙමින් ඔහුගේ මූලාශ්‍රය වෙත ආපසු යනු ඇත, ඔහු දන්නා දේට සහාය වීමේ හැකියාව.

නමුත් අද ලෝකයේ අපි මිථ්‍යාවකට, අපගේ ආත්මීය මනෝවිද්‍යාත්මක ක් රමානුකූලකරණයකට ගොදුරු වී සිටිමු. සියලු මනුෂ්‍යත්වයට බලපාන මනෝවිද් යාත්මක මානසික ආකල්පයක ග්‍රහණයට අප විනාශ වී ඇත: විශ්වාසය. මිනිසා විශ්වාස කළ යුත්තේ ඇයි? ඔහු නොදන්නා නිසා! මිනිසා විශ්වාස කළ යුත්තේ ඇයි? මක්නිසාද යත් ඔහු අත්දැකීම් සහිත විඥ්ඥාණ ජීවියෙකු බැවින් ඔහුට මනසෙහි ආලෝකයක් නොමැත. ඔහු ජීවත් වන්නේ ඔහුගේ කුඩා විඥානයේ අඳුරු චලනය තුළ ය, එබැවින් ඔහු වැදගත් හා නිරපේක්ෂ දෙයකට සම්බන්ධ වීමට විශ්වාස කිරීමට බැඳී සිටී.

නමුත් මමත්වයේ මනෝවිද්‍යාත්මක තත්වයේ කොටසක් වන නිරපේක්ෂ විශ්වාසය, නිරපේක්ෂ මෙම විශ්වාසය, එය ස්ථාපිත කළේ කවුරුන් විසින්ද? එය ස්ථාපිත කරන ලද්දේ Involution මිනිසා විසිනි. ඔබ ලෝකයට ගොස් යමෙකුට කතාවක් කීවොත්, ඔබ මුලින් කී කතාවට වඩා, එය ලැබුණු විට සහ අනෙකා පැවසූ විට ඔබ කියන්නට යන කතාව තවදුරටත් සමාන නොවන බව ඔබ හොඳින් දනී. .

යමෙක් ලෝකයට ගොස් මම අද කියන දේ නැවත කිරීමට උත්සාහ කරන බව සිතන්න, ආරම්භකයකු ලෙස, එය හෙට එළියට එන්නේ කෙසේදැයි ඔබට සිතාගත හැකිය! ඉතින් අතීතයේ දේවල් කරපු මිනිස්සුත් හිටියා, මනුෂ්‍යත්වයේ පරිණාමයට උදව් කරන්න ලෝකෙට ආපු Initiates හිටියා. නමුත් මෙම ජීවීන් පැවසූ දේ සහ ඔවුන් පැවසූ දේ ගැන වාර්තා වූ දේ වෙනත් කාරණයකි.

තවද මට ඔබට එක දෙයක් ප්‍රත්‍යක්ෂව පැවසිය හැකිය - මම වසර ගණනාවක් තිස්සේ මෙම සංසිද්ධිය දන්නා නිසා - මිනිසෙකුට පවසන දේ පරිපූර්ණ ලෙස පුනරුච්චාරණය කිරීම කිසිසේත්ම කළ නොහැක්කකි. ඔබ අද රාත්‍රියේ නිවසට පැමිණි පසු එය කිරීමට උත්සාහ කරන්න! මනුෂ්‍යයෙකුට පරිපූර්ණ ලෙස කියන දේ නැවත නැවත කිරීමට නොහැකිය. ඒ ඇයි කියලා මම කියන්නම්. මක්නිසාද යත් පරිපූර්ණ ලෙස කියනු ලබන දේ - වෙනත් වචන වලින් කිවහොත් මමත්වයෙන් වර්ණවත් නොවන දේ, තාරකාකරණය නොකළ දේ, මිනිසාගේ අවිඥානයේ කොටසක් නොවන දේ, නමුත් මිනිසාගේ විශ්වීයත්වයේ කොටසක් - එය මමත්වයට යොමු නොකරයි. මිනිසා හෝ මිනිසාගේ මමත්වයට හෝ මිනිසාගේ බුද්ධියට. එය ඔහුගේ ආත්මය වෙත යොමු කර ඇත.

මිනිසා ඔහුගේ ආත්මය තුළ නොමැති නම්, වෙනත් ආත්මයක් දැනටමත් පවසා ඇති දේ ඔහු භාර ගනී යැයි ඔබ අපේක්ෂා කරන්නේ කෙසේද? ඒක කරන්න බැරි දෙයක්. ඉතින් ඒ මොහොතේ වර්ණ ගැන්වීමක් තියෙනවා. ආරම්භකයින්ගේ වචන වර්ණ ගැන්වීමෙන් මනුෂ්‍යත්වයේ පරිණාමීය ප්‍රතිලාභය සඳහා අප ආගම් ලෙස හඳුන්වන දේ උපත ලැබීය. මම එකඟ වන අතර මෙය සිදුවෙමින් පවතින අතර මෙය සිදු කිරීම ගැන මම ඉතා සතුටු වෙමි, මන්ද එය අවශ්‍ය බැවිනි. නමුත් පරිණාමය අතරතුර මිනිසාට තම හෘදය සාක්ෂියට තම දැනුමේ පූර්ණත්වය ලබා දීමට සදාචාරාත්මක සහාය අවශ්‍ය නොවන කාලයක් පැමිණේ. ඒ අධිමානසික විඥ්ඥාණය (උසස් මනස) ය.

අපි කතා කරන්නේ ක්විබෙකර්වරුන් සමඟ බැවින්, අපි කතා කරන්නේ ඉතා හොඳ හේතු නිසා, ආගම ඔවුන්ට ලබා දී ඇති අධ්‍යාත්මික ලෝකයට යම් සමීපතාවයක් අත්විඳීමට අවස්ථාවක් ලබා ඇති ජනතාවක් සමඟ බැවින්, මේ අර්ථයෙන් අපට දැනටමත් දියුණුවක් ඇත. අපි දැනටමත් අදෘශ්‍යමාන දේ කෙරෙහි යම් සංවේදීතාවයක් ඇති ජීවීන් බවයි.

නමුත් එතැන් සිට ආක්‍රමණයේ අධ්‍යාත්මික මාර්ග භාවිතා කරමින් විඥානය සඳහා ගැඹුරින් අද්භූත ගවේෂණයට පිවිසීම අපව සෘජුවම ආත්ම ධ්‍රැවීයතාව වෙත ගෙන යනු ඇත. එය හොඳ නරක, සත්‍ය අසත්‍ය යන ගැටුමට අපව ගෙන එනු ඇත, එය අපට මනසෙහි මහත් දුක් වේදනා ඇති කරයි.

මේ නිසා මම මෙසේ කියමි: සවිඥානක මිනිසා, පෘථිවිය මත අතිමහත් විඥානයේ (උසස් මනස) පරිණාමය ආරම්භ වන්නේ මිනිසා තම චින්තනය සත්‍යයට හා ව්‍යාජයට යටත් නොකිරීමේ අවශ්‍යතාවය දැනටමත් අවබෝධ කරගෙන ඇති මොහොතේ සිට ය. නමුත් ක්‍රමක්‍රමයෙන් එය ජීවත් වීමට ඉගෙන ගැනීම සහ මෙම සිතුවිල්ල යම් දිනෙක පරිපූර්ණ වන තුරු එහි චලනයට සහාය වීම, එනම් සම්පූර්ණයෙන්ම එහි ආලෝකයෙන්, සම්පූර්ණයෙන්ම විස්ථාපනය වී ඇති අතර, අවසානයේදී ඔහු මමත්වය, මම ... මමත්වය, ආත්මය ආත්මය එක්සත් වී මිනිසා සැබෑ ජීවියෙකු බවට පත් කරයි.

සැබෑ ජීවියෙක් යනු කුමක්ද? සැබෑ ජීවියෙක් සැබෑ ජීවියෙක්! ඔහු සත්‍යය අවශ්‍ය ජීවියෙක් නොවේ, ඔහු සත්‍යය අනුභව කරන ජීවියෙක් නොවේ. ඔබ සත්‍යය අනුභව කළහොත් හෙට ඔබ බොරුව අනුභව කරනු ඇත, මන්ද යථාර්ථයේ අනන්තයේ සීමාවට ඔබව තවත් ඉදිරියට ගෙන යන මිනිසුන් සිටින බැවිනි. ඔබ සත්‍යය අනුභව කරන්නේ නම්, දිනක ඔබට නැවතත් මෙම පියවර ගැනීමට සිදුවනු ඇත, මන්ද මිනිසාට ගැලපෙන, ඔහුගේ හෘද සාක්ෂියට ගැලපෙන, ඔහුගේ ආත්මයට ගැලපෙන, ඔහුගේ ආත්මයට ගැලපෙන, ඔහුගේ ආත්මයට ගැලපෙන, ඔහුගේ පැවැත්මට ගැලපෙන එකම දෙය , සාමය වේ.

නමුත් සාමය යනු කුමක්ද? ශාන්තිය යනු සෙවීම නැවැත්වීමයි. ඔබ කියන්නට යන්නේ: " *ඔව්, නමුත් ඔබ සෙවිය යුතුයි*" , මම කියමි: ඔව්, මිනිසා සොයයි, ඔබ සොයමින් සිටියද, සියලු මිනිසුන් සොයමින් සිටිති, නමුත් පරිණාමයේදී මිනිසාට අවශ්‍ය ස්ථානයක් පැමිණෙනු ඇත. තවදුරටත් සෙවීමක් සිදු නොවනු ඇත, මිනිසාට තවදුරටත් සෙවීමට සිදු නොවනු ඇත, සහ මිනිසා අවසානයේ තමා දන්නා බව අවබෝධ වූ විට සෙවීම නවත්වනු ඇත.

එහිදී ඔබ කියන්නට යන්නේ: " *ඔව්, නමුත් යමෙකු දන්නා බව යමෙකු දැන ගන්නේ කෙසේද*" ... ඔබ එය දරා ගැනීමට ඔබට ඉඩ දෙන තාක් දුරට ඔබ එය දැන ගනු ඇත, ඔබට සොයා ගැනීමට කිසිවෙකු ඇමතීමට අවශ්‍ය නොවනු ඇත. ඔබ හරි නම්. එවිට ඔබ කියන්නට යන්නේ: " *හොඳයි ඔව්, නමුත් අපි හරි නම් හෝ අපි හරි යැයි සිතන්නේ නම්, එය භයානකයි*". මම කියන්නම්: ඔව්, නිවැරදි වීමට උත්සාහ කරන මිනිසෙක් දැනටමත් ඔහුගේ හේතුව සොයමින් සිටින මිනිසෙකි!

නමුත් ඔබේ ජීවිතයේ, ඔබේ එදිනෙදා ජීවිතයේ, ඔබේ පෞද්ගලික කොනක අත්දැකීම් නැද්ද, ඔබ දන්නා දේ එය බව ඔබට දැනෙන අවස්ථා ඔබේ ජීවිතයේ නැද්ද? සහ එය එසේ වූ විට, එය එයයි!

ඒකයි' තවත් එකකට " *ඒකයි*' තවත් " *ඒකයි*' එකතු කිරීමේ හැකියාව ඇති අයට , නමුත් " *මේකයි*' එනම් ඇත්ත, මනසේ උඩඟුකම මත ගොඩනඟන්නේ නැති " *මෙය එයයි*' , අධ්‍යාත්මිකත්වය හෝ ඔබේ අධ්‍යාත්මිකත්වයේ අභිමානය මත ගොඩනඟන්නේ නැති " *මෙය එයයි*' , " *එය එයයි*' පුද්ගලික වනු ඇත ඔබට, ඔබට මුණගැසෙන සහ ඔවුන්ගේ " *ඒක*" තුළ සිටින සියලුම මිනිසුන් සමඟ විශ්වීය වන "එය *එයයි* " , ඒ මොහොතේ ඔබ එය දැන ගනු ඇත !) (එය පරිවර්තනය කළ නොහැකි නම් මෙම ඡේදය ඉවත් කරන්න) .

English

Transcription and translation of 2 conferences by Bernard de Montréal.



TEMPORARY FORMAT

This book has been translated by artificial intelligence but not verified by a person. If you would like to contribute by reviewing this book, please contact us.

Main page of our website: http://diffusion-bdm-intl.com/

Our email: contact@diffusion-bdm-intl.com

CONTENTS

Greetings from the entire Diffusion BdM Intl team.

Pierre Riopel April 18, 2023

CHAPTER 1

IDENTITY CP036

Self-identity vis-à-vis others is a universal human problem. And this problem increases when Man lives in a complex society such as modern society. The problem of identity is the suffering of life of the ego, suffering which follows him from the age when he sees himself compared to others. But the problem of identity is a false problem that arises from the fact that the ego, instead of realizing himself according to himself, that is to say according to its own measure, seeks to realize himself competitively against other egos . who suffer, in fact, from the same problem as him.

While the ego looks beyond its fence onto the other's field to admire its flowers, he fails to see that the other is doing the same to himself. The identity, or the identity crisis in Man today is so acute that it ensues a loss of self-confidence which degenerates over time into a total loss of personal consciousness. Dangerous situation, especially if the ego is already weak in character and prone to insecurity.

The problem of identity, that is to say this characteristic of the ego of not seeing himself as high as himself, is in fact a problem of creativity. But when the ego is creative, the problem of identity is not thereby eliminated, for the ego is never perfectly satisfied with himself until he has realized the illusion of his lower self. So that a low-status ego will experience the same identity problem as a higher-status ego, because the comparison between him and another will only change in scale, but will always remain present, because the ego is always in improvement power. And there is no end to the improvement he seeks for himself.

But self-improvement is a blanket that the ego hides under in order to give yourself some reason to live happily. But does he not know that all improvement is already generated by a body of desire ?

The problem of identity comes from the absence of consciousness of real intelligence in Man. As long as Man lives by his intellect, he is supported in his opinions only by sensory experience, it is difficult for him to substitute what he thinks he knows or understands by an absolute value of undetermined intelligence through egocentric experience.

As long as Man desires to manifest himself in life, in order to make his mark, he suffers from this desire. If he manages to achieve his desire, another will push him in the back, and so on. This is why, in Man, any form of defeat constitutes for him any identity crisis, whatever his status, because the problem of identity is not a problem of success, but a problem of conscience, that is to say a problem of real intelligence.

The Man who discovers during his life that the real intelligence overhangs the intellect, already begins to suffer less from the problem of identity, although he can still suffer from an absence of real creativity, equal of what he feels he can manifest. It is only as his identity conforms to the way of life that suits him that he will realize that creativity can take a myriad of forms, and that each Man has a form of creativity that suits him and from this form he can live in perfect harmony in terms of his body of desire and his creative intelligence.

To be creative does not mean to change the world, but to do in a perfect way for oneself, so that the inner world is externalized. This is how the world changes: always from the inside out, never in the opposite direction. The overmind begins to realize the problem of identity. He sees that what he is is still somewhat what he was. But he also sees that as his subtle bodies change, his consciousness grows and the problem of identity slowly disappears, on the surface of what was previously the unconscious ego.

The gradual elimination of the problem of identity in the overmind being finally allows him to live his life as he really sees it, and to be better and better about himself. There is nothing in Man that is so difficult as suffering from identity. Because he suffers in fact from illusory forms, that is to say for reasons that he creates from scratch, due precisely to the fact that he is not intelligent, that is to say, conscious of the creative intelligence in him.

One side of identity is shame in some cases, embarrassment in others, insecurity in the majority. Why would a man of good morals live with shame when it is only the social reflection on his mind imprisoned in the nets of social thought? The same is true of the embarrassment that comes from the ego's inability to immediately get rid of what others may be thinking. If the embarrassed ego got rid of what others can think, his embarrassment would disappear and he could more quickly access his real identity, that is to say, this state of mind which makes a Man see himself always in the light of its own day.

The problem of identity comes from the absence of centricity in Man. And this absence diminishes the penetrating power of the intelligence, which makes Man a slave of his intellect, of that part of himself which does not know the laws of the mind nor the mechanisms of the mind. So that Man, left to his experience, lacks light in his intelligence and is forced to accept the opinion of others regarding the nature of Man.

If Man wonders about himself, how is it possible for another Man to enlighten him, if this other Man is in the same situation as him? But the Man does not realize this, and his problem of identity worsens according to the pressure exerted against the ego by the events.

The ego in the mind is undoubtedly trapped by its way of thinking which is not adjusted to its real intelligence. And this way of thinking contradicts the real of his intelligence, because if he perceived the real of his intelligence through his intuition, for example, he would be the first to refuse the reality of it, because the intellect does not have faith in intuition, he sees it as an irrational part of himself. And since the intellect is rational or supposedly rational, anything opposed to it is not worth recognizing as intelligence. And yet, intuition is indeed a manifestation of real intelligence, but this manifestation is still too weak for the ego to be able to grasp its importance and intelligence. He then withdraws into his rationale and loses the opportunity to discover the subtle mechanisms of the mind which can shed light on his problem of identity.

But the problem of identity must remain with Man, as long as the intellect has not let go and the ego has not listened to himself, internally. If the ego is sensitized to the nature and form of the real intelligence within it, it gradually adjusts and makes more and more of its home in that intelligence. Over time, he goes there more and more regularly, and his identity problem goes away, as he realizes that all he thought of himself was just a psychological and mental distortion of his real intelligence, incapable of going beyond the high walls of his reasoning.

In a complex society, as we know it, only the inner strength of the ego, its real intelligence, can lift it above the bark of opinions and set it on the rock of its true identity. And the more society disintegrates, the more its traditional values crumble, the more the ego is on the way to perdition, for it no longer has the formal social scaffolding to stand up to, in the face of the increasingly bewildering phenomenon of modern life.

But the ego is not always ready to listen to those who can give him the essential keys to understanding its own mystery. Because his psychological deformation already leads him to question everything that does not conform to his subjective way of thinking. This is why the ego cannot be blamed too much for its refusal to see further, but it can be made to realize that although it cannot see further today, tomorrow its vision will widen according to the degree penetration of energy into him.

Because in fact, it is not the ego which overcomes by its own efforts the wall of its identity, but the soul which brings it by suffering, that is to say by the penetration of its light, to register, beyond the intellect, the vibration of intelligence. And this vibrational shock becomes the beginning of the end.

There are less proud egos who open up to the reality, because a kind of humility already predisposes them to their own light. On the other hand, there are egos too proud for this light to pass through, this fine thread. And it's those egos that are most prone to big turns, big setbacks that knock them out and make them more realistic.

The identity crisis is identified with the immaturity of Man. True identity demonstrates the development of true maturity.

The soul is independent of the ego in its actions, and the latter has good play, as long as it does not make himself felt in force at home. It is this moment that the ego does not know. And when he shows up, he realizes that his vanity, his pride, the infatuation he has with himself, with his ideas, burst like an egg under pressure.

The suffering of the soul has its reasons which the ego cannot understand at first, but which it cannot help living either. It is the soul that works. It is time for him to move from one stage to another. The problem of identity, which he experienced at the beginning, reorients himself, and his pride collapses like children play. Whether the ego is more or less proud, it all comes down to insecurity. Often one encounters so-called " solid", "strong" egos , for whom the reality is pure fantasy; it is these egos that suffer the most effect on their identity, when the soul vibrates the mental and the emotional, under the pressure of life events that the ego can no longer control.

It is there, during these difficult experiences, that the ego begins to see himselfi n the true light of its weakness. It is there that he sees that the security of his false identity, where the pride of his intellect prevailed, bursts under the vibratory pressure of the light. It is then said of him that he is changing, that he is no longer the same or that he is suffering. And this is only the beginning, because when the soul begins to burst the walls of false identity, it does not stop its work. For the time has come for the descent of consciousness into Man, of intelligence and of true will and love.

The ego, which feels strong from its false identity, feels weak as a reed when the vibrational shock is felt. And only later does he regain his forces, the forces of the soul, and not the false power of his desire body, over the form which nourishes the emotion and the lower mind.

The identity crisis in Man corresponds to the resistance of the ego to the light of the soul. This correspondence involves in the life of the ego a suffering proportional to this resistance. And all resistance is registered, although it is perceived psychologically or symbolically or philosophically by the ego. Because for the soul, everything is energy in Man, but for Man, everything is symbol. This is why Man finds it so difficult to see, for what he will see, once free of these forms, will be through the vibration, not through the symbol of the form. This is why it is said that the reality is not understood by the form, but is known by vibration which engenders and creates the form in order to express itself.

The problem of identity always invokes a surplus of symbology, that is to say of subjective thought-forms in Man. This surplus, at any given time, coincides with the soul's effort to contact the ego through the thought-form symbol, for that is its only means of evolving it to the ego, inside the mind.

The ego realizes, without understanding the deep reasons, that he seeks to situate himself vis-à-vis himself. But as he is still prisoner of his thought-forms, of his emotions, he believes himself in his movement, in his movement! That is to say, he believes that this research process emanates only from him. And this is its Achilles' heel, because the ego is in the illusion of right and wrong, in the illusion of free will.

When the energy of the soul penetrates and breaks down the barrier of false identity, the ego then realizes that the point is no longer for him to be right, but to have access to his real intelligence. Then he begins to understand. And what he understands is not understood by those who are not in the same intelligence, whatever their good will. Because everything is outside the symbol, everything is **vibratory** .

The problem of identity is inconceivable when the ego and the soul adjust to each other, because the ego no longer pulls the " cover" *(cover)* of reality from its side, while the soul works on the other. There is correspondence between the two, and the personality is the beneficiary. Because the personality is always victim of the gap between the soul and the ego.

As long as the problem of identity exists in Man, he cannot be happy. Because there is division in his life, even if his material life on the surface seems to be going well. It can only really go well in proportion to the unity of itself.

The identity crisis in modern man only beneficially affects those who have already suffered enough setbacks to arouse in them a great desire for balance. But this desire for balance can only be fully realized when the ego has set aside its instruments of torture to manipulate the fine energy of the soul. In the domain of human life where there is great spirituality, the identity crisis can be as acute, if not more, than where one does not encounter this great sensitivity of the ego to this inner something which pushes him inexorably towards a spirituality that is increasingly greater, more and more sought after and ultimately more and more imperfect.

Those who are of this category of Humanity have to see that all forms, even the highest, the most beautiful, veil the true face of the soul, because the soul is not of the plane of the ego; it sees infinitely, and when the ego becomes overly attached to form, even spiritual form, it interferes with the cosmic energy which must pass through the soul and raise the vibratory rate of all the lower principles of the soul. 'Man, so that he may become master of life. When the supramental (higher mental) Man is master of life, he no longer needs to be drawn spiritually to the plane of the soul, for it is the soul, his energy, which descends towards him, and transmits to him his power of light.

The spiritual identity of Man is a presence within him, through the energy form of the soul. But this energy does not have the power of transmutation, although it has the power of transformation over the personality.

But the transformation of the personality alone is not enough, because it is the last aspect of Man. And so long as the ego is not also united with the soul, the spiritual personality can easily lead the Man into a rapid conversion of his morals, to such an extent that any lack of balance in the mind and spirit emotional, can lead him to the acute crisis of spirituality, religious fanaticism.

Thus, even the fiercely spiritual Man can harm himself and society. For fanaticism is a spiritual disease, and those who suffer from it can easily, because of their particular exploitation of the spiritual form, create in others an attraction strong enough to make them great believers, that is, say new slaves to the form, raised by fanaticism on the pedestal which only the spiritually sick can hold in place, if he is aided by the submissive belief of those who are as ignorant as he, but more insensitive to this form of illness.

More and more Men, without becoming fanatically spiritual, become too impressed with their spirituality and do not know its limits, that is, the illusions of form. Sooner or later they look into the past and realize that they have fallen victim to the illusion of their spirituality. So they throw themselves into another spiritual form, and this circus can continue for many years, until the day when, disgusted with the illusion, they come out of it forever, and realize that consciousness is beyond the form. These have the opportunity to go beyond the limits of the form and finally discover the great laws of the higher mind.

The crisis of spiritual identity is no longer possible for them at this time. Because they know, from their own experience, that everything serves the experience of the soul against the ego, until the day when the ego leaves the necessity of the experience to know only the supramental consciousness (higher mind) in him.

The crisis of spiritual identity is increasingly becoming the crisis of modern times. Because Man can no longer live on technology and science alone. He needs something else closer to him, and science can't give it to him. But neither did the old form of Orthodox religion. So he throws himself headlong into a myriad of spiritual or esoteric-spiritual adventures, with the firm intention of finding what he is looking for, or looking for what he wants to find, and that he does not know not precisely. So, his experience brings him to the confines of all sects, all philosophical or esoteric schools, and here again he discovers, if he is more intelligent than the average, that there are limits where he believed to find answers.

He finally finds himself alone, and his crisis of spiritual identity becomes more and more unbearable. Until the day when he discovers that everything in him is intelligence, will and love, but that he does not yet know enough of their laws to discover the mechanism hidden and veiled in the eyes of the Man who seeks. What a surprise he saw! When he realizes that what he was looking for during his crisis was just a mechanism of the soul within him that served to drive him forward to wake up to himself, that is, to her.

And when this stage is finally begun, Man, the ego of Man, despiritualizes and begins to understand the nature of the supramental intelligence (higher mind) within him which awakens, and makes him recognize the illusion of all Men who search outside themselves, with the best intentions in the world, and who have not yet realized that this whole process is part of the experience of the soul which uses the ego to prepare him to come into vibrational contact with her.

Man is no longer in touch with the reality of his being. And this loss of contact is so widespread on the globe, that this Earth represents a ship full of madmen who do not know where the ship is going. They are led by unseen forces, and no one has any idea of the origin of these forces, nor of their intentions. Man was separated from the invisible for so many centuries that he totally lost the notion of reality. And this loss of consciousness is the reason behind which rises the wall of his existential problem: identity. And yet the solution is so close to him, and at the same time so far away. If only he knew how to listen to what he doesn't want to hear.

The war of words and the battle of ideas is all he has left. What Man can be self-sufficient, if he does not realize that part of him is great, while another is limited by his senses, and that the two can come together? If Man could one day realize that no one outside himself can for him, and that only himself can for himself… But he is afraid to live for himself, because he fears what others will say of him... Poor as he is!

Men are beings who constantly lose the fight against illusion, because they are the ones who keep it alive and powerful. Everyone is afraid of destroying what harms them. A real nightmare! And the worst is yet to come! Because the Man of the XXth century will see descending towards him beings who move between the stars, and who were formerly gods for him.

The problem of personal identity continues on a planetary scale. As this problem stems from the lack of connection between the lower mind and the higher mind, its effect is felt both on the world level and on the personal level, for only the higher mind can explain to Man the great mysteries of his planet. and its ancient gods. As long as these gods are part of ancient history, Man is not troubled by them. But when these same beings return and make themselves known in a modern light, the shock on a global scale reverberates, and the Man who has not discovered his real identity finds himself caught between his false identity - and what she thinks and believes - and the cyclical phenomenon.

If his mind is open to experience and he receives real intelligence within him, the necessary information concerning one of the most disturbing phenomena for a planet which he does not know and does not know, Man does not experience a planetary identity crisis, because he has already resolved the personal identity crisis within himself.

Since Humanity is advancing rapidly towards a turning point in history and life, individuality, that is to say the increasingly perfected relationship between Man and the cosmos, must be established because it is from the real individuality that the vibration that one finds in the Man who has discovered his true identity manifests. And as long as this real identity is not stabilized, individuality is not completely accomplished, and one cannot say that Man is “mature” , that is to say capable of facing in any personal or world event without being disturbed, because he already knows about it and he knows the reason for it.

When we talk about identity crisis in general, we are talking about it in a psychological way, in the sense that we are trying to define the relationship between man and society. But the identity crisis goes much deeper than that. It is no longer the social man who becomes the measuring stick, the normality that we must achieve. On the contrary, normality must be transposed, that is to say resituated vis-à-vis itself.

When Man begins to realize that his real identity lies above the normal identity of normal Man in parentheses, he realizes two things. Firstly, that what worries the normal Man no longer worries him; and that whatever jostles a subnormal planet, parenthetically, is normal. Then the phenomenon of real identity, seen from this perspective, becomes more and more important, because it determines which Man can overcome the normal weaknesses of the normal or unconscious Man, and moreover, determines that the Man who does not is more normal - that is to say, to the extent of the unconscious and relatively balanced Man - can support pressures of a planetary order which risk upsetting a normal being and causing the collapse of a culture which gives birth to such a Man .

A Man who has discovered his real identity is incontestably above all forms of psychological experiences which risk disturbing a Man who is quite simply the product of his culture, and who only lives by the values of his culture. Because in fact, a culture is a very thin and very fragile canvas when external events come to disturb it, that is to say, to redefine it in relation to a reality that it does not know, or that it is totally unaware of. This is the danger in Man of the phenomenon of unresolved identity.

Because if he does not discover his real identity, he will be emotionally and mentally a slave to social psychology and his natural reactions when end-of-cycle events disrupt the normal course of his development. It is here that Man must be free from socio-individual reactions, in order to be able to live the experience according to a mode of universal understanding. Only the real identity corresponds with the real Man and the real intelligence. Only the real identity can without difficulty interpret cosmic events, according to an intelligence which is detached from the limiting emotions of Man.

The problem of the identity crisis in Man is much more a problem of life than a simple psychological problem. The psychological categories that Man seeks to understand in search of himself no longer suit those who discover their true identity, because they no longer have the same interest in life that they had when they were struggling with himself. His real identity having filled every corner of his being, he finds himself faced with a self that is lodged in another dimension of his mind, dimension or plane of energy that is not associable by imitation because he is totally independent of the psychological categories formed by the emotional and mental structures of the unconscious Man without real identity.

The phenomenon of identity crisis is a suffering for Man, because he can never be perfectly happy in himself, with himself, what he constantly seeks. For him, being happy is an experience he wants to live permanently. But he does not realize that to be what he calls " happy" , you have to feel good about yourself, that is to say be able to feel in perfect inner harmony without the outside world being able to disturb this harmony. He doesn't realize that life is indistinguishable from himself until he has the inner power to pierce the backdrop that gives it its color.

A Man who has discovered his real identity no longer lives the same life he lived before. The colors have changed, life no longer has the same appeal, it is different at every level. For it is distinguished from the other previous life by the fact that it is the real individual who determines its possibilities, instead of the latter being imposed on him categorically by the culture in which he is rooted.

The life of the Man who has discovered his identity represents a continuity which is lost in time and which no longer has a limit, that is to say an end. Already, this realization intervenes in the way of life and the creative way of life. As long as Man suffers from identity, as long as he has no contact with the real intelligence within him, he can only meet his needs. When he is in the light, he no longer has to support himself, for he already knows, by vibration, the mode of his life, and this knowledge enables him to generate the creative energy necessary for his needs. The psychological category of survival fades to leave room only for a creative energy that employs all the resources of Man and places them at the disposal of his well-being.

In order for Man to overcome his problem of identity, a displacement of values from the psychological plane to the plane of pure intelligence must occur within him. While the psychological values contribute to his crisis, because they are limited to his senses, to his intellect which interprets the sensory material, he needs a measuring rod which is not subject to the approval of his intellect.

It is here that a kind of opposition arises for the first time in him to something which penetrates into him and which he cannot prevent in its movement. When the movement is started, it is the light of this intelligence which is independent of its ego and its chimeras. It is here that the displacement of values begins to be felt which results in an interior suffering, sufficient to make penetrate the intelligence of the light according to what must be lived by the Man who awakens.

The shift in values is only done gradually, in order to allow the ego to maintain a certain balance. But over time, a new balance is formed and the ego is no longer normal, socially speaking; he is conscious. That is to say, he sees through the illusion of form and norm, and becomes more and more individualized in order to raise the vibration of his subtle bodies, the levels on which his individuality will be based and his real identity.

The displacement of values is actually a collapse of values, but we call it “displacement”, because the changes that take place correspond to a vibratory force which transforms the mode of seeing, so that the mode of thinking can adjust to the intelligence of a higher center in Man. As long as the ego has not witnessed this collapse by vibration, it continues to discuss the categories of thoughts, of symbols, which constitute the walls of its false identity. But as soon as these walls begin to weaken, the displacement of values corresponds to a profound change, which cannot be rationalized by the ego. And not being able to be rationalized by him, he is finally struck by the light, that is to say, he is finally linked to it in a permanent and growing way.

His life, then, is transformed by cycle and soon, he no longer lives it in limits, but in potentials. Her identity is increasingly defined in relation to her, instead of being defined in relation to her subjective desires. And he begins to realize what the " real and objective self" means .

When he realizes the real and objective self, he sees very clearly that this self is himself, plus something else inside himself which he does not see, but which he feels present, there, something goes into him. Something intelligent, permanent and constantly present. Something that watches with its eyes, and interprets the world as it is, and not as the ego saw it before.

We no longer say that this Man is “ mental”, we say that he is “ supramental (higher mental)” , that is to say that he no longer needs to think in order to know. Suffering from identity is so far from him, from his experience, that he is surprised when he looks back at his past, and sees what he is now and compares it to what he was. .

CHAPTER 2

Downward Evolution and Upward Evolution BdM-RG #62A (modified)

Okay, so I separate the evolution of Man, I give him a downward curve and an upward curve OK. ? The downward curve I call "involution", the upward curve I call evolution. And today Man is at the meeting point of these curves. Let's put a date: 1969 if you want. If we look at evolution - not from a Darwinist point of view - but from an occult point of view, in other words according to the inner researches of Man and if we go back in time, we can locate there twelve thousand years ago the collapse of a great civilization to which the name of Atlantis was given.

So it was a period when Man intensely developed what is called the astral body which is an aspect of his consciousness, which is a subtle vehicle of his consciousness, which is directly related to all that is psycho-emotional. And then after the destruction of this civilization until today, Man developed another part of his consciousness, which can be occultly called the development of the lower mental consciousness, which gave rise to the very advanced development of the intellect, which today is used by Man to understand the material world.

And from 1969 on this planet, there has been a new phenomenon in the consciousness of Man which can be given the name of fusion or which can be given the name of awakening of the supramental consciousness (higher mind) on Earth. And there are Men in the world who have ceased to function at the level of the lower mind, therefore of the intellect, and who have begun to develop yet another layer of consciousness which is called the supramental consciousness (higher mind). And these Men have developed faculties which are in process of development and which they too will coincide with another cycle of evolution, which one can call a sixth root-race.

Occultly speaking, when we talk about the evolution of Man, we are talking about Atlantis which was the fourth root-race with its sub-races, the Indo-European races of which we are part, which are part of the fifth root-race and its sub-races. And there is now the beginning in the world of a new root-race which will also give its sub-races. And there will ultimately be a seventh root-race which will enable Man to reach a level of evolution sufficiently advanced to no longer need the organic use of his material body. But we are not dealing with this at the moment, so we are dealing with the sixth root-race which does not represent a physical race, but which represents a purely psychic aspect of the new mental consciousness of future Humanity.

It is obvious that to understand the evolution of Man on this plane, from the point of the reversed vortex towards its finality, which is perhaps two thousand five hundred years according to the information that we receive , it is obvious that Man is going to pass through absolutely extraordinary stages of consciousness, that is to say that as much the Man of Atlantis was limited compared to the Man of the Indo-European races, as much the Man of today is limited and will be limited compared to the Man of the next evolution of the supramental consciousness (higher mind) on the Earth, which had been predicted by Aurobindo.

What is interesting in the evolution of the supramental consciousness (higher mind) is this: it is that as much today as we humans, rational humans, Cartesian humans, very reflective humans of the fifth root-race, as much as we have a tendency to believe that our mind is governed by our ego, as much tomorrow Man will discover that the human mind is not governed by the ego, that the human mind is in its psychological definition , the reflective expression of the ego, and that its source is located in parallel worlds which can be called the “mental world” for the moment, but which will later be called the “architectural world” .

In other words, what I mean is that the more Man takes the trouble or the capacity or the freedom to discover the source of his thought, the more it will be possible for him to begin to enter into telepsychic communication with the parallel worlds. , to eventually arrive in the course of evolution, on the world level, on the universal level of the race, to be able to instantly decode the mysteries of life, both in the realm of matter and in the astral realm of the soul than in the mental realm of Spirit. In other words, what I mean is that he has arrived, Man, at a point where today it is possible for him to reach a state of mental consciousness sufficient for itself.

And when I say self-sufficient mental awareness, I don't mean mental awareness based on the psychological value of truth. Truth is a term, it is a personal conviction or a social conviction, or a collective sociological conviction, which is part of the emotional needs of Man as an individual or of society as a collectivity, of ensure predominance in the world of matter.

But in terms of the evolution of the future consciousness of Humanity, the phenomenon of truth or its psychological counterpart, or its emotional value, will be absolutely useless for the simple reason that Man will no longer be able to use emotionality. of his conscience in the psychological evaluation of his knowledge. He will no longer have to use the emotionality of his conscience for the development of the mental security of his self.

So Man will be absolutely free in the mind to be able to exercise on the psychic plane, the expression, the elaboration and the definition of the ultimately infinite themes of the universal consciousness which are part of all the races in the world, which are part of all races in the cosmos, and which are in fact part of the unchanging unity of Spirit, in its absolute definition, as the original source of Light and its movement in the cosmos.

So there will come a point in the evolution of Humanity when finally the ego will have made up for lost time on the consciousness of the self, and where the self will have finally reached the possible limits of its psychological definition, by introducing into its consciousness the creative potential of his pure mind, that is, of his Spirit.

And we will discover on Earth, in different races, in different nations, in different times, individuals who will know the fusion, that is to say, who will come to be able in the instant to gravitate towards sources of knowledge so great , that world science, in terms of technology, technique, medicine, psychology or history, will be totally overthrown. For what ? Because for the first time since the evolution of Man, for the first time since the descent of the Spirit into matter and for the first time since the alliance of the soul with the material, Man will have finally attained the capacity to bear its absolute knowledge.

What I call absolute knowledge is the capacity of the human mind to be able to bear and absorb its own Light. Absolute knowledge is not a faculty. Absolute knowledge is not predestination. Absolute knowledge is not a need. Absolute knowledge is a correctional evolutionary end, that is, part of the great field of activity of the Light in the cosmos and which enables all realms, all intelligent instances, that is, - to tell all intelligent species in the universe to meet on a higher mental plane, that is to say on a plane of energy powerful enough to possibly allow during evolution, the eventual disappearance of the body material for the inevitable resurrection of the etheric body.

That is to say, the capacity in Man to finally enter into an energetic component with the different suns which make up the universal organism, and which are its Spirit, its Light and its foundation, in movement and in understanding. infinite of what we today call atomic consciousness! So there will come a point during evolution where Man will be able without having to think, without having the need to think, Man will be able to finally intervene in a categorical way in the mental construction of involutionary archetypes and evolutionaries of universal consciousness on Earth. This means that Man will eventually come to realize that he is absolutely an intelligent being.

Man will come to realize that Intelligence is not simply the expression of a form of education, but that Intelligence is in an absolute way the fundamental characteristic of any mind in any matter whatsoever. Only we are at a point today where as an ego or as a human self, we are forced to live within the limits that have been imposed on us by universal reflection, that is, by history and by the memory of Humanity.

And man has not yet been given - because there is not enough science in this field - man has not yet been given the ability to know and understand how how does his psyche work, how does his ego work, how does his ego work, and what does the term Intelligence mean in its universal definition, so that Man is trapped today by his astral body, that is to say by his senses!

He is obliged to substitute for his fundamental and universal knowledge, a small limiting knowledge conditioned by history and subject during evolution to be revised, as all the theories of science will have to be, not in the sense that science today is not useful, on the contrary it is very useful, but in the sense that science today also makes its inevitable journey towards its own abolition. Just as all civilizations make their inevitable journey towards their own abolition.

But just as a civilization finds the reality of its abolition very difficult, so science will find it difficult to achieve its own abolition. And that's very normal. One cannot ask beings who think or beings who have a certain consciousness to promote in the world their own decline or their own annihilation. We are obliged to become aware of what we are, of what we have done, of what we can do, in order to evolve, in order to allow Humanity to evolve.

But as individuals - I am saying clearly as individuals - we will eventually be obliged to face up to situations of a universal and cosmic order on our planet, we will be obliged to face up to dimensions which in the past have raised great movements of superstition in the world; movements that died out with the evolution of science, and movements that were then categorically rejected by science.

So we will be obliged over time to review and relive certain experiences in order to realize that the cosmos is unlimited. That human consciousness is unlimited and that Man in his interiority is as powerful as his consciousness can be. It is very important today in a world where we are forced to live at the crossroads of a multitude of currents of mind which, as a whole... And when I say as a whole, I am certainly looking at the United States where this collective experience in its confrontation with individuality tends slowly to create a collective psychosis.

Man cannot indefinitely be bombarded in the world by currents of ideas which are amplified in their number by television or by the newspapers, or by the various forms of the free press. There will come a point where Man will no longer be able to bear this psychic and psychological tension which arises from the various confrontations between truth and lies. There will come a point in the evolution of supramental (higher mind) consciousness on Earth when Man will be compelled to define reality in relation to himself. But it will be “one itself” that will be universal, it will not be “one itself” that will be based on the playfulness of its own Spirit or the vanity of its own ego, or the insecurity of its own me.

So from that moment, Man will begin to be able to understand the human phenomenon, civilization in all its aspects. And he will no longer be “ *stuffed”* (*abused*) psychologically by what is happening or by what will happen in the world. Man will begin to be free. And from the moment he begins to be free, he will finally begin to understand life in its fundamental quality. And the more he evolves, the more he will understand life in an absolute, integral and learned way, in a sense which is not today part of the consciousness of the fifth root-race.

Why all this verbiage? To simply bring Man little by little to understand that the greatest fidelity he can give himself, create himself, is fidelity to himself. We live in a century where the love for individualism, especially in the Western world, is very advanced. We have become more and more individualists, but individualism, if it remains an attitude, is not fundamentally integrated into the reality of human beings. In other words, walking down the street with red panties and yellow slippers and making love in New York, in New York's Times Square, is a form of individualism. But it's eccentricity, it's a form of astralization of human consciousness.

Man does not need to maintain his individuality, to express his individuality in the concrete sense of the term, to flout the sensitivities of the masses or to flout the sensitivities of his people or to flout the sensitivities of his populations. It's an illusion! And it's part of the characteristic fashions of the twentieth century, eventually it becomes banal, eventually it even becomes stupid, eventually it absolutely lacks aesthetics. So the new Man, the evolution of the supramental (higher mental) consciousness on Earth, indeed, will allow Man to develop an extremely individualized but not individualistic consciousness.

Man will be individualized why? Because the reality of his consciousness will be based on the fusion of his Spirit and not projected into the world in the eyes of Men, to reveal a kind of flirtation with eccentricity. A Man doesn't need to wander around the world and be marginal to be real. On the contrary. The more conscious Man is, the less he will be marginal, the more real he will be and the more anonymous he will be in his reality. Because the reality of Man is something that goes between him and himself and not between him and others.

If we look at the necessary evolution of a root-race on our planet, it is to understand a little the human phenomenon. That we establish coordinates, it is purely pragmatic, it is purely to give a framework of chronological comprehension to inevitable events! But if we speak of a conscious race, if we speak of a conscious Humanity, we are obliged to speak of conscious Men and individuals.

The evolution of the supramental consciousness (higher mind) on Earth will never take place on the scale of any collectivity. The evolution of supramental (higher mind) consciousness on Earth will never be the expression of a collective force. It will always be individuals in the world who will gravitate little by little, more and more, towards that point in their consciousness where they will unite with their own source, their Spirit, their double, whatever we may call it. to this reality which is part of Man.

But the fundamental movement in this direction will be based on this: it will be based on the understanding of the phenomenon of thought which has never been done since devolution. It is not enough to say: " *I think, therefore I am*". It was good for Descartes to say, *"I think, therefore I am,"* because it was part of the realization that thought in himselfhas a power that must be realized on the level of the individual.

But on the level of a creative consciousness, the point will come when the thought of Man will be transmuted completely, integrally. And Man will no longer think during evolution. His thought will be transformed into a mode of creative expression of his higher mind. And that mind will become totally telepsychic. In other words, Man will experience instantaneous communication with the universal planes and this mode of communication will no longer be reflective. The moment thought ceases to be reflected in the mind of Man, thought ceases to be subjective. We can no longer say that Man thinks, we say that Man communicates with the universal planes of his own consciousness.

But for man to come to understand this in an integral way, it will be necessary for him to realize that thought, as we conceive it today, as we live it today, as it fixed in our mind, as it is produced or perceived by us as the unconscious ego, must awaken in us a certain realization, in the sense that Man must come to be able to realize that his thought in himselfdivides him against himself. Only insofar as he, for reasons of involution and unconsciousness, subjects him to the polarity of good or evil, of true and false.

From the moment when Man polarizes his mind, whether he establishes negative or positive coordinates, he has just created the split between himself on the material plane and himself on the cosmic and universal plane. This is very important! It is so important that it is the fundamental key to the next evolution. What makes us tend to always live our thought in relation to a polarity is the fundamental insecurity of our ego. It is the powerful and vampiric capacity of our emotions. It is our inability as an ego or as an ill-educated or over-educated individual, to not be able to bear what we know.

There's not a Man in the world Who doesn't know something. All Men know something but there is no worldwide authority, there is no cultural definition, there is no cultural support in the world that can support a Man knowing something . There are institutions which give themselves the right to know something in order to institute this knowledge and condition the mind of Man with it. It's what we call science on different levels, it's normal.

But there is no contrary movement where the institutions in the world can give or give back to Man his authority, that is to say give back to him the small dimension of himself which could one day become very large. , that of his own Light. And you can take the test in a very simple way in the spiritual realm, in the religious realm. One day, when the centers of Man are sufficiently open, he will be able to do the same in the field of science.

A Man who is in the world and who, for example, would go to see a cleric or someone who works in religion and who would speak to him about God, and who would say: “Well, well, God is such a thing, such a thing *, such a thing”* , one would say to him: “ *But by what right do you speak of God? By what right do you speak of God”...?* And if Man is less evolved and can really fragment the form of God to bring out or spring forth other forms which are part of the creative dimension of his mind, he will be even more repelled by the institutionalization of God. a knowledge that relates to the understanding of the invisible worlds.

So that is why I say that Man will not be able to enter the world, in a supramental consciousness (higher mind), with the support of the world. Man will have supramental (higher mind) consciousness when he has completely freed himself from the need for worldly support, and finally begins slowly to realize and bear what he knows. And the condition for this is not to fall into the trap of the polarity of true and false.

If Man falls into the trap of the polarity of true and false, he excites his conscience, he insecures his ego, and he will develop extreme attitudes towards reality. The true and the false represent only psychological components of a mental inability to know! When you eat a good steak, you don't wonder if it's real or if it's fake, there's no polarity, that's why it's good. But if you start wondering if there's vermin in there, oh, then your stomach won't respond! And it's the same thing at the level of knowledge, at the level of knowledge.

Knowledge is to the lower mind what knowing is to the higher mind. Knowledge is part of the need of the ego while knowing is part of the reality of the self. So there is no division or separation between knowing and knowing. Knowledge is part of one level of consciousness and knowledge is part of another.

In the realm of knowledge, we talk about certain things and in the realm of knowledge we talk about other things. The two can meet, fraternize together and be very well together. The fourth floor is always good with the fifth floor above it… And Man is a multidimensional being, but Man is also a being who possesses and lives an experiential consciousness. We have an experimental consciousness on Earth. We have no creative consciousness.

Look at your lives! Your lives are experience! From the moment you enter the world, your life is constantly about experience, but Man cannot live on experience indefinitely. One day Man will have to live with creative consciousness, at that time life is worth living, life becomes very big, very vast, it is powerful in creativity, and Man ceases to live soul experience. But why does Man live the experience? Because it is attached to powerful forces - which I call memory - which are in fact what you call “soul”.

Man does not live by his Spirit, he is attached to the soul, he lives by the soul, he is constantly vampirized by the soul. People who have researched rebirthing *or* people who have researched returning to being in a certain past have determined very well that certain people today are suffering from certain things, because in a previous life, they suffered from the cause. There are people today who are not able to enter an elevator (elevator) because they are experiencing traumas that come from before material life, or who have been suffocated in previous conditions, they do not are not capable… They are suffocating. So Man lives the experience of the soul.

He lives, he is attached to his memory, as much the very vast unconscious memory of his previous evolutionary movement as the very vast memory that he lives today as an experimental being. Man cannot indefinitely live from experience on Earth! It is an insult to his Universal Intelligence. It is absolutely irreconcilable with the nature of Man that Man cannot say: “ *Well, well, in ten years I want to do such a thing, in five years I want to do such a thing”*, it is absolutely irreconcilable with the nature of Man that he does not know his future!

It is irreconcilable with the nature of Man that he does not know the nature of the Man before him. In other words, it is irreconcilable with the Spirit of Man that this Spirit in Man is forced to live according to the dictations of reason, because Man on the material plane today is part of a generation whose consciousness is descending. The consciousness of Man must pass from the descent into matter towards the eventual exit towards the etheric, that is to say that part of the reality of the planet which is ultimately the world in which Man must naturally live his immortality.

Man is not made to come into matter and die. What we call death, that is to say what we call the return of man or of the soul to the astral plane, is part of man's unconsciousness. It is part of the fact that Man is totally cut off from the universal circuits which are the source of his generation, which are the source of his Intelligence, which are the source of his vitality, which are the source of his planetary self! So Man must return to the source, but Man cannot return to the source through the spiritual, historical illusions of involution.

Man will not be able to return to his source by using the old ideas which forced him to be a prisoner of matter. Man is not going to return to his source by using the old means which made him a being with an experimental consciousness. Man will not return to his source by believing.

Man will return to his source by gradually developing during his evolution, the capacity to support what he knows.

But in today's world, we are doomed to a mythology, to a psychological systematization of our self. We are doomed to the grip of a psychological mental attitude that affects all Humanities: belief. Why does man need to believe? Because he doesn't know! Why does man need to believe? Because he is an experiential consciousness being, so he has no Light in the mind. He lives in the very dark movement of his little consciousness, so he is obliged to believe in order to attach himself to something vital and absolute.

But this belief in the absolute which is part of the psychological conditioning of the ego, this belief in the absolute, it was established by whom? It was established by the Man of Involution. You know very well that if you go out into the world and you tell a story to someone, that the story you are going to tell will no longer be the same when it is received and told by the other, than the one you originally said.

Imagine that someone goes out into the world and tries to repeat what I am saying today, as an initiate, you can imagine how it will come out tomorrow! So there are Men in the past who did things, there were Initiates who came into the world to help the evolution of Humanity. But what these beings said and what was reported of what they allegedly said is another matter.

And I can substantively tell you one thing - because I've known the phenomenon for years - it's absolutely impossible for a man to perfectly repeat what is perfectly said. Try to do it when you get home tonight! It is impossible for a human being to repeat what is perfectly said. And I'll tell you why. Because what is perfectly said - in other words what is not colored by the ego, what is not astralized, what is not part of the unconsciousness of Man, but what is part of the cosmicity of Man - it is not directed to the ego of Man or to the ego of Man, or to the intellect of Man. It's directed to his Spirit.

And if the Man is not in his Spirit, how do you expect him to take up what another Spirit has already said? It's impossible. So at that moment there is coloring. And from the coloring of the words of the Initiates were born what we call religions for the evolutionary benefit of Humanity. And I agree and I'm very happy that this is happening and that this has been done, because it is necessary. But there will come a time during evolution when Man will no longer need moral support to give his conscience the fullness of his own knowledge. That is the supramental consciousness (higher mind).

And since we are talking to Quebeckers, since we are talking to a people who, for very good reasons, have had the chance to experience a certain proximity to the spiritual world that religion has given them, we already have an advancement, in this sense that already, we are beings who already have a certain sensitivity towards the invisible.

But from there to entering into the deeply occult search for consciousness using the spiritual paths of involution will take us directly to the polarity of the self. It will bring us to the conflict of good and evil, of true and false, and it will create great suffering for us in the mind.

This is why I say: The conscious Man, the evolution of the supramental consciousness (higher mind) on Earth will begin from the moment when Man will have already understood the need not to subject his thought to the true and to fake. But to learn gradually to live it and to support its movement until this thought one day comes to be perfect, that is to say totally in its own Light, totally depolarized, so that finally the he ego, the me… The ego, the soul and the Spirit are unified and make Man a real being.

What is a real being? A real being is a real being! He's not a being who needs the truth, he's not a being who eats the truth. If you eat the truth, tomorrow you will eat the lie, because there will be people who will take you even further to the confines of the Infinity of reality. If you eat the truth, one day you will have to take this step again, because the only thing that suits man, that suits his conscience, that suits his spirit, that suits his soul, that suits to his ego, which suits his being, is peace.

But what is peace? Peace is the stoppage, the stoppage of the search. You are going to say: " *Yes, but you have to search"* , I say: Yes, Man is looking for, despite yourselves you are looking for, all Men are looking for, but there will come a point during evolution where Man will not There will be no more searching, Man will no longer have to search, and Man will stop searching when he finally realizes that he knows.

And there you are going to say: “ *Yes, but how can one know that one knows”...* You will know it insofar as you allow yourself to bear it, insofar as you will not have no need to call anyone to find out if you're right. And then you're going to say: “ *Well yes, but if we're right or if we think we're right, it's dangerous”.* I will say: Yes, because a Man who seeks to be right is a Man who is already in search of his reason!

But aren't there experiences in your life, in your everyday life, in your personal corner, aren't there times in your life when you can feel that what you know, is that it? And when that's it, that's it!

(So you add and you add, and you add, and those who will have the ability to add their “ *that's it”* to another “ *that's that”* to another “ *that's that”,* but a “ *this is it”* which is real, a “ *this is it”* which will not be built on the pride of the mind, a “ *this is it”* which will not be built on the spirituality or the pride of your spirituality, a " *that's it"* that will be personal to you, a " *that's that"* that will be universal with all the men you meet and who will be in their " *that's that"* , at that moment you you will know it is !) (eliminate this paragraph if it cannot be translated).